

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.



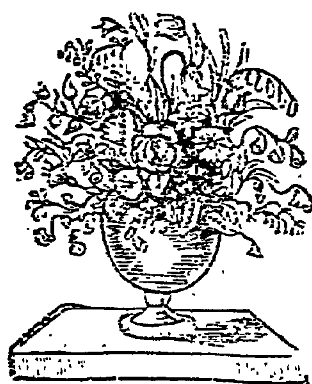


संसारमें विशेषरूपसे उसी ग्रन्थका समादर है जो कि अपने सजातीय ग्रन्थोंमें साररूप है, क्योंकि कालचक्रकी विकराल गतिसे वह समय नहीं है जिसमें समस्त शास्त्रोंके रहस्यके जाननेकी बुद्धि, शक्ति, सामर्थ्य, प्रागल्भ्य, धारणा, दीर्घायुरूप सामग्री प्राप्त हो, आधुनिक समयके मनुष्य प्रथम तौ अल्पायु होते हैं तिसपरभी अनेकानेक रोगभय फिर बहुधा विघ्न इतनेपरभी दुर्भाग्य और बुद्धिहीनता आदिसे किस प्रकार आ सक्ता है, इसी कारण समस्त जातकग्रन्थोंसे सार २ लेकर जिन विचारोंकी कि जन्मपत्रफलादेशमें आवश्यकता होती है वह सबही समस्त जातकग्रन्थोंसे लिखे गये हैं जैसे प्रथमभावके विचारमें रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दुःख इत्यादि; द्वितीयभावके विचारमें धन, सुख, नेत्रावयव इत्यादि; तृतीयभावके विचारमें भ्राता, पराक्रम इत्यादि; चतुर्थभावके विचारमें गृह, ग्राम, चतुष्पद, वाहन, भूमि, मित्रमातृपितृसुख इत्यादि; पंचमभावके विचारमें रोग, पीडा इत्यादि सप्तमभावके विचारमें जाया, व्यापार, गमन, आगमन इत्यादि. अष्टमभावके विचारमें दुर्ग, अल्प, कष्ट मरणहेतु, इत्यादि नवम भावके विचारमें भाग्य, तीर्थ, धर्मसंबन्धी कार्य इत्यादि;दशमभावके विचारमें राज्य, मुद्रा, व्यापार, राजमान महत्पद, पितृसुख इत्यादि; एकादशभावके विचारमें गज, अश्व, वस्त्र, लाभालाभ इत्यादि; द्वादशभावके विचारमें हानि, दान, व्यय इत्यादि विषय प्रसिद्ध२जातकग्रंथोंके प्रमाणसे संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पंचमहापुरुषलक्षण और चौरासी योग और सब प्रकारके राजयोग प्राचीन महर्षिप्रणीत जातकग्रंथोंसे लिखे गये हैं, कोई विशेष बात छोडी नहीं गई है जो अन्य जातकग्रंथोंमें पाई जावे। यह

ग्रंथ मूलमात्र तौ छपही चुका था परन्तु इसमें सर्वत्र गूढ २ अर्थ होनेसे भाषाटीकासहितकी विशेष मांग आनेके कारण ढाढौलिग्रामवास्तव्य पंडितवर्य ज्योतिर्विद् काशीरामजी पाठकद्वारा सुललित हिन्दीभाषाटीका इस रीतिसे कराई है कि प्रथम मूलार्थविवरण नीच मूल श्लोक फिर हिन्दी अनुवाद विराजमान है। उक्त टीकाकार महानुभावनेभी केवल अपनीही बुद्धिसे नहीं किन्तु मूलपरिशोधनपूर्वक अन्य जातकमतोंके सामानाधिकरण्यसे टीकाकी रचना की है। मैंनेभी ग्राहकसज्जनोंके प्रमोदार्थ सुन्दर टाइप और ग्लेज कागजपर छापकर केवल अपने व्ययमात्रकेही मूल्यसे विभूषित कर प्रकाशित किया है। आपने बहुतसे जातकग्रन्थ देखे होवेंगे परन्तु एकवार इसकोभी आद्योपान्त देखकर यश और धनका उपार्जन कीजिये जिससे मेरा परिश्रम सफल होवे विशेष प्रार्थना।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष श्रीवेङ्कटेश्वर-स्टीम्, प्रेस-बम्बई.



अथ

जातकसंग्रहस्य विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठांकाः

भ्रातृभावविचारः ।

विषयाः	पृष्ठांकाः

सुहृद्भावविचारः ।

दशमभावविचारः।

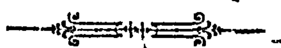
इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ जातकसंग्रहः

भाषाटीकासहितः ।



मंगलाचरणम् ।

नत्वा श्रियं भवानीं च शारदां बुद्धिवर्द्धनीम् ॥
करोम्यहं स्वबोधाय भावाध्यायं यथामति ॥ १ ॥

संग्राह्यमन्तर्हृदि योगिभिः सदा चाग्राह्यमानन्दमयं कदिन्द्रियैः ॥
संधाय चित्ते तिलकं सुभाषितं संनिर्मिमे जातकसंग्रहे मुदा ॥ १ ॥

सांसारिक समस्त संपदाओंको देनेवाली लक्ष्मी और समस्त संकटहारिणी भवानी और बुद्धिप्रदायिनी सरस्वतीको प्रणाम कर बुद्धिके अनुसार स्वबोधके वास्ते भावाध्याय जो कि जन्मपत्रके फलादेशमें साररूप है तिसका निर्माण करता हूं ॥ १ ॥

द्वादशभावानां फलानि निरूप्यंते ।

तत्र भावफलालोकने विधिः ।

भिन्नं द्वादशधा विरच्य विलसच्चक्रं च तत्र न्यसे-
ल्लग्नद्वादशराशयोऽतिविशदा वामांगभागे क्रमात् ॥
अंक्यास्तत्र नभश्चराः स्फुटतरा राशौ च यत्र स्थिता-
स्तेभ्यःसाधु फलंत्वसाधु सुधिया वाच्यं हि होरागमात् ॥ २ ॥

जातकसंग्रह नाम ग्रंथमें प्रथमसे लेकर द्वादशभावपर्यन्त पृथक् २ फल निरूपण किया गया है । तिसमें प्रथम भावफलके देखनेकी विधि कहते हैं । प्रथम ऐसा चक्र लिखे जिसमें भिन्न २ बारह भाग होवें तिस चक्रमें लग्नमें लेकर क्रमपूर्वक बारह राशि संस्थापित करने चाहिये, दक्षिणांग और वामांग जो कि चक्रके दो भाग हैं तिनमें क्रमसे सूर्यादि ग्रह लिखने चाहिये जिस राशिमें जो कि ग्रह स्थित होवे तिनसे शुभ अशुभ फल होराशास्त्रसे पंडितजनको कहना चाहिये ॥ २ ॥

तनुभावविचारः ।

तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ॥
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥ ३ ॥

इसके अनन्तर तनुभाव विचार कहते हैं। तिस तनुभावमें क्या विचारना चाहिये सो जातकाभरण नाम ग्रंथमें कहा है। रूप और वर्णका निश्चय तथा चिह्न और जाति तथा आयुःप्रमाण तथा सब प्रकारके सुख दुःख और साहस यह सब बातें लग्नमें देखी जावे हैं ॥ ३ ॥

तत्रादौ सामान्यविचारे तनुभावोपरि ग्रहाणां दृग्युतिफलान्याह ।

तत्र सर्वग्रहदृष्टिफलम् ।

विलोकिते सर्वग्रहैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ॥
कुले नृपालो विपुलायुरेव भयेन मुक्तोऽरिकुलस्य हंता ॥ ४ ॥

जिस लग्नमें पहिले सामान्य विचार करनेपर तनुभावके ऊपर ग्रहोंके दृष्टियोग-संबन्धी फल कहते हैं तहां सर्वग्रहदृष्टिका फल यह है। यदि लग्नभाव सब ग्रहोंकर देखा गया होवे तौ मनुष्य लीलाविलासयुक्त तथा अतिबली और निज कुलमें नृपाल तथा बडे आयुवाला और भयसे वर्जित तथा शत्रुकुलके नाश करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

लग्नस्थसौम्यत्रयेण राजयोगः पापत्रयेण दरिद्रयोगः ।

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वंति जातं नृपतिं विनीतम् ॥
पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितांतं बहुभक्षकं च ॥ ५ ॥

यदि तीन शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ उत्पन्न हुए पुरुषको विनययुक्त राजा करते हैं और तीन पाप ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ पुरुषको अनेक दुःख दरिद्र-शोकसे युक्त और सदैव बहुत भोजन करनेवाला करते हैं ॥ ५ ॥

लग्नादरिमदाष्टमस्थैः शुभैः राजयोगः ।

लग्नाद्द्यूनषडष्टभेषु शुभदाः पापैरयुक्तेक्षिता
मंत्री दंडपतिः क्षितेरधिपतिःस्त्रीणां बहूनां पतिः ॥
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयःसौंदर्य्यसौख्यान्वितः
सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा ॥ ६ ॥

यदि लग्नसे सप्तम षष्ठ अष्टम इन भावोंमें शुभ ग्रह होवें और पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न होवे तौ उत्पन्न हुआ पुरुष मंत्री तथा दण्डपति और पृथ्वीका अधिपति, बहुतसी स्त्रियोंका पति तथा दीर्घ आयुवाला, रोगवर्जित, निर्भय तथा सौन्दर्य सौख्य-युक्त और प्रसन्न रहनेवाला और अच्छे शीलस्वभाववाला होता है ऐसा यवनाचार्योंने कहा है ॥ ६ ॥

लग्नस्थग्रहाणां फलानि। तत्रादौ रविफलं गर्गजातके।

प्रचंडरूपो विकलेक्षणश्च भवेन्निशांधः किल बुद्बुदाक्षः॥
कंठे ग्रहः स्यान्मदरक्तनेत्रो भानौ तनुस्थे रुधिरेक्षणः स्यात्॥७॥

यदि सूर्य लग्नमें स्थित होवे तौ प्रचण्डरूपवाला तथा विकल नेत्रोंवाला तथा रात्रिमें अन्ध रहनेवाला तथा फुल्लीयुक्त नेत्रवाला और कंठमें ग्रहवाला और मदके समान लाल नेत्रवाला और रुधिरनेत्र होता है॥ ७॥

अन्यच्च।

तनुस्थानगते सूर्ये दृष्टे वा कोपवान्भवेत्॥
वातपित्तभवा बाधा शरीरे चास्य जायते॥ ८॥

यदि सूर्य लग्नमें स्थित होवे वा सूर्यकर लग्न पूर्ण दृष्टिसे देखा जावे तौ क्रोधी होवे और उस पुरुषके शरीरमें वातपित्तसे उत्पन्न हुई पीडा होवे है॥ ८॥

पाषाणादिप्रहारेण कष्टं शिरसि जायते॥
कंठदेशे गुदे वापि व्रणो वाथ तिलो भवेत्॥ ९॥

पाषाणादि प्रहारकर शिरमें कष्ट उत्पन्न होता है और कंठ देश वा गुदामें व्रण वा तिल होता है॥ ९॥

बाल्यभावे हि जातस्य पीडादुःखान्यनेकशः॥
विचार्य्य ग्रहभावं च तथान्यदपि चोच्यते॥ १०॥

और उस उत्पन्न हुए पुरुषके बालपनमें अनेक पीडा दुःख होते हैं। ग्रहभावको विचारकर और भी अन्य फल कहा जा सकता है॥ १०॥

लग्नस्थचंद्रफलम्।

पूर्णे शीतकरे लग्ने सुरूपो धनवान्मृदुः॥
असंपूर्णे तु मलिनो मंदवीर्यो भवेत्सदा॥ ११॥

यदि पूर्ण चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तौ सुरूप और धनवान् तथा कोमल शरीर होता है और क्षीण चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तौ मलिन और अल्पपराक्रमी होता है॥ ११॥

क्षीणोऽपि राशिवशाच्छुभः।

गोमेषकर्कटे लग्ने चंद्रस्थे रूपवान् धनी॥
जडताव्याधिदारिद्र्यं शेषर्क्षे कुरुते शशी॥ १२॥

लग्नमें वृष मेष कर्क इन राशियोंका चन्द्रमा स्थित होवे तो रूपवान् तथा

धनी होता है । और शेष राशियोंपर स्थित होकर चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तौ जडता व्याधि दरिद्रताको करता है १२ ॥

अन्यच्च ।

तनुस्थाने स्थिते चंद्रे दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
शिरस्यार्तिर्वातबाधा शीतता गौरवर्णता ॥ १३ ॥

यदि चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे अथवा चंद्रमाकी पूर्ण दृष्टिसे लग्न देखा गया होवे तौ शिरमें पीडा और वातबाधा तथा शीतता और गौरवर्णता होवे है ॥१३॥

श्वासः कासो हि जातस्य तनौ वातभ्रमो भवेत् ॥
अश्वादिपशुघातं च हृदये राजचौरतः ॥ १४ ॥

और उस उत्पन्न हुए पुरुषको श्वासकासपीडा और शरीरमें वातभ्रम होता है और घोडा आदि पशुओंसे वा राजा चोरोंसे हृदयमें प्रहार होता है ॥ १४ ॥

तनुस्थभौमफलम् ।

गुदरोगी क्षयन्नाभिकंडूकुष्ठादिनांकितः ॥
मध्यदेशे भवेद् व्यंगः स वाच्यो लग्नगे कुजे ॥ १५ ॥

यदि मंगल लग्नमें स्थित होवे तो गुदामें रोगवाला होता है और क्षयनाभिं और कंडू (खुजली) और कुष्ठादिसे युक्त रहता है और मध्यदेशमें अंगहीन होता है ॥ १५ ॥

अन्यच्च ।

तनुस्थानस्थिते भौमे दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
लोहाश्मादिकृता पीडा क्रोधोऽत्यंतस्तनौ भवेत् ॥ १६ ॥

यदि मंगल लग्नमें स्थित होवे तौ वा मंगलकर पूर्ण दृष्टिसे लग्न देखा गया होवे तौ लोह वा पत्थर आदिसे शरीरमें पीडा और अत्यन्त क्रोध होता है ॥१६॥

रक्तपीडा शिशुत्वे च वातरक्तं च जायते ॥
मस्तके कंठमध्ये च गुह्ये वापि व्रणं भवेत् ॥ १७ ॥

और बालपनमें रक्तपीडा तथा वातरक्तरोग होता है और मस्तक तथा कंठमध्य तथा गुह्य अंगमें व्रण होता है ॥ १७ ॥

लग्नस्थबुधफलम् ।

सुमूर्तिर्निपुणः शांतो मेधावी विप्रियंवदः ॥
विद्वान्दयालुरत्यर्थं विना क्रूरं बुधे तनौ ॥ १८ ॥

यदि क्रूर ग्रहके विना लग्नमें बुध होवे तौ सुन्दरमूर्ति और चतुर तथा शान्त तथा मेधावी और प्रिय वचन बोलनेवाला विद्वान् और अतीव दयालु होता है ॥ १८ ॥

अन्यच्च।

तनौ बुधे लोकिते च भिन्नवर्णं शरीरकम् ॥
स्त्रीसुखं मध्यभागे च वातपीडा तनौ भवेत् ॥ १९ ॥

यदि लग्न बुधसे युक्त हो वा बुधकर देखा गया होवे तौ शरीर भिन्नवर्ण होवे और मध्यभागमें स्त्रीका सुख होवे और शरीरमें पीडा होवे ॥ १९ ॥

विस्फोटादिभवं दुःखं मशकोऽथ तिलोऽथवा ॥
गुल्मोदरविकारो वा स्वल्पाहारोऽपि जायते ॥ २० ॥

और फोडा आदिसे दुःख उत्पन्न होवे और शरीरमें मश्शा वा तिल होवे और पेटमें गुल्मविकारवाला तथा थोडे भोजन करनेवाला होता है ॥ २० ॥

तनुस्थगुरुफलम्।

कविः सुगीतः प्रियदर्शनः शुचिर्दाताऽथ भोक्ता नृपपूजितश्च ॥
सुखी च देवार्चनतत्परश्च धनी भवेद्देवगुरौ तनुस्थे ॥ २१ ॥

यदि बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे तौ कविता करनेवाला और सुन्दर गीतवाला तथा प्रियदर्शन और दानी तथा भोगी और राजाके यहां सत्कार पावनेवाला होता है और सुखसंपन्न तथा देवताओंके पूजनमें तत्पर तथा धनी रहता है ॥ २१ ॥

अन्यच्च।

तनुस्थानगते जीवे गौरवर्णतनुर्भवेत् ॥
वातश्लेष्मशरीरे च बाल्ये च सुखसंपदः ॥ २२ ॥

यदि लग्नमें बृहस्पति होवे तौ गौरवर्ण शरीरवाला होता है और शरीरमें वात कफ होता है और बालपनमें सुख संपदा होती है ॥ २२ ॥

मिथ्यापवादजा पीडा शत्रूणां विषदायिका ॥
राज्यतो मानमतुलं धनप्राप्तिरनेकधा ॥ २३ ॥

शत्रुओंके विषदायिक झूंठी निन्दासे पीडा होवे है और राज्यसे अतुलमान और अनेक प्रकार धनप्राप्ति होवे है ॥ २३ ॥

क्रूरदृष्टिसमायोगे व्यथा काचित्प्रजायते ॥
यो यो विघ्नः समुत्पन्नः स सद्यश्च विनश्यति ॥ २४ ॥

यदि लग्नस्थ बृहस्पतिपर क्रूर ग्रहकी दृष्टिका योग होवे तौ कोई व्यथा भी उत्पन्न होवे है और जो २ विघ्न उत्पन्न होता है वह तत्काल ही नष्ट होजाता है ॥ २४ ॥

तनुस्थभृगुफलम् ।

वाचालः शिल्पशीलाढ्यो विनीतो गीततत्परः ॥
काव्यशास्त्रविनोदी च धार्मिको लग्नगे भृगौ ॥ २५ ॥

यदि शुक्र लग्नमें स्थित होवे तो बहुत बोलनेवाला और प्रत्येक प्रकारके कारीगरीसे युक्त और विनयसंपन्न तथा गानविद्यामें तत्पर और काव्यशास्त्रमें विलासवाला तथा धर्मात्मा होता है ॥ २५ ॥

अन्यच्च ।

तनुस्थानस्थिते शुक्रे दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
गौरवर्णो भवेद्देहो वातपित्तसमन्वितः ॥ २६ ॥

यदि शुक्र लग्नमें स्थित होवे वा पूर्ण दृष्टिसे शुक्रकर लग्न देखा गया होवे तौ शरीरमें गौरवर्ण होता है और वातपित्तसे युक्त रहता है ॥ २६ ॥

कटिपार्श्वोदरे गुह्ये व्रणो वाथ तिलोऽथवा ॥
श्वशृंगिभ्यो वायुतो वा पीडा देहे प्रजायते ॥ २७ ॥

और कमर तथा कांख और पेट और गुह्य अंग इनमें व्रण वा तिल होता है और कुत्ता और शींगवालोंसे तथा पवनसे शरीरमें पीडा होवे है ॥ २७ ॥

तनुस्थशनिफलम् ।

कंडूतिपूर्णांगकफप्रवृत्तिर्लग्ने शनौ स्यात्सततं नराणाम् ॥
हीनाधिकांगत्वमथ प्रदेशे कर्णांतरे वातगदः सदैव ॥ २८ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर स्थित होवे तौ खुजलीसे परिपूर्ण अंग और कफप्रवृत्ति पुरुषोंकी होवे है और न्यून आधिक अंग और कर्णके मध्यभागमें वातरोग होता है ॥ २८ ॥

लग्ने मंदेऽथवा दृष्टे कृशदेहश्च दुःखितः ॥
मूर्खश्च मदनाचारो भिन्नवर्णस्तनौ भवेत् ॥ २९ ॥

यादि लग्नमें शनैश्चर होवे वा शनैश्चरकर लग्न देखा गया होवे तौ लटे हुए शरीरवाला और दुःखी तथा मूर्ख और कामी तथा शरीरमें भिन्न वर्णवाला होता है ॥ २९ ॥

लोहादिभिः शिरः पीडा आत्मचिंता निरंतरम् ॥
यादृक् फलं शनौ प्रोक्तं राहौ तादृक् फलं भवेत् ॥ ३० ॥

लोह आदिसे शिरमें पीडा होवे है और निरन्तर आत्माकी चिन्ता रहती है। जैसा कि फल शनैश्वरका कहा है तिसी प्रकार राहुका होता है ॥ ३० ॥

तुलाकोदंडमीनानां लग्नसंस्थे शनैश्वरे ॥
करोति भूपतिं जातमन्यराशौ गतायुषम् ॥ ३१ ॥

तुला धनु मीन इन राशियोंका शनैश्वर लग्नमें स्थित होवे तौ उत्पन्न प्राणीको राजा करता है और शेष राशियोंका लग्नमें स्थित होवे तौ अल्प आयुवाला करता है ॥ ३१ ॥

तनुस्थराहुफलम्।

सर्वांगरोगी विकलः कुमूर्तिः कुवेषधारी कुनखी कुकर्मा ॥
अधार्मिकः साहसकर्मदक्षो रक्तेक्षणश्चंद्ररिपौ तनुस्थे ॥ ३२ ॥

यदि चंद्ररिपु (राहु) लग्नमें स्थित होवे तौ सर्वांगोंमें रोगवाला और विकल तथा कुरूप और बुरे वेषवाला और बुरे नखोंवाला तथा कुकर्मी और अधर्मी परन्तु साहस कर्मसे बडा चतुर और लाल नेत्रवाला होता है ॥ ३२ ॥

अन्यत्।

राहौ लग्नगते जातः संचयं यत्र कुत्रचित् ॥
सिंहकर्किणि मेषस्थे स्वर्णलाभाय मंगलम् ॥ ३३ ॥

यदि लग्नमें राहु स्थित होवे तौ उत्पन्न हुआ प्राणी जहां कहीं भी स्थित होवे तहां संचय करता है और सिंह कर्क मेष इन राशियोंका लग्नमें स्थित होवे तौ सुवर्णलाभके वास्ते मंगल कर्म करता है ॥ ३३ ॥

केतुफलम्।

यस्य लग्नोपगः केतुस्तस्य भार्या विनश्यति ॥
बाहुरोगस्तथा व्याधिर्मिथ्यावादी च जायते ॥ ३४ ॥

जिसके लग्नभावमें केतु स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री नष्ट हो जाती है और उस पुरुषके भुजामें रोग और शरीरमें व्याधि और झूठ बोलनेवाला होता है ॥३४॥

लग्नस्थैर्ग्रहैः प्रकृतिः।

सोमो वा सोमपुत्रो वा राहुकेतुशनैश्वराः ॥
यस्य लग्ने स्थितास्तस्यांदोलिता प्रकृतिर्भवेत् ॥ ३५ ॥

जिसके लग्नभावमें चंद्रमा वा बुध वा राहु केतु शनैश्चर यह ग्रह स्थित होवें उसका स्वभाव चंचल होता है ॥ ३५ ॥

कविर्गुरुर्भानुभौमौ स्थिरप्रकृतिदायकाः ॥
राहुमंदौ च यत्रस्थौ तत्र स्यात्कृष्णलांछनम् ॥ ३६ ॥

शुक्र बृहस्पति सूर्य मंगल यह ग्रह स्थित होवें तौ स्थिरभावको देते हैं। राहु शनैश्चर यह दोनों जहां कहीं भी स्थित होवें तिसी अंगमें कृष्ण चिह्न करते हैं॥३६॥

लग्नपादायुराह।

सौम्यो लग्नपतिर्लग्ने लग्नं वा यदि वीक्षते ॥
गतक्लेशश्चिरायुश्च सुखी लोकस्तदा भवेत् ॥ ३७ ॥

यदि शुभ ग्रह लग्नपति होकर लग्नमें स्थित होवे वा लग्नको देखता होवे तौ मनुष्य विना क्लेश बडी आयु पानेवाला और सुखी होता है ॥ ३७ ॥

लग्नं लग्नपतिर्वापि दुर्बलोऽस्तमितोऽपि वा ॥
तथा फलं च सामान्यं वक्तव्यं ग्रहभावतः ॥ ३८ ॥

यदि लग्न वा लग्नपति निर्बल वा अस्तको प्राप्त होवे तौ ग्रह भावसे सामान्य फल कहना चाहिये ॥ ३८ ॥

लग्ने वाथ नवांशे वा ये ग्रहाश्च प्रकीर्तिताः ॥
ज्ञात्वा तेषां स्वरूपं च फलं सम्यङ् निरूप्यते ॥ ३९ ॥

लग्नमें वा लग्नके नवांशमें जो ग्रह कहे हैं तिनके स्वरूपको जानकर फल भली प्रकार कहनेमें आ सकता है ॥ ३९ ॥

विशेषविचारः स्वामिसौम्यदृष्टियुतवशात् उक्तं च।

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ४० ॥

जो जो भाव स्वामीकरके देखा गया होवे वा युक्त होवे अथवा शुभ ग्रहकरके युक्त वा देखा गया होवे तौ उसी २ भावके फलकी वृद्धि होवे है और इसी प्रकार जो २ भाव पाप ग्रहोंकर देखा गया होवे वा युक्त होवे तौ उसी २ भावके फलकी हानि होवे है यह प्रश्न करनेवालोंके प्रश्नलग्नसे वा जन्मलग्नसे विचारना चाहिये॥४०॥

पूर्वोपन्यस्तबलवशेन भावस्य हानिर्वृद्धिर्वाच्या तदुक्तं गर्गजातके ।

नीचस्थो रिपुगेहस्थो ग्रहो भावविनाशकृत् ।
उदासीनग्रहो मध्यो मित्रस्वर्क्षत्रिकोणगः ॥ ४१ ।
स्वोच्चगश्च ग्रहोऽवश्यं भाववृद्धिकरः स्मृतः ॥
व्ययाष्टषष्ठभावेषु वैपरीत्यत्वमावहेत् ॥ ४२ ॥

नीचराशिमें स्थित होकर वा शत्रुक्षेत्री होकर ग्रह भावफलका नाश करता है और मध्यबल ग्रह मध्य फल करता है और मित्रक्षेत्री वा स्वक्षेत्री वा मूलत्रिकोणक्षेत्री वा उच्चक्षेत्री होकर अवश्य भावकी वृद्धि करता है और बारहवें आठवें छठे इन भावोंमें स्थित होकर विपरीतता करता है अर्थात् जिस भावका स्वामी बारहवें वा आठवें वा छठे इन भावोंमें स्थित होवे तौ उस भावके अच्छे फलको बुरा और बुरे फलको अच्छा कर देता है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

पश्यन् ग्रहः स्वलग्नं सर्वं विदधाति सौख्यमर्थं च ॥
प्रायो नृपतिप्रियत्वं पापी पापं शुभः सौख्यम् ॥ ४३ ॥

अपने लग्नको देखनेवाला ग्रह सब प्रकारसे सुख और धनको देता है और बहुधा राजाका प्रियभाव भी देता है। पापी ग्रह होता है तौ पापफल होता है और शुभ ग्रह होता है तौ सौख्य अधिक होता है ॥ ४३ ॥

स्वगृहोच्चसौम्यवर्गे ग्रहः फलं पुष्टमेव विदधाति ॥
नीचास्तरिपुगृहस्थो विगतफलं कीर्तितं मुनिभिः ॥ ४४ ॥

अपने क्षेत्र वा उच्चराशि, वा शुभग्रहके षड्वर्गमें स्थित होकर ग्रह भावका पुष्ट फल करता है और नीचराशिस्थ वा अस्त वा शत्रुक्षेत्री होवे तौ भावको निष्फल करता है ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ४४ ॥

जातस्य कांश्चिदायुरादियोगानाह ।

सन्ध्याद्वये जनिमतोऽत्र यदेन्दुहोरा राश्यन्तगैः खलखगै-
र्निधनं शिशोः स्यात् ॥ केन्द्रैः सपापविधुभिः सकलैस्त-
थैव कामांगयोरपि मृतिः खलकर्त्तरी चेत् ॥ ४५ ॥

प्रातःकालकी संध्या और सायंकालकी संध्या इन दोनोंमेंसे किसीमें जन्मवाले प्राणीके लग्नमें यदि चंद्रमाका होरा होवे और पाप ग्रह राशिके अन्तमें अर्थात् नवम नवांशमें स्थित होवे तौ बालकका मरण हो जाता है और सकल केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) भाव पाप ग्रह और चंद्रमासे युक्त होवे तौ भी बालकका मरण होता है

और सप्तम भाव और लग्नभाव इन भावोंपर पाप ग्रहोंका कर्त्तरीयोग होवे तौ भी बालकका मृत्यु होता है ॥ ४५ ॥

स्मरांगयोः क्रूरखगावसद्युतः शशीनदृष्टश्च शुभैस्तदा क्षयः ॥ शुभो न केन्द्रैर्व्ययगे विधौकृशे खलैश्चतन्वष्टमगैर्द्रुतं मृतिः॥४६॥

सप्तमभाव और लग्नभाव इन दोनोंमें पाप ग्रह स्थित होवे और चंद्रमा पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखा गया होवे तौ भी बालकका मृत्यु होता है. शुभ ग्रह तौ केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) भावमें नहीं स्थित होवे और क्षीण चंद्रमा बारहवें भावमें स्थित होवे और पाप ग्रह लग्न और अष्टम भावमें स्थित होवे तौ बहुत शीघ्र मृत्यु हो जाता है ॥ ४६ ॥

षष्ठाष्टमेऽब्जे सुखगे च राहौ दुःस्थे मृतिः सद्य इहेश्वरोऽर्च्यः ॥ वर्षेण केन्द्रे सखलेऽथयद्यन्योन्यर्क्षगौ स्तोऽसगुरू शिवाब्दैः॥४७॥

यदि चंद्रमा षष्ठ वा अष्टम स्थानमें स्थित होवे और चतुर्थ स्थानमें वा छठे आठवें बारहवें स्थानमें राहु स्थित होवे तौ तत्काल मृत्यु हो जाता है और ईश्वर पूजा जावे तौ वर्षमात्रकर मृत्यु होता है और केन्द्र (१।४।७।१०) भाव पाप ग्रहोंसे युक्त होवे और शनैश्वर बृहस्पति परस्पर राशिमें स्थित होवें अर्थात् शनैश्चरके राशिका बृहस्पति और बृहस्पतिके राशिका शनैश्चर होवे तौ ग्यारहवें वर्षमें मृत्यु हो जाता है४७

सक्रूरोऽब्जोऽव्ययमृतिमदांगेष्वकेंद्रस्थसौम्यनों दृष्टोऽसौ शिशुमृतिकरोऽथाष्टमाऽऽरस्थितोऽब्जः ॥ दृष्टः क्रूरैरहनि जननं यस्य कृष्णे च पक्षे शुक्के सद्भिर्निशि जनिरवत्यत्र तं नान्यथोह्यम् ॥४८॥

यदि पापग्रहसहित चंद्रमा बारहवें आठवें सातवें लग्न इनमेंसे किसीमें स्थित होवे और केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) भावमें शुभ ग्रह नहीं स्थित होवे और न शुभ ग्रहोंकर चंद्रमा देखा गया होवे तौ बालकका मृत्युकर्त्ता होता है, अथवा आठवें वा छठे भावमें स्थित चंद्रमा पाप ग्रहोंकर देखा गया होवे और दिनके समय और कृष्ण पक्षमें जन्म होवे अथवा आठवें वा छठे भावमें स्थित चंद्रमा शुभ ग्रहोंकर देखा गया होवे और शुक्लपक्ष तथा रात्रिमें जन्म होवे तौ उस जन्मे हुए बालककी रक्षा करता है, अन्यथा नहीं रक्षा करता है ॥ ४८ ॥

तनाविन उतोडुपेन शुभयुक्तदृष्टे मृतिस्त्रिकोणमृतिगैः खलैर्बलयुतैर्नृणां स्यात्तथा ॥ व्ययांकतनुमृत्युगैरगुरुदृग्भिराकर्यर्कविध्वसृग्भिरथ द्वावधौ सुतनवाह्यगांत्यांगगे ॥ ४९ ॥

यदि लग्नभावमें सूर्य और चंद्रमा स्थित होवे और शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट नहीं होवे अथवा बलवान् होकर पाप ग्रह त्रिकोण नवम पंचम और अष्टम इन भावोंमें स्थित होवे तौ मृत्यु होवे है। यदि शनैश्चर सूर्य चंद्रमा मंगल यह द्वादश नवम लग्न अष्टम इन भावोंमें क्रमसे स्थित होवें और बृहस्पतिकी दृष्टिसे हीन होवे तौ मृत्यु होवे है और दुर्विधु नाम पापग्रहयुक्त क्षीण चंद्रमा शुभ ग्रहोंकी दृष्टियोगसे हीन होकर पंचम नवम अष्टम सप्तम द्वादश लग्न इनमें स्थित होवे तौ मृत्यु होता है ॥ ४९ ॥

तनोरारिविनाशगे खलखगैर्विधौ वीक्षिते मृतिः शुभदृशा समाष्टकमतश्च मिश्रैर्दलम् ॥ खलेऽरिभगतेऽष्टमे खलदृशैक-वर्षैःशिशू रवौ नृपदिगब्दकः खलखगेक्षिते केन्द्रगे ॥ ५० ॥

यदि लग्नभावसे छठे वा आठवें भावमें स्थित हुआ चन्द्रमा पाप ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ तत्कालही मृत्यु होता है और उस चंद्रमापर शुभ ग्रहकी दृष्टि होवे तौ आठ वर्षमें मृत्यु होता है और पाप ग्रह शुभ ग्रह दोनोंकर देखा गया होवे तौ चार वर्षमें मृत्यु होता है। यदि पाप ग्रह अधिक और शुभ ग्रह कम देखते होवें वा शुभ ग्रह अधिक और पाप ग्रह कम देखते होवें तौ अनुपातके हिसाबसे वर्ष जानने चाहिये। यदि शुभ पाप ग्रह अष्टमस्थ चंद्रमाको दोनोंभी नहीं देखते होवें तौ षष्ठाष्टमस्थ चंद्रमा मृत्युकारक नहीं होता है यह तात्पर्यार्थ है। यदि पाप ग्रह शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम स्थानमें स्थित होवे और पाप ग्रहकी उसपर दृष्टि होवे तौ बालक एक वर्षका होता है। यदि सूर्य केन्द्रमें स्थित हुआ पाप ग्रहोंसे देखा गया होवे और शुभ ग्रहकर नहीं देखा गया होवे तौ बालक सोलह वा दश वर्षका होता है ॥ ५० ॥

यमेऽर्कविधुसंयुते नवसमाश्च मासोऽखिलैः षडष्टमगतैःखले-रथ षडष्टगे कर्कगे ॥ शशीक्षितबुधे चतुर्थशरदि क्षयः स्या-च्छिशोः सितोष्णगुयमा इमे खलयुतास्त्रयो मृत्यवे ॥ ५१ ॥

यदि शनैश्चर सूर्य चंद्रमासे युक्त होवे तौ बालकका आयु नव वर्षका होता है। यदि समस्त पाप ग्रह छठे आठवें भावमें स्थित होवें तौ मास भरका आयु होता है। यदि चंद्रमाकर देखा हुआ बुध कर्कराशिपर छठा वा आठवें भावमें स्थित होवे तौ बालकका मृत्यु चार वर्षमें होता है। यदि शुक्र सूर्य शनैश्चर यह तीनों ग्रह पाप ग्रहसे युक्त होवें तौ मृत्युके वास्ते होवे हैं ॥ ५१ ॥

रवौ कुजर्क्षे शनिगेहगेऽपि वा बहूग्रदृष्टो गुरुरन्तकृत्खगः ॥ शुभै-
रदृष्टा अशुभेक्षिताः खला मदाष्टगाः साम्बशिशुक्षयंकराः ॥५२॥

यदि मंगलके राशिपर वा शनैश्चरके राशिपर सूर्य स्थित होवे और बहुतसे पाप ग्रहोंकर देखा हुआ बृहस्पति दशम भावमें स्थित होवे तौ मृत्यु करता है[1]। यदि पाप ग्रह सप्तम अष्टम भावमें स्थित हुए शुभ ग्रहोंकर नहीं देखे गये होवें और पाप ग्रहोंकरही देखे गये होवें तौ मातासहित बालकका क्षय कर देते हैं ॥ ५२ ॥

होरास्वामी पापदृष्टोऽष्टमस्थो जन्मेशाढ्यश्चेन्मृतिर्वेदमासैः॥ एवं
कामे पापयुग्जन्मपाढ्यो होरेशश्चेत्क्रूरदृष्टोऽष्टमासैः ॥ ५३ ॥

यदि जन्मलग्नस्वामी जन्मराशिपतिसहित आठवें भावमें स्थित होवे और पाप ग्रहसे देखा गया होवे तौ चार मासमें मृत्यु करता है। इसी प्रकार पापग्रहसहित लग्नपति जन्मराशिपति सहित सप्तम भावमें स्थित होवे और पाप ग्रहकर देखा जावे तौ आठ मासमें मृत्यु करता है ॥ ५३ ॥

सर्वपापनिरीक्षितो गुरुरष्टमेन शुभेक्षितोऽरिष्टकृत्कुजगेहगो
ध्रुवमेव वा कुटिलः शनिः ॥ केन्द्रनाशरिपुस्थितःकुजगेहगो
बलिनाऽसृजा वीक्षितश्च समात्रयेण विशेषतः शिशुहानिदः॥५४॥

यदि मंगलके राशिपर स्थित होकर बृहस्पति अष्टम भावमें स्थित होवे और समस्त पाप ग्रहोंकर देखा गया होवे और शुभ ग्रहकर नहीं देखा गया होवे तौ निश्चयही अरिष्ट करता है। अथवा वक्री होकर शनैश्चर मंगलके राशिका केन्द्र (१।४।७।१०।) भाव वा अष्टमभाव वा षष्ठ भावमें स्थित होवे और बलवान् मंगलकर देखा गया होवे तौ तीन वर्षमें बालककी हानि करता है ॥ ५४ ॥

शनिस्तनोरष्टमगस्तु कष्टदस्त्रिकोणगो नीच इनोऽपि तादृशः ॥
कुजेऽष्टमे सत्यथ षष्ठमृत्युगे खलेक्षिते ज्ञोऽब्धिसमायुरात्मजः॥५५॥

यदि लग्नमें शनैश्चर अष्टमस्थानमें स्थित होवे और नीच राशिपर सूर्य नवम भावमें स्थित होवे और मंगल अष्टम भावमें होवे तौ कष्टदायक होवे है। यदि षष्ठ वा अष्टम भावमें स्थित बुध पाप ग्रहकर देखा गया होवे तौ पुत्र चार वर्षके आयुवाला होता है ॥ ५५ ॥

---

१ अयं मृत्युयोगो जातकाभरणेऽन्यथोक्तः । मेषूरमेऽर्को धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कात्मजधामसंस्थः । पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं खलु याति तूर्णम् ॥ १ ॥

षष्ठनाशगतो बुधः शशिभे क्षयाय विधोर्दृशा
वेदहायनतोऽथ षष्ठलयव्ययस्थशुभग्रहैः ॥
वीक्षितो हरिकर्कगो मृतिदोऽशुभेक्षणतः सितः
षट्समाभिरथ द्रुतं जनितस्य शिख्युदये क्षयः ॥ ५६ ॥

यदि बुध चंद्रमाके राशिका छठे वा आठवें भावमें स्थित होवे और चंद्रदृष्टिसे युक्त होवे तौ चार वर्षमें मृत्युके वास्ते समर्थ होता है। और सिंह वा कर्कराशिका शुक्र छठे आठवें बारहवें भावमें स्थित हुए शुभ ग्रहोंने देखा होवे और पापग्रहकी दृष्टिसेभी युक्त होवे तौ छः वर्षमें मृत्यु करता है और जिस राशिपर केतुका उदय होवे उसी राशिमें जन्मे हुएका शीघ्रही मरण होता है ॥ ५६ ॥

तनौ दृकाणा यदि पाशपक्षिणां खलान्विताः सप्तम-
वत्सरे मृतिः ॥ खलास्त्रिकोणेन शुभेक्षिताः शुभाः
षडष्टगाश्चेद्वजवत्सरे क्षयः ॥ ५७ ॥

यदि लग्नमें पाश पक्षियोंके द्रेष्काण स्थित होवे और पाप ग्रहोंसे युक्त होवे तौ सातवें वर्षमें मृत्यु होता है। भाव यह है कि लग्नमें जो कि द्रेष्काण होवे वह शृंखलापाशपक्षिसंज्ञक होवे और उस द्रेष्काणमें पाप ग्रह स्थित होवे तौ सातवें वर्षमें मृत्यु होता है। यदि पाप ग्रह नवम पंचम भावमें स्थित होवे और शुभ ग्रह छठे आठवें भावमें स्थित होवें और शुभ ग्रहकर नहीं देखे गये होवें तौ आठवें वर्षमें मृत्यु होता है ॥ ५७ ॥

तनौ स्मरे खलग्रहे खलेक्षितान्वितेऽङ्गपे ॥
विधौ तनौ च जातकोऽत्र सप्तवर्षजीवनः ॥ ५८ ॥

यदि लग्नमें और सप्तम भावमें पाप ग्रह स्थित होवे और लग्नपति पाप ग्रहकर देखा गया होवे और चंद्रमाभी लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष सात वर्षतक जीवनेवाला होता है ॥ ५८ ॥

त्रिकेऽस्तगौ जन्मतनुप्रभू यदा तदा शिशोराशिमिताब्दत-
श्च्युतिः ॥ बुधर्क्षगोऽब्जोऽर्ककुजान्वितः शुभैरवीक्षितोऽब्दे
नवमे क्षयङ्करः ॥ ५९ ॥

यदि जन्मराशिपति और जन्म लग्नपति अस्तको प्राप्त होकर त्रिक नाम छठे आठवें भावमें स्थित होवें तौ जिस राशिपर स्थित होवें उस राशिके संख्याके

समान वर्षोंमें मृत्यु हो जाता है। यदि ध्रुवराशिका चंद्रमा सूर्य मंगलसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखा गया होवे तौ नवम वर्षमें मृत्यु करता है ॥५९॥

अन्तिमांशगताः खेटा अत्यल्पायुःप्रदा मताः ॥
स्वमित्रगृहतुंगस्थो बह्वायुः खेचरो भवेत् ॥ ६० ॥

यदि ग्रह अन्तके नवांशमें स्थित होवे तौ अतीव अल्पायु देनेवाले होते हैं और मित्रराशिमें वा स्वगृहमें वा उच्च राशिमें स्थित हुआ ग्रह बहुत आयु देनेवाला होता है ॥ ६० ॥

अत्र तनुविचारे पूर्वं रूपं कथितं तदाह वराहः ।

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा ॥
चंद्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ ६१ ॥

जन्मकालमें लग्नमें जो नवांश होवे उसका जो स्वामी है तिसके समान शरीर होता है, अथवा जन्मसमय सब ग्रहोंसे जो कि अधिक बली ग्रह होवे उसके समान शरीर होता है और चंद्रमा जिस नवांशमें स्थित होवे उसका जो स्वामी है उसके वर्णके समान वर्णवाला प्राणी होता है और शिर आदि संज्ञक लग्नराशियोंकर उत्पन्न हुए प्राणीके गात्र विभागको प्राप्त किये जाते हैं अर्थात् लग्न शिर और द्वितीय राशि मुख, तृतीय राशी छाती, चतुर्थ हृदय, पंचम पेट, षष्ठ कटि, सप्तम वस्ति, अष्टम शिश्न गुदा, नवम वृषण, दशम, ऊरु, एकादश जानु, द्वादश जंघा पाद । जिस अंगमें दीर्घ राशि वा दीर्घ राशिका पति स्थित होवे तौ उसी अंगको दीर्घ करता है और जिस अंगमें अल्प राशि वा अल्प राशिपति स्थित होवे तौ उस अंगको अल्प करता है ॥ ६१ ॥

दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञकौ शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययात् ॥ पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥ ६२ ॥

यदि दिनमें जन्म होवे तौ सूर्य पितासंज्ञक और शुक्र मातासंज्ञक होता है और रात्रिमें जन्म होवे तौ शनैश्चर पितासंज्ञक और चंद्रमा मातासंज्ञक होवे है । यदि दिनमें जन्म होवे तौ शनैश्चर पिताका भ्राता होता है और चंद्रमा माताकी बहिनि संज्ञक होता है और रात्रिमें जन्म होवे तौ सूर्य पिताका भ्रातृसंज्ञक और शुक्र माताकी भगिनी संज्ञक होता है । यदि पिता और पितृव्यसंज्ञक ग्रह विषम राशिमें स्थित होवे तौ पिता और पितृव्यको शुभकारक होता है और माता और मातृभगिनीसंज्ञक ग्रह सम राशिमें स्थित होवे तौ माता और मातृभगिनीको शुभकारक होता है ॥ ६२ ॥

रवींदुवीर्ये पितृमातृतुल्यो यत्रिंशकेऽकाऽस्य गुणो ग्रहस्य ॥
तनूनवांशेशसमस्तु मूर्त्या बलिष्ठखेटप्रतिमोऽपि वा स्यात् ६३

सूर्य चंद्रमा दोनोंके बलसे पिता माताके तुल्य पुरुष होता है अर्थात् सूर्यके बलसे पिताके और चंद्रमाके बलसे माताके तुल्य पुरुष होता है । सूर्य जिस ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित होवे उस ग्रहका गुण कहना चाहिये और लग्ननवांशपतिके समान मूर्त्ति कहनी चाहिये । अथवा बलवान् ग्रहके समान मूर्त्ति कहनी चाहिये ॥ ६३ ॥

चिह्नबोधार्थमंगन्यास उदयभास्करे ।

अथ शिरोक्षिककर्णनसाकपोलहनुवक्त्रमिति त्रिलवादिमे ॥
अधिभुजांशभुजद्वयकुक्ष्युरोजठरनाभ्यभिधास्त्रिलवे द्विके॥६४॥

यदि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण होवे तौ प्रथमभाव शिरसंज्ञक है, द्वितीय बारहवां भाव नेत्रसंज्ञक है, तृतीय एकादश भाव कर्णसंज्ञक हैं, चतुर्थ दशम भाव नासिकासंज्ञक हैं, पंचम नवम भाव कपोलसंज्ञक हैं, षष्ठ अष्टम भाव हनुसंज्ञक हैं, सप्तम भाव मुखसंज्ञक है । यदि लग्नमें द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ लग्नभाव कंठ और द्वितीय द्वादश भाव कंधा और तृतीय एकादश भाव भुजा, चतुर्थ दशम भाव कुक्षि, पंचम नवम भाव छाती, षष्ठ अष्टम भाव पेट और सप्तम भाव नाभिसंज्ञक होता है ॥ ६४ ॥

तदनुबस्तिरुपस्थगुदेऽथवा वृषणमूरुकजानुपदाः क्रमात् ॥
त्रिलवकत्रितयेऽथ तनोः पुरापरदलेऽगमुदक्षमदक्षिणम् ॥ ६५ ॥

यदि लग्नमें तृतीय द्रेष्काण होवे तौ लग्नभाव बस्ति (नल), द्वितीय द्वादश भाव शिश्न, तृतीय एकादश गुदा, चतुर्थ दशम वृषण (अंडकोश), पंचम नवम ऊरु, षष्ठ अष्टम जानु और सप्तम पदसंज्ञक है, तीनों प्रकारके द्रेष्काणोंमें लग्नसे लेकर पहिले छः स्थान दाक्षिण अंग होते हैं और पिछले छः स्थान वाम अंग होते हैं ॥ ६५ ॥

इह खलैर्व्रणमिष्टयुतेक्षिते मशकपूर्वकलक्षणमादिशेत् ॥
स्वभलवस्थिरगे सहजोऽन्यथा त्वपरथात्र रवौ खलु काष्ठजः ६६॥

जिस अंगमें पाप ग्रहका योग वा दृष्टि होवे उसमें घाव होता है और जो अंग शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे उसमें मशक आदिक चिह्नको कहे । यदि पाप ग्रह अपने राशि वा अपने नवांश वा स्थिर राशिमें स्थित होवें तौ स्वाभाविक घाव हो जाता है और शुभ ग्रह अपने राशि वा नवांश वा स्थिर राशिमें स्थित होवे तौ

स्वाभाविक तिल मशक आदि चिह्न होता है। इससे अन्य प्रकारकर होवे तौ अन्य प्रकार फल होता है। यदि इस रीतिके अनुसार सूर्य स्थित होवे तौ काष्ठसे किया हुआ घाव होता है ॥ ६६ ॥

शशिनि शृंगिजलोत्थभवो कुजेऽनलविशस्त्रभवः शनितोऽश्मजः ॥ पवनजश्च शुभैः शुभजोऽथ यत्पदगतास्त्रिखनाश्च बुधान्विताः ॥ ६७ ॥

भनियमाद्व्रणचिह्नकरा यदा रिपुखलो व्रणकृत्सशुभोंऽककृत् ॥ सशुभदृक्तिलकृच्च तथा लघौ लघुभगेंऽगमणुत्वपरे परः ॥ ६८ ॥

यदि इस प्रकार चंद्रमा स्थित होवे तौ शृंगवाले पशु वा जलसे घाव हो जाता है और इस प्रकार मंगल स्थित होवे तौ अग्नि वा शस्त्रसे घाव हो जाता है और यदि इस रीति अनुसार शनैश्चर स्थित होवें तौ पत्थरसे घाव हो जाता है वा पवनसे घाव हो जाता है और इस प्रकार शुभ ग्रह स्थित होवें तौ शुभ कर्मसे घाव हो जाता है। जिस स्थानमें तीन पाप ग्रह बुधसहित स्थित होवें तौ उसी अंगमें राशिके लघु दीर्घत्वके नियमसे लघु दीर्घ घाव करते हैं। यदि छठे स्थानमें पाप ग्रह होवे तौ घाव करता है। यदि वह षष्ठभावस्थ पाप ग्रह शुभ ग्रहके साथमें स्थित होवे तौ चिह्नमात्र करता है और शुभ ग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ तिल करता है। लघु ग्रह लघु राशिमें स्थित होवे तौ वहही अंग छोटा होता है और दीर्घ ग्रह दीर्घ राशिमें स्थित होवे तौ वहही अंग दीर्घ होता है ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

गुणाः ।

रविखरांमलवांशपतेर्गुणो भवति सत्त्वरजादिग्रहैः कृतः ॥ चंद्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्कौ यथाक्रमं सत्त्वरजस्तमांसि ॥६९॥

सूर्यके त्रिंशांशपतिका जो गुण है वहही सत्व रजादि गुण सूर्यादि ग्रहोंसे किया जाता है। चंद्रमा सूर्य बृहस्पति सत्वगुणवाले हैं। बुध शुक्र रजोगुणवाले हैं। मंगल शनैश्चर तमोगुणवाले हैं ॥ ६९ ॥

योगैश्चिह्नमाह जातकमुक्तावल्याम् ।

लग्नात्सप्तमगो भौमः शुक्रो वापि बृहस्पतिः ॥ चिह्नं मूर्ध्नि स्थितं ज्ञेयं जातकस्य न संशयः ॥ ७० ॥

यदि लग्नभावसे सप्तम भावमें स्थित मंगल वा शुक्र वा बृहस्पति होवे तौ उत्पन्न हुए प्राणीके मस्तकमें स्थित हुआ चिह्न जानना चाहिये ॥ ७० ॥

यदा शुक्रोऽथवा भौमो लग्नस्थोऽपि निशाकरः ॥
द्वादशाब्दे भवेत्तस्य मस्तके चिह्नदर्शनम् ॥ ७१ ॥

यदि शुक्र वा मंगल वा चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तौ बारह वर्षमें मस्तकमें चिह्न दर्शन होता है ॥ ७१ ॥

जायास्थाने यदा राहुर्मंत्री वापि तनुस्थितः ॥
वामे भुजे भवेच्चिह्नं तिलमाषादिकं स्फुटम् ॥ ७२ ॥

यदि सप्तम भावमें राहु स्थित होवे अथवा मूर्तिभावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ वाम भुजामें तिल मशकादि चिह्न होता है ॥ ७२ ॥

कुजे सौम्येऽथवा लग्ने राहुः षष्ठत्रिकोणगः ॥
लिंगे गुदे भवेच्चिह्नं तिलमाषादिकं स्फुटम् ॥ ७३ ॥

मंगल वा बुध लग्नमें स्थित होवे और राहु षष्ठ वा नवम पंचम भावमें स्थित होवे तौ लिंग वा गुदामें तिल मशकादि चिह होता है ॥ ७३ ॥

त्रिकोणेऽपि भवेच्छुक्रो जीवसौम्यौ मृतिस्थितौ ॥
पातालहिबुके मंदे कुक्षौ चिह्नं समादिशेत् ॥ ७४ ॥

नवम पंचम भावमें शुक्र होवे और बृहस्पति बुध अष्टम भावमें स्थित होवें और चतुर्थ भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ कुक्षिमें चिह्नको कहे ॥ ७४ ॥

धर्मस्थाने यदा शुक्रे त्वष्टमेऽपि दिवाकरे ॥
कर्मगौ राहुमंदौ चेन्नाभौ चिह्नं समादिशेत् ॥ ७५ ॥

यदि शुक्र नवम भावमें स्थित होवे और सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे और राहु शनैश्चर दशम भावमें स्थित होवें तौ नाभिमें चिह्नको कहे ॥ ७५ ॥

व्ययस्थाने यदा मंत्री बुधोऽपि त्रिषडायगः ॥
सहजस्थो यदा शुक्रो हृदि चिह्नं समादिशेत् ॥ ७६ ॥

यदि बारहवें भावमें बृहस्पति और बुध तृतीय षष्ठ एकादश भावमें स्थित होवें और शुक्र तृतीय भावमें स्थित होवे तौ हृदयमें चिह्नको कहे ॥ ७६ ॥

सहजस्थो यदा शुक्रो मंत्री वा त्रिषडायगः ॥
धर्मस्थाने निशानाथे गुदे गोलकमादिशेत् ॥ ७७ ॥

यदि शुक्र तृतीय भावमें स्थित होवे वा बृहस्पति तृतीय षष्ठ एकादश भावमें स्थित होवे और नवम भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ गुदामें गोलक चिह्नको कहे ॥ ७७ ॥

यवनः ।

धर्नाश्रिते भूतनये सुखेऽथवा सौरे व्ययस्थेऽरिनवांशसंस्थे ॥
उन्मत्तरूपोऽत्र भवेन्मनुष्यः सर्वत्र निंद्यः कृतधिङ्मतिश्च ॥७८॥

यदि मंगल द्वितीय स्थानमें होवे वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे और शुक्रके नवांशमें स्थित होकर शनैश्चर बारहवें भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य उन्मत्तरूप और सब जगह निन्दाको प्राप्त होनेवाला और धिक्कृत बुद्धिवाला होता है ॥ ७८ ॥

वर्णार्चितांगः सततं सुरूपः प्रतापयुक्तः पिशुनस्वभावः ॥
शनैश्चरे मृत्युगते व्ययस्थे भौमे भवेत्पापरतो मनुष्यः ॥७९॥

यदि शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे और मंगल बारहवें भावमें स्थित होवे तौ वर्णसे सराहने योग्य अंगवाला और सुरूप प्रतापी तथा निन्दकस्वभाव और पापकर्मकर्त्ता मनुष्य होता है ॥ ७९ ॥

सौम्ये विलग्ने शुभनेत्रवक्त्रः शुभांसवक्षाः शुभजे नवांशे ॥
चंद्रस्य होरा शुभबाहुदात्री त्रिंशांशके सौम्यभवे सुशीलः ॥८०॥

यदि लग्न शुभ राशि वा शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ मनुष्य सुन्दर नेत्रमुखवाला होता है और लग्ननवांश शुभ राशि और शुभ ग्रहसे युक्त होवे तो सुन्दर कंधा और छातीवाला होता है। यदि लग्नमें चंद्रमाकी होरा होवे तौ शुभ भुजा देनेवाली होवे है और लग्नत्रिंशांश शुभराशिसंबंधी होवे तौ अच्छे शीलस्वभाववाला होता है ॥ ८० ॥

सूर्यांशके सौम्यसमुद्भवे च नरो भवेच्छोभनजानुपार्श्वः ॥
लग्नं शुभालोकितमिष्टवीर्यमोजो विधत्ते सततं नराणाम् ॥८१॥

यदि सूर्यका नवांश शुभ राशिसंबंधी होवे तौ पुरुष सुन्दर जानु पार्श्ववाला होता है। यदि लग्न शुभ ग्रहसे देखा होवे तौ अच्छे बल पराक्रमको मनुष्योंके लिये देता है ॥ ८१ ॥

पृच्छायां लग्नाज्जातिर्ज्ञेया उक्तं च ।

लग्नपो वा लग्नगो वा यादृशो हि भवेद्ग्रहः ॥
सवर्णस्तत्समाचारो मानवो भविता भुवि ॥ ८२ ॥

लग्नस्वामी वा लग्नमें स्थित हुआ ग्रह जिस प्रकारका होवे उसीके समान वर्ण और उसीके समान आचारवाला मनुष्य होता है ॥ ८२ ॥

पृच्छायामेव लग्नाद्वयःप्रमाणं वाच्यम्, उक्तं च ।

पृच्छाकाले यथा वाच्यं जन्मकालेऽपि तत्तथा ॥
यथा लग्नगते भौमे स वृद्धोऽपि युवाथवा ॥ ८३ ॥

प्रश्नकालमें जिस प्रकार कहना चाहिये तिसी प्रकार जन्मकालमें भी कहना चाहिये । जैसे मंगल लग्नमें स्थित होवे तौ जन्मा हुआ प्राणी बूढा होकर भी जवानके समान रहता है ॥ ८३ ॥

तथा लग्नगते सौम्ये युवा बालायते किल ॥
शशिशुक्रौ यदा लग्ने नातिवृद्धो न वै युवा ॥ ८४ ॥

तिसी प्रकार बुध लग्नमें स्थित होवे तौ जन्मा हुआ प्राणी जवान होकर बालकके समान रहता है और चंद्रमा शुक्र लग्नमें स्थित होवें तौ जन्मा हुआ प्राणी न अति बूढेके समान रहता है और न युवाके समान रहता है ॥ ८४ ॥

स्थविरौ राहुमार्त्तण्डौ तथा जीवशनैश्चरौ ॥
स्थविरौ सबलौ यस्य ग्रहौ स्यातां विलग्नगौ ॥
प्रकृत्या स भवेद्वृद्धो मान्यः सर्वजनेषु च ॥ ८५ ॥

राहु सूर्य बृहस्पति शनैश्चर यह ग्रह वृद्ध हैं । जिसके बलवान् दो वृद्ध ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ वह उत्पन्न हुआ प्राणी स्वभावसे वृद्ध ही रहता है और सब जनोंमें मान पाने योग्य होता है ॥ ८५ ॥

लग्नादायुः ।

सौम्ये लग्नपतौ वापि सौम्यैवा लग्नगैस्तदा ॥
चिरायुर्जायते मर्त्यो वीतक्लेशः सुखी सदा ॥ ८६ ॥

यदि लग्नपति शुभग्रह होवे अथवा शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवे तौ वह पुरुष बडे आयुवाला और क्लेशवर्जित और सदा सुखी रहता है ॥ ८६ ॥

क्रूरे लग्नपतौ नष्टे क्रूरा लग्नगता ग्रहाः ॥
अल्पायुषं प्रकुर्वंति नात्र कार्या विचारणा ॥ ८७ ॥

यदि लग्नपति पाप ग्रह होकर निर्बल होवे और पाप ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ उत्पन्न हुए प्राणीको अल्पायु करते हैं इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ॥ ८७ ॥

सुखदुःखान्याह ग्रहयोगवशादुदयभास्करात् ।

तनुपतिः सबलोऽष्टषडंत्यगस्तनुसुखं न षडंत्यमृतीट्स्वभे ॥
तनुसुखं न यदा विबलेऽगपे वपुषि पापखगे च रुजाधिकः ॥ ८८ ॥

यदि लग्नपति बलवान् होकर आठवें छठे बारहवें भावमें स्थित होवे तौ शरीरका सुख नहीं होता है और छठे आठवें बारहवें भावका स्वामी अपनेही भावमें स्थित होवे तौ शरीरसुख नहीं होता है। यदि लग्नपति निर्बल होवे और लग्नमें पाप ग्रह स्थित होवे तौ रोगसे युक्त पुरुष रहे ॥ ८८ ॥

तनुपतिः स्वगृहे बुधजीवभार्गवयुतश्च चतुष्टयगोऽथवा ॥ भवति तुंगगृहे यदि सौम्यभे हितदृशा सुखराज्ययशोऽर्थभाक् ॥ ८९ ॥

यदि लग्नपति लग्नमें हो अथवा बुध बृहस्पति शुक्रसहित लग्नपति चतुष्टय (१ । ४ । ७ । १०) भावमें स्थित होवे वा लग्नपति उच्च राशिमें वा शुभ ग्रहके राशिमें शुभ ग्रह वा मित्रग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ सुख राज्य यश धनके सेवन करनेवाला होता है ॥ ८९ ॥

सुरुचिरः सुकृतिः शुचिसत्यवान् यदि विधुश्च क्रिये कलशे शनिः ॥ धनुषि भानुरदेवगुरुर्मृगे निजभुजार्जितवित्तयशास्तदा ॥ ९० ॥

यदि चंद्रमा मेषराशिपर और शनैश्चर कुंभराशिपर और सूर्य धनुराशिपर और शुक्र मकरराशिपर स्थित होवे तौ अपनी भुजाओंसे पैदा किये धन और कीर्त्तिवाला तथा मूर्त्तिमान् और अच्छे कर्मवाला तथा पवित्र और सत्य बोलनेवाला होता है ॥ ९० ॥

यदि समस्तचतुष्टयगाः खला धनगताश्च परे कुलहृत्स्वहृत् ॥ तनुगतो यदि वा सुतगो गुरुर्दशविधुः सुमतिर्नृपतिर्दमी ॥९१॥

यदि पाप ग्रह समस्त चारों केन्द्रभावोंमें स्थित होवें और शेष पाप ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ जन्मा हुआ प्राणी कुल और धनके हरनेवाला होता है। यदि बृहस्पति लग्नमें वा पंचम भावमें स्थित होवे और दशम भावमें चन्द्रमा स्थित होवे तौ इन्द्रियजित् बुद्धिमान् राजा होता है ॥ ९१ ॥

क्रियगतो भृगुजो यदि वांगना तुलगुरुश्च बुधः शुभवीक्षितः ॥ अलिगतश्चतुरः प्रभटः सुधीः कुलपतिर्मुदितः समुदारदः ॥ ९२ ॥

यदि शुक्र मेषराशिपर और कन्या वा तुलाराशिपर बृहस्पति स्थित होवे और बुध वृश्चिकराशिपर स्थित हुआ शुभ ग्रहोंकर देखा गया होवे तौ बडा शूरवीर चतुर पंडित और कुलमुख्य तथा बडा उदारचित्त और प्रसन्न रहनेवाला होता है ॥९२॥

यदि रविर्मदने च मृतौ शनिः सुरगुरुश्च धने परभृत्यकः ॥
रविविधू नवमे व्ययगे त्वगौ नृपसमीपचरः सततं भवेत् ॥९३॥

यदि सूर्य सप्तम भावपर और शनैश्चर अष्टम भावपर स्थित होवे और बृहस्पति द्वितीय भावमें होवे तौ पराई चाकरी करनेवाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों नवम भावमें स्थित होवें और राहु बारहवें भावमें स्थित होवे तौ पुरुष राजाके समीप रहनेवाला होता है ॥ ९३ ॥

गुरुरवी मृतिभे रविजः खभे खशिखिवर्षमितौ च नृपार्थभाक् ॥
कुजरवी रिपुभे कुटिले शनौ हिमकरे च सुखे नृपदर्शकः ॥९४॥

यदि बृहस्पति सूर्य अष्टम भावमें और शनैश्चर दशम भावमें स्थित होवे तौ तीस वर्षमें राजधनके प्राप्त करनेवाला होता है। यदि मंगल सूर्य छठे भावमें और अष्टम भावमें शनैश्चर और चंद्रमा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष राजाके दर्शन करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

धनेशनौ शशिभे गुरुचंद्रयोर्दशगयोश्च भवेत्क्रयविक्रयी ॥
निजगृहोच्चसुरद्विषि केंद्रषट्व्ययनवात्मजगे बहुदः सुखी ॥९५॥

यदि शनैश्चर द्वितीय भावमें स्थित होवे और कर्कराशिपर स्थित होकर बृहस्पति चन्द्रमा दशम भावमें स्थित होवें तौ खरीदने बेचनेका व्यापार करता है। यदि अपने राशि वा उच्च राशिपर स्थित हुआ शुक्र केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) वा छठे वा बारहवें वा नवम वा पंचम भावमें स्थित होवे तौ बहुत दान करनेवाला तथा सुखी होता है ॥ ९५ ॥

शशिनि सप्तमकोषगतेऽर्कजे वपुषि शूरतरो बहुपुत्रवान् ॥
गुरुरिनव्ययगो वरपूजितः परभटश्च कुले कुलरंध्रकृत् ॥९६॥

यदि चन्द्रमा सप्तम वा द्वितीय भावमें स्थित होवे और शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे तौ अतीव शूरवीर और बहुतसे पुत्रोंवाला होता है। यदि बृहस्पति सूर्यसे बारहवें होवे तौ श्रेष्ठ जनोंसे सत्कृत शूरवीर और कुलछिद्र करनेवाला होताहै॥९६॥

सुरगुरुर्मृतिगो भृगुजोऽथवा परभटो गजराजविपातकृत् ॥
अगुगुरू भवने शनिरष्टमे यदि भवेत्सुभटो बहुयुद्धवित् ॥९७॥

बृहस्पति वा शुक्र अष्टम भावमें स्थित होवे तौ बडा शूरवीर संग्राममें गजराजोंके गिरानेवाला होता है। यदि राहु बृहस्पति चतुर्थ भावमें और शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ बडा शूरवीर और बहुत युद्ध करनेवाला होता है ॥ ९७ ॥

यदि गुरुर्मदनव्ययगो रविर्नवमगः कुसुतो मृतिगः सुधीः ॥
यदि च भानुगुरू सुतधामगौ भवति शास्त्रपटुर्धनधान्यवान्॥९८॥

यादि बृहस्पति सप्तम वा द्वादश भावमें और सूर्य नवम भावमें और मंगल अष्टम भावमें स्थित होवे तौ बडा पंडित होता है। यादि सूर्य बृहस्पति पंचम भावमें स्थित होवें तौ शास्त्रमें चतुर और धनधान्यवाला होता है ॥ ९८ ॥

यदि चतुष्टयगो भृगुजो गुरुर्विदपि वा सधनः श्रुतिपारगः ॥
मदनगे हिमगौ ससिते गुरौ दशमधर्मगते विदि लेखकः ॥९९॥

यादि केन्द्रभावमें बृहस्पति वा शुक्र वा बुध स्थित होवे तौ वेदपारगामी और धनी होता है। यादि चंद्रमा सप्तम भावमें और शुक्रसहित बृहस्पति दशम वा नवम भावमें स्थित होवे अथवा शुक्रसहित बुध दशम वा नवम भावमें स्थित होवे तौ लिखनेवाला होता है ॥ ९९ ॥

विधुविदोः शनिभास्करयोर्यदेज्यसितयोर्व्यधजो बहुलोभकः ॥
यदि शनिर्मदनेऽवनिजस्त्वगुर्मृतिनवान्त्यसुखे गुरुतल्पगः॥१००॥

यादि चन्द्रमा बुधका वा शनैश्चर सूर्यका वा बृहस्पति शुक्रका वेध होवे तौ बहुत लोभी होता है। यादि शनैश्चर सप्तम भावमें और मंगल और राहु अष्टम नवम द्वादश चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ गुरुशय्यागमी होता है ॥ १०० ॥

विधुमतो द्वितये तपनस्ततः शनिरतोऽवनिजो यदि तस्करः ॥ बुधकुजौ सबलौ रिपुभावगौ यदि विकृत्यकरः किल तस्करः ॥ १०१ ॥

यादि चंद्रमासे द्वितीय भावमें सूर्य वा शनैश्चर वा मंगल होवे तौ चौर होता है। यादि बलवान् होकर बुध मंगल दोनों षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ बुरे कर्म करनेवाला चौर होता है ॥ १०१ ॥

मृगकुजश्च कुलीरशनिर्यदा भवति दस्युविधेरसिखंडितः ॥
मिथुनमीनधनुःकलशे खला अशनितो मरणाय कुचेष्टितैः १०२॥

यादि मकरपर मंगल और कर्कपर शनैश्चर होवे तौ चौरविधिसे तलवारकर कट जाता है। यादि मिथुन मीन धनु कुंभ इन राशियोंपर पाप ग्रह होवे तौ बुरे आचरणसे वज्रद्वारा मृत्युके वास्ते कल्पित होता है ॥ १०२ ॥

वपुपि वित्रिलवेति चतुष्टये भृगुसुते नृपजोऽप्यथ नीचकृत् ॥
मदकुजःखंविधुर्द्वितये रवेर्यदि शनिश्च तदोनतनुर्नरः ॥ १०३ ॥

यदि लग्नमें बुधका द्रेष्काण होवे और शुक्र केन्द्रको उल्लंघन करके वर्त्ते तौ राजा होकरभी नीच कर्मको करनेवाला होता है। यदि सूर्यसे सप्तम भावमें मंगल और दशम भावमें चंद्रमा और द्वितीय भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ पुरुष हीनशरीर होता है ॥ १०३ ॥

यदि परस्परनंदलवोपगौ रविविधू मिलितौ च दरिद्रकः ॥
यदि खलांतरगो विधुरर्कजः स्मरगतो विकलः क्षयगुल्मयोः १०४

यदि परस्पर नवांशमें स्थित होकर सूर्य चंद्रमा दोनों एक स्थानमें मिलकर स्थित होवें अर्थात् सूर्यके नवांशमें चंद्रमा और चंद्रमाके नवांशमें सूर्य स्थित होवे और दोनों एक जगह स्थित होवें तौ दरिद्रक होता है। यदि चंद्रमा पाप ग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे और शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ क्षय और गुल्मरोगसे विकल शरीरवाला होता है ॥ १०४ ॥

प्रबलमंदकुजार्कनिशाचरास्त्रिकधनेऽक्षिरुजोऽनिलकोपतः ॥
त्रिसुतलाभखला न शुभेक्षिताः श्रुतिहराःस्मरगा अशुभग्रहाः १०५
कुरदनो यदि वा रदनच्छदक्षतधरो नियत हि तदा भवेत् ॥ यदि
कुजो भृगुजोऽपिधने व्यये श्रुतिहरोऽत्र विधुर्यदि दृग्धरः॥१०६॥

यदि बलवान् होकर शनैश्चर मंगल सूर्य चंद्रमा यह त्रिक नाम षष्ठ अष्टम द्वादश और धन नाम द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ वातप्रकोपसे नेत्ररोगी होता है। यदि पाप ग्रह तृतीय पंचम एकादश इन भावोंमें स्थित होवें और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखे गये होवें तौ कर्णके नाश करनेवाले होते हैं और वहही पाप ग्रह सप्तम भावमें स्थित होकर शुभ ग्रहकर नहीं देखे गये होवें तौ बुरे दांतोंवाला अथवा होठोंके घावसे युक्त रहनेवाला होता है। यदि मंगल वा शुक्र द्वितीय भाव वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ कर्णके हरनेवाला होता है। यदि द्वितीय वा द्वादश भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ नेत्रदोषको देता है ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

यदि शनिः कुजभे रविभेऽपि वा खलयुतो भुजदंडविखंडकृत् ॥
यदि शनिः सभृगू रिपुभे गतो रिपुदृशैकभुजापदखंडदः॥१०७॥

यदि शनैश्चर मंगलके राशिपर वा सूर्यके राशिपर पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ भुजदण्डके खण्ड करनेवाला होता है। यदि शनैश्चर शुक्रसहित छठे भावमें स्थित होवे और शत्रुग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ एक भुजा और पांवके खण्डन करनेवाला होता है ॥ १०७ ॥

यदि तमोऽर्ककुजेंदवभिधामृतौ सकलहस्तपदप्रतिखंडितः ॥
यदि तमः शनिभे रविभे शशी भवति शीर्षहतिः परशुक्षते॥१०८॥

यदि राहु सूर्य मंगल चंद्रमा अष्टम भावमें स्थित होवें तौ सकल हाथ पावोंसे खंडित होता है । यदि राहु शनैश्चरके राशिपर स्थित होवे और चंद्रमा सूर्यके राशिपर स्थित होवे तौ फरसाके प्रहारसे शिरका घात होता है ॥ १०८ ॥

निधनभानुविधू च शिरश्छिदे यदि खलत्रययुग्रिपुभे विधुः ॥
विशुभदृक्च विदृग्यदि कर्कटे शुभदृशा रहितौ शनिशीतगू१०९॥

यदि अष्टम भावमें सूर्य चंद्रमा स्थित होवें तौ शिरच्छेदके वास्ते समर्थ होते हैं । यदि चंद्रमा तीन पापग्रहोंसे युक्त होकर छठे भावमें स्थित होवे और पाप ग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ नेत्रहीन होता है । यदि शनैश्चर चंद्रमा कर्कराशिपर स्थित हुए शुभ ग्रहकी दृष्टिसे वर्जित होवें तौ नेत्रहीन होता है ॥ १०९ ॥

यदि विधुः खलभेऽर्ककुजेक्षिते द्विजहरः सशनिर्यदि गोघ्नकः ॥
यदि खगत्रितयं त्रिपदस्थितं भवति शूल इति दृढशूलकृत् ११०॥

यदि चंद्रमा पाप ग्रहके राशिपर सूर्य मंगलकर देखा जावे तौ दांतोंके हरनेवाला होता है और यदि शनैश्चरसहित चंद्रमा पापग्रहके राशिमें स्थित होवे और सूर्य मंगलकर देखा गया होवे तौ वाणीके हरनेवाला होता है । यदि तीन ग्रह तृतीय भावमें स्थित होवें तौ दृढशूलकर्त्ता होते हैं ॥ ११० ॥

अन्यच्च ।

कुजे स्मरे भाग्यगते दिनेशे सितेऽष्टमेऽल्पायुरिह प्रजातः ॥
धने सितेऽब्जे तनुगे ज्ञरव्योर्व्यये सुते बांधवबन्धभाक् स्यात्१११

यदि सप्तम भावमें मंगल होवे और सूर्य नवम भावमें स्थित होवे और शुक्र अष्टम भावमें स्थित होवे तौ जन्मा हुआ प्राणी अल्प आयुवाला होता है । यदि द्वितीय भावमें शुक्र और चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे और बुध सूर्यकी स्थिति द्वादश और पंचम भावमें होवे तौ बांधवोंके बंधनवाला होता है ॥ १११ ॥

त्रिखलयुग्रविजो विसितांगिरा प्रकुरुते लघुतां हि शुभायुषोः ॥
यदि तनौ भृगुजोऽप्यथवा शनिर्भवति सिंहगतोऽक्षिहरस्तदा११२

यदि शनैश्चर तीन पाप ग्रहोंसे युक्त होवे और शुक्र और बृहस्पतिसे वर्जित होवे तौ पुण्य और आयुकी लघुता करता है । यदि लग्नमें सिंहराशिका शुक्र वा शनैश्चर होवे तौ नेत्रके हरनेवाला होता है ॥ ११२ ॥

व्ययरविर्यदि दक्षिणनेत्रहा हिमकरो व्ययगस्त्वपराक्षिहृत् ॥
सुररिपुर्वपुषींदुररौ भवेद्यदि मृगीमुखरोगनिपीडितः ॥ ११३ ॥

यदि बारहवें भावमें सूर्य स्थित होवे तौ दक्षिण नेत्र हरता है और यदि चंद्रमा बारहवें भावमें स्थित होवे तौ वाम नेत्र हरनेवाला होता है। यदि शुक्र लग्नमें और चंद्रमा छठे भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य मृगी आदि रोगसे पीडित होता है ११३॥

खमदनव्ययगा यदि पामरा बहुलकष्टकराश्च विधुर्मृतौ ॥
अहिकुजार्कयुतो रविजो यदा रुधिरतापकरःसदनीक्षितः॥११४॥

यदि चंद्रमा अष्टम भावमें स्थित होवे और पाप ग्रह दशम सप्तम बारहवें भावमें स्थित होवें तौ बहुत कष्ट करनेवाले होते हैं। शनैश्चर यदि राहु मंगल सूर्यसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखा गया होवे तौ रुधिरताप करनेवाला होता है ११४

खलतनौ तनुपे च खलार्दिते दृढतरामपवातनिपीडितः ॥
रविविधू भवभे तनुगे त्वगौ विकुनखाब्दमितौहि जलोदरी॥११५

यदि पाप ग्रहसे युक्त लग्न होवे और लग्नपति पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ अतीव दृढ कष्ट और वातसे पीडित रहता है। यदि सूर्य चंद्रमा एकादश भावमें स्थित होवें और राहु लग्नमें स्थित होवे तौ इक्कीस वर्षमें जलोदररोगवाला होता है११५॥

गुरुकवी कुजभे व्ययगे विधौ त्रितयगे च कुजे सितकुष्ठवान् ॥
अगुकुजौ सुखगौ सविधू शरद्वयसमासु च मंडलकुष्ठदौ ॥११६॥

यदि बृहस्पति शुक्र दोनों मंगलके राशिपर स्थित होवें और चंद्रमा द्वादश भावमें स्थित होवे और मंगल तृतीय भावमें स्थित होवे तौ श्वेतकुष्ठवाला होता है। यदि चंद्रमासहित राहु मंगल दोनों चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ पच्चीस वर्षमें मंडलकुष्ठके देनेवाले होते हैं ॥ ११६ ॥

रविकुजौ मदने तनुगे विधौ चिपिटिकादिककष्टसमन्वितः ॥
स्मरगृहेऽर्कबुधेंद्वभिधाः सुखे तदपरा नृपवत्सरदद्रुदाः ॥११७॥

यदि सूर्य मंगल दोनों सप्तम भावमें स्थित होवें और चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तौ फोडा आदि कष्टसे युक्त रहे। यदि सप्तम भावमें सूर्य बुध चंद्रमा स्थित होवें और तिनसे शेष ग्रह चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ सोलह वर्षमें दद्रुरोगको देते हैं ॥ ११७ ॥

सगुरुशुक्रबुधा निधने स्थिता घनमितेऽब्दगणे त्रिमलार्त्तिदाः ॥
गुरुशनी हि मृतौ हिमगू रिपौ बुधसितौ नवमे तनुचित्रता ११८॥

यदि बृहस्पति शुक्र बुध अष्टम भावमें स्थित होवें तौ इक्कीस वर्षमें त्रिदोष-रोगके देनेवाले होते हैं। यदि बृहस्पति शनैश्चर दोनों अष्टम भावमें स्थित होवें और चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे और बुध शुक्र नवम भावमें होवें तौ शरीरमें चित्रता होवे है ॥ ११८ ॥

गुरुररौ शनिरष्टमगो रविर्यदि च कर्किणि भौमदृशाग्निभीः॥
यदि विधुःस्मरगःसहजे कुजो धृतिसमासु तरोःपतनं भवेत् ११९॥

यदि बृहस्पति षष्ठ भावमें स्थित होवे और शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे और सूर्य कर्कराशिपर स्थित होवे और मंगलकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ अग्निभय होता है। यदि चंद्रमा सप्तम भावमें स्थित होवे और तृतीय भावमें मंगल स्थित होवे तौ अठारह वर्षमें वृक्षसे पतन होता है ॥ ११९ ॥

अशुभभे हि गुरौ शुभभे भृगौ नगमिते शरदि स्फुटकोद्गमः ॥
कविभसोत्थगुरौ खलवक्रता यदि शिलाहतिरुद्रवत्सरे ॥१२०॥

यदि बृहस्पति अशुभ ग्रहके राशिपर स्थित होवे और शुक्र शुभराशिपर स्थित होवे तौ सातवें वर्षमें फोडाकी उत्पत्ति होवे है । शुक्रके राशिका तृतीय भावमें बृहस्पति होवे और पाप ग्रहकी वक्रता होवे अर्थात् कोई पाप ग्रह वक्रगति होवे तौ ग्यारहवें वर्षमें पत्थरका प्रहार होवे ॥ १२० ॥

यदि तनौ ग्रसितेंदुरसद्ग्रहा नवधिगो हि पिशाचजनुःप्रदाः ॥
यदि रविर्विधुवन्नयनापहो यदि गुरुस्तनुगो मदने कुजः॥१२१॥
मदरतो यदि लग्नगतो गुरुः स्मरशनिर्बहुवातविकारदः ॥
वृषकुलीरमृगालिषु कोणगेष्वशुभदृष्टियुतेषु च कुष्ठवान् ॥१२२॥

यदि लग्नमें ग्रहणकालीन चंद्रमा होवे और पाप ग्रह नवम पंचम भावमें स्थित होवें तो पिशाचजन्मके देनेवाले होते हैं। यदि चन्द्रमाके समान ग्रहणकालीन सूर्य लग्नमें स्थित होवे और पाप ग्रह नवम पंचम भावमें स्थित होवे तौ यह योग नेत्रके दूर करनेवाला होता है। यदि बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे और मंगल सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष मदिराके पान करनेमें प्रीति करनेवाला होता है यदि बृहस्पति लग्नमें और शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे

वातविकारको देता है । यदि नवम पंचम भावमें वृष कर्क मकर वृश्चिक राशि स्थित होवें और पाप ग्रहसे दृष्ट वा युक्त होवें तो कुष्ठरोगवाला होता है ॥१२१॥ १२२ ॥

पापांतराले च भवेत्कलावान् किलार्कसूनुर्मदनालयस्थः ॥
कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥ १२३ ॥

यदि चंद्रमा पाप ग्रहोंके मध्यमें विराजमान होवे और शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका शरीर श्वास क्षय प्लीहा गुल्म रोगोंसे विकल रहता है ॥ १२३ ॥

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्त्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः ॥
नरस्तपस्वी विजितेंद्रियश्च स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः॥१२४॥

यदि बृहस्पति पंचम भावमें स्थित होवे वा लग्न भावमें स्थित होवे और चंद्रमा दशम भावमें स्थित होवे तौ वह नर तपस्या करनेवाला तथा जितेन्द्रिय और बुद्धिमान् राजसीय स्वभाववाला होता है ॥ १२४ ॥

एतेहि योगाः कथिता मुनींद्रैः सांद्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ॥
कल्प्यं फलं तस्य विपाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन।१२५।

यह योग मुनीन्द्रोंने कहे हैं । योगकारक ग्रहोंमेंसे जिस ग्रहका अधिक बल होवे उसी ग्रहके दशाकालमें भले बुरे योगोंका फल जिसकी ज्योतिषशास्त्रमें निर्मल बुद्धि होवे उसको विचारना चाहिये ॥ १२५ ॥

तनुभावे मेषादिराशिफलमाह वृद्धयवनः ।

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्यः सदाल्पबुद्धिः परनिर्जितश्च ॥
पित्ताधिकः सर्वजनोपसेव्यः सर्वाशनो बुद्धिविचक्षणश्च ॥१२६॥

मेष लग्नमें उत्पन्न हुआ मनुष्य लाल शरीर और अल्पबुद्धि तथा शत्रुगणोंसे जीता हुआ तथा पित्तकी अधिकतासे युक्त और सब जनोंका प्रिय और सर्वभक्षी तथा बुद्धिविचक्षण होता है ॥ १२६ ॥

वृषोदये श्वेततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधपरः कृतघ्नः ॥
समंदबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकः सदैव ॥ १२७ ॥

वृष लग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य श्वेतशरीर तथा कफाधिक और क्रोधी तथा कृतघ्न और मंदबुद्धि तथा स्थिरतायुक्त और दूसरोंसे पराजयको प्राप्त होनेवाला तथा सदैव स्त्रीका चाकर रहता है ॥ १२७ ॥

तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडितांगः ॥
शश्वत्प्रसन्नः प्रियवाग्विनीतः सुमूर्द्धजो गीतविचक्षणश्च ॥१२८॥

मिथुन लग्नमें पुरुष अतीव गौर वर्ण, स्त्रीका अनुरागी, राजासे कष्ट पानेवाला, प्रसन्नचित्त, प्रिय वचन बोलनेवाला तथा नम्र रहनेवाला, अच्छे केशोंसे युक्त और गान करनेमें चतुर होता है ॥ १२८ ॥

कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्पतनुः प्रगल्भः ॥
जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिःशुचिःक्षमी धर्मरतोऽतिसेव्यः ॥१२९॥

कर्क लग्नमें मनुष्य गौर वर्ण, पित्ताधिक, समर्थ शरीरवाला, बोलनेमें बडा प्रगल्भ, तथा जलक्रीडामें प्रीति रखनेवाला, अतीव बुद्धिमान्, पवित्र और क्षमायुक्त तथा धर्मात्मा होता है ॥ १२९ ॥

सिंहोदये पांडुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडितांगः ॥
प्रियामिषोऽरण्यचरः सुतीक्ष्णः शूरः प्रगल्भः सुतरां निरीहः १३०

सिंह लग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य कुछ पीत मिला श्वेतवर्ण शरीरसे युक्त, पित्त-वातसे पीडित रहनेवाला और प्रियामिष नाम मांसभक्षणमें प्रीति रखनेवाला तथा वनमें निवास करनेवाला तथा अतीव तीक्ष्णप्रकृति, शूरवीर, बोलनेमें बडा प्रगल्भ और निरन्तर निश्चेष्ट रहता है ॥ १३० ॥

कन्याविलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः शुभकांतियुक्तः ॥
श्लेष्माऽप्रजः स्त्रीविजितोतिभीरुर्मायाधिकः कामकदर्थितांगः १३१

कन्या लग्नमें जन्मा हुआ प्राणी कफपित्तयुक्त, शुभकान्तिसंपन्न, कफप्रकृति, संतानहीन, स्त्रीके वशमें रहनेवाला, बडा डरनेवाला, मायावी, कामदेवकर अतीव दुःखी होता है ॥ १३१ ॥

तुलाविलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्माधिकः सत्यपरः सदैव ॥
पुण्यप्रियः पार्थिवमात्रभक्तः सुरार्चने तत्पर एव कल्पः॥ १३२॥

तुलालग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य कफाधिक तथा सत्य भाषणकर्ता तथा पुण्यप्रिय और राजामात्रका भक्त और देवताओंके पूजन करनेमें तत्पर रहता है ॥ १३२ ॥

लग्नेऽष्टमे कोपपरो न सत्यो भवेन्मनुष्यो नृपपूजितांगः ॥
गुणान्वितःशास्त्रकथानुरक्तःप्रमर्दकःशत्रुगणस्य नित्यम् ॥१३३॥

वृश्चिकलग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य क्रोधशील, असत्यभाषी तथा राजासे सत्कार पानेवाला और गुणी और शास्त्रकथामें निपुण और शत्रुगणके मथनेवाला होता है ॥ १३३ ॥

धनोदये राजयुतो मनुष्यः काय प्रसक्तो द्विजदेवभक्तः ॥
तुरंगयुक्तः सुहृदैः प्रयुक्तस्तुरंगजंघश्च भवेत्सदैव ॥ १३४ ॥

धनुलग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य राजपुरुषोंसे युक्त और कार्यमें आसक्त और द्विजदेवताओंका भक्त और घोडाओंसे युक्त सुहृद्गणोंसे युक्त तथा घोडाओंके जंघाके समान जंघावाला होता है ॥ १३४ ॥

मृगोदये तोपरतः सुवृत्तो भीरुः सदा पुण्यविधौ परश्च ॥
श्लेष्मानिलाभ्यां परिपीडितांगः सुदीर्घगात्रः परवंचकश्च॥१३५॥

मकरलग्नमें जन्मा हुआ प्राणी संतोषी, अच्छे आचारवाला, भयभीत, पुण्यकर्ममें तत्पर, कफवातसे पीडित, बडे शरीरवाला तथा दूसरोंके ठगनेवाला होता है ॥१३५॥

घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोत्सुकः ॥
सुहृत्सुगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥ १३६ ॥

कुंभलग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य अच्छी स्थिरतासे युक्त, वाताधिक, जलके सेवनमें उत्साह रखनेवाला, सुन्दरहृदय और सुन्दर शरीरवाला, स्त्रियोंका प्रिय तथा शिष्टजनोंका अनुरागी और सब जनोंका प्रिय होता है ॥ १३६ ॥

मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतः सुरतानुकूलः ॥
सुपंडितः स्त्रीदयितः प्रचंडः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च १३७

मीनलग्नमें जन्मा हुआ मनुष्य जलमें प्रीति रखनेवाला और अतीव नम्र रहनेवाला, भोगविलासानुरागी तथा अच्छा पंडित तथा स्त्रियोंका प्रिय तथा अतीव प्रचण्ड और पित्ताधिक तथा कीर्तिसंपन्न होता है ॥ १३७ ॥

इति राशिफलम् ।

तनुभावस्वामिनो द्वादशभावेषु फलं तत्र वृद्धयवनः ।

लग्नाधिपतिर्लग्ने नीरोगं दीर्घजीवितं कुरुते ॥
बलवंतं दृढगात्रं रूपयुतं बहुप्रतिष्ठितं चैव ॥ १३८ ॥

यदि लग्नस्वामी लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुषको रोगहीन और बहुत आयुवाला तथा बलवान् और दृढशरीर, रूपवान् और अतीव प्रतिष्ठायुक्त करता है ॥१३८॥

लग्नपतिर्धनभवने धनवंतं विपुलजीवितं स्थूलम् ॥
स्थानप्रधानमीशं सत्कर्मरतं नरं कुरुते ॥ १३९ ॥

यदि लग्नपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको धनी, बडे आयुवाला, स्थूल और स्थानप्रधान तथा समर्थ और सत्कर्मपरायण करता है ॥ १३९ ॥

सहजगतो लग्नपतिः सद्बंधुप्रवरमित्रपरिकलितम् ॥
धर्मरतं दातारं शूरं सबलं करोति नरम् ॥ १४० ॥

यदि लग्नपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ नरको अच्छे बांधवोंमें श्रेष्ठ, मित्रोंसे युक्त, धर्मात्मा, दानी, शूरवीर और बलवान् करता है ॥ १४० ॥

लग्नेशस्तुर्यगतो नृपप्रियं प्रचुरजीवितं कुरुते ॥
लब्धियुतं बहुमित्रं पित्रोर्बहुभक्तिभाजनं कुरुते ॥ १४१ ॥

यदि लग्नपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको राजाका प्रिय तथा बडे आयुवाला तथा लाभवाला तथा बहुतसे मित्रोंसे युक्त और मातापिताकी भक्ति करनेवाला करता है ॥ १४१ ॥

पंचमगो लग्नपतिः ससुतं सत्यागमीश्वरं विदितम् ॥
बहुजीवितं सुशीलं सुकर्मनिरतं नरं तनुते ॥ १४२ ॥

यदि लग्नपति पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको पुत्रवाला, दानी, समर्थ, विख्यात, बडे आयुसे युक्त, अच्छे शीलसे विराजमान, अच्छे कर्ममें तत्पर करता है ॥ १४२ ॥

रिपुभवने लग्नेशे नीरोगं भूमिलाभयुतं सबले ॥
कृपणं धनिनमरिघ्नं सुकर्मपक्षान्वितं कुरुते ॥ १४३ ॥

यदि लग्नपति षष्ठ भावमें बलवान् होकर स्थित होवे तौ पुरुषको रोगहीन, भूमिलाभसे युक्त तथा कृपण तथा धनी और शत्रुके नाशकर्ता और सत्कर्म पक्षसे युक्त करता है ॥ १४३ ॥

प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शीलवान् भवेत्पुरुषः ॥
तद्भार्यापि सुशीला ज्ञेया कलिता सुरूपा च ॥ १४४ ॥

यदि लग्नपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष तेजस्वी, शीलवान्,

होता है और उस पुरुषकी स्त्री अच्छे शीलवाली तथा अच्छे रूपसे युक्त और प्रवीण होती है ॥ १४४ ॥

लग्नपतौ त्वष्टमगे कृपणो धनसंचयः सुदीर्घायुः ॥
क्रूरे खचरे क्रूरः सौम्ये वपुषा भवेत्सौम्यः ॥ १४५ ॥

यदि लग्नपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष कृपण और धनसंचयकर्ता तथा अच्छे दीर्घ आयुवाला होता है और यदि पापग्रह होवे तौ क्रूर स्वभाव होता है और शुभ ग्रह होवे तौ सौम्य स्वभाव होता है ॥ १४५ ॥

मूर्तिपतिर्यदि नवमे तदा भवेत्प्रचुरबांधवः सुकृतिः ॥
समचित्तश्च सुशीलः सुकृती ख्यातस्तु तेजस्वी ॥ १४६ ॥

यदि लग्नपति नवम भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे बांधवोंवाला तथा अच्छे कार्यवाला, समानचित्त और अच्छे शीलसे युक्त, पुण्यात्मा विख्यात तथा तेजस्वी होता है ॥ १४६ ॥

प्रथमेशे दशमस्थे नृपमित्रः पंडितः सुशीलश्च ॥
गुरुमातृपूजनमतिर्नृपतिसमृद्धः पुमान् भवति ॥ १४७ ॥

यदि लग्नपति दशम भावमें स्थित होवे तौ राजाका मित्र और पंडित तथा अच्छे शीलसे युक्त और गुरुमाताजनोंके पूजनमें बुद्धिवाला तथा राजसमृद्ध पुरुष होता है ॥ १४७ ॥

एकादशगस्तनुपः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम् ॥
तेजःकलितं कुरुते पुरुषं बलिनं न सीदति चेत् ॥ १४८ ॥

यदि लग्नपति ग्यारहवें भावमें स्थित होवे तौ दीर्घजीवी, पुत्रवान्, विख्यात, तेजसंपन्न तथा बलवान् करता है, परन्तु लग्नपति बलहीन न होवे तौ, यदि बलहीन होवे तौ ऐसा फल नहीं करता है ॥ १४८ ॥

द्वादशगे लग्नपतौ पटुवाग्वाचं करोति कर्णहितम् ॥
सह गोत्रकैरमिलितं विदेशगं वित्तभोक्तारम् ॥ १४९ ॥

इति जातकसंग्रहे तनुभावविचारः समाप्तः ॥ १ ॥

यदि लग्नपति द्वादश भावमें स्थित होवे तौ चतुर वाणीका बोलनेवाला, कर्णहित तथा गोत्रजनोंके साथ मेल न रखनेवाला विदेशी और धनभोक्ता करता है ॥ १४९ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां तनुभावविचारः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ धनभावविचारः ।

धनभावः तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

स्वर्णादिधातुः क्रयविक्रयश्च रत्नानि कोशोऽपि च संग्रहश्च ॥
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

सुवर्ण आदि धातु तथा खरीदना बेचना कर्म और विविध रत्न तथा खजाना तथा धनादिका संग्रह यह समस्त द्वितीय भावमें पंडितोंकर विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अत्र सामान्यविचारेण धनभावे ग्रहयुतदृष्टितायाः फलं तत्रादौ रवेः ।

धनस्थानगते सूर्ये दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
चौरैर्नृपैर्धनं नीतं धनं स्वल्पं गृहे भवेत् ॥ २ ॥

यदि द्वितीय भावमें सूर्य स्थित होवे अथवा द्वितीय भाव सूर्यकी दृष्टिसे देखा गया होवे तौ चौर होता है और राजाओंके द्वारा कुछ धन गृहमें स्थित होता है सो सब हर लिया जाता है ॥ २ ॥

गर्गमतेन ।

धनभावगते सूर्ये धननाशमहर्निशम् ॥
करोति निर्धनं चाथ ताम्रवित्तं ददाति च ॥ ३ ॥

यदि सूर्य द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ सदैव धननाशको करता है और निर्धन करता है और ताम्रधनको देता है ॥ ३ ॥

अन्यत् ।

धने दिनेशोऽतिधनानि नूनं करोति मंदेन च नेक्षितश्चेत् ॥
शुभाभिधाना धनभावसंस्था नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ॥ ४ ॥

यदि सूर्य द्वितीय भावमें स्थित होवे और शनैश्चरकर नहीं देखा गया होवे तौ अतीव धनोंको करता है । यदि शुभ ग्रह धनभावमें स्थित होवें तौ अनेक प्रकारसे धनकी प्राप्ति करते हैं ॥ ४ ॥

धने चंद्रयुतिदृष्टिफलं गर्गजातके ।

रौप्यं कांचनयुक्तं च मणिरत्नधनं भवेत् ॥
कर्पूरचंदनामोदी धने कुमुदबांधवे ॥ ५ ॥

यदि द्वितीय भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ सुवर्णसहित चांदी तथा मणि रत्न धन बहुतसे होते हैं । कर्पूर चन्दन गंधवाला होता है ॥ ५ ॥

अन्यत् जातकरत्ने ।

धने चंद्रे धनी लोके दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
भगिन्यास्तस्य कन्याया द्रव्यनाशोऽपि जायते ॥ ६ ॥

यदि द्वितीयभावमें चंद्रमा स्थित होवे वा धनभाव चंद्रमाकर देखा जावे तौं पुरुष धनी होता है । परन्तु उस पुरुषकी भगिनी और कन्याका द्रव्यनाश हो जाता है ॥ ६ ॥

भौमफलं गर्गजातके ।

कृषिको विक्रयी भोगी प्रवास्यरुणवित्तवान् ॥
धातुवादी मतेर्नाशी द्यूतकारः कुजे धने ॥ ७ ॥

यदि मंगल द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ खेती करनेवाला तथा बेचनेवाला और भोग भोगनेवाला तथा परदेशमें रहनेवाला और लाल रंगतके धनोंसे युक्त तथा धातु वादी तथा बुद्धिनाशयुक्त तथा जुआ खेलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

जातकरत्ने ।

धने भौमेऽथवा दृष्टे धनहानिः प्रजायते ॥
पीडा देहे च नेत्रे च भार्याबंधुजनैः कलिः ॥ ८ ॥

द्वितीय भावमें मंगल होवे वा द्वितीय भाव मंगलकर देखा गया होवे तौ निरन्तर धन हानि होवे है । देह और नेत्रमें पीडा होवे है और स्त्रीबंधुजनोंके साथ कलह रहता है ॥ ८ ॥

बुधफलम् ।

बुधे धने लोकिते वा धनाढ्यो राजपूजितः ॥
पटुभाषी धने नष्टे पुनरन्यच्च लभ्यते ॥ ९ ॥

बुध द्वितीय भावमें स्थित होवे वा बुधकर धनभाव देखा जावे तौ धनवान् राजासे सत्कार पानेवाला तथा चतुरभाषी होता है और धन नष्ट होनेपर फिर धन मिल जाता है ॥ ९ ॥

बुधफलमाह गर्गः ।

धनं ददाति बहुधा नाशयेच्चंद्रवीक्षितः ॥
त्वग्दोषं कुरुते नित्यं सोमपुत्रः कुटुंबगः ॥ १० ॥

यदि बुध द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ बहुत प्रकारसे धनको देता है और चंद्रमाका देखा हुआ बुध द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ धनका नाश कर देता है और त्वचाके दोषको करता है ॥ १० ॥

धनस्थगुरुफलमाह गर्गः ।

लक्ष्मीवान्नित्यमुत्साही धनस्थे देवतागुरौ ॥
बुधदृष्टे च निःस्वः स्यादिति सत्यं प्रभाषितम् ॥ ११ ॥

यदि द्वितीय भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ लक्ष्मीवाला तथा सदैव उत्साह रखनेवाला होता है और यदि द्वितीयभावस्थ बृहस्पति बुधसे देखा जावे तौ निर्धन होता है, यह सत्यभाषण है ॥ ११ ॥

जातकरत्ने ।

गुरौ धनेऽथवा दृष्टे धनधान्यसुखं भवेत् ॥
विद्याविनयसंपन्नो मान्यः सर्वस्य जायते ॥ १२ ॥

यदि बृहस्पति धनभावमें स्थित होवे अथवा बृहस्पतिने द्वितीय भाव देखा होवे तौ धनधान्यका सुख होता है और वह पुरुष विद्याविनययुक्त और सबका मान्य होता है ॥ १२ ॥

भृगुफलमाह गर्गः ।

विद्यार्जितधनो नित्यं स्त्रीधनैरथवा धनी ॥
शुभदृष्टः शुभक्षेत्रे बुधदृष्टे भृगौ धनी ॥ १३ ॥

यदि द्वितीय स्थानमें शुभराशिका शुभ ग्रहकर देखा हुआ शुक्र स्थित होवे तौ विद्यासे इकट्ठे किये धनवाला अथवा स्त्रीधनोंसे धनी रहता है अथवा बुधकर देखा हुआ शुक्र द्वितीय भावमें स्थित होवे तौभी धनी होता है ॥ १३ ॥

जातकरत्ने ।

धने शुक्रे वीक्षिते वा धनवांश्च बहुश्रुतः ॥
मुखे च लक्षिता वाणी सभायां पटुता तथा ॥ १४ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुक्र स्थित होवे अथवा द्वितीय भाव शुक्रकर देखा जावे तौ धनवान् तथा बहुशास्त्रके जाननेवाला होता है और उस पुरुषके मुखमें मनोहर वाणी तथा सभामें चतुरता होती है ॥ १४ ॥

शत्रुक्रूरैर्युते दृष्टे धनहानिः प्रजायते ॥
राजतश्चोरतो वापि मार्गे विघ्नः प्रजायते ॥ १५ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुक्र शत्रु और पाप ग्रहोंसे युक्त वा देखा गया होवे तौ राजा वा चौरसे धनहानि होवे है और मार्गमें विघ्न होता है ॥ १५ ॥

शनिफलमाह गर्गः।

काष्ठांगाराल्लोहधनः कुकार्याद्धनसंचयः ॥
नीचविद्यानुरक्तश्च दीनो वा मंदगो धने ॥ १६ ॥

यदि शनैश्चर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ लोहधनवाला होकर काष्ठागारसे धनका संचय करता है और नीच विद्यानुरागी वा दीनदुःखी होता है ॥ १६ ॥

जातकरत्ने।

धने मंदे धनैर्हीनो निष्ठुरो दुःखितो भवेत् ॥
मित्रसौम्यैर्युते दृष्टे धर्मसत्यदयान्वितः ॥ १७ ॥

द्वितीय भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ धनोंसे हीन तथा निष्ठुर और दुःखी होता है। यदि धनभावस्थित शनैश्चर मित्र और सौम्यग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ धर्म सत्य दया इनसे युक्त होता है ॥ १७ ॥

पापैर्युक्तेक्षिते वित्ते शत्रुयुक्तेक्षितेऽपि वा ॥
धनक्षयो भवेन्नित्यं शुभे लग्नेश्वरे शुभम् ॥ १८ ॥

यदि शनैश्चर धनस्थानमें पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे अथवा शत्रुग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ धनका नाश होता है और लग्नपति शुभ होवे तौ शुभ फल होता है ॥ १८ ॥

मृतवत्साभगिन्यादिगर्भस्रावादिकं वदेत् ॥
प्रतिवेश्मादिबालानां विपत्तिरपि कथ्यते ॥ १९ ॥

यदि धन भावमें शनैश्चर पाप शत्रु ग्रहके योगदृष्टिसे युक्त होवे तौ उस पुरुषकी भगिनी आदि मृतसंतानवाली होवे और गर्भपतन आदिभी फल कहे और समीपमें घर आदिवालोंके बालकोंकाभी मरण कहा जाता है ॥ १९ ॥

धनस्थराहुफलमाह गर्गः।

मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मादिविक्रयी ॥
जीविकाचौरकृत्याच्च राहौ धनगते नरः ॥ २० ॥

यदि राहु द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ मछलीमांससे धनवाला तथा नखचर्मादिका बेचनेवाला होता है और चौरकर्मसे जीविका होवे है ॥ २० ॥

केतुफलम् ।

द्वितीयभवने केतुर्धनहानिं प्रयच्छति ॥
नीचसंगी च दुष्टात्मा सुखसौभाग्यवर्जितः ॥ २१ ॥

यदि द्वितीय भावमें केतु स्थित होवे तौ धनहानिको देता है और वह पुरुष नीचके साथ संग करनेवाला तथा दुष्टात्मा और सुखसौभाग्यसे वर्जित होता है ॥ २१ ॥

शुभा धनगताः कुर्युर्वाग्मिनं प्रियभोजनम् ॥
क्रूराः कुर्युर्विशेषेण कदन्नं बहुभाषिणम् ॥ २२ ॥

यदि शुभ ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ मधुरभाषी और प्रिय भोजन करनेवाला करते हैं। यदि पाप ग्रह धनभावमें स्थित होवें तौ विशेष कर बुरे अन्नका भोजन करनेवाला और बहुभाषी करते हैं ॥ २२ ॥

विशेषविचारो जातकसारे ।

धनस्वामी च सत्खेटैर्युग्दृष्टो धनवृद्धिदः ॥
क्षीणेंदुः पापयुग्दृष्टो विना स्वर्क्षं धनापहः ॥ २३ ॥

द्वितीय भावका स्वामी शुभ ग्रहोंसे युक्त वा देखा जावे तौ धन वृद्धिको देता है और धनभावका स्वामी अपने राशिके विना और किसी राशिपर स्थित होवे और क्षीण चन्द्रमा तथा पाप ग्रहोंसे युक्त वा देखा जावे तौ धनका हरनेवाला होता है ॥ २३ ॥

सारावल्याम् ।

रवितनयभौमरवयः कुटुंबसंस्था विलोकनाद्वापि ॥
कुर्वंति धनविनाशं क्षीणेंदुनिरीक्षिता विशेषेण ॥ २४ ॥

यदि शनैश्चर मंगल सूर्य द्वितीय भावमें स्थित होवें अथवा यह ही ग्रह धनभावपर स्वदृष्टिवाले होनेसे धनका नाश करते हैं और धनभावमें स्थित हुए शनैश्चर मंगल सूर्य यह क्षीण चन्द्रमाकर देखे गये होवें तौ विशेषकरके धनका नाश करते हैं ॥ २४ ॥

भौमेंदू धनसंस्थौ त्वग्दोषदारिद्रताकरौ कथितौ ॥
मंदस्तु धनस्थाने महार्थयुक्तं बुधेक्षितः कुरुतः ॥ २५ ॥

यदि मंगल चंद्रमा दोनों द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ त्वचादोष और दरिद्रताके करनेवाले कहे हैं। यदि शनैश्चर द्वितीय भावमें स्थित होवें और बुधकर देखा गया होवे तौ पुरुषको महाधनी करता है ॥ २५ ॥

रविरपि निधनं जनयति यमेक्षितः शस्यतेऽन्यदृष्टश्च ॥
सौम्याः कुटुंबसंस्था बहुप्रकारं धनं दद्युः ॥ २६ ॥

द्वितीय भावमें स्थित हुआ सूर्यभी यदि शनैश्चरकर देखा जावे तो निर्धनता करता है और द्वितीय स्थानमें सूर्य अन्यग्रहकर देखा जावे तौ शुभ होता है। यदि शुभ ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ बहु प्रकार धनको देते हैं ॥ २६ ॥

बुधदृष्टस्त्रिदशगुरुः कुटुंबराशौ च विश्वतां कुरुते ॥
सोमसुतोऽपि शशिना निरीक्षितो हंति समस्तधनम् ॥२७॥

यदि द्वितीय भावमें बृहस्पति बुधकर देखा जावे तौ बहुत धन करता है और द्वितीय भावमें बुध यदि चंद्रमाकर देखा जावे तौ समस्त धनका नाश करता है ॥ २७ ॥

चंद्रोऽपि धनस्थाने क्षीणोऽपि बुद्धिवीक्षितः सदा कुरुते ॥
पूर्वार्जितार्थनाशं निरोधमपि चान्यवित्तस्य ॥ २८ ॥

द्वितीय भावमें स्थित क्षीण चन्द्रमा बुधकर देखा हुआ सदैव पहिले इकट्ठे हुए धनका नाश और अन्य धनकी रोंक कर देता है ॥ २८ ॥

शुक्रः कुटुंबराशौ सूर्येंदुनिरीक्षितो धनं दाता ॥
सौम्यगृहे शुभदृष्टः स एव धनदः सदा ज्ञेयः ॥ २९ ॥

द्वितीय भावमें शुक्र यदि सूर्य चन्द्रमाकर देखा जावे तौ धनके देनेवाला होता है। यदि द्वितीयभावस्थित शुक्र द्वितीय भावमें शुभ ग्रहके राशिका शुभ ग्रहकर देखा जावे तौ सदैव धनका देनेवाला होता है ॥ २९ ॥

ग्रंथांतरे ।

धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः ॥
बुधस्तत्रैव भोगी स्याच्छुक्रे भूमिपतिर्भवेत् ॥ ३० ॥

बृहस्पति यदि द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ वह बालक धनी होता है, बुध होवे तौ भोगी होता है और शुक्र होवे तौ भूमिपति होता है ॥ ३० ॥

धनस्थाने यदा चंद्रः पंचमस्थो यदा रविः ॥
तदा धनक्षयं विंद्याद्दशवर्षाणि पंच च ॥ ३१ ॥

द्वितीय भावमें यदि चन्द्रमा और पंचम स्थानमें सूर्य होवे तौ पन्द्रह वर्षतक धनका क्षय जाने ॥ ३१ ॥

संकेतनिधौ ।

स्वोच्चे बुधे तनुगते ससितेम्बरेऽब्जे सेज्ये मदे च सुत आर्क्यसृजोर्नृपालः ॥ चेदम्बरायतनुगा विधुमंदपूज्या ज्ञारौ धने रविसितौ हिबुके धनी स्यात् ॥ ३२ ॥

यदि उच्चराशिका बुध लग्नमें स्थित होवे और दशम भावमें शुक्र स्थित होवे और चन्द्रमा बृहस्पति सप्तम भावमें स्थित होवें और पंचम भावमें शनैश्चर मंगलकी स्थिति होवे तौ वह पुरुष राजा होता है । यदि दशम भाव एकादश भाव लग्न भाव इनमें क्रमसे चन्द्रमा शनैश्चर बृहस्पति स्थित होवें और बुध मंगल दोनों द्वितीय भावमें और सूर्य शुक्र चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ धनी होता है ॥ ३२ ॥

ग्रहे स्वोच्चे केंद्रे नरपतिसमः स्यात्समुदिते तनोरर्केज्यौचेत्सुतभवनगौ शास्त्रधनवान् ॥ बली सौम्यो लग्ने सधनपतिकेन्द्रे च शुभकृत्खलः षष्ठे केन्द्रेसशुभ इह विद्यार्थसहितः॥३३॥

यदि उदयको प्राप्त होकर स्वोच्चराशिका ग्रह केन्द्रमें होवे तौ राजाके समान प्रतापी होता है । यदि सूर्य बृहस्पति दोनों पंचम भावमें स्थित होवें तौ शास्त्रधनवाला होता है । यदि बलवान् बुध लग्नमें होवे और केन्द्रमें द्वितीयभावपति होवे तौ पुण्यात्मा भाग्यशाली होता है । यदि पाप ग्रह षष्ठ भावमें और केन्द्रमें शुभ ग्रह स्थित होवे तौ विद्याधनसहित विराजमान होता है ॥ ३३ ॥

अन्ययोगांतरं केनास्य धनप्राप्तिः । उदयभास्करे ।

तनुगतो विधुतोऽम्बुनि वा रविः सुखपदृग्जनकाद्द्रविणप्रदः ॥ यदि तनौसदिवाकरखेश्वरोऽधिपतियोगदृशःपितृकोशवान्॥३४॥

यदि चंद्रमासे सूर्य लग्नमें वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे और चतुर्थभावपतिकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ पितासे धन देता है । यदि सूर्यसहित दशमभावपति लग्नमें स्थित होवे और लग्नपतिका योग वा दृष्टि होवे तौ पिताके खजानेवाला होता है ॥ ३४ ॥

हरिबुधो यदि वा घटवाक्पतिर्वपुषि तत्पुरुषत्रयजं धनम् ॥ समृदु चेद्धनभेत्यधिकारवद्ग्रहु तदास्य वधूर्धनभृद्भवेत् ॥ ३५ ॥

यदि सिंहका बुध अथवा कुम्भका बृहस्पति जन्मलग्नमें होवे तौ उस पुरुषके तीन पुरुषोंसे उत्पन्न हुआ धन होता है । यदि द्वितीयभावमें सौम्यराशिपर अतीव बलवान् बहुतसे ग्रह होवें तौ उस पुरुषकी वधू धनके धारण करनेवाली होवे है॥३५॥

अंधयोगानाह ।

यदि धनांत्यपती त्रिकगौ सितांगपयुतौ च तदा नयनक्षतिः ॥
यदि विधुः ससितः सखलो धने विनयनो यदि सेंदुभृगुस्त्रिके३६॥
निशि तदांध उतार्कसितान्वितस्तनुपतिर्जननांधकरस्तदा ॥
पितृसुताऽनुजमातृकुटुंबिनीपतय एवमिता हि तथाफलाः ॥३७॥

द्वितीयभावपति और द्वादशभावपति यदि शुक्र और लग्नपतिसहित षष्ठ अष्टम द्वादश इन भावोंमें स्थित होवें तौ पुरुषके नेत्रोंका नाश होता है। यदि चंद्रमा पापग्रहसहित और शुक्रसहित द्वितीय भावम स्थित होवे तौ नेत्रहीन होता है । यदि चंद्रमासहित शुक्र षष्ठ अष्टम द्वादश इन भावोंमें स्थित होवे तौ पुरुष रात्रिमें अंधा रहता है। यदि सूर्य शुक्रसहित लग्नपति षष्ठ अष्टम द्वादश भावोंमें स्थित होवे तौ जन्मा हुआ प्राणी जन्मसे ही अन्धा रहता है । इसी प्रकार पितृभाव सुतभाव अनुजभाव मातृभाव जायाभाव इनके स्वामी सूर्यशुक्रसहित षष्ठ अष्टम द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पिता पुत्र अनुज माता स्त्रीके अंधत्व फलवाले होते हैं। जसे दशमभावपति शुक्र सूर्यसहित ६। ८। १२ इन भावोंमें स्थित होवे तौ पिता अंधा होता है और पंचमभावपति सूर्य शुक्रसहित ६ । ८। १२ भावमें स्थित होवे तौ पुत्र अंधा होता है और तृतीयभावपति सूर्य शुक्रसहित ६। ८ । १२ भावोंमें स्थित होवे तौ छोटा भ्राता अंधा होता है और चतुर्थभावपति सूर्य शुक्रसहित ६। ८। १२ भावोंमें स्थित होवे तौ माता अंधी होवे है और सप्तमभावपति सूर्य शुक्रसहित ६ । ८ । १२ भावोंमें स्थित होवे तौ स्त्री अंधी होवे है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

संकेतनिधा ।

द्वादशे लग्नतो मीनगश्चेद्रविर्दक्षनेत्रार्तिकृच्चंद्रात्रिपो-
ऽन्याक्षिहा॥ पंचमेऽस्तंगतश्चेत्कुजो वा सितःस्या-
त्तदाचक्षुषा काण एव स्फुटम् ॥ ३८ ॥

यदि लग्नसे द्वादशभावमें मीनराशिका सूर्य स्थित होवे तौ दक्षिण नेत्रमें पीडा करता है और चंद्रमा स्थित होवे तौ वाम नेत्रमें पीडा करता है, पंचम भावमें यदि अस्तको प्राप्त होकर मंगल वा शुक्र स्थित होवे तौ नेत्रसे काणा होता है ॥ ३८ ॥

सिंहलग्ने सितो वा यमो वा व्यये नेत्रपीडाकरौ मानवानां मतौ॥
स्वव्ययायाष्टमेषु क्रमाद्भूमिजार्कीन्दुसूर्येषु तत्तद्गुजाक्ष्णोःक्षयः३९

यदि लग्नमें सिंहराशिपर शुक्र वा शनैश्चर स्थित होवे अथवा दोनों द्वादश भावमें स्थित होवें तौ मनुष्योंकी नेत्रपीडा करनेवाले होते हैं । यदि द्वितीय भाव द्वादश भाव षष्ठ भाव अष्टम भाव इनमें क्रमसे मंगल शनैश्चर चंद्रमा सूर्य यह ग्रह स्थित होवें अर्थात् द्वितीय भावमें मंगल व द्वादश भावमें शनैश्चर और षष्ठ भावमें चंद्रमा और अष्टम भावमें सूर्य स्थित होवे तौ उस पुरुषके तिन २ ग्रहोंके रोगसे नेत्रोंका नाश होता है ॥ ३९ ॥

धनसंख्यायोगानाह यवनजातके ।

सहस्रनाथो दिनपः प्रदिष्टो लक्षाधिपो रात्रिकरः सदैव ॥
शताधिपो भूतनयस्तथैव कोटीश्वरो चंद्रसुतः सदैव ॥ ४० ॥

सूर्य हजारका स्वामी है और चंद्रमा लक्षसंख्याका स्वामी है और मंगल शतसंख्याका स्वामी है और बुध करोड संख्याका स्वामी है ॥ ४० ॥

सर्वाधिराजः सुरराजमंत्री शुक्रोऽथ शंखं शनिरल्पतुल्यः ॥
स्वतुंगगाःस्युर्यदि सर्व एते त्वथांतराले ह्यनुपाततःस्यात् ॥ ४१ ॥

बृहस्पति समस्त संख्याका स्वामी है और शुक्र शंखसंख्याका स्वामी है, शनैश्चर थोडी संख्याके तुल्य है । यदि यह कहे हुए सब ग्रह अपने उच्च राशिमें स्थित होवें तौ इस कही हुई धनसंख्याको दे सकते हैं और नीचराशिपर होवें तौ धनसंख्या कुछ नहीं देते हैं । यदि उच्चराशिको त्यागकर और कहीं उच्च नीचके मध्यमें होवें तौ अनुपात करनेसे अर्थात् त्रैराशिक गणितके हिसावसे धनसंख्या जाननी चाहिये ॥ ४१ ॥

अत्रानुपातः स्थानवलोक्तवत्तदाह ।

पादोनं च वलं त्रिकोणगृहगे स्वर्क्षे दलं च त्रयम् ॥
भांशस्याधिपगेहगे च चरणो मित्रे समर्क्षेऽष्टमः ॥ ४२ ॥

जो कि ग्रह अपने उच्च राशिमें स्थित रहता है उसका संपूर्ण वल होता है और जो कि ग्रह अपने मूलत्रिकोण राशिमें होता है उसका एक चौथाई भाग कम वल होता है और जो कि अपनी राशिपर स्थित रहता है उसका आधा वल होता है और जो कि ग्रह अपने नवांशपतिकी राशिमें होता है उसका एक तिहाई वल होता है और जो कि ग्रह मित्रराशिमें होता है उसका एक चौथाई वल होता है और जो कि ग्रह समराशिमें स्थित होता है उसका आठवां भाग वल होता है और जो कि ग्रह शत्रु वा नीचराशिमें स्थित होता है उसका कुछ भी वल नहीं होता है ॥ ४२ ॥

धनस्य व्ययः केन हेतुना भविष्यति तद्योगानाह वीरजातके ।

वित्तस्य भवनेऽस्थैर्य्यं बुधे भानुसमन्विते ॥
प्रियादलितवित्तं स्यात्स्त्रीग्रहे पुरुषान्विते ॥ ४३ ॥

यदि द्वितीय भावमें सूर्यसहित बुध स्थित होवे तौ धनकी स्थिरता न रहे । यदि द्वितीय भावमें पुरुषग्रहयुक्त स्त्रीसंज्ञक ग्रह स्थित होवे तौ प्रियास्त्रीकरके धनका खर्च होवे ॥ ४३ ॥

निषादम्लेच्छसंयुक्ते ग्रहे तत्र सुसंस्थिते ॥
वेश्यागंधर्वनाट्येन तद्धनस्य व्ययो भवेत् ॥ ४४ ॥

यदि द्वितीय भावमें राहु शनैश्चर स्थित होवें तौ वेश्या गन्धर्व नाट्यकरके धनका खर्च होता है ॥ ४४ ॥

पूर्वदेवेज्यदेवेज्यौ धनभावे समागतौ ॥
व्ययं धनस्य कुरुतः नित्यं भूसुरस्वःसुरैः ॥ ४५ ॥

यदि शुक्र और बृहस्पति धनभावमें स्थित होवें तौ सदैव ब्राह्मणदेवताओंके द्वारा धनका खर्च होता है ॥ ४५ ॥

धनस्थैर्ग्रहै रोगचिह्नान्याह ।

विषेण वाथ शस्त्रेण तथा रक्तप्रकोपतः ॥
तन्मृतिर्विहिता लोके भौमो यद्धनसंस्थितः ॥ ४६ ॥

यदि द्वितीय भावमें मंगल स्थित होवे तौ विषसे वा शस्त्रसे वा रक्तप्रकोपसे उस पुरुषका मरण होता है ॥ ४६ ॥

मुखे वाप्यथवा नेत्रे दक्षिणांसे च कर्णके ॥
व्रणं वाथ विघातो वा क्रूरैः स्याद्धनगैर्ग्रहैः ॥ ४७ ॥

यदि पाप ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ मुखमें अथवा नेत्रमें वा दक्षिण कन्धामें वा कर्णमें व्रण घाव वा कोई प्रहार होवे है ॥ ४७ ॥

शनौ वा सैंहिकेये वा तत्रस्थे ग्रहजा रुजा ॥
चंद्रेण शीतजा दोषाः सन्निपातसमाश्रयाः ॥ ४८ ॥

यदि द्वितीय भावमें शनैश्चर वा राहु स्थित होवें तौ भूतपिशाचादिकृत रोग होता है । यदि द्वितीय भावमें चन्द्रमा स्थित होवे तौ सन्निपातके आश्रयसे उत्पन्न होनेवाले शीतसंबंधी रोग होते हैं ॥ ४८ ॥

दंतुरो दंतरोगी वा तत्रस्थे सिंहिकात्मजे ॥
ससौम्यवदनो वाग्मी जीवे तत्रैव संस्थिते ॥ ४९ ॥

यदि द्वितीय स्थानमें राहु स्थित होवे तौ बडे २ दांतोंवाला अथवा दंतरोगी होता है, यदि द्वितीय भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ अच्छे सुन्दर मुखवाला तथा मनोहर बोलनेवाला होता है ॥ ४९ ॥

धन कदोदेति तद्योगानाह ।

धनस्थाने यदा चंद्रः सौम्यो वा यदि गच्छति ॥
धनेशो वापि लग्नेशो यदोदेति तदा धनम् ॥ ५० ॥

जब धनस्थानमें चंद्रमा वा कोई शुभ ग्रह वा द्वितीयभावपति वा लग्नपति जाकर प्राप्त होता है उसी समय धनको प्राप्त होता है ॥ ५० ॥

धनाख्यं तच्च भवनं पुरुषस्य सुखं स्मृतम् ॥
सौम्याः कुर्वंति रूपाढ्यं क्रूरास्तत्र रुजान्वितम् ॥ ५१ ॥

धनसंज्ञक जो कि द्वितीय स्थान है वह पुरुषका मुख कहा है, यदि द्वितीय भावमें शुभ ग्रह स्थित होवें तौ मनुष्यको रूपवान् करते हैं और पाप ग्रह होवें तौ रोगी करते हैं ॥ ५१ ॥

सुवर्णं विविधं रत्नं शुभ्रं मुक्ताफलैर्युतम् ॥
सर्ववस्तुभवं लाभं सौम्या वर्णान्वितां गिरम् ॥ ५२ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुभ ग्रह स्थित होवें तौ सुवर्ण और मोतियोंसे युक्त विविध भांतिके रत्न और समस्त वस्तुओंका लाभ और मनोहरवर्णयुक्त वाणीको देते हैं ॥ ५२ ॥

दद्युः सौम्यग्रहास्तत्र संस्थिताश्च बलान्विताः ॥
लग्ननाथो विशेषेण शुभं पूर्णं प्रयच्छति ॥ ५३ ॥

यदि तिस द्वितीय भावमें बलवान् होकर शुभ ग्रह स्थित होवें तौ सुवर्णादि विविध रत्नोंको देते हैं और यदि द्वितीय भावमें लग्नपति विराजमान होवे तौ विशेष करके संपूर्ण शुभ फल देता है ॥ ५३ ॥

सौम्यदृष्टिः शुभा प्रोक्ता क्रूरदृष्टिर्न शोभना ॥
यदि लग्नपतिः क्रूरस्तथाप्येवं न संशयः ॥ ५४ ॥

द्वितीयभावमें शुभ ग्रहोंकी दृष्टि शुभ होवे है और पाप ग्रहकी दृष्टि शुभ

नहीं होवे है। यदि लग्नपति पाप ग्रह होवे तौ भी इसी प्रकार अशुभ होता है इसमें संशय नहीं ॥ ५४ ॥

यदा सूर्यो मुखे यस्य जातकस्य भवेत्कचित् ॥
शैलेयव्याधितं चिह्नं भवेत्तस्य न चान्यथा ॥ ५५ ॥

जिसके कदाचित् द्वितीय भावमें सूर्य स्थित होवे तौ उसके मुखपर शिलासंबंधी वा व्याधिका चिह्न होता है ॥ ५५ ॥

नात्यंतधनसंपन्नो मानवो जायते भुवि ॥
बुधे चैव तथा सूर्ये भवेत्सेवाप्रियः सदा ॥ ५६ ॥

यदि द्वितिय भावमें बुध और सूर्य स्थित होवें तौ अत्यन्त धनसे युक्त नहीं रहे और सेवा करनेमें प्रेम रखनेवाला होवे ॥ ५६ ॥

(एते योगाः पृच्छायामप्यवलोकनीयाः)

यह कहे हुए योग प्रश्नमें भी विचारने चाहिये।

धनभावे राशिफलं यवनः।

आद्ये धनगते पुंसां धनं पुण्यार्जितं भवेत् ॥
चतुष्पदोत्थं च धनं बंधूत्थं च प्रयच्छति ॥ ५७ ॥

यदि मेषराशि धनभावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंके पुण्यसे इकट्ठा किया धन होता है और चौपायोंसे अथवा बंधुओंके पैदा किये धनको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

वृषे धनस्थे लभते कृषियत्नेन वै धनम् ॥
चतुष्पदान्नमणिभिर्नित्यं प्राप्नोति वैभवम् ॥ ५८ ॥

यदि वृषराशि धनभावमें स्थित होवे तौ खेतीके यत्नसे धनको प्राप्त होता है और चौपाये अन्न मणियोंसे सदैव धनको प्राप्त होता है ॥ ५८ ॥

तृतीये धनगे नित्यं धनं स्त्रीजनितं भवेत् ॥
रौप्योद्भवं कांचनाश्वैर्धनं पुंसामहर्निशम् ॥ ५९ ॥

यदि मिथुनराशि द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीसे पैदा किया धन होता है और चांदीसे तथा सुवर्ण घोडाओंसे पुरुषोंके सदैव धन होता है ॥ ५९ ॥

कर्के धनगते नृणां धनं वृक्षजलोद्भवम् ॥
न्यायार्जितं सुभोज्यं च सुतानां प्रीतिदायकम् ॥ ६० ॥

यदि कर्कराशि द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ वृक्ष जलसे उत्पन्न हुआ धन

होता है और न्यायसे इकट्ठा किया सुन्दर भोगने योग्य पुत्रोंके प्रसन्न करनेवाला धन होता है ॥ ६० ॥

पंचमो धनगे राशौ धनमारण्यजं सदा ॥
सर्वोपकारकं चैव विक्रमोपार्जितं तथा ॥ ६१ ॥

यदि सिंहराशि द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ वनसे पैदा हुआ सबके उपकार करनेवाला और पराक्रमसे इकट्ठा किया धन होता है ॥ ६१ ॥

वित्तेऽङ्गनागते राशौ धनं भूमिपतेर्भवेत् ॥
हिरण्यमुक्तामणिजं गजाश्वादिभिरेव च ॥ ६२ ॥

द्वितीय भावमें कन्याराशि होवे तौ राजासे धन होता है और सुवर्ण मोती मणिसे उत्पन्न हुआ तथा हाथी घोडाओंसे उत्पन्न हुआ धन होता है ॥ ६२ ॥

तुले धनस्थे लभते धनं पण्यसमुद्भवम् ॥
आहवादिप्रजातं च धनं न्यायार्जितं तथा ॥ ६३ ॥

द्वितीय भावमें तुलाराशि होवे तौ व्यवहारसंबंधी वेचने खरीदने योग्य वस्तुओंसे उत्पन्न हुआ तथा संग्रामसे उत्पन्न हुआ तथा न्यायसे इकट्ठा हुआ धन होता है ॥ ६३ ॥

अलौ धने धनं पण्यप्रभूतं ह्यश्मजं तथा ॥
मृन्मयं मौक्तिकं चैव तथा सस्योद्भवं धनम् ॥ ६४ ॥

यदि द्वितीय भावमें वृश्चिकराशि होवे तौ वस्तुके वेचनेसे तथा पत्थरोंसे तथा मृत्तिकासे तथा मोतियोंसे तथा सस्य नाम खेतीके फलादिकोंसे धन होता है ॥ ६४ ॥

धने धन्वी धनं स्थैर्यं यशोऽर्थं च रसोद्भवम् ॥
पश्वादिसंभवं चैव तथा धर्मविधानजम् ॥ ६५ ॥

यदि द्वितीय भावमें धनुराशि होवे तौ यशके वास्ते धनकी स्थिरता होवे है और रसोंसे तथा पशु आदिसे तथा धर्मविधानसे धन होता है ॥ ६५ ॥

मृगे धनस्थे च धनं प्रपंचैर्विविधैर्भवेत् ॥
नृपसेवासमुत्थं च कृषिभिश्च विदेशतः ॥ ६६ ॥

यदि द्वितीय भावमें मकरराशि होवे तौ विविध प्रकारके प्रपंचोंसे तथा राजाकी सेवासे तथा कृषि और विदेशसे धन होता है ॥ ६६ ॥

घटे धनस्थे च धनं प्रभूतं फलपुष्पजम् ॥
जलोद्भवं साधुभोज्यं जनोत्थं चोपकारकैः ॥ ६७ ॥

यदि द्वितीय भावमें कुंभराशि होवे तौ फलपुष्पोंसे तथा जलसे अच्छी प्रकार भोगने:योग्य धन होता है और जनोपकारसे धन होता है ॥ ६७ ॥

मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः ॥
विद्याप्रभावान्निधिसंगमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितं च ॥६८॥

यदि मीनराशि द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ अनेक नियम व्रत उपवासोंसे तथा विद्या प्रभावसे तथा खजानेके संगमसे तथा माता पितासे इकट्ठा धन होता है॥६८॥

धनभावस्वामिनो द्वादशभावोपरिफलं वृद्धयवनः ।

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् ॥
धनिकं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगयुतम् ॥ ६९ ॥

यदि द्वितीय भावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुषको कृपणव्यवसायी तथा अच्छे कर्मवाला धनी और धनियोंमें विख्यात और बडे भोगसे युक्त करता है ॥ ६९ ॥

धनपो धनभावस्थो धनवंतं धर्मकर्मनिरतं च ॥
लाभाधिकं सलोभं कुरुते पुरुषंसदाऽऽदानम् ॥ ७० ॥

यदि धनभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ धर्मकर्ममें तत्पर धनी और लाभसे पूर्ण और लोभी और सदा दानकर्ता करता है ॥ ७० ॥

सहजगते तु धनेशे व्यवसायी कलिकरो कलाहीनः ॥
चौरश्चंचलवित्तो भवति नरो विनयनयरहितः ॥ ७१ ॥

यदि द्वितीयभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ व्यवसाय रखनेवाला और कलहकर्त्ता तथा कलाहीन और चौर तथा चंचल धनवाला और विनय तथा न्यायसे हीन होता है ॥ ७१ ॥

तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभश्चापरैः सहोपायः ॥
दीर्घायुः क्रूरे ह्यपि अथवा मरणं विनिर्देश्यम् ॥ ७२ ॥

यदि द्वितियभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पितासे लाभवाला और अन्य पुरुषोंके साथ उपाय नाम उद्योगकर्त्ता तथा दीर्घायु होता है और द्वितीयभावपति पाप ग्रह होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ मरण कहना चाहिये ॥ ७२ ॥

शश्वद्विलसन्नयनं कर्मणि कष्टे रतं प्रसिद्धं च ॥
कृपणं दुःखविघातं तनयगतो द्रव्यपः कुरुते ॥ ७३ ॥

यदि द्वितीयभावपति पंचम भावमें होवे तौ पुरुषको सदैव विलास करनेवाले नेत्रोंसे युक्त तथा कठिन कार्यमें वर्त्तमान तथा विख्यात तथा कृपण और दुःखनाशक करता है ॥ ७३ ॥

षष्ठगते द्रविणपतौ धनसंग्रहतत्परं कृतघ्नं च ॥
भूस्वामिनं च खचरे पापे धनवर्जितं सदा पुरुषम् ॥ ७४ ॥

द्वितीयभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ धनके इकट्ठे करनेमें निपुण तथा कृतघ्न तथा पृथ्वीका स्वामी करता है और यदि षष्ठस्थ द्वितीयभावपति पाप ग्रह होवे तौ सदैव पुरुषको धनहीन करता है ॥ ७४ ॥

धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठांगनाविलासभोगभाग्भवति ॥
धनसंग्रहणी भार्या क्रूरे खचरे भवेद्वंध्या ॥ ७५ ॥

यदि धनभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ श्रेष्ठ स्त्रीके साथ विलास भोग करनेवाला होता है और उसकी स्त्री धनसंग्रह करनेवाली होती है और सप्तमभावस्थ द्वितीयभावपति पाप ग्रह होवे तौ स्त्री वंध्या होवे है ॥ ७५ ॥

धनपे चाष्टमभावे स्वल्पकलिश्चात्मघातकः पुरुषः ॥
उत्पन्नभुग्विलासी परहिंसकः सदैव दैवपरः ॥ ७६ ॥

यदि द्वितीयभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ थोडा कलहवाला तथा आत्मघाती तथा उत्पन्न हुएके भोगनेवाला तथा विलासकर्त्ता और पराई हिंसा करनेवाला और सदैव प्रारब्धवश रहता है ॥ ७६ ॥

धनपे धर्मगृहगे सौम्ये दानप्रसिद्धिभाग्भवति ॥
क्रूरे दरिद्रभिक्षुश्च विडंबवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ७७ ॥

द्वितीयभावपति शुभ ग्रह होकर नवमभावमें स्थित होवे तौ दानकी विख्याति करनेवाला होता है और पाप ग्रह होवे तौ दरिद्र तथा भिक्षु तथा ठगवृत्ति होता है ॥ ७७ ॥

दशमस्थे च धनेशे नरेंद्रमान्यो भवेच्च नरपालः ॥
सौम्यग्रहे च मातुः पितुश्च परिपालकः पुरुषः ॥ ७८ ॥

द्वितीयभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ राजाओंका मान्य तथा राजा

होता है और यदि शुभ ग्रह होकर द्वितीयभावपति दशम भावमें होवे तौ माता पिताके पालन करनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

एकादशगे स्वपतौ व्यवहारपरं श्रियः पतिं ख्यातम् ॥
प्रतिपालकं च लोके सततं कुरुते नरं जातम् ॥ ७९ ॥

द्वितीयभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको व्यवहारमें निपुण और लक्ष्मीका पति तथा विख्यात और बहुतसे मनुष्योंका पालनकर्ता तथा लोकमें विख्यात करता है ॥ ७९ ॥

द्वादशगे द्रविणपतावष्टकपाली विदेश ऋद्धिश्च ॥
दुष्कर्मा क्रूरग्रहे सौम्यग्रहे च संग्रामिकः पुरुषः ॥ ८० ॥

यदि द्वितीयभावपति द्वादश भावमें स्थित होवे तौ कष्टकपाली परदेशमें समृद्धि-वाला होता है और वह द्वितीयभावपति पाप ग्रह होकर द्वादश भावमें होवे तौ बुरे कर्मोंवाला होता है और शुभ ग्रह होवे तौ संग्रामकर्ता होवे है ॥ ८० ॥

अन्यच्च।

धनेशलग्नेशयुताः शुभाश्चेद्धनस्थितास्तत्फलमेव दद्युः ॥
शुभाढ्यदृष्टे स्वसुखं शुभा वाग् निःस्वोऽब्जदृष्टे विदि वात्र पापे ८१

यदि द्वितीयभावपति और लग्नभावपतिसे युक्त होकर शुभ ग्रह धनभावमें स्थित होवे तौ द्वितीयभावके धन आदि फलको देते हैं। यदि धनभाव शुभ ग्रहसे युक्त और दृष्ट होवे तौ धनका सुख और सुन्दर वाणी होवे है। यदि द्वितीय भावमें बुध वा पाप ग्रह चंद्रमाकर देखा जावे तौ निर्धन होता है ॥ ८१ ॥

एवं कृशोऽब्जो धनगो ज्ञदृष्टो धनक्षयायैव सितस्तदाप्त्यै ॥
रोगोत्थचिह्नं मुखगो यदार्कः सस्त्रीग्रहश्चेत्कटुवाक्कृशस्वः ॥८२॥

इसी प्रकार क्षीण चंद्रमा बुधकर द्वितीय भावमें देखा गया होवे तौ धनके नाशके वास्ते होता है और द्वितीय भावमें शुक्र बुधकर देखा गया होवे तौ धनकी प्राप्तिके वास्ते होता है। यदि स्त्रीग्रहसहित सूर्य द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ रोगोत्पन्न चिह्न और कटुकभाषी तथा क्षीण धनवाला होता है ॥ ८२ ॥

सज्ञे रवौ सेवनकृच्चलस्वो यद्भावपाढ्येऽस्य करस्थितस्वः ॥
भवेद्यथोदाहरणं सुतेशे स्त्रीखेचरेऽस्यास्ति सुताकरे स्वम् ॥ ८३ ॥

यदि बुधसहित सूर्य धनभावमें स्थित होवे तौ चाकरी करनेवाला और चलाय-

मान धनवाला होता है। जिस भावके स्वामीसे धनभाव युक्त होता है उसीके हाथमें स्थित धनवाला होता है जैसे उदाहरण है। कि-पंचमभावपति स्त्रीग्रह होकर धनभावमें स्थित होवे तौ उसका धन पुत्रीके हाथमें रहता है ॥ ८३ ॥

चेद्भ्रातृपे स्याद्भगिनीकरस्थं मातृष्वसा मातुलपे तु वाच्या ॥
राहौ धने दन्तरुजा धनस्थेऽब्जे सन्निपातादिकशीतरोगी ॥८४॥

यदि तृतीयभावपति स्त्रीग्रह होकर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ बहिनिके हाथमें धन रहता है और मातुलभावपति अर्थात् षष्ठभावपति स्त्रीग्रह होकर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ माताकी बहिनि अर्थात् मौसीके हाथमें धन रहता है। यदि द्वितीय भावमें राहु स्थित होवे तौ दांतोंका रोग होता है और चंद्रमा द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ सन्निपातादिक शीतरोगवाला होता है॥ ८४ ॥

तत्र स्थिते क्रूरयुते सिते स्यात्काणोऽथवाक्ष्णा विकृतिः स्खलद्गीः॥
धनव्ययस्थे भृगुजेऽथ वारे कर्णव्यथाब्जे तु दृशोर्विकारः ॥ ८५ ॥

यदि पापग्रहसहित शुक्र द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष काणा वा नेत्रसे विकारको प्राप्त होनेवाला तथा गूंगा होता है। यदि द्वितीय भाव वा द्वादश भावमें शुक्र अथवा मंगल स्थित होवे तौ कर्णव्यथा होवे है और चंद्रमा स्थित होवे तौ नेत्रोंका विकार होता है ॥ ८५ ॥

जीवे कोशे साधिकारेऽथवा ज्ञे वाग्मी स स्यान्मानवः सौम्यवक्त्रः॥
केतौ दीर्घास्योऽथ खेटः स्वगश्चेत्सारिस्तद्वेवास्य मृत्युर्मुखार्त्या॥८६

यदि द्वितीय भावमें बलवान् बृहस्पति वा बुध स्थित होवे तौ अच्छा बोलनेवाला और अच्छे मुखवाला होता है और द्वितीय भावमें बलवान् होकर केतु स्थित होवे तौ बडे मुखवाला होता है। यदि जो ग्रह धनभावमें स्थित होवे वह शत्रुग्रहसहित होवे अथवा शत्रुग्रहके राशिमें स्थित होवे तौ मुखके रोगसे मृत्यु होती है॥ ८६ ॥

विधौ धने भीः सलिलात्तथार्कौ राहौ धने वा वनिताग्रहाढ्ये ॥
म्लेच्छैर्निषादैर्गणिकाजनैर्वा गांधर्वनाट्यादिभिरस्वता स्यात् ८७

यदि द्वितीय भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ जलसे भय होता है । यदि द्वितीय भावमें शनैश्वर वा राहु स्थित होवे अथवा द्वितीय भाव स्त्रीग्रहसंज्ञक ग्रहसे युक्त होवे तौ म्लेच्छ वा निषाद वा गणिका वा गांधर्व नाट्य आदिकसे निर्धनता होवे है ॥ ८७ ॥

यदा स्वपो वा धनगः कुजश्च चन्निर्बलोऽर्यग्निनृपैः स्वनाशः ॥
रक्तप्रकोपाद्विषशस्त्रघातान्नरस्य मृत्युः क्षितिजे सपापे ॥ ८८ ॥

इति जातकसंग्रहे धनभावविचारः समाप्तः ॥ २ ॥

यदि मंगल निर्बल होकर द्वितीयभावका स्वामी होवे अथवा धनभावमें स्थित होवे तौ शत्रु अग्नि राजाओंसे धनका नाश होता है। यदि मंगल पापग्रहसहित धनभावमें स्थित होवे तौ रक्तप्रकोप तथा विषशस्त्रघातसे मनुष्यका मृत्यु होता है ॥ ८८ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां धनभावविचारः समाप्तः ॥ २ ॥

अथ भ्रातृभावविचारः ।

भ्रातृभावः तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

सहोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणां सहजाद्विचारः ॥
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥ १ ॥

सहोदर नाम भ्राताओंका तथा नोकर चाकरोंका तथा पराक्रमोंका विचार तृतीय भावसे होता है। शास्त्रको जाननेवालोंको यह तृतीय भावमें नियमसे विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

बाहुस्तृतीयं सहजाख्यमत्र त्वम्बापितृव्याम्बकमातुलादेः ॥
दास्यादिकानां श्रुतिविक्रमादेर्भ्रातुः फलं वाच्यमतः सुधीभिः ॥ २ ॥

बाहु तृतीय सहज यह तीसरे भावके नाम हैं इस तृतीय भावमें माता और पितृव्य नाम पिताका भ्राता मातुल (मामा) इत्यादिका और दासी श्रवण पराक्रम भ्राता इत्यादिका फल पंडितोंकर कहना चाहिये ॥ २ ॥

सामान्यविचारेण भ्रातृभावस्याऽस्तिनास्तिविचारो यवनमतेन ।

सहजे सर्वपापाढ्ये पापक्ष भ्रातरो नहि ॥
सौम्यक्ष सौम्यखेटाढ्ये बहवः स्युः सहोदराः ॥ ३ ॥

यदि तृतीय भावमें पाप ग्रहका राशि सब पाप ग्रहोंसे युक्त होवे तौ भ्राता नहीं होते हैं और शुभ ग्रहका राशि शुभ ग्रहोंसे युक्त होवे तौ सहोदर भ्राता बहुतसे होते हैं ॥ ३ ॥

अन्यच्च ।

संत्सम्प्रयुक्तं सहजं शुभर्क्षं दृशा सतां भ्रातृसुखार्थसिद्ध्यै ॥
कुजेक्षितस्तत्र शनिः सहोत्थक्षयाय शुक्रेज्यदृशाशुभं स्यात् ॥४॥

तृतीय भावमें शुभ राशि शुभ ग्रहसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ भ्राताके सुखार्थ सिद्धिके वास्ते होता है । तृतीय भावमें शनैश्चर यदि मंगलकर देखा जावे तौ सहोदर भ्राताके नाशके वास्ते होता है । यदि तृतीयस्थ शनैश्चर शुक्र बृहस्पतिकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ भ्राताओंका शुभ होता है ॥ ४ ॥

स्वर्क्षे जीवे भ्रातृगे भ्रातृसौख्यं मन्दे भ्रातृस्थे तु भाग्याधिकः स्यात्॥
बाहौ राहौ सार्कजे दुर्नखत्वं दक्षे हस्ते दारुघातोऽनिलार्त्तिः॥ ५ ॥

अपने राशिका बृहस्पति यदि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ भ्राताका सुख होता है और अपने राशिका शनैश्चर तृतीय भावमें स्थित होवे तौ भाग्यवान् होता है । यदि तृतीय भावमें शनैश्चरसहित राहु स्थित होवे तौ दुष्टनखत्व और दाहिने हाथमें काष्ठप्रहार और वातपीडा होवे है ॥ ५ ॥

एवं कुजेऽर्के च तदस्थिभंगः स्याद्दुष्करत्वं विकृतिर्न सौम्ये ॥
भौमेन्दुदृष्टाःसहजे नवांशा यावन्मितास्तत्समसोदराः स्युः ॥६॥

इसी प्रकार मंगल शनैश्चरसहित तृतीय भावमें स्थित होवे वा सूर्य शनैश्चरसहित तृतीय भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषके अस्थिभंग तथा दुष्करता और विकार होता है और तृतीय भावमें शुभ राशि होवे तौ यह फल नहीं होता है । मंगल चंद्रमाकर देखे हुए जितने नवांश तृतीय भावमें स्थित होवे तौ तिनकेही समान सहोदर भ्राता भगिनी होवे हैं ॥ ६ ॥

भानौ भाग्ये स्वर्क्षगे भ्रातृनाशश्चेज्जीवेदेकोऽनुजोराजतुल्यः ॥
दुष्टैर्दृष्टोऽब्जोऽखिलान्हन्ति बाहौज्येष्ठानर्कोऽस्त्रोनुजाञ्छन्ययुतान् ७

यदि सूर्य अपने राशिका नवम भावमें स्थित होवे तौ भ्राताका नाश होता है । यदि कदाचित् एक अनुज भ्राता जीव सके तौ राजाके समान होता है । तृतीय भावमें चंद्रमा पाप ग्रहोंसे देखा हुआ समस्त भ्राताओंको हरता है और भावमें सूर्य पापग्रहोंसे देखा हुआ बडे भ्राताओंका नाश करता है और तृतीय भावमें शनैश्चर पापग्रहोंसे देखा हुआ छोटे भाइयोंका नाश करता है । और तृतीम भावमें शनैश्चर सहित राहु स्थित होवे तौभी तिन सब भ्राताओंको हरता है ॥ ७ ॥

भुजे कुजे क्रूरदृशावतांकितं क्षताच्च पित्तादनुजे गले रुजा ॥
सशत्रवस्तत्र खला भुजव्यथा गले मरुद्भूतपरा बलाबलात् ॥८॥

यदि तृतीय भावमें मंगल पाप ग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ भुजामें घावसे चिह्नित होता है और गलेमें पित्तसे रोग होता है । शत्रुग्रह सहित पाप ग्रह यदि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ भुजामें व्यथा होवे है और गलेमें वातप्रकोप और मनुष्य जुआ खेलनेमें तत्पर होता है और यह फल ग्रहोंके बलाबलसे कहे ॥ ८ ॥

द्यूनेऽर्कजेऽहौ नवमेऽस्त आयगे सहोत्थहानिः सहजे शनावपि ॥
बुधेज्यशुक्राः सहजे तु तत्सुखं द्वयोः क्षयो दुष्टयुतीक्षणान्नृणाम् ९॥

यदि शनैश्चर सप्तम भावमें अथवा राहु नवम भावमें अथवा शनैश्चर ग्यारहवें भावमें अथवा शनैश्चर तृतीय भावमें स्थित होवे तौ सहोदरकी हानि होवे है । यदि बुध बृहस्पति शुक्र तृतीय भावमें स्थित होवें तौ सहोदरोंका सुख होता है । यदि तृतीय भावमें पाप ग्रहका योग और पाप ग्रहकी दृष्टि होवे तौ अग्रज पृष्ठज दोनों भ्राताओंका नाश होता है ॥ ९ ॥

चन्द्रे तु भाग्ये सहजेऽर्कजश्चेद्रागौ शुभैर्दृष्टयुते तृतीये ॥
तद्भगिनश्येद्भगिनीत्रयं वै चिह्नं तु बाह्वोरथवापि कुक्षौ ॥ १० ॥

यदि चंद्रमा नवम भावमें और शनैश्चर तृतीय भावमें अथवा तृतीय स्थानमें राहु शुभ ग्रहोंसे युक्त और दृष्ट होवे तौ तीन बहिनि नाशको प्राप्त होवे हैं और भुजाओंमें चिह्न अथवा कुक्षिमें चिह्न होता है ॥ १० ॥

सोदरी राहुदृष्टे सिते भ्रातृगे दुर्विपात्स्याद्व्यसुस्तत्र चेन्मन्ददृक् ॥
सर्पभीरप्युदीर्याथ कर्णे खलैः कर्णमांद्यं परं षष्ठतुल्यं फलम् ॥ ११ ॥

यदि तृतीय भावमें राहुकर देखा हुआ शुक्र स्थित होवे और तिससे यदि शनैश्चरकी दृष्टि होवे तौ सहोदर भगिनी दुर्विषसे प्राणहीन होवे है और सर्पका भयभी होता है । यह तृतीय भावमें पाप ग्रह होवे तौ कर्णकी मन्दता होवे है । शेष फल षष्ठ भावके समान जानना चाहिये ॥ ११ ॥

ग्रहाणां युतिदृष्टिफलं जातकरत्ने, तत्रादौ रवेः फलम् ।

भ्रातृस्थाने स्थिते सूर्ये भ्रातृसौख्यं न जायते ॥
कुटुंबैर्भ्रातृभिः सार्द्धं कलहः स्वर्क्षगे सुखम् ॥ १२ ॥

यदि तृतीय भावमें सूर्य स्थित होवे तौ भ्राताका सुख नहीं होता है और कुटुम्ब और भ्राताओंके साथ कलह होता है और यदि अपने राशिमें होवे तौ सुख होता है ॥ १२ ॥

भ्रातरश्चोत्तमा ज्ञेयाश्चत्वारोऽथ त्रयोऽथवा ॥
भगिन्यौ चोत्तमे द्वे च विनिष्टं चार्भकत्रयम् ॥ १३ ॥

यदि सूर्य तृतीय भावमें स्थित होवे तौ उत्तम भ्राता चार वा तीन होते हैं और भगिनी उत्तम दो होवे हैं और तीन बालक नष्ट हो जाते हैं ॥ १३ ॥

क्रूरैर्युक्तेऽथवा दृष्टे मृतो भ्राता च कश्चन ॥
भगिनी च मृता काचिद्वंध्या वा विधवा भवेत् ॥ १४ ॥

यदि तृतीय भावमें सूर्य पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ कोई भ्राता मृत्युको प्राप्त हो जाता है और कोई भगिनीभी मृत्युको प्राप्त होवे है अथवा वंध्या वा विधवा होवे है ॥ १४ ॥

एको द्वौ वा मृतो भ्राता विषशस्त्रादियोगतः॥
अपत्यदुःखं वक्तव्यं भगिन्या भ्रातुरेव च ॥ १५ ॥

एक वा दो भ्राता विष शस्त्र आदि योगसे मृत्युको प्राप्त होते हैं और भगिनी और भ्राताको सन्तानका दुःख भी कहना चाहिये ॥ १५ ॥

चन्द्रफलम् ।

भ्रातृस्थाने स्थिते चन्द्रे भ्रातृसौख्यं समादिशेत् ॥
नीरोगौ भ्रातरौ द्वौ च भगिनीत्रयमेव च ॥ १६ ॥

यदि तृतीय भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ भ्राताके सुखको कहे । निरोग दो भ्राता और तीन भगिनी होवे हैं ॥ १६ ॥

भौमफलम् ।

भ्रातृस्थानगते भौमे भ्रातृसौख्यं सुदुर्लभम् ॥
दृष्टे च गुरुचन्द्राभ्यां भ्रातैकः स्याच्छुभप्रदः ॥ १७ ॥

यदि तृतीय भावमें मंगल स्थित होवे तौ भ्राताका सुख दुर्लभ होता है यदि तृतीय भावमें स्थित मंगल बृहस्पति चंद्रमाकर देखा जावे तौ एक भ्राता शुभदायक होता है ॥ १७ ॥

भगिन्यौ सुभगे द्वे च क्रूरेण निधनं गते ॥
कुमृत्युना भ्रातरौ द्वौ मृतौ शस्त्रादिभिस्तथा ॥ १८ ॥

सुन्दर ऐश्वर्यवाली दो भगिनी होवे हैं और यदि तृतीय भावमें स्थित हुआ मंगल पाप ग्रहकरके देखा गया होवे तौ दो भगिनी मृत्युको प्राप्त होवे हैं, अथवा दो भ्राता विषशस्त्रादिसे कुमृत्युसे मरणको प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

बुधफलम् ।

बुधे च सहजस्थाने दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥
भ्रातृणां भगिनीनां च सुखं तस्य महद्वदेत् ॥ १९ ॥

यदि तृतीय भावमें बुध स्थित होवे अथवा बुधकर तृतीय भाव देखा जावे तौ भ्राता और भगिनियोंका महत्सुख होता है ॥ १९ ॥

भ्रातरः पंच विद्यंते शत्रुदृष्ट्या मृतिं वदेत् ॥
चतस्रः पंच वा ज्ञेयाः स्वसारः शुभलक्षणाः ॥
कुजेन शनिना दृष्टे तासां वंध्यत्वमिष्यते ॥ २० ॥

यदि तृतीय भावमें बुध स्थित होवे तौ पांच भ्राता होवे हैं । तृतीयस्थ बुधपर शत्रुग्रहकी दृष्टिसे किसी भ्राताके मरणको कहे और सुन्दर लक्षणवाली चार वा पांच भगिनी जाननी चाहिये । यदि तृतीय भावस्थ बुध मंगलकर वा शनैश्चर कर देखा जावे तौ तिन भगिनियोंका वंध्यापन कहा जाता है ॥ २० ॥

गुरुफलम् ।

भ्रातृस्थाने गुरौ भ्रातृभगिनीभ्यो सुखं वदेत् ॥
भ्रातरः पंच चत्वारः क्रूरदृष्ट्या विपत्तयः ॥
क्रूरैश्च शत्रुभिर्दृष्टे स्वल्पं भ्रातृसुखं भवेत् ॥ २१ ॥

यदि तृतीय भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ भ्राता भगिनियोंसे बहुत सुख होता है और पांच वा चार भ्राता होवे हैं और तृतीय भावस्थ बृहस्पतिपर पाप ग्रहकी दृष्टिसे भ्राताओंका मरण होता है । यदि तृतीयभावस्थ बृहस्पति पाप ग्रह और शत्रु-ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ थोडाही भ्रातृसुख होता है ॥ २१ ॥

भृगुफलम् ।

भ्रातृस्थाने भृगोः पुत्रे भगिन्यो बहुलाः स्मृताः ॥
भ्रातरश्च त्रयः प्रोक्ताः क्रूरेण निधनं गताः ॥ २२ ॥

यदि तृतीय भावमें शुक्र स्थित होवे तौ बहुतसी भगिनी होवे हैं और तीन भ्राता कहे हैं और तृतीयभावस्थ शुक्र पापग्रहकर देखा गया होवे तौ भ्राता भगिनी मरणको प्राप्त होते हैं ॥ २२ ॥

क्रूरेण वीक्षिते शुक्रे भ्रातरस्त्वन्यमातृजाः ॥
कश्चिन्नष्टो गतः कश्चित्कश्चित्तस्य च वर्त्तते ॥ २३ ॥

यदि तृतीय भावमें स्थित हुआ शुक्र पाप ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ अन्य मातासे उत्पन्न हुए भ्राता होते हैं तिनमेंसे कोई भ्राता नष्ट हो जाता है और कोई वर्त्तमान रहता है ॥ २३ ॥

शनिफलम् ।

तृतीयस्थे सूर्यपुत्रे सिंहिकातनयेऽथवा ॥
भ्रातृजन्यं सुखं नास्ति दृष्टिभिर्वा विलोकिते ॥ २४ ॥

यदि तृतीय भावमें शनैश्चर वा राहु स्थित होवे तौ भ्रातासे उत्पन्न हुआ सुख नहीं होता है । अथवा तृतीय भाव शनैश्चर वा राहुकर देखा गया होवे तौभी भ्रातृ" सुख नहीं होता है ॥ २४ ॥

क्रूरैर्युक्तास्तत्र दृष्टा रविराहुधरासुताः ॥
शस्त्रेण निहतो भ्राता पत्नी चास्य समादिशेत् ॥ २५ ॥

यदि तृतीय स्थानमें स्थित हुए सूर्य राहु मंगल पाप ग्रहोंकर देखे जावें तौ उस पुरुषका भ्राता वा स्त्री शस्त्रसे मृत्युको प्राप्त होवे है ॥ २५ ॥

विशेषविचारः तत्रादौ बांधनानां सुखदुःखविचारः ।

यदा च तत्पतिर्जीवोऽथवा जीवो विलग्नगः ॥
बांधवानां सुखं तस्य बहुलं जायते तदा ॥ २६ ॥

यदि तृतीय भावका स्वामी बृहस्पति होवे अथवा बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे तौ बांधवोंका बहुत सुख होता है ॥ २६ ॥

तथा तृतीयगे मंदे स नरो भाग्यवान् भवेत् ॥
भवेद्दोषस्थिता पीडा शरीरे तस्य सर्वदा ॥ २७ ॥

यदि शनैश्चर तृतीय भावमें स्थित होवे तौ वह नर भाग्यवान् होता है और उस पुरुषके शरीरमें दोषस्थित पीडा होवे है ॥ २७ ॥

सिंहिकापुत्रसंयुक्तो यदा तत्र भवेच्छनिः ॥
कुनखित्वं काष्ठघातं कुर्याद्दक्षिणहस्तके ॥ २८ ॥

यदि तृतीय भावमें शनैश्चर राहुसे युक्त होकर स्थित होवे तौ उस पुरुषके कुनखीपन तथा दक्षिण हाथमें काष्ठप्रहार होता है ॥ २८ ॥

शुक्रो वा चंद्रमा वापि बुधो वा तत्र संस्थितः ॥
स्वसृबाहुल्यतां तस्य कुर्वंति हि न संशयः ॥ २९ ॥

यदि तृतीय भावमें शुक्र वा चंद्रमा वा बुध स्थित होवे तौ यह ग्रह उस पुरुषके भगिनियोंकी बहुतायतको करते हैं इसमें कुछ संशय नहीं ॥ २९ ॥

यदा तत्रगताः क्रूरा बांधवास्तस्य दुःखिताः ॥
भवंति कृपणा जाया भवित्री नात्र संशयः ॥ ३० ॥

यदि तृतीय भावमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ उस पुरुषके बांधव दुःखी होते हैं और उस पुरुषकी स्त्री कृपण होवे है इसमें संदेह नहीं ॥ ३० ॥

नवमे च तृतीये च षष्ठे क्रूरा यदा ग्रहाः ॥
भ्रातॄणां च सुखं तस्य नाधिकं भविता खलु ॥ ३१ ॥

यदि नवम तृतीय षष्ठ इन भावोंमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ उस पुरुषको भ्राताओंका सुख अधिक नहीं होता है ॥ ३१ ॥

सहजस्थो यदा मंदश्चंद्रेण वीक्षितो भवेत् ॥
तदा च तस्य जातस्य भार्यां दुश्चारिणीं विदुः॥ ३२ ॥

यदि तृतीय भावमें शनैश्चर चन्द्रमासे दृष्ट होवे तौ उस पुरुषकी स्त्रीको पंडितजन दुश्चारिणी जानते हैं ॥ ३२ ॥

तृतीयं पापभवनं पापग्रहयुतं यदा ॥
नातिसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरापि पातकी महान् ॥ ३३ ॥

यदि तृतीय भाव पाप राशि और पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ उस पुरुषकी सिद्धि नहीं होवे है और पहिले जन्मकाभी महान् पातकी होता है ॥ ३३ ॥

चंद्रभ्रात्रीशलग्नेशा बंधौ सौम्यास्तदानुजाः ॥ ३४ ॥

यदि चंद्रमा और भ्रातृभावपति और लग्नपति यह चतुर्थ भावमें स्थित होवें अथवा शुभ ग्रह चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ छोटे भ्राता होते हैं ॥ ३४ ॥

भ्रातृहयोगानाह ।

अग्रे जातान्रविर्हंति पश्चाज्जातान् शनैश्चरः ॥
जातं जातं कुजो हंति न तिष्ठति न जीवति ॥ ३५ ॥

यदि तृतीय भावमें सूर्य स्थित होवे तौ बडे भ्राताका नाश करता है और शनैश्चर स्थित होवे तौ पिछले भ्राताका नाश करता है और मंगल स्थित होवे तौ जो २ उत्पन्न होवे तिसी २ का नाश करता है और ... ता न स्थित रहता है और न जीवता है ॥ ३५ ॥

कुजदृष्टो सहजगो मंदो भ्रातृविनाशकृत् ॥
बुधः सहजगो भौमवीक्षितः सहजार्तिदः ॥ ३६ ॥

तृतीय भावमें स्थित शनैश्चर मंगलकर देखा जावे तौ भ्राताके नाश करनेवाला होता है । यदि बुध तृतीय भावमें स्थित होवे और मंगलकर देखा जावे तौ सहोदर भ्राताको कष्ट देता है ॥ ३६ ॥

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ॥
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ३७ ॥

यदि शनैश्चरसहित मंगल द्वितीय भावमें स्थित होवे और तृतीय भावमें राहु स्थित होवे तौ उसका भ्राता नहीं जीवता है ॥ ३७ ॥

कुजशनी त्रितये सुखपेऽपि वा सहजनाशकरौ विमलौ न चेत् ॥
यदि शशी त्रियते सविधुंतुदः सहजहानिकारो धनधान्यपः॥३८॥

यदि मंगल शनैश्चर तृतीय भावमें अथवा चतुर्थ भावमें स्थित होवें और विमल नहीं होवें अर्थात् शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट नहीं होवें तौ सहोदरके नाशकर्ता होते हैं । यदि राहुसहित चन्द्रमा तृतीय भावमें स्थित होवे तौ सहोदरकी हानि करता है और धनधान्यको देता है ॥ ३८ ॥

भ्रातृसुखयोगानाह ।

धनवान् निर्धनाकारः कृपणो भ्रातृसंयुतः ॥
कुटुंबी नृपपूज्यश्च सहजे देवतागुरौ ॥ ३९ ॥

यदि तृतीय भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ निर्धनके समान होकर धनवान् होता है कृपण और भ्रातृयुक्त होता है और कुटुम्बी और राजपूज्य होता है ॥ ३९ ॥

सहजस्थानगो दत्ते गौरांगीं भगिनीं भृगुः ॥
ततो जडं च क्रूरं च मंदश्च कुरुते नरम् ॥ ४० ॥

तृतीय भावमें स्थित शुक्र गौर अंगवाली भगिनीको देता है और तृतीय भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ पुरुषको जड क्रूर करता है ॥ ४० ॥

अन्यद्भ्रातृहयोगाः ।

भ्रातृगो मंदगः कुर्याद्भ्रातृस्वसृविनाशनम् ॥
नृपतुल्यं च सुखिन सततं कुरुते नरम् ॥ ४१ ॥

यदि तृतीय भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ भ्राता भगिनीका नाश करता है और पुरुषको सुखी और राजाके समान करता है ॥ ४१ ॥

भ्रातृगो हंति वा व्यंगमथवा भ्रातरं तमः ॥
लक्षेश्वरं रिष्टहीनं चिरं च तनुते नरम् ॥ ४२ ॥

यदि राहु तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको अंगहीन करता है अथवा भ्राताका नाश करता है और पुरुषको लक्षधनका पति, कष्टहीन तथा चिर आयुवाला करता है ॥ ४२ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे सदह एवानुजजीवितस्य ॥
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्चेद्भ्राता भवेद्भूपतिना समेतः ॥४३॥

यदि सूर्य अपने राशिका नवम भावमें स्थित होवे तौ अनुज भ्राताके जीवनका संदेह होता है । यदि कदाचित् एक भ्राता जीवे तौ राजाके समान होता है ॥ ४३ ॥

मातृहयोगाः ।

चंद्रमा यदि पापानां, त्रितयेन ग्रहश्यत ॥
मातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥ ४४ ॥

यदि चंद्रमा तीन पाप ग्रहोंकर देखा गया होवे और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखा गया होवे तौ उस पुरुषकी माताका नाश होता है ॥ ४४ ॥

सहजं प्रतिबध्नाति सहजस्थानगः कुजः ॥
भूमिराज्यास्पदं पुत्रं दीर्घायुश्च प्रयच्छति ॥ ४५ ॥

यदि मंगल तृतीय भावमें स्थित होवे तौ सहोदरकी उत्पत्तिको रोकता है और भूमिराज्यके प्राप्त करनेवाले पुत्रको दीर्घायु करता है ॥ ४५ ॥

अस्तः पापयुतस्त्रिस्थः स्वसारं हंति चंद्रजः ॥
अर्थाल्पं विबलं कुर्यात्स एवाशुभवीक्षितः ॥ ४६ ॥

यदि पापग्रहसहित बुध अस्तका होकर तृतीय भावमें स्थित होवे तौ भगिनीका विनाश करता है। और वहही बुध पाप ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ पुरुषको धनमें छोटा और निर्बल करता है ॥ ४६ ॥

अन्यच्च उदयभास्करे ।

यदि शनिस्तनुगः कुजवीक्षितः सहजहद्गुरुशुक्रदृशा शुभः ॥
यदि निशापतिवर्गयुतोऽनुजः सकुजदृक्सहजः सरुजस्तदा ॥४७॥

यदि शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे और मंगलकर देखा जावे तौ सहोदरके हरनेवाला होता है और बृहस्पति शुक्रकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ शुभ होता है। यदि तृतीय भाव चन्द्रराशिसे युक्त होवे और मंगलकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ सहोदर भ्राता रोगी होता है ॥ ४७ ॥

यदि कुजानुजपौ त्रिकगौ हि वास्वभसहोदरपोऽज्ञुधवीक्षितः ॥
विसहजो यदि केन्द्रगतोऽनुजाधिकसुखं यदि वा गुरुदृष्टयुक् ४८

यदि मंगल और तृतीयभावपति दोनों षष्ठ अष्टम द्वादश भावमें स्थित होवें तौ सहोदरहीन होता है, परन्तु तृतीयभावपति अपने राशिमें स्थित न होवे और न बुधकर देखा जावे तौ ऐसा फल होता है और तृतीय भावपति अपने राशिमें स्थित होवे और बुधकर देखा गया होवे तौ सहोदरवाला होता है[1]। तृतीयभावपति केन्द्रमें स्थित होवे और बृहस्पतिकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ सहोदर भ्राताओंका अधिक सुख होता है ॥ ४८ ॥

भ्रातृसंख्यायोगानाह गर्गः ।

यावंतो नव भागाः स्युः सहजेऽर्ककुजेक्षिताः ॥
तत्संख्याः सहजा ज्ञेया अन्यैर्दृष्टास्तु योषितः ॥ ४९ ॥

जितने नवांश तृतीय स्थानमें सूर्य मंगल कर देखे गये होवें तिस संख्याके समानही सहोदर भ्राता होते हैं और अन्य ग्रहोंकर देखे गये होवें तौ भगिनी होवे हैं ॥ ४९ ॥

स्वर्क्षोच्चगतैः खेटैर्द्वैत्रिगुण्यं विनिर्दिशेत् ॥ ५० ॥

अपने राशिपर स्थित हुए ग्रहोंकर भ्रातृभगिनीसंख्या दुगुनी कहे और उच्च राशिमें स्थित हुए ग्रहोंकर भ्रातृभगिनीसंख्या तिगुनी कहे ॥ ५० ॥

ग्रहयोगः संख्यामाह ।

सहजस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ॥
बुधेन च समायुक्तस्तस्य बंधुत्रय भवेत् ॥ ५१ ॥

यदि तृतीय स्थानमें राहु स्थित होवे और द्वितीय स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे और बुधसे युक्त होवे तौ उस पुरुषके तीन भ्राता होते हैं ॥ ५१ ॥

कविबुधौ त्रितये हिमगुव्यये भवति सप्तसहोदरसोदराः ॥५२ ॥

---

१ इसके साहचर्यमें औरभी वचन हैं जातकालंकारमें । भ्रातृस्थानेशभौमौ व्ययरिपुनिधनस्थानगो वन्धुहीनः । स्वक्षेत्रे सौम्यदृष्टे सहजभवनपे मानवः स्याच्च तद्वान् ।

यदि शुक्र बुध तृतीय भावमें स्थित होवें और चंद्रमा बारहवें भावमें स्थित होवें तौ सात सहोदर भ्राता होते हैं ॥ ५२ ॥

सहजाच्चंद्रराश्यंतं गतैः खेटैस्तु संख्यका ॥
तृतीयांका दृष्टिवशान्मृताः पापग्रहैस्तु ते ॥ ५३ ॥

तृतीय भावसे लेकर चंद्रमाके राशितक जितने ग्रह स्थित होवें तिनके समानही भ्राताओंकी संख्या होवे है अथवा तृतीय भावमें जितने राशि अंक होवे उतने भ्राता होते हैं और पाप ग्रहोंके दृष्टिवशसे भ्राता मरणको प्राप्त होते हैं अर्थात् तृतीय भावमें जितने पाप ग्रह देखते होवें उतनेही भ्राता मृत्युको प्राप्त होते हैं ॥ ५३ ॥

बधिरयोगदंतहानियोगावाह ।

त्रिभवकोणगतास्तपनार्कजा मृतिकरा न शुभान्वितवीक्षिताः ॥
श्रुतिहरा धनगा यदि ते तदा दशनहानिकरा नियतं मताः॥५४॥

यदि तृतीय और एकादश भावमें अथवा पंचम नवम भावमें सूर्य शनैश्वर क्रमसे स्थित होवें और शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवें तौ मृत्युकर्ता होते हैं । यदि वहही सूर्य शनैश्वर द्वितीय भावमें प्राप्त होवे तौ श्रवण वा दांतोंके हरनेवाले होते हैं ॥ ५४ ॥

तृतीयस्थरव्यादिग्रहाणां मित्रसंख्या यवनोनोक्ता ।

असंख्यमित्रः सविता प्रदिष्टो दशाधिपः शीतमयूखखेटः ॥
सहस्रमित्रः क्षितिजो बुधश्च शताधिपो देवपुरो तश्च ॥ ५५॥

यदि सूर्य तृतीय भावमें स्थित होवे तौ असंख्य मित्रवाला होता है और चंद्रमा तृतीय भावमें स्थित होवे तौ हजार मित्रवाला होता है और तृतीय भावमें बुध और बृहस्पति स्थित होवें तौ सौ मित्रोंका स्वामी होता है ॥ ५५ ॥

अशीतिनाथो भृगुनंदनश्च सौरस्तु भौमेन समं प्रदिष्टः ॥
स्वतुंगराशौ यदि वर्तमानाः सर्वेऽनुपातस्य वशाद्वदंति॥५६॥

और शुक्र तृतीय भावमें स्थित होवे तौ अस्सी मित्रोंका स्वामी होता है और मंगलके समान शनैश्वर कहा है । यदि यह सब ग्रह अपने उच्च राशिमें स्थित होवें तौ इतने मित्रोंके करनेवाले होते हैं और अन्य राशियोंमें स्थित होवें तौ अनुपात नाम त्रैराशिकके वशसे पंडितजन मित्रसंख्याको कहते हैं ॥ ५६ ॥

अन्यच्च शौनकः ।

पुंवीर्ये खचरे तृतीयभवने दृष्टे च पूर्णेऽथवा पश्चात्पुत्रसमुद्भवं निगदितं पूर्वं हि कन्योद्भवम्॥सौरिक्षेत्रमनिष्टगर्भकरणं विख्यात-

मंत्रीश्वरं भौमे भ्रातृविनाशनं दिनकरे क्षीयेत्ततो बांधवम् ॥ ५७ ॥

यदि तृतीय भावमें पुरुष ग्रह स्थित होवे अथवा पुरुष ग्रहकर तृतीय भाव पूर्ण दृष्टिसे देखा गया होवे तौ जन्मे हुए पुरुषसे पीछे पुत्रोत्पत्ति और पहिले कन्याके जन्मको कहे। यदि तृतीय भावमें शनैश्चरका राशि होवे तौ अनिच्छित गर्भके करनेवाला तथा पुरुषको विरूपात मंत्रीश्वर करता है और तृतीय भावमें मंगल स्थित होवे तौ भ्रातृविनाश होता है और तृतीय भावमें सूर्य होवे तौ बांधवका क्षय करता है ॥ ५७ ॥

दुश्चिक्ये भृगुचंद्रमा बलयुतः पश्चात्सुशीलाः सुताश्चंद्रः पुत्रफलं तदेव कथितं भृत्यादिवृद्धिप्रदम् ॥ पुंदृष्टे सहजे ग्रहैर्यदि युते तत्पृष्ठभागेषु च सौरे गर्भविनाशनं च नियतं मंत्रीश्वरो नान्यथा॥५८॥

यदि तृतीय भावमें बलवान् शुक्र चंद्रमा स्थित होवे तौ उस जन्मे हुए पुरुषसे पीछे सुशील कन्या होवे हैं और अकेला बलवान् चंद्रमा स्थित होवे तौ पीछे दो पुत्र फल होता है। भृत्य आदि वृद्धिके देनेवाला फलभी कहा है। यदि तृतीय भाव पुरुष ग्रहोंकर देखा गया होवे और पुरुष ग्रहोंसे युक्त होवे तौ उस जन्मे हुएके पीठपर पुत्रजन्म होता है। यदि तृतीय भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ गर्भका विनाश होता है और पुरुष मंत्रीश्वर होता है। अन्य प्रकार यह फल नहीं होता है ॥ ५८ ॥

यवनः ।

सहजगतकुजार्कौ वाक्पतिर्वा सुतेशो भवति बलयुतश्चेद्भ्रातृपश्चाद्भवेद्धि ॥ भृगुशशिशशिपुत्राः पंचमे कन्यका वा शनि भवति कदाचिज्जायते गर्भपातः ॥ ५९ ॥

यदि तृतीय भावमें स्थित मंगल वा सूर्य होवे अथवा बृहस्पति होवे और पंचमभावपति बलवान् होवे तौ पीछे भ्राता जन्म लेता है। यदि शुक्र चंद्रमा बुध पंचम भावमें स्थित होवें तौ कन्याजन्म होवे है और शनैश्चर यदि पंचम भावमें स्थित होवे तौ गर्भविनाश होता है ॥ ५९ ॥

सत्याचार्यः ।

जीवे वा क्षितिपुत्रविक्रमगते भानौ यदा संस्थिते पश्चात्संततिपुत्रजन्मकथितं चंद्रज्ञशुक्रे सुता ॥ सौरिर्गर्भविनाशनं प्रकुरुते नीचान्विते नेष्टकृच्चंद्राद्रा सहजे ग्रहैर्युतदृशे केचिद्वदंते बुधाः॥६०॥

यदि मंगलसे तृतीय भावमें बृहस्पति वा सूर्य स्थित होवे तौ पीछे संतानपुत्र महात्माओंने कहा है और मंगलसे तृतीय भावमें चंद्रमा बुध शुक्र यह ग्रह स्थित होवें तौ पीछे पुत्री होवे है और मंगलसे शनैश्चर यदि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ गर्भविनाश करता है। यदि मंगलसे तृतीय भाव नीच ग्रहसे युक्त होवे तौ नेष्ट फल करता हैं। कोई २ पंडितजन चंद्रमासे तृतीय भावमें ग्रहोंके योगदृष्टिसे ऐसा फल कहते हैं ॥ ६० ॥

तृतीयभावे राशिफलं वृद्धयवनः।

आद्ये राशौ तृतीयस्थे मित्रद्विजकुलोद्भवम् ॥
परोपकारे प्रवणं बहुविन्नृपपूजितम् ॥ ६१ ॥

यदि तृतीय भावमें मेषराशि होवे तौ पुरुष मित्र ब्राह्मणकुल इनकी उन्नति करनेवाला तथा परोपकार करनेमें चतुर और बहुशास्त्रवेत्ता तथा राजपूजित होता है ॥ ६१ ॥

वृषे तृतीये लभते मित्रं च प्रबलं नृपम् ॥
सुवित्तं भूपशुनिधिं सुकविं ब्राह्मणानुगम् ॥ ६२ ॥

यदि वृषराशि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ अच्छे मित्र और प्रबल राजाको प्राप्त होता है और अच्छे धनवाला तथा पृथ्वी पशु खजानेवाला, अच्छा विद्वान् और ब्राह्मणोंका सेवक होता है ॥ ६२ ॥

तृतीयराशौ सहजे मित्रं वैश्यं लभेच्छुभम् ॥
कृषिकृद्धर्मसंयुक्तं सुशीलं च सतां मतम् ॥ ६३ ॥

यदि मिथुनराशि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ किसी अच्छे मित्र वैश्यको प्राप्त होता है और खेती करनेवाला, धर्मात्मा, शीलवान् और सज्जनोंका पूज्य होता है ॥ ६३ ॥

चतुर्थराशौ त्रितये कुर्यान्मैत्री द्विजैः सह ॥
शांतैःसुधर्मैः सुनयैर्देवाराधनतत्परैः ॥ ६४ ॥

यदि कर्कराशि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ ब्राह्मणोंके साथ मित्रता करता है और शान्तप्रकृति तथा धर्मात्मा नीतिमान् और देवताओंके पूजनमें चतुर ऐसे सज्जनोंके साथभी प्रीति करता है ॥ ६४ ॥

सिंहे तृतीये लभते मित्रं शूद्रं वधात्मकम् ॥
वाचालं परवित्ताढ्यं प्रचंडं जनगर्हितम् ॥ ६५ ॥

यदि तृतीय भावमें सिंहराशि होवे तौ हिंसक शूद्र मित्रको प्राप्त होता है और बहुत बोलनेवाला तथा धनवान् और अतिभयंकर और जननिन्दित होता है ॥६५॥

षष्ठे तृतीये लभते मैत्रीं स्त्रीभिः सुशोभनैः ॥
विशेषतो धर्मरतो गुरुभक्तश्च जायते ॥ ६६ ॥

यदि तृतीय भावमें कन्याराशि होवे तौ सुन्दर स्त्रियोंके साथ तथा अच्छे मनुष्योंके साथ मित्रताको प्राप्त होता है और विशेषकरके धर्मयुक्त और गुरुका भक्त होता है ॥ ६६ ॥

तृतीयस्थे तुलाराशौ मैत्री पापरतैर्भवेत् ॥
लौल्यैर्लौल्यकथासक्तैः कुकर्मस्थैर्निरंतरम् ॥ ६७ ॥

यदि तृतीय भावमें तुलाराशि होवे तौ पापी और चंचल और चंचल कथाओंमें आसक्त और कुकर्मियोंके साथ मैत्री होवे है ॥ ६७ ॥

अलौ तृतीये भवने भवेन्मैत्री कलिप्रियैः ॥
म्लेच्छै रौद्रैः कृतघ्नैश्च निर्लज्जैः पापसंयुतैः ॥ ६८ ॥

यदि तृतीय भावमें वृश्चिकराशि होवे तौ कलहप्रिय और म्लेच्छ तथा भयंकर और कृतघ्न और पापियोंके साथ मित्रता होवे है ॥ ६८ ॥

चापे तृतीये लभते मैत्री शूरैर्धनान्वितैः ॥
धर्मज्ञैः कोविदै राजसेवकैश्च कृपाकरैः ॥ ६९ ॥

यदि तृतीय भावमें धनुराशि होवे तौ शूरवीर तथा धनवान् और धर्मज्ञ तथा विद्वान् तथा राजसेवक और कृपालुजनोंके साथ मित्रताको प्राप्त होवे है ॥ ६९ ॥

मकरो यदि भ्रातृस्थः सौम्यः प्राज्ञः सुपंडितः ॥
गुरुदेवसुभक्तश्च धनवांश्च सुखी जनः ॥ ७० ॥

यदि मकरराशि तृतीय भावमें स्थित होवे तौ सौम्य, बडा विद्वान् और पंडित और गुरुदेवताओंका भक्त तथा धनवान् और सुखी होता है ॥ ७० ॥

कुंभे तृतीये भवने भवेन्मैत्री क्षमाधिकैः ॥
कृतज्ञैः सत्यसंयुक्तैः सुशीलैः शास्त्रवित्तमैः ॥ ७१ ॥

यदि तृतीय भावमें कुंभराशि होवे तौ क्षमाशील तथा कृतज्ञ और सत्यभाषी तथा सुशील और शास्त्र जाननेवालोंके साथ मित्रता होवे है ॥ ७१ ॥

मीने तृतीये लभते मैत्री दास्यरतैः सदा ॥
कुभक्षकैः कुशीलैश्च खलैर्गीतप्रियैरपि ॥ ७२ ॥

यदि तृतीय भावमें मीनराशि होवे तौ चाकरी करनेवाले तथा बुरा भोजन करनेवाले और कुशील तथा दुष्ट और गीतप्रिय जनोंके साथमें मित्रताको प्राप्त होवे है ॥ ७२ ॥

सहजेशस्य भावेषु फलम्।

सहजपतौ लग्नगते वाग्वादी लंपटः स्वजनभेदी ॥
सेवापरः कुमित्रः क्रूरो वा भवति पुरुषश्च ॥ ७३ ॥

यदि तृतीयभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ वचनविवादी तथा लंपट और स्वजनोंका भेदनकर्ता तथा सेवाकर्ता और बुरे मित्रोंसे युक्त तथा क्रूर पुरुष होता है ॥७३॥

धनगृहगे सहजेशे भिक्षुर्विधनोऽल्पजीवितः पुरुषः ॥
बंधुविरोधी क्रूरे सौम्ये पुनरीश्वरः सबलश्च ॥ ७४ ॥

यदि तृतीयभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ भीख मांगनेवाला तथा निर्धन और थोडे आयुवाला तथा बंधुगणोंसे विरोधकर्त्ता होता है। यह फल तृतीयभावपतिके पाप ग्रह होनेपर होता है और शुभ ग्रह होकर तृतीयभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ बली तथा शक्तिशाली होता है ॥ ७४ ॥

सहजगतः सहजपतिः समसत्वं सुहृदं शुभं सुजनम् ॥
देवगुरुपूजनकं नृपलाभपरं नरं कुरुते ॥ ७५ ॥

यदि तृतीयभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको समान पराक्रमवाला तथा सबका मित्र और देवगुरुजनोंके पूजनेवाला तथा शुभाचार और राजासे लाभ करनेवाला करता है ॥ ७५ ॥

भ्रातृपतौ तुर्यगते पितृमोदसुखकृदुदयकृत्तेषाम् ॥
मात्रा सह वैरकरं पितृपैत्रभक्षको नरो जातः ॥ ७६ ॥

यदि तृतीयभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पिताके आनन्द और सुखकर्त्ता तथा माता पिताओंके उदयकर्त्ता होता है और माताके साथ वैर करनेवाला तथा पिताके धनके भक्षण करनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

दुश्चिक्येशे सुतगे सुबांधवाः स तु सहोदरैः पाल्यः ॥
दीर्घायुर्भवति नरः परोपकारी निरंतरं पुरुषः ॥ ७७ ॥

यदि तृतीयभावपति पंचम भावमें स्थित होवे तौ अच्छे बांधवोंवाला तथा सहोदर भ्राताओंसे पाले जानेवाला और बडे आयुवाला तथा परजनोंका उपकारकर्त्ता होता है ॥ ७७ ॥

षष्ठगते सहजपतौ बंधुविरोधी नयनरोगी च ॥
भूलाभी भवति भृशं कदाचिदपि रोगकलितश्च ॥ ७८ ॥

यदि तृतीयभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ बंधुओंसे विरोधकर्त्ता और नेत्र-रोगी तथा पृथ्वीके लाभवाला तथा किसी समयमें रोगसे दुःखित होता है ॥ ७८ ॥

सहजपतौ सप्तमगे नरस्य भार्या भवेत्सुवररूपा ॥
सौभाग्यवती युवतिः क्रूरे देवरगृहे याति ॥ ७९ ॥

यदि तृतीयभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री सुन्दर रूप-वाली और सौभाग्यवती होवे है। यदि पाप ग्रह होवे तौ वह स्त्री देवरके घरमें चली जाती है ॥ ७९ ॥

भ्रातृप्रभुरष्टमगः सहजमृतसोदरं नरं कुरुते ॥
क्रूरे बाहुव्यंगं पुरुषं जीवति यद्यष्टवर्षाणि ॥ ८० ॥

यदि तृतीयभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको मरे हुए सहोदर भ्राता-ओंवाला करता है और तृतीयभावपति पाप ग्रह होकर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ वह बालक यदि आठ वर्षपर्यन्त जीव सके तौ भुजासे हीन अंगवाला होता है ॥ ८० ॥

धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बंधुजितस्तथा सौम्ये ॥
सद्बांधवश्च सुकृतिः सोदरभक्तो भवेन्मनुजः ॥ ८१ ॥

यदि तृतीयभावपति पाप ग्रह होकर नवम भावमें स्थित होवे तौ बांध-वोंसे पराजित होता है और शुभ ग्रह होकर तृतीयभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य अच्छे बांधवोंसे युक्त तथा अच्छे कार्यवाला और भ्राताओंका भक्त होता है ॥ ८१ ॥

दुश्चिक्येशे दशमे नृपपूज्यो मातृबंधुपरिभक्तः
उत्तमबंधुसुमान्यो विनिश्चितो जायते मनुजः ॥ ८२ ॥

यदि तृतीयभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ राजासे सत्कार पानेवाला तथा माता और बांधवोंका भक्त तथा उत्तम बांधवजनोंसे मान्य तथा अच्छे निश्चयवाला मनुष्य होता है ॥ ८२ ॥

लाभस्थः सहजेशः सुबांधवं राज्यप्रियं नरं कुरुते ॥
पुरुषं बंधुषु पूज्यं सेवाभिधायिनं भोगनिरतं च ॥ ८३ ॥

यदि तृतीयभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ अच्छे बांधवोंसे

युक्त तथा राज्यप्रिय तथा बांधवोंमें पूज्य तथा सेवा चाहनेवाला और भोगवान् करता है ॥ ८३ ॥

व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधी सुबंधुसंतापी ॥
दूरेवासितबंधुं विदेशशीलं नरं कुरुते ॥ ८४ ॥

इति जातकसंग्रहे भ्रातृभावविचारः समाप्तः ॥ ३ ॥

यदि तृतीयभावपति द्वादश भावमें स्थित होवे तौ मित्रोंसे विरोध करनेवाला तथा अच्छे बांधवोंसे विरोधकर्त्ता तथा संतापकर्त्ता होता है और दूरमें वसाये हुए बंधुवाला तथा विदेशवासी नरको तृतीयभावपति द्वादश भावमें स्थित होकर करता है ॥ ८४ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां भ्रातृभावविचारः समाप्तः ॥ ३ ॥

सुहृद्भावविचारः ।

सुहृद्भावः तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे ॥
दृष्टेः शुभानां शुभयोगतोऽत्र भवेत्प्रलब्धिर्नियमेन तेषाम् ॥१॥

चतुर्थ भावमें सुहृत्, मित्र, गृह, ग्राम, चतुष्पद्, क्षेत्र, उद्यम इनका विचार होता है । यदि चतुर्थभाव शुभ ग्रहोंकर देखा जावे तथा शुभ ग्रहोंका योग होवे तौ तिन तिन सुहृत् गृह ग्राम आदिकी प्राप्ति नियमसे होवे है ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

पुरगृहेऽष्टचतुष्पदबंधुभूर्जनकमातृविचारणमंबुभे ॥
सुखधूतांगनजं श्वशुरं तथा करणमत्र विचारणमंबुभे ॥ २ ॥

भाषा—पुर, गृह, मित्र, चतुष्पद, बंधु, पृथ्वी, पिता, माता इनका विचार चतुर्थ भावमें होता है और सुख तथा घरेल स्त्रीका सुख तथा श्वशुर इनका विचार भी चतुर्थभावमें होता है ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

सुखं चतुर्थे क्षितिवाहनादेर्वापीतडागप्रहिभूरुहादेः ॥
क्षेत्रेष्टमित्रालयबंधुमातृवक्षःस्थलादेश्च फलं विचार्यम् ॥ ३ ॥

पृथ्वी वाहन आदिका और वापी, तडाग, कूप, वृक्ष आदिका और क्षेत्र, इष्टमित्र, गृह, बांधव, माता, वक्षस्थल आदिका सुख फल चतुर्थ भावमें विचारना चाहिये ॥ ३ ॥

अत्र सामान्यविचारेण सुखस्थानां फलानि तत्रादौ रवेः फलं गर्गः ।

बंधून्निहंति सविता बंधुस्थानगतो नृणाम् ॥
सततं कारयेत्तापं छिन्नवाहनमेव च ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थ भावमें सूर्य स्थित होवे तौ बांधवोंका नाश करता है और संताप और नष्ट वाहनोंवाला नरको करता है ॥ ४ ॥

जनयेद्बहुसौख्यानि संग्रामेऽप्यपलायनम् ॥
कृशं च बहुभार्याढ्यं मानिनं कुरुते रविः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे सुख तथा संग्राममें निश्चलता तथा पुरुषको बहुतसी स्त्रियोंसे युक्त तथा दूवरा करता है ॥ ५ ॥

चन्द्रफलम् ।

भृत्यभार्यावाहनानां हर्म्यवाहनसंपदः ॥
बंधौ कुमुदबंधौ चेद्भवंति सततं नृणाम् ॥ ६ ॥

यदि चतुर्थ भावमें चन्द्रमा स्थित होवे तौ नोकर चाकर स्त्री वाहन इनका सुख और मन्दिर वाहन संपदा मनुष्योंके होवे हैं ॥ ६ ॥

भौमफलम् ।

बंधुहीनं कुजो बंधौ भूम्याजीवो नरः सदा ॥
प्रवासी पंकिले देशे भवने वा सकर्दमे ॥ ७ ॥

यदि चतुर्थ भावमें मंगल स्थित होवे तौ पुरुषको बंधुहीन करता है और वह पुरुष पृथ्वीसे जीविका करनेवाला तथा परदेशमें रहनेवाला तथा कीचवाले देशमें वा गृहमें निवास करता है ॥ ७ ॥

बुधफलम् ।

बहुमित्रो बहुधनो बंधौ पापं विना बुधः ॥
नानारसविलासी च सपापे त्वन्यथा फलम् ॥ ८ ॥

यदि पाप ग्रहके विना बुध चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे मित्र और बहुतसे धनवाला तथा अनेक रसविलासी होता है और पापग्रहसहित बुध चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ अन्य प्रकार फल होता है ॥ ८ ॥

गुरुफलम् ।

भवंति बालमित्राणि यस्य मित्रगतो गुरुः ॥
दिव्यमालांबरक्रीडानानावाहनयोग्यता ॥ ९ ॥

यदि जिसके बृहस्पति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषके बालमित्र होते हैं और दिव्यमाला वस्त्र क्रीडा तथा अनेक वाहनोंकी योग्यता होवे है ॥ ९ ॥

भृगुफलम् ।

परदयितविचित्री वासवासी विलासी बहुविधिबहुभोगी राजपूज्यश्चिरायुः ॥ वरपरिकरभार्या भार्गवे बंधुसंस्थे भवति मनुजवर्गः सर्वदा विक्रमी च ॥ १० ॥

यदि शुक्र चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ दूसरोंका मित्र तथा विचित्र कर्म करनेवाला और ग्रामवासी तथा विलासकर्त्ता और बहुत प्रकारसे बहुत भोगनेवाला तथा राज्यपूज्य और बडे आयुवाला होता है और उस पुरुषके सुन्दर कमरवाली स्त्री होवे है और वह मनुष्य सदैव पराक्रमवाला होता है ॥ १० ॥

शनिफलम् ।

भग्नासनगृहो नित्यं विकलो दुःखपीडितः ॥
स्थानभ्रंशमवाप्नोति सौरे बंधुगते नरः ॥ ११ ॥

यदि शनैश्चर चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ टूटे हुए आसन और गृहवाला तथा विकल और दुःखसे संतप्त होता है और वह मनुष्य स्थाननाशको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

राहुफलम् ।

बंधुस्थानगतो राहुर्बंधुपीडाकरो भवेत् ॥
गवि कर्किणि मेषे तु स च बंधुप्रदो भवेत् ॥ १२ ॥

यदि राहु चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ बंधुकी पीडा करनेवाला होता है और वृष कर्क मेष इन राशियोंका चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ बंधुके देनेवाला होता है ॥ १२ ॥

केतुफलम् ।

चतुर्थे भवने केतुर्मातृपित्रोस्तु कष्टकृत् ॥
अतिचिंता महाकष्टं सुहृद्भिः सुखवर्जितम् ॥ १३ ॥

यदि चतुर्थ भावमें केतु स्थित होवे तौ माता पिताको कष्ट करता है और उस पुरुषसे अतिचिन्तासे महाकष्टित और मित्रोंसे सुखवर्जित करता है ॥ १३ ॥

अत्र सुखभवनादेव सर्वं सुखं तेन विशेषतो विचार्यमुक्तं च जातकसुधासिंधौ ।

ग्रामे वा नगरे वापि स्वस्थाने सौख्यकारणम् ॥
चतुर्थगैर्विलोक्यं वै ग्रहैर्बलयुतैः सदा ॥ १४ ॥

चतुर्थ भावमें स्थित हुए बली ग्रहोंकर ग्राम वा नगर वा स्वस्थानमें सदैव सौख्यका कारण देखना चाहिये ॥ १४ ॥

अत्र सुखेशग्रहवशात् पूर्वं गृहसुखदुःखयोगानाह यवनः ।

चतुर्थेशश्चतुर्थे वा यदा सूर्यो व्यवस्थितः ॥
अदृढं च गृहं तस्य विदग्धं चापि जायते ॥ १५ ॥

यदि सूर्य चतुर्थभावपति वा बली होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका गृह अदृढ और विशेषकर जला हुआ होता है ॥ १५ ॥

सोमे नवं च विज्ञेयं दग्धं भग्नं च भूमिजे ॥
चित्रं बुधे च विज्ञेयं सुदृढं च बृहस्पतौ ॥ १६ ॥

चंद्रमा चतुर्थभावपति वा बलवान् होकर स्थित होवे तौ उस पुरुषका गृह नवीन होता है और इस प्रकार मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ टूटा हुआ तथा जला हुआ गृह होता है और इस प्रकार बुध स्थित होवे तौ चित्र विचित्र प्रकारको गृह होता है और इस प्रकार होकर बृहस्पति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ अच्छा मजबूत दृढ गृह होता है ॥१६॥

मनोहरं तथा शुक्रे जीर्णं राहुशनैश्चरे ॥
चतुर्थगैः प्रवक्तव्यं वलिष्ठैर्भास्करादिभिः ॥ १७ ॥

यदि इस प्रकार शुक्र स्थित होवे तौ मनोहर गृह होता है और इस प्रकार शनैश्चर चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पुराना गृह होता है। यह फल चतुर्थस्थ सूर्यादि ग्रहोंकरके कहना चाहिये ॥ १७ ॥

गृहे द्रव्यज्ञानमाह ।

चंद्रे शुक्रे च तत्रस्थे धनं रौप्यमयं बहु ॥
प्रचुरं च तथा धान्यं रसाश्च बहुला गृहे ॥ १८ ॥

यदि चंद्रमा और शुक्र चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ बहुतसा रौप्य धन होता है और बहुतसा अन्न और बहुतसे रस गृहमें इकट्ठे रहते हैं ॥ १८ ॥

भवति नात्र संदेहो लग्नपैस्तैर्विशेषतः ॥
बुधे स्वर्णं गृहे तस्य जीवे रत्नान्वितं बहु ॥ १९ ॥

और वह चंद्रमा और शुक्र लग्नपति होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ विशेष करके रौप्य धन अन्न रस गृहमें सदैव रहते हैं इसमें संदेह नहीं और बुध चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ गृहमें सुवर्ण होता है और बृहस्पति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ गृह बहुतसे रत्नोंसे युक्त होता है ॥ १९ ॥

सूर्ये मौक्तिकबाहुल्यं तथा काव्ये विशेषतः ॥
भौमे शस्त्रयुतं ताम्रं शनौ लोहं तथायुधम् ॥ २० ॥

सूर्य स्थित होवे तौ गृहमें मोतियोंका बाहुल्य होता है और शुक्र स्थित होवे तौ विशेषकर मोती गृहमें स्थित रहते हैं और मंगल स्थित होवे तौ गृह शस्त्रोंसे युक्त तथा तांबेसे युक्त होता है और शनैश्चर स्थित होवे तौ लोहा और शस्त्र गृहमें होता है ॥ २० ॥

पित्रोः सुखदुःखयोगानाह ।

तत्रस्थैः सौम्यखेटैश्च पितुस्तस्य सुखं भवेत् ॥
मंगलश्च यदा सूर्यश्चतुर्थे बलिनौ यदि ॥
पित्तज्वरो वा व्रणरुक् तज्जनन्यै समादिशेत् ॥ २१ ॥

चतुर्थ स्थानमें स्थित हुए शुभ ग्रहोंकरके पिताको सुख होता है। यदि सूर्य मंगल बलवान् होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ उसकी माताके वास्ते पित्तज्वर वा व्रणरोग होता है ऐसा कहे ॥ २१ ॥

शनिर्यदा सचंद्रो वा रविणा वा समन्वितः ॥
मातुः शरीरदोषोत्थं व्यथां स कथयेत्सदा ॥ २२ ॥

शनैश्चर यदि चंद्रमासहित वा सूर्यसे युक्त होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ माताके शरीरदोषसे उत्पन्न हुई व्यथाको कहे ॥ २२ ॥

सैंहिकेयेन सौरेण जनन्यां बांधवो मृतः ॥
जलेन चोर्ध्वपातेन स्वात्मना वा तथापि हि ॥ २३ ॥

यदि चतुर्थ भावमें राहु शनैश्चर स्थित होवें तौ उसका बांधव जलसे वा ऊपरसे गिरनेसे वा अपने शरीरकर मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अस्य पातालसंज्ञा तेन कूपाकरादिविचारयोगानाह ।

प्रश्ने वा जन्मलग्नाद्वा पाताले चंद्रभार्गवौ ॥

तदाकूपादिकार्येषु क्षारं तोयं विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥

प्रश्नसे वा जन्मलग्नसे चतुर्थ भावमें चंद्रमा शुक्र स्थित होवें तौ कूपादिकार्योंके विषें क्षारजलको कहे ॥ २४ ॥

सहिकेये शनौ तीक्ष्णं जीवश्चाप्यमृतोपमम् ॥
रवौ भौमे च तत्रस्थे कष्टलभ्यं जलं भवेत् ॥ २५ ॥

यदि राहु और शनैश्चर चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ तीखा जल होता हैं और बृहस्पति चतुर्थ भावमें होवे तौ अमृतके समान जल होता है और सूर्य और मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ जल कष्टसे प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

बुधश्च सर्वकार्येषु मिश्रो मिश्रफलप्रदः ॥
अस्तंगतो यदा नाथश्चतुर्थभवनस्य च ॥
शुभं फलं तदा सर्वं विपरीतं भवेद्ध्रुवम् ॥ २६ ॥

बुध सब कार्योंमें शुभ ग्रह वा पाप ग्रहसे मिला हुआ होवे तौ मिला हुआ ही फल करता है । भाव यह है कि शुभके साथमें होवे तौ शुभ ग्रहकेसा फल करता है और पाप ग्रहके साथमें होवे तौ पाप ग्रहकेसा फल करता है । यदि चतुर्थ भवनका स्वामी अस्तको प्राप्त होवे तौ समस्त शुभ फल उलटा हो जाता है ॥ २६ ॥

अस्तंगतश्चतुर्थेशश्चतुर्थं न च पश्यति ॥
तदा पितुर्गृहं हित्वा जातो देशांतरं व्रजेत् ॥ २७ ॥

यदि चतुर्थ भावपति अस्तको प्राप्त होकर चतुर्थ भावको नहीं देखता होवे तौ पिताके गृहको त्यागकर अन्य देशको चला जाता है ॥ २७ ॥

सौम्याः सर्वे चतुर्थस्थाः पापाश्चान्यत्र संस्थिताः ॥
तदा गृहे हि जातस्य पूर्वजं धनमुच्यते ॥ २८ ॥

यदि समस्त शुभ ग्रह चतुर्थ भावमें स्थित होवें और पाप ग्रह अन्य भावमें स्थित होवें तौ उत्पन्न हुएके गृहमें पुरिखाओंका धन कहा है ॥ २८ ॥

विशेषविचारो यवनमतेन ।

स्वस्वामिशुभयुग्दृष्टं चतुर्थं मित्रसौख्यदम् ॥
संदृष्टो बुधभौमाभ्यां कुरुतेऽत्र सुहृत्क्षयम् ॥ २९ ॥

यदि चतुर्थ भाव अपने स्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवें तौ मित्रसौख्यको देता है । यदि चतुर्थ भाव बुध मंगल दोनों करके देखा गया होवे तौ मित्रोंका नाश करता है ॥ २९ ॥

चंद्राद्विलग्नाच्च रविश्चतुर्थे कुर्यात्पितृव्यस्य गृहास्पदत्वम् ॥
शुक्रस्तु दाराश्रयसौख्यवृत्तं स्रग्वस्त्रसौभाग्यगृहं विदध्यात् ॥ ३० ॥

चन्द्रमासे वा लग्नसे चतुर्थ भावमें सूर्य स्थित होवे तौ पिताके भ्राताके गृहकी स्वामिताको करता है और शुक्र स्थित होवे तौ स्त्रीके आश्रयसे सौख्यप्राप्ति तथा माला वस्त्र सौभाग्ययुक्त गृहको विधान करता है ॥ ३० ॥

बुधस्तु पत्न्याहितबंधुसौख्यं बंधौ परावासकृताधिवासम् ॥
पापान्वितो ज्ञोऽन्यगृहाटनानां कुजोऽर्कजो दासगृहे शयानाम् ॥ ३१ ॥

यदि बुध चतुर्थ भावमें स्थित होवै तौ स्त्रीसे हित और बंधुओंसे सुख करता है और मनुष्यको पराये स्थानमें किये हुए वासवाला करता है । यदि पापग्रह सहित बुध चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ अन्यके गृहमें भ्रमणको देता है और मंगल और शनैश्चर चतुर्थ स्थित होवे तौ दासके घरमें निवास कराता है ॥ ३१ ॥

पापश्चतुर्थे परवेश्मसंस्थस्तदीक्षितोऽन्यैः शुभदैरदृष्टः ॥
करोत्यसंख्यानपरोत्थतापं प्रायस्तु बंधूद्भवमेव दुःखम् ॥ ३२ ॥

यदि पाप राशिका पाप ग्रह चतुर्थ भावमें स्थित होवे और पाप ग्रहकर हीं देखा गया होवे और शुभ ग्रहोंकर नहीं देखा गया होवे तौ अनन्त पराये किये संताप और बहुधा बांधवोंसे उत्पन्न हुए दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

गर्गः ।

जीवेक्षिते शुभं शुक्रज्ञारदृष्टे सुहृत्क्षयः ॥
सुखे क्रूरयुते मातुः क्लेशकृत्सच्छुभे शुभम् ॥ ३३ ॥

यदि चतुर्थ भाव बृहस्पति दृष्ट होवे तौ मित्रोंको शुभ होता है और शुक्र बुध मंगल इनसे दृष्ट होवे तौ मित्रोंका नाश होता है । यदि चतुर्थ भाव पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ माताको क्लेश करता है और शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ माताको शुभदायक होता है ॥ ३३ ॥

अन्ययोगानाहोदयभास्करात् ।

अधिपसौम्ययुतेक्षितमंबुभं सुखकरं नियतं सबलं तथा ॥
अथ चतुर्थलवाश्च यदुन्मिता बुधदृशा हि तदुन्मितमातुलाः ॥ ३४ ॥

यदि चतुर्थ भावका स्वामी शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होकर सबल होवे तौ सुखकारी होता है । चतुर्थ भावमें जितने नवांश बुधकी दृष्टिसे युक्त होवें उतने ही मातुल (मामा) होते हैं ॥ ३४ ॥

अनृजुतुंगगतैस्त्रिगुणोन्मितिर्भवति तन्मृतिवाह्यमलास्तगैः ॥
अथ सुखेशसमं श्वशुरं वदेत्तनुसुखं हि ततः प्रियतातयोः॥ ३५ ॥

वक्री और उच्च ग्रहोंकर यदि चतुर्थ भाव नवांश देखे जावें तौ त्रिगुण करके मामाओंकी संख्या होवें और पाप ग्रह और अस्तको प्राप्त हुए ग्रहोंकर चतुर्थ भाव नवांश देखे गये होवें तौ उतने ही मामाओंका मरण होता है। चतुर्थभावपतिके समान श्वशुरको कहे और चतुर्थभावपतिसे ही मित्र और पिताके शरीरसुखको कहे ॥ ३५ ॥

मातृहयोगानाहोदयभास्करे ।

सहजपापनिरीक्षितचंद्रमा विशुभदृग्जननीमरणप्रदः ॥
सुखखयोश्च रिपुव्यययोः शशी खलयुतः पितृमातृहरः क्रमात् ३६

यदि तृतीय भावमें पाप ग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा शुभ ग्रहके योगदृष्टिसे हीन होवे तौ माताके मरणको देता है। यदि चतुर्थ वा दशम भावमें स्थित हुआ चंद्रमा पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ पिताके हरनेवाला होता है और षष्ठ वा द्वादश भावमें स्थित हुआ चंद्रमा यदि पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ माताको हरनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

त्रिमितवर्षगणैरथवा तयोर्गतबले सहजेऽपि तथा फले ॥
विधुररौ च मृतौ शनिरायगो धरणिजोऽष्टसमासु विमातृकृत्॥३७॥

परन्तु यह फल तीन वर्षकरके होता है अथवा चतुर्थ दशम और षष्ठ द्वादश भावोंको और तृतीय भावके निर्बल होनेपर अर्थात् पाप ग्रहोंसे युक्त होनेपरभी तिसी प्रकार फल होता है। यदि चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे और अष्टमभावमें शनैश्चर स्थित होवे और मंगल एकादश भावमें स्थित होवे तौ आठ वर्षमें मातासे हीन कर देता है ॥ ३७ ॥

यदि तनौ गुरुभूमिसुतो धने सुररिपुः सहजे जननीहरः ॥
हरिकुजः प्रमदाभृगुजस्तुला शनिरगुर्मिथुने च विमातृकृत् ॥३८॥

यदि लग्नमें बृहस्पति और द्वितीय भावमें मंगल और तृतीय भावमें शुक्र होवे तो भी माताके हरनेवाला होता है। यदि सिंहराशिका मंगल और कन्याराशिका शुक्र और तुलाराशिका शनैश्चर और मिथुनराशिका राहु स्थित होवे तौ मातासे हीन करता है ॥ ३८ ॥

यदि खभे दितिजो जनकांबिकासुखहरोऽकसमासु च तौ हरेत् ॥
व्ययविधुर्यदि वैरिखलोऽम्बुगो धरणिजश्च तदा जननीं हरेत्॥३९॥

यदि दशम भावमें शुक्र स्थित होवे तौ पिता माताके सुखके हरनेवाला होता है और बारह वर्षमें पिता माताको हरता है। यदि बारहवें भावमें चंद्रमा और छठे भावमें पाप ग्रह और चतुर्थ भावमें मंगल स्थित होवे तौ माताका नाश करता है॥ ३९॥

व्ययरिपुस्थखलैर्जननीभयं गगनतुर्यगतैश्च पितुर्भयम्॥
मदनगस्तपनो निजतुंगगस्तदपरत्र विधुर्जननीहरः॥ ४०॥

बारहवें और छठे भावमें स्थित हुए पाप ग्रहोंकरके माताको भय होता है और दशम और चतुर्थमें स्थित हुए पाप ग्रहोंसे पिताको भय होता है। यदि सूर्य अपने उच्च राशिका सप्तम भावमें स्थित होवे और तिससे अन्य स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे तौ माताका नाश करता है॥ ४०॥

मातृसुखयोगः।

विधुभतो मदने यदि वाक्पतिर्भवति चंद्रयुतो जननीसुखम्॥४१॥

चंद्रमाके राशिसे सप्तम भावमें बृहस्पति चंद्रमासहित स्थित होवे तौ माताको सुख होता है॥ ४१॥

पितृहयोगाः।

रिपुविधौ च शनौ वपुषि स्मरे धरणिजे जनितः पितृहानिदः॥
सुररिपुर्गुरुभे रिपुगोऽगगोऽम्बुनि च वा पितृहा त्रिभुजाब्दके ४२॥

यदि छठे भावमें चंद्रमा और लग्नमें शनैश्चर और सप्तम भावमें मंगल स्थित होवे तौ उत्पन्नमात्र पुत्र पिताकी हानि करनेवाला होता है। यदि शुक्र बृहस्पति राशिका छठे भावमें वा नम्र भावमें वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ तीन वा दो वर्षमें पिताका नाश करता है॥ ४२॥

सुररिपुर्व्ययगोऽवनिजः खभे स्मररविः पितृकष्टकरस्तदा॥
गगनगोऽवनिजो यदि वैरिभे पितृविपत्तिकरः परथा शुभः॥४३॥

यदि शुक्र बारहवें भावमें और मंगल दशम भावमें और सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पिताको कष्ट करता है। यदि मंगल दशम भावमें शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तौ पिताके नाश करनेवाला होता है और प्रकार शुभ होता है॥ ४३॥

यदि शनिस्तनुगश्च विधौ रिपौ मदनगश्च कुजो पितृनाशकः॥४४

यदि शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे और चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे और सप्तम भावमें मंगल स्थित होवे तौ पिताका नाश करता है॥ ४४॥

गंडांतः ।

हयमघानिर्ऋतिप्रथमं घटीत्रयमहर्निशि संधिसु संभवे ॥
पितृवपुर्जननीमृतिदं क्रमाम् परिणये मृतिकृच्च गमेऽर्थहृत् ॥४५॥

अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंकी जो कि पहिली तीन घटिका हैं तिनमें और रात्रि दिनकी जो कि संध्या है तिसमें जन्म होवे तौ क्रमसे पिताके शरीर और माताको मरण देता है और विवाहमें वर कन्याका मरण करता है और यात्रामें धनको हरता है ॥ ४५ ॥

वंशहयोगानाह ।

तनुधनव्ययसप्तमगैः खलैर्भवति वंशविनाशकरः शिशुः ॥
यदि चतुष्कचतुष्टयगाः खला धनखलश्च कुलद्रविणांतकृत् ॥४६॥

यदि पाप ग्रह लग्न द्वितीय द्वादश सप्तम इन भावोंमें स्थित होवे तौ बालक वंशविनाश करता है । यदि चारों केन्द्रोंमें और द्वितीय भावमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ वंशके धनका नाश करता है ॥ ४६ ॥

खतपसोर्हिमगुर्मदने सितोऽम्बुनि खलो यदि वंशविनाशकृत् ॥४७॥

यदि दशम वा नवम भावमें चंद्रमा स्थित होवे और सप्तम भावमें शुक्र स्थित होवे और चतुर्थ भावमें पाप ग्रह स्थित होवे तो वंशके विनाश करनेवाला होता है ॥ ४७ ॥

अन्यच्च ।

तनौ यमेऽब्जे च रिपौ बुधेऽस्ते पितुःक्षयोऽथो किल केन्द्रगाश्चेत् ॥
क्रूरा धने वापि तथा त्रिकोणे वंशक्षयायैष दरिद्रयोगः ॥ ४८ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर और षष्ठ भावमें चंद्रमा और सप्तम भावमें बुध स्थित होवे तौ पिताका नाश होता है । यदि पाप ग्रह केन्द्रमें स्थित होवें अथवा पाप ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें अथवा त्रिकोण नवम पंचम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ वंशके नाशके वास्ते होवे हैं और यह दरिद्रयोग होता है ॥ ४८ ॥

वाहनसुखयोगानाह ।

सुखपतौ स्वभगे सनवेश्वरे शुभयुते भटपो यदि वाहपः ॥
वपुषि जीवदृशा नृपपूजितो यदि सुखेट् सुखदृग्भवगस्तदा ॥४९॥
अमितयानसुवाहनहर्षदो यदि सुखेट्स्वभगस्तनुपान्वितः ॥
अलमचिंतितमंदिरदः सुहृत्सुखकरःपरधामगतो न चेत् ॥ ५० ॥

यदि चतुर्थभावपति अपनी राशिमें स्थित होवे और नवम भावपतिसे युक्त तथा शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ शूरवीरोंका राजा होता है और चतुर्थभावपति लग्नमें बृहस्पतिकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ राजसत्कारसे युक्त होवे। यदि बृहस्पतिकी दृष्टिसे युक्त चतुर्थभावपति चतुर्थभावके देखनेवाला होवे अथवा ग्यारहवें भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे यान सवारी और वाहन और आनन्दको देता है। यदि चतुर्थभावपति अपनी राशिमें युक्त होवे और लग्नपतिसे युक्त होवे तौ अकस्मात्‌ही मंदिरके देनेवाला होता है और मित्रोंका सुख करनेवाला होता है और यदि चतुर्थभावसे अन्य भावमें स्थित होवे तौ यह गृहप्राप्तिका फल नहीं होता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

गृहदाहयोगः।

अथ दशांबुखला हि यदुन्मितास्त्रिकगताश्च निजांत्यपसंयुताः ॥
ज्वलनदग्धगृहाश्च तदुन्मिता नुरतिकष्टकराः सततं मताः ॥५१॥[1]

यदि जितने पाप ग्रह द्वादशभावपतिसे युक्त होकर दशम चतुर्थ और षष्ठ, अष्टम द्वादश भावोंमें स्थित होवें तौ उतने ही अग्निसे जले हुए गृह होते हैं और मनुष्यको अति कष्ट करनेवाले होते हैं ॥ ५१ ॥

यदि कुजोऽम्बुनि वैरिगृहेऽम्बुपः सरिपुदृग्गृहदाहकरो मतः ॥
यदि कुजो यदि वा रविरंबुगो विभृगुचंद्रदृशा गृहदाहकृत् ॥५२॥

यदि मंगल शत्रुग्रहके राशिका चतुर्थ भावमें स्थित होवे और चतुर्थभावपति शत्रुग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ गृहके दाह करनेवाला होता है। यदि मंगल वा सूर्य चतुर्थ भावमें स्थित होवे और शुक्र चन्द्रमाकी दृष्टिसे हीन होवे तौ गृहके दाह करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

वाहननाशयोगानाह।

अथ चतुर्थखलाश्च यदुन्मिताः शुभदृशा रहिता हि तदुन्मिताः ॥
विरतयो हितवाहनवाजिनां यदि मृतिव्ययगाः सुखदर्शिनः ॥५३॥

जितने पाप ग्रह शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होकर चतुर्थ भावमें स्थित होवें उतने ही अच्छे वाहन घोडाओंका विनाश होता है. अथवा जितने पाप ग्रह अष्टम द्वादश स्थानमें स्थित होकर चतुर्थ भावको देखते होवें उतने ही अच्छे वाहनोंका नाश होता है ॥ ५३ ॥

खलखगाश्च तथा यदि सद्मपो गतबलस्त्रिकगः सुखहानिदः ॥
यदि सपापविधुर्हि चतुष्टये कृशतरः स्वदिनर्जननीहरः ॥ ५४ ॥

---

१ अयं विचारो जातकालंकारे इत्थमुक्तः। "यावन्तः पापखेटा धनदशमगृहान्त्यपैश्चेत्त्रिकस्था युक्तास्तावत्प्रमाणा ज्वलनवशगताः क्लेशदाः स्युर्गृहा नुः ॥"

यदि चतुर्थभावपति निर्बल होकर षष्ठ अष्टम द्वादश भावमें स्थित होवे तौ सुखकी हानि करता है । यदि पापग्रहसहित क्षीण चन्द्रमा चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ माताके नाश करनेवाला होता है ॥ ५४ ॥

द्विरदगोरथवच्छिबिकोष्ट्रकाश्वमहिषाद्यधिपा रवितः क्रमात् ॥
द्विवहवो यदि सप्तमगाः खगाः स्वगृहतुंगगताः शकटाधिपः ५५॥

सूर्यसे लेकर क्रमसे इन वाहनोंके ग्रह अधिपति होते हैं अर्थात् सूर्य हार्थीका स्वामी है, चन्द्रमा गौ बैलका स्वामी है, मंगल रथका स्वामी है, बुध शिबिका (पालकी) का स्वामी है, बृहस्पति उष्ट्रका स्वामी है और शुक्र घोडेका स्वामी है, शनैश्वर महिष (भैंसा) का स्वामी है । यदि दो वा बहुतसे ग्रह सप्तम भावमें स्थित होकर अपनी राशि वा उच्च राशिमें स्थित होवे तौ पुरुष गाडीका अधिप होताहै५५

यदि शुभौ व्ययकोशगतौ तनौ तनुपतौ यदि वांशककेंद्रयोः ॥
तनुपतिर्यदि वोच्चत्रिकोणभं श्रयति संपतियुक्शिबिकापतिः ५६॥

यदि दो शुभ ग्रह क्रमसे बारहवें और द्वितीय भावमें स्थित होवें और लग्नपति लग्नमें वा अपने नवांशमें वा केन्द्रमें स्थित होवे अथवा लग्नपति अपने उच्च राशि वा मूल त्रिकोण राशिमें स्थित होवे तौ संपत्तिवाला तथा पालकीका अधिपति होता है ॥ ५६ ॥

गुरुलवस्वगृहे च तदोष्ट्रवांस्तनुभवाधिपजीवदृशा तथा ॥
यदि खगास्तनुतः प्रमदावधि प्लवपतिर्बहुभिर्जलगैस्तथा ॥ ५७ ॥

यदि बृहस्पतिका नवांश वा बृहस्पतिका राशिलग्नपति एकादश भावपति बृहस्पति इनकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ ऊंटवाला होता है । यदि लग्नसे लेकर समस्त ग्रह सप्तमभावपर्यन्त स्थित होवें तौ नावका स्वामी होता है । यदि बहुतसे जलचारी ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ नावका स्वामी होता है ॥ ५७ ॥

तनुगते नृलवे किल गीतविद्धिमकरे च तथांबुनि तत्सुखम् ॥
नयनयो रसनास्पदनासिकाश्रुतिमनस्सु तथा त्वचि लिंगके ५८॥
अधिकुतैर्बहुधार्कमुखैः सुखं दशमगैः परथापरथा भवेत् ॥ ५९ ॥

यदि लग्नमें नरराशिका नवांश स्थित होवे और चन्द्रमा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ गाना जाननेवाला होता है और गानेसे ही सुख होता है । यदि सूर्यादि ग्रह बलवान् होकर दशम भावमें स्थित होवें तौ नेत्रादिकोंका सुख होता है अर्थात् बली सूर्य दशम भावमें स्थित होवे तौ नेत्रोंका सुख होता है, चन्द्रमा होवे

तौ जिह्वाका सुख होता है, मंगल होवे तौ नासिकाका सुख होता है, बुध होवे तौ श्रवणका सुख होता है,बृहस्पति होवे तौ मनका सुख होता है,शुक्र होवे तौ त्वचाका सुख होता है, और शनैश्चर होवे तौ लिंगका सुख होता है और यह ग्रह अन्यथा होवे तौ और प्रकार फल होता है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

सुखप्रमाणयोगानाह यवनमतेन ।

अनंतसौख्यं सुरराजमंत्री राजाधिपः सोमसुतः सितश्च ॥
सहस्रकः शीतमयूखमाली सर्वाधिपः सूर्यशनैश्चरश्च ॥ ६० ॥

यदि बृहस्पति अपने उच्च भावमें स्थित होवे तौ अनन्त सुख होता है और बुध शुक्र अपने उच्च भावमें स्थित होवें तौ राजाधिराज होता है । यदि चंद्रमा अपने उच्चमें स्थित होवे तौ सहस्रपति होता है और सूर्य शनैश्चर अपने उच्च राशिमें स्थित होवें तौ सबका स्वामी होता है ॥ ६० ॥

स्वतुंगसंस्थास्त्वनुपाततश्च सौख्यानि यच्छंति सदा ग्रहेंद्राः ॥
नीचाश्रिता हीनबला भवंति षड्वर्गशुद्धाश्च यथा स्वतुंगे ॥ ६१ ॥

यह ग्रह अपने उच्च राशिमें स्थित होवें तौ इस प्रकार फल देते हैं और अन्य राशियोंमें स्थित होवें तौ अनुपात नाम त्रैराशिकसें जानना चाहिये, जो कि नीच राशिमें स्थित होवे तौ हीनबल होते हैं और जो कि षड्वर्गमें शुद्ध होवें वहभी उसी प्रकार बलवाले होते हैं । जिस प्रकार कि अपने उच्च राशिमें बलवाले होते हैं ॥६१॥

तुर्यभावे राशिफलं यवनमतेन ।

मेषे सुखस्थे लभते नरः सौख्यं चतुष्पदैः ॥
स्त्रीभोगैरन्नपानाद्यैः स्वभुजोपार्जितैर्धनैः ॥ ६२ ॥

यदि मेषराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ चौपायोंसे तथा स्त्रीभोगोंसे तथा अन्नपानादिसे तथा अपने भुजासे इकट्ठे किये धनोंसे सौख्यको प्राप्त होता है ॥ ६२॥

वृषे सुखस्थे लभते ना सौख्यं विविधैर्नरैः ॥
शौर्येण सेवया राज्ञां विप्रैर्यमव्रतैस्तथा ॥ ६३ ॥

यदि वृषराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ विविध प्रकारके मनुष्य तथा शूरवीरतासे तथा राजाओंकी सेवासे तथा ब्राह्मण और नियमव्रतोंसे सौख्यको मनुष्य प्राप्त होता है ॥ ६३ ॥

तृतीयराशौ सुखगे सुखानि स्त्रीकृतानि च ॥
जलावगाहैर्वन्यैश्च बहुपुष्पांबरैस्तथा ॥ ६४ ॥

यदि मिथुनराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ स्त्रियोंके किये विविध सुखोंको प्राप्त होता है और जलक्रीडा तथा वनके फल फूलोंसे तथा बहुतसे पुष्प और वस्त्रोंसे सुखको प्राप्त होता है ॥ ६४ ॥

कर्के सुखस्थे तु लभते जलजैरुद्भवं सुखम् ॥
बहुकूपतडागोत्थं भूम्यारामस्पदादिकम् ॥ ६५ ॥

यदि कर्कराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ जलचारियोंसे उत्पन्न हुए सुख तथा कूप तालाव आदिसे उत्पन्न हुए बहुत सुख और भूमि बगीचा स्थान आदिकके सुखको प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

सिंहे सुखस्थे तु सुखं प्राप्नोति मनुजो हठात् ॥
दरिद्रशीलवैपर्यात्कुमित्राद्वनसंश्रयात् ॥ ६६ ॥

यदि सिंहराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ हठसे तथा दरिद्रजनोंके शीलकी विपरीततासे तथा बुरे मित्रोंसे और वनके आश्रयसे सुखको प्राप्त होता है ॥ ६६ ॥

कन्यागृहे बंधुगृहे सौख्यं तु प्रमदाजनात् ॥
नृपसेवान्नपानाच्च उद्यमाद्धनसेवनात् ॥ ६७ ॥

यदि कन्याराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीजनोंसे तथा राजाकी सेवा और अन्नपानसे तथा अनेक प्रकारके उद्यम और धनसेवासे सुख होता है ॥ ६७ ॥

तुले सुखस्थे लभते सुखं पैशुन्यजं सदा ॥
चौर्येर्युद्धैर्मोहनैश्च तथा हास्यानुकीर्तनैः ॥ ६८ ॥

यदि तुलाराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पिशुनता नाम चुगलखोरीसे उत्पन्न हुए सुखको तथा चोरीसे तथा युद्धसे और मोह करनेसे तथा हास्यवार्ताके करनेसे सुखको प्राप्त होता है ॥ ६८ ॥

अलौ सुखस्थे मनुजो जलजैस्तु लभेत्सुखम् ॥
विषशास्त्रास्त्रजैश्चैव धनं नीचस्य सेवया ६९ ॥

यदि वृश्चिकराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ जलचारियोंसे सुखको प्राप्त होता है तथा विष और शस्त्रास्त्रसंबंधी व्यापारसे और नीचकी सेवासे धनको प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥

चापे सुखगते तद्वद्धनं संगरसेवया ॥
नृपसेवानुरक्तैश्च वचोभिर्युद्धकीर्तनैः ॥ ७० ॥

यदि धनुराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ संग्रामकी सेवासे तथा राजसेवाके अनुरागी जनोंसे तथा संग्रामसूचक वचनोंसे धनको प्राप्त होता है ॥ ७० ॥

मृगे सुखस्थे सुखभाक्तोयाच्चैव जलाशयात् ॥
पित्रोपचारैरारामाद्वाप्यादिवटसेवनात् ॥ ७१ ॥

यदि मकरराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ जलसे तथा जलाशयसे तथा पिताकी सेवासे तथा बाग बगीचासे तथा बावडी तालावके किनारेकी सेवा करनेसे सुखभागी होता है ॥ ७१ ॥

घटे सुखस्थे स्त्रीसंगात्सुखं चैव धनं बहु ॥
मिष्टान्नपानैः पुष्पाद्यैः सुवाक्यैः कपटानुगैः ॥ ७२ ॥

यदि कुंभराशि चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीके संगसें तथा मिष्टान्नपानसे तथा अच्छे पुष्पादिसे तथा कपटी जनोंसे सुख और बहुतसे धनको प्राप्त होता है ॥७२॥

मीने सुखस्थे तु सुखं मनुष्यो प्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण ॥
सुखं तथा देवसमुद्भवैश्च स्थानैः सुवस्त्रैः सुधनैर्विचित्रैः ॥ ७३ ॥

यदि मीनराशिसे चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य जलके आश्रयसे सौख्यको प्राप्त होता है और देवसंबंधी स्थानोंसे तथा अच्छे वस्त्र और विचित्र प्रकारके धनोंसे सुखको प्राप्त होता है ॥ ७३ ॥

सुखेशस्य भावेषु फलं वृद्धयवनः ।

तुर्यपतौ लग्नगते पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते ॥
पितृपक्षवैरिकलितं पितृनाम्ना सुप्रसिद्धं च ॥ ७४ ॥

यदि चतुर्थभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पिता पुत्र आपसमें बडे स्नेहवाले होते हैं और पुरुषको पितापक्षके वैरियोंसे युक्त तथा पिताके नामसे विख्यात चतुर्थभावेश लग्नमें स्थित होकर करता है ॥ ७४ ॥

पातालपे धनस्थे क्रूरखगे पितृविरोधकृच्च शुभे ॥
पितृपालिकः प्रसिद्धः पिता लभेन्नैव तल्लक्ष्मीम् ॥ ७५ ॥

यदि चतुर्थभावपति क्रूर ग्रह होकर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पितासे विरोधकर्त्ता होवे और शुभ ग्रह होवे तौ पुरुष पिताका पालन करनेवाला तथा विख्यात होता है परन्तु पिता उस पुरुषकी लक्ष्मीको नहीं प्राप्त होता है ॥ ७५ ॥

तुर्येशे सहजगते पितृमातृच्छेदकं विदितपितरम् ॥
पित्रा सह कलहकरं पितृबांधवपालकं विदितम् ॥ ७६ ॥

यदि चतुर्थभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको पिता माताके नाशकर्त्ता तथा विख्यात पितावाला और पिताके साथ वैर करनेवाला और पिताके बांधवोंका पालनकर्त्ता तथा संसारमें विख्यात करता है ॥ ७६ ॥

तुर्यगते तुर्यपतौ पितरि क्षितिपाधिनाथमानरतम् ॥
पितृलाभपरो भवति स्वधर्मनिरतः सुखी भवति ॥ ७७ ॥

यदि चतुर्थभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पिता राजा स्वामी इनका मान करनेमें तत्पर मनुष्यको करता है और वह मनुष्य पिताके लाभ करनेवाला और स्वधर्ममें सावधान तथा सुखी होता है ॥ ७७ ॥

सुतगे तुर्यगृहेशे पितृलाभाद्भोगवान् मनुजः ॥
दीर्घायुर्भवति नरो क्षितिपतिसिद्धस्तु लाभदो पुत्रात् ॥७८॥

यदि चतुर्थभावपति पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पिताके लाभसे भोगवाला दीर्घ आयुवाला और राजासे विख्यात और पुत्रसे लाभदायक होता है ॥ ७८ ॥

हिबुकपतौ रिपुसंस्थे पितृद्रव्यनाशको पितरि वैरी ॥
पितृदोषकरः क्रूरे सौम्ये धनसंचयस्तनयः॥ ७९ ॥

यदि चतुर्थभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ वह पुरुष पिताके धनका नाशक और पितासे वैरकर्त्ता होता है । यदि चतुर्थभावपति पाप ग्रह होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पिताके दोष करनेवाला होता है और शुभ ग्रह होवे तौ वह पुत्र धनके संचय करनेवाला होता है ॥ ७९ ॥

अंबुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं सुखान्न पालयति ॥
सौम्ये पालयति पुमान् बलयुक्तः कुलपतिं कुरुते ॥ ८० ॥

यदि चतुर्थभावपति पाप ग्रह होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ सुखसे श्वशुरको नहीं पालता है और शुभ ग्रह होवे तौ पालनकर्त्ता पुरुष होता है और बली होवे तौ पुरुषको कुलपति करता है ॥ ८० ॥

छिद्रगते तुर्य्यपतौ क्रूरं रोगान्वितं दरिद्रं वा ॥
दुष्कर्मपरं मृत्युप्रियमथवा मानवं कुरुते ॥ ८१ ॥

यदि चतुर्थभावपति अष्टम भावमें होवे तौ पुरुषको क्रूर रोगी और दरिद्र तथा बुरे कर्मवाला अथवा मृत्युप्रिय करता है ॥ ८१ ॥

सुकृते तुर्य्यपतावति सत्संगी समस्तविद्यावान् ॥
पितृधर्मसंग्रहकृत् पितृतीर्थापेक्षको मनुजः ॥ ८२ ॥

यदि चतुर्थभावपति नवम भावमें स्थित होवे तो पुरुष सत्संग करनेवाला तथा समस्त विद्याओंसे युक्त और पिताके धर्मका संग्रहकर्त्ता तथा पिताके तीर्थके चाहनेवाला होता है ॥ ८२ ॥

पातालेशेऽम्बरगे पापे सुतो मातरं त्यजति ॥
कन्यादयितः सौम्यैः पुनरन्यसेवाकरो पुरुषः ॥ ८३ ॥

यदि चतुर्थभावपति पाप ग्रह होकर दशम भावमें स्थित होवे तो पुत्र माताको त्याग देता है और कन्याका प्यारा होता है और शुभ ग्रह होवे तो अन्यकी सेवा करनेवाला है ॥ ८३ ॥

लाभगते तुर्य्यपतौ पितृपालको विदेशगो चाढ्यः ॥
पापे तत्पतिखेटे त्वन्यपितुर्जन्म निर्देश्यम् ॥ ८४ ॥

यदि चतुर्थभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तो पुरुष पिताका पालनकर्त्ता तथा परदेशगामी और धनाढ्य होता है और चतुर्थभावपति पाप ग्रह होकर एकादश भावमें स्थित होवे तो अन्य पितासे जन्म कहना चाहिये ॥ ८४ ॥

द्वादशगे तुर्य्यपतौ मृतपितृको वा विदेशगो वाच्यः ॥
पुत्रस्य पापखेटे त्वन्यपितुर्जन्म निर्देश्यम् ॥ ८५ ॥

इति जातकसंग्रहे सुहृद्भावविचारः समाप्तः ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थभावपति द्वादश भावमें स्थित होवे तो मृतपितावाला तथा परदेशवासी होता है और चतुर्थभावपति पाप ग्रह होकर द्वादश भावमें स्थित होवे तो अन्य पितासे पुत्रका जन्म कहना चाहिये ॥ ८५ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां सुहृद्भावविचारः समाप्तः ॥ ४ ॥

सुतभावविचारः ।

अथ सुतभावः तत्र सुतभावे किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्था ॥
सुताभिधाने भवने नराणांहोरागमज्ञैः परिचिंतनीयम् ॥ १ ॥

बुद्धि, प्रबंध, सन्तान, मन्त्र, विद्या, विनेय, गर्भस्थिति, नीति और व्यवस्था यह मनुष्योंके पंचम भावमें ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंको विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अत्र सामान्यविचारेण पंचमस्थितार्कादीनां फलानि तत्रादौ रवेः फलम् ।

पंचमे स्थिरगेहे स्याद्रविः प्रथमपुत्रहा ॥
न हंति चरभे पुत्रानन्यर्क्षे पुत्रघातकः ॥ २ ॥

यदि पंचमभावमें स्थिरसंज्ञक राशिमें सूर्य स्थित होवे तौ पहिले पुत्रके नाश करनेवाला होता है और चरसंज्ञक राशिपर स्थित होकर पंचम भावमें स्थित होवें तौ पुत्रोंको नहीं हनता है और इनसे अन्य राशियोंपर स्थित होकर पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रनाशक होता है ॥ २ ॥

चन्द्रफलम् ।

पंचमे रजनीनाथः कन्यापत्यमपुत्रकम् ॥
क्षीणः पापयुतो वापि जनयेच्चंचलां सुताम् ॥ ३ ॥

यदि पंचम भावमें चन्द्रमा होवे तौ पुरुषको कन्यासंतानवाला और पुत्रहीन करता है । यदि पंचमभावस्थ चंद्रमा क्षीण वा पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ चंचल पुत्रीको उत्पन्न करता है ॥ ३ ॥

भौमफलम् ।

रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचो वा पापसंयुतः ॥
भूमिजः पुत्रशोकार्त्तिं करोति नियतं नृणाम् ॥ ४

यदि पञ्चम भावमें स्थित हुआ मंगल शत्रु ग्रहसे दृष्ट वा शत्रु ग्रहके राशिमें स्थित होवे अथवा नीच वा पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ पुत्रशोकके दुःखको करता है ॥४॥

बुधफलम् ।

पंचमस्थश्चंद्रपुत्रः संतानं प्रकरोति हि ॥
अस्तंगतः शत्रुदृष्टश्चोत्पन्नस्य विनाशकः ॥ ५ ॥

पञ्चम भावमें स्थित चंद्रमाका पुत्र बुध सन्तान सुखको करता है और पञ्चम-भावस्थित बुध अस्तको प्राप्त वा शत्रुग्रहसे दृष्ट होवे तौ उत्पन्न हुए पुत्रका विनाश करता है ॥ ५ ॥

गुरुफलम् ।

समृद्धो बहुपुत्रश्च दाता भोक्ता गुणान्वितः ॥
धनी मानी च सततं सुतस्थे देवतागुरौ ॥ ६ ॥

यदि बृहस्पति पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य समृद्धियुक्त तथा बहुत पुत्रोंवाला, दानी, भोगी, गुणी, धनी और मानी होता है ॥ ६ ॥

भृगुफलम्।

सुतसुखविविधोपचितं परमधनं पंडितं शुक्रः॥
कुरुते पंचमराशौ मंत्रिणमथ दंडनेतारम्॥ ७॥

यदि शुक्र पञ्चम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको पुत्रसुख और विविध प्रकारसे पुष्ट और परम धनी तथा पंडित तथा राजमंत्री और दण्डपति करता है॥ ७॥

शनिफलम्।

सुतभवनगतोऽरिमंदिरस्थो सकलसुतान्विनिहंति मंदगामी॥
समुदितकिरणःस्वतुंगभस्थःकथमपि जनयेत्सुतीक्ष्णमेकपुत्रम्॥८॥

यदि शत्रुराशिमें स्थित होकर शनैश्चर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ समस्त पुत्रोंका नाश करता है और उदयको प्राप्त होकर शनैश्चर अपने उच्च राशिका पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ बडे तीक्ष्ण एक पुत्रको उत्पन्न करता है॥ ८॥

राहुफलम्।

तनयं दीनमलिनं सुतर्क्षे रचयेत्तमः॥
यदि चंद्रगृहं तत्स्यात्तदानीं संततिर्भवेत्॥ ९॥

यदि राहु पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ दीन मलिन पुत्रको उत्पन्न करता है। यदि राहु स्थित पञ्चम भावमें चंद्रमाकी राशि होवे तौ संतान होता है॥ ९॥

सिंहे कुलीरसंस्थे राहुः पुत्रेऽथ पुत्रिणं कुरुते॥
अन्यस्मिन्नपि राशौ पुत्रविहीनो भवेन्मनुजः॥ १०॥

यदि सिंह वा कर्कराशिपर स्थित होकर राहु पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको पुत्रवाला करता है और यदि अन्य राशिमें स्थित होकर राहु पंचम भावमें स्थित होवे तौं मनुष्य पुत्रहीन होता है॥ १०॥

पुत्रे केतुः प्रजाहानिर्विद्याज्ञानविवर्जितः॥
भयत्रासी सदा दुःखी विदेशगमने रतः॥ ११॥

यदि पंचम भावमें केतु स्थित होवे तौ पुरुष संतानहानिवाला तथा विद्याज्ञानसे वर्जित होता है और भयत्रासको प्राप्त होता है और सदा दुःखी और विदेशके गमन करनेमें तत्पर होता है॥ ११॥

तातांबिकासोदरमातुलाश्च मातामहाः पितृपिता च सूनुः॥
सूर्यादिखेटैः खलु पंचमस्थैर्नश्यंति नूनं मुनयो वदंति॥ १२॥

यदि सूर्यादि ग्रह पंचम भावमें स्थित होवें तौ क्रमसे पिता आदिक नाशको प्राप्त होते हैं अर्थात् यदि सूर्य पंचम भावमें बलवान् होकर स्थित होवे तौ पिता नष्ट होता है, चंद्रमा होवे तौ माता, मंगल होवे तौ भ्राता, बुध होवे तौ मामा, बृहस्पति होवे तौ नाना, शुक्र होवे तौ पिताका पिता और शनैश्वर होवे तौ पुत्र नष्ट होता है ऐसा मुनिगण कहते हैं ॥ १२ ॥

सुतस्थरवेरुपरि ग्रहाणां दृष्टिफलानि ।

सुतस्थानगते सूर्ये क्रूरैर्दृष्टेऽथवा तथा ॥
सुस्थिरा च भवेद्बुद्धिः प्रजा स्वल्पा प्रजायते ॥ १३ ॥

यदि पंचम भावमें सूर्य स्थित होवे और पापग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ बुद्धि स्थिर होवे और संतान थोडा होवे ॥ १३ ॥

लोहनलभवा पीडा शनिदृष्ट्या ह्यपत्यजा ॥
गर्भस्रावो भौमदृष्ट्या गर्भपातश्च राहुणा ॥ १४ ॥

पंचमभावस्थ सूर्यपर शनैश्वरकी दृष्टिसे लोह अग्निसे उत्पन्न हुई पीडा और संतानसे उत्पन्न हुई पीडा होवे है और मंगलकी दृष्टिसे गर्भच्युति होवे है और राहुकी दृष्टिसे गर्भपात होता है ॥ १४ ॥

एवं द्विपापदृष्टिश्च मृतापत्यत्वकारणम् ॥
केतुना काकवंध्यत्वं राहुणा कन्यकामृतिः ॥ १५ ॥

इसी प्रकार पंचम भावमें स्थित सूर्यपर दो पापग्रहोंकी दृष्टि मृतसंतानत्वका कारण है और पंचमभावस्थ सूर्यपर केतुकी दृष्टिसे काकवंध्यत्व होता है और राहुकी दृष्टिसे निःसंतानत्व होता है ॥ १५ ॥

बुधेक्षिते सुते सूर्ये द्वौ पुत्रौ पंच कन्यकाः ॥
कुजदृष्ट्या पुत्रनाशो राहुणा कन्यकामृतिः ॥ १६ ॥

यदि पंचमभावस्थ सूर्य बुधसे दृष्ट होवे तौ दो पुत्र और पांच कन्या होवे हैं और मंगलकी दृष्टिसे पुत्रनाश होता है और राहुकी दृष्टि होवे तौ कन्याका मरण होता है ॥ १६ ॥

केतुदृष्ट्या गर्भपातः पुंस्त्रीग्रहविचारतः ॥
क्रूराक्रूरविचारैश्च संख्यानाशश्च संततेः ॥ १७ ॥

पंचमभावमें स्थित सूर्यपर केतुकी दृष्टिसे गर्भपात होता है । पुरुषसंज्ञक तथा स्त्रीसंज्ञक ग्रहोंके विचारसे और पापग्रह तथा सौम्य ग्रहोंके विचारसें संतानकी संख्याका नाश विचारना चाहियें ॥ १७ ॥

सुतस्थानस्थिते मंदे दृष्टे वा क्रूरखेचरैः ॥
उदरे जायते पीडा लोहजा वह्निजा तथा ॥ १८ ॥

पंचम भावमें स्थित शनैश्चर पापग्रहोंसे देखा गया होवे तौ पेटमें पीडा होवे है तथा लोह और अग्निसे पीडा होवे है ॥ १८ ॥

पंचमस्थराहोर्ग्रहयुतदृष्टिफलानि।

सुतस्थानस्थिते राहौ भार्या पुष्पेण वर्जिता ॥
सूर्ययुक्ते सूर्यदृष्टे जायते चानपत्यता ॥
चंद्रयुक्तेक्षिते राहौ किंचित्सूत्यानपत्यता ॥ १९ ॥

पंचम भावमें स्थित राहु सूर्यसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ स्त्री पुष्पसे वर्जित होवे है और निःसंतान होवे है। पंचम भावमें स्थित राहु यदि चंद्रमासे युक्त वा दृष्ट होवे तौ कुछ संतान होकर निःसंतानता होवे है ॥ १९ ॥

भौमदृष्ट्या पुत्रनाशो गर्भस्रावस्तथैव च ॥
बुधयुक्तेक्षिते कन्या जायते चापि नश्यति ॥
गुरुणैकः शुभः पुत्रो मृतश्चैको विवाहितः ॥ २० ॥

पंचमभावस्थ राहुपर मंगलकी दृष्टिसे पुत्रनाश और गर्भपात होता है। यदि पंचमभावस्थ राहु बुधसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ कन्या उत्पन्न होवे और सोभी नष्ट हो जावे और बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ एक शुभगुणवाला पुत्र होवे और एक विवाहित पुत्र मृत्युको प्राप्त हो जावे ॥ २० ॥

भृगुणैकः शुभः पुत्रो जले चैको मृतो भवेत् ॥
सुतैर्वियोगं मंदेन कन्यैका म्लेच्छगामिनी ॥ २१ ॥

यदि पञ्चमभावस्थित राहु शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ एक शुभ पुत्र होता है और एक जलमें मृत्युको प्राप्त होता है और शनैश्चरसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ पुरुष पुत्रोंसे वियोगको प्राप्त होता है और एक कन्या म्लेच्छगामिनी होवे है ॥ २१ ॥

विशेषविचारः।

मतिसुबंधनमात्मजकौशलाध्ययनमंत्रकलाः सुतभाद्वदेत् ॥ २२ ॥

बुद्धि, सुबंधन, पुत्र, चतुरता, पठन, मंत्र, कला इनको पञ्चम भावसे कहे ॥ २२ ॥

अतोऽत्र विचारे पूर्वं मतिरुक्ता तद्विचारः सूर्यजातके।

पंचमेऽर्के स्थिरा बुद्धिश्चंद्रे चंचलचित्तता ॥
उग्रबुद्धिर्भूमिपुत्रे बुधे जीवे शुभा मतिः ॥ २३ ॥

यदि सूर्य पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ स्थिर बुद्धि होवे और चंद्रमा होवे तौं चंचल बुद्धि होवे है और मंगल होवे तौ घोर बुद्धि होवे और बुध वा बृहस्पति होवे तौ सुन्दर बुद्धि होवे ॥ २३ ॥

मृदुः पुत्रे भृगौ बुद्धिर्कुटिला राहुमंदयोः ॥
सुदेवसेवा सौम्ये च बहुदेवा च पापके ॥ २४ ॥

यदि पञ्चम भावमें शुक्र स्थित होवे तौ कोमल बुद्धि होवे और राहु शनैश्चर होवें तौ कुटिल बुद्धि होवे है । यदि पञ्चम भावमें शुभ ग्रह होवे तौ सुन्दर देवताकी सेवा होवे है और पंचम भावमें पाप ग्रह होवे तौ बहु देवताओंकी सेवा होवे है ॥ २४ ॥

शुभग्रहे साधुधर्मः प्रपंची चाशुभग्रहे ॥
युतिदृष्टिवशाद्वापि पंचमे फलमादिशेत् ॥
एवं शुभग्रहैर्नयवान् चाशुभग्रहैरनयवान् ॥ २५ ॥

पंचम भावमें शुभ ग्रह होवे तौ साधुधर्मवाला होता है और पाप ग्रह होवे तौ प्रपंची होता है । इस प्रकार शुभ पाप ग्रहोंके योगदृष्टिवशसे पञ्चम भावमें फलको कहे । इसी प्रकार पञ्चम भावमें शुभ ग्रह होवें तौ नीतिमान् होता है और पाप ग्रह होवें तौ अन्यायी होता है ॥ २५ ॥

आत्मजविचारस्तत्रादौ संतानसंभवासंभवविचारः जातकाभरणे ।

सुताभिधनं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्यम् ॥
संतानयोगं प्रवदन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात् ॥२६॥

यदि पञ्चम संज्ञक भाव शुभ ग्रहोंके योगसे युक्त और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे देखा गया होवे तौ पंडितजन संतानयोगको कहे और इससे विपरीत योग होवे तौं विपरीत फल होता है अर्थात् पाप ग्रहोंसे पञ्चम भाव युक्त वा दृष्ट होवे तौ संतानका योग नहीं कहे ॥ २६ ॥

संतानभावो निजनाथदृष्टः संतानलब्धिं शुभदृष्टयुक्तः ॥
करोति पुंसामशुभैश्च दृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ॥ २७ ॥

यदि पञ्चम भाव अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट होवे अथवा शुभ ग्रहोंके योग वा दृष्टिसे युक्त होवे तौ संतानकी प्राप्तिको कहे और पञ्चम भाव अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट और युक्त होवे और अपने स्वामीकी दृष्टिसे हीन होवे तौ पुरुषोंको विपरीत फल कहे ॥ २७ ॥

अन्यच्च।

शुभसुतभतनं शुभयुतदृष्टं सुतर्क्षमिह येषाम् ॥
तेषां प्रसवः पुंसां भवत्यवश्यं न विपरीतम् ॥ २८ ॥

जिनका पंचम भाव शुभ राशिसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंके योग और दृष्टिसे युक्त होवे तौ तिन मनुष्योंके अवश्य ही संतान होवे है और इससे विपरीत होवें तौ संतान नहीं होवे है ॥ २८ ॥

ग्रंथांतरेण।

यावत्संख्या ग्रहाणां सुतभवनगता पूर्णदृष्टियुता वा
तावत्संख्या प्रसूतिर्भवति बलयुताः पुंग्रहाः पुत्रजन्म ॥
पुत्रीशुक्रश्च चंद्रो हिमसुतरविजो गर्भहानिं करोति
किंचिच्चंद्राद्विचार्यं मुनिवरकथितं तद्विचिंत्यं नवांशे ॥ २९ ॥

ग्रहोंकी पंचम भावमें जितनी संख्यक पूर्ण दृष्टि युक्त होवें उतनी संख्यक संतान होवे हैं। यदि पंचम भाव देखनेवाले पुरुष ग्रह बलवान् होवें तौ पुत्रजन्म होता है और पंचम भावको देखनेवाला शुक्र और चन्द्रमा बलवान् होवे तौ कन्याजन्म होवे है और बुध शनैश्चर बली होवें तौ गर्भकी हानि करते हैं। कुछ संतानसुख चन्द्रमासे भी और कुछ नवांशमें भी संतानसुख विचारना चाहिये ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥ २९ ॥

चंद्रे सुतभं याते पुरुषांशे ओजराशिके भवति ॥
सूर्येण दृश्यमाने बहुपुत्रभाक् क्लेशसूतिश्च ॥ ३० ॥

पञ्चम भावमें प्राप्त हुआ चन्द्रमा विषम नवांश और विषम राशिमें स्थित होवे और सूर्यकर देखा गया होवे तौ पुरुष बहुत पुत्रोंवाला तथा क्लेशसे प्रसववाला होता है ॥ ३० ॥

सौम्ये स्वक्षेत्रगते पंचमभे पुत्रभाग्भवति ॥
सिंहस्थितेऽपि चैवं नवमे वा तृतीयभार्यायाम् ॥ ३१ ॥

यदि पञ्चम भावमें बुध अपनी राशिमें स्थित होवे तौ पुत्रवाला होता है और सिंहराशिपर बुध पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ भी पुत्रवाला होता है और इसी प्रकार बुध नवम भावमें स्थित होवे तौ तृतीय स्त्रीके विषैं पुत्रवाला होता है ॥ ३१ ॥

पापद्वयेन युक्ते पंचमभवने नहि प्रजालाभः ॥

चंद्रे पंचमभवने दत्तातिर्हीनवीर्यके सौम्ये ॥
तद्वद्बलोपपन्ने सुपुत्रवान्विगतरोगश्च ॥ ३२ ॥

यदि पञ्चम भाव दो पाप ग्रहोंसे युक्त तो होवे संतानका लाभ नहीं होता है। यदि चन्द्रमा निर्बल होकर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ दत्तपुत्रकी प्राप्ति होवे है और तिसी प्रकार निर्बल होकर बुध पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ भी दत्तपुत्रकी प्राप्ति होवे और बलवान् होकर बुध पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पुत्रवाला तथा रोगहीन होता है ॥ ३२ ॥

पुत्रेशे सुतगे वा तत्स्थे खेटे बलोपेते ॥
सत्पुत्रवान् सुबुद्धिः पुण्याचारो भवेज्जातः ॥ ३३ ॥

यदि पञ्चमभावपति पञ्चम भावमें स्थित होवे अथवा बलवान् ग्रह पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सत्पुत्रयुक्त और सुन्दर बुद्धिवाला और पुण्याचार होता है ॥ ३३ ॥

संतानसंख्यायोगानाह वैष्णवतंत्रे ।

संतानभावांकसमानसंख्या स्यात्संततिर्वेति वदन्ति केचित् ॥
नीचोच्चमित्रारिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वाशुभमर्भकानाम् ॥३४॥

कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि पंचम भावमें अंकके समान संतानसंख्या होवे है। नीच राशि उच्चराशि मित्रराशि शत्रुराशि इनमें स्थित हुए ग्रहोंकी दृष्टिसे बालकोंका शुभ अशुभ फल होता है ॥ ३४ ॥

उदयभास्करे ।

सुतगृहांकसमापि च संततिर्भवति वाथ नवांशसमापि वा ॥३५

पञ्चम भावके अंकके समान संतान होवे है अथवा पञ्चम भावके नवांशसंख्याके समान संतान होवे है ॥ ३५ ॥

ग्रन्थांतरे ।

संख्या नवांशतुल्या ज्ञेया सौम्यैर्युता दृष्टा ॥
शुभदृष्टा तद्द्विगुणा क्लिष्टा पापांशकेऽथवा दृष्टा ॥ ३६ ॥

पञ्चम भावमें नवांशसंख्याके समान संतानसंख्या होवे है। यदि वह नवांशसंख्या शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ उससे द्विगुण संतानसंख्या होवे है। या नवांशसंख्या पापग्रहसंबंधिनी होवे अथवा पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ उतनी संतान नष्ट होती है ॥ ३६ ॥

पंचमभवनस्वामी यत्संख्येशे भवेद्धि तत्संख्या ॥
शुक्रनवांशे ज्ञेया बहुलापत्यानि शुक्रदृष्टांशे ॥ ३७ ॥

पञ्चमभावपति जिस संख्यक नवांशमें स्थित होवे उतनी संतानसंख्या होवे है। यदि पञ्चम भावमें शुक्रनवांश होवे अथवा पञ्चम भाव नवांश शुक्रकर दृष्ट होवे तौ बहुत संतान होवे हैं ॥ ३७ ॥

ग्रहयोगैः संतानसंख्यायोगानाह वैष्णवतंत्रे ।

लग्नात्तृतीयभवने यदि सोमसुतो भवेत् ॥
द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायंते नात्र संशयः ॥ ३८ ॥

यदि लग्नसे तृतीय भावमें बुध स्थित होवे तौ दो पुत्र और तीन कन्या जन्मती हैं इसमें संदेह नहीं ॥ ३८ ॥

घटशनिः सुतगः सुतपंचकी मृगशनिश्च सुतात्रयदस्तथा ॥३९॥

यदि कुंभराशिपर शनैश्चर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पांच पुत्रोंवाला होता है और मकरराशिपर स्थित होकर शनैश्चर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ तीन पुत्री देनेवाला होता है ॥ ३९ ॥

यदि कुजः शनिवत्त्रिसुतप्रदो यदि बुधः सुतभे तनयाप्रदः ॥४०॥

यदि मंगल शनैश्चरके समान मकरराशिमें स्थित होकर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ तीन पुत्रोंको देता है और बुध पंचम भावमें स्थित होवे तौ कन्याके देता है ॥ ४० ॥

कविविधू सुतभे तनयाप्रदावुदितवत्सुतपंचकदो गुरुः ॥
उपरखगौ क्रियकर्कवृषोपगौ नहि विलंबकरौ परगौ न चेत् ४१॥

इसी प्रकार शुक्र और चंद्रमा पंचम भावमें स्थित होवें तौ कन्याको देते हैं और केवल बृहस्पति पंचम भावमें स्थित होवे तौ पांच पुत्र देता है। यदि राहु केतु दोनोंमेंसे एक ग्रह पंचम भावमें मेष कर्क वृष राशियोंका स्थित होवे तौ संतानकी उत्पत्तिमें विलम्बकर्त्ता नहीं होता है और अन्य राशियोंका पंचम भावमें राहु वा केतु स्थित होवे तौ संतानकी उत्पत्तिमें विलम्ब होता है इस कथनसे यह जनाया गया कि मकर कुंभ राशिको त्यागकर शनैश्चर और मकर राशिको त्यागकर

१ जातकालंकारे चोक्तमपि । कुम्भे चेत्पञ्च पुत्रास्तदनु च मकरे नन्दनेऽप्यात्मजाः स्युस्तिस्रो भौमः सुतानां त्रितयमथ सुतादायको रौहिणेयः ॥ इत्थं काव्यः शशांको जनुषि च गुरुणा केवलेनेव पुत्राः । पंच स्युः केतुराह्वोः क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः ॥

मंगल और मेष कर्क वृष राशियोंको त्यागकर राहु वा केतु पंचम भावमें स्थित होवे तौ संतानोत्पत्तिमें विलम्ब होता है ॥ ४१ ॥

सुतस्वामी शुभः पापो यद्गेहमनुवर्त्तते ॥
तद्गेहं त्रिगुणं काय दशभिर्भागमाहरेत् ॥
शेषांकतः सुतानां च संख्या स्याद्वनितात्मजा ॥ ४२ ॥

पंचम भावका स्वामी शुभ ग्रह वा पाप ग्रह जिस गृहमें वर्त्तमान होवे उस गृहको त्रिगुण करे और दशका भाग देवे शेष बचे अंकसे संतानकी स्त्रीपुरुषात्मक संख्या होवे है ॥ ४२ ॥

सुरगुरुर्भवभे नवमे च विद्यदि तदाष्टसुतो बहुजीवितः ॥
त्रिरिपुकर्मकुजे मदने गुरौ नवमगे भृगुजे सुतपंचकी ॥४३॥

यदि बृहस्पति एकादश भावमें स्थित होवे और बुध नवम भावमें स्थित होवे तौ आठ पुत्रवाला और बहुजीवी होता है। तृतीय षष्ठ दशम इन भावोंमेंसे किसीमें मंगल स्थित होवे और सप्तम भावमें बृहस्पति स्थित होवे और नवम भावमें शुक्र स्थित होवे तौ पांच पुत्रोंवाला होता है ॥ ४३ ॥

सुतविधुः सुतगौ च कवीज्यकौ निगमवित्सुतकल्पितवैभवः ॥४४॥

चंद्रमा, शुक्र और बृहस्पति पञ्चम भावमें स्थित होवें तौ वेदवेत्ता और पुत्रसे कल्पित वैभववाला होता है ॥ ४४ ॥

यदि चतुष्टययुग्मगताः शुभा रिपुगता रविभौमशनैश्वराः ॥
सुतचतुर्दशकस्य पिता भवेत्सपुरुषो रमणीत्रितयो भवेत् ४५ ॥

यदि शुभ ग्रह केन्द्रभावोंमें द्विस्वभावराशिके स्थित होवें और सूर्य मंगल शनैश्वर षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ वह पुरुष चौदह पुत्रोंका पिता और तीन स्त्रियोंवाला होता है ॥ ४५ ॥

यदि तनोस्त्रितये विधुनंदनो द्विसुतदश्च सुतात्रितयप्रदः ॥
यदि गुरुःसुतपंचकदो भृगुस्त्रिसुतदश्च सुताद्वयदस्तथा ॥ ४६ ॥

यदि लग्नसे तृतीय भावमें बुध स्थित होवे तौ दो पुत्र देता है और तीन कन्या देता है। यदि तृतीय भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ पांच पुत्रोंको देता है और शुक्र स्थित होवे तौ तीन पुत्र देता है और दो कन्या देता है ॥ ४६ ॥

पंचमाधिपवशेन ग्रहाणां पुत्रपुत्रीसंख्यां चाह ।

पुत्रैकं दिननाथपंचमपतिः सद्वीर्यदृष्टिर्भवेत्
पुत्राः पंच वदंति देवगुरुणा भौमस्तृतीयं क्रमात् ॥

सौरे सप्त सुता भृगौ षट् सुता वेदज्ञचंद्रे द्वयं।
तद्वच्चैव नवांशकं सुतगृहे संशोधयेल्लग्नतः ॥ ४७ ॥

यदि पञ्चमभावपति सूर्य बलवान् ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ एक पुत्र देता हैं और पञ्चमभावपति बृहस्पति होवे और बलवान् ग्रहसे दृष्ट होवे तौ पांच पुत्र होते हैं ऐसा महात्मा कहते हैं और पंचमभावपति मंगल होवे और बलवान् ग्रहसे दृष्ट होवे तौ तीन पुत्र होते हैं। पञ्चमभावपति शनैश्चर होवे और बली ग्रहसे दृष्ट होवे तौ सात कन्या होवे हैं और शुक्र होवे तो छः कन्या होवे हैं और बुध होवे तौ चार कन्या होवे हैं और चंद्रमा होवे तौ दो कन्या होवे हैं। इसी प्रकार लग्नसे पञ्चम भावमें नवांशका विचार करना चाहिये ॥ ४७ ॥

सुतभवनसुरेज्यः पूर्णचंद्रेण दृष्टः स्वगृहगतनवांशे पंचमे युक्तदृष्टे ॥ कथयति सुतपंचभूमिपुत्रस्त्रयं वा दिनकरसुतसंस्थे पुत्रमेकं विदध्यात् ॥ ४८ ॥

यदि पञ्चम भावमें बृहस्पति स्थित होवे और पूर्ण चंद्रमाकर देखा गया होवे अथवा पञ्चम भावमें बृहस्पतिके राशिका नवांश स्थित होवे और बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ पांच पुत्र दैवज्ञ कहते हैं और इसी प्रकार मंगल पंचम भावमें स्थित होवे और पूर्ण चंद्रमासे दृष्ट होवे तौ तीन पुत्र होते हैं और इसी प्रकार पञ्चम भावमें शनैश्चर स्थित होवे और चंद्रमासे दृष्ट होवे तौ एक पुत्रको देता है ॥ ४८ ॥

सौम्यः सुतान्पंच ददाति धीस्थो ह्यस्तंगतस्तद्विफलं करोति ॥
सुरेज्यवैरी सुतराशिसंस्थः कन्यासुते द्वे कथिते मुनीन्द्रैः ॥ ४९ ॥

इसी प्रकार बुध पञ्चम भावमें स्थित होवे और पूर्ण चंद्रमासे दृष्ट होवे तौ पांच कन्याओंको देता है और अस्तगत होकर बुध पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ निष्फल करता है। यदि शुक्र पञ्चम भावमें पूर्ण चंद्रमाकर दृष्ट होवे तौ दो कन्या मुनिगणोंने कही हैं ॥ ४९ ॥

पूर्वं पुत्रपुत्रीविचारः।

तनुधनत्रिषु पंचमपेक्षितस्तनुपतिः प्रथमं सुतजन्मदः ॥
सुकृतपंचमलाभवधूगतस्तनुपतिः प्रथमं तनयाप्रदः ॥ ५० ॥

यदि लग्नपति लग्न द्वितीय तृतीय इन भावोंमें स्थित होवे और पञ्चमभावपतिसे दृष्ट होवे तौ प्रथम पुत्रजन्मको देता है। लग्नपति यदि नवम पञ्चम एकादश सप्तम भावोंमें स्थित होवे तौ प्रथम कन्याजन्मको देता है ॥ ५० ॥

लग्नात्पंचमसप्तमे दिनपतिः सौरान्वितो वीर्यवा-
नादौ पुत्रमिदं च शौनकमतं पश्चाद्भवेत्कन्यका ॥
चंद्राद्द्वादशमानपंचमरविश्चंद्रेन वीर्यान्विते
तत्कन्या प्रथमं न जीवति कथं पुत्रो न जीवेत्कदा ॥ ५१ ॥

यदि लग्नसे पञ्चम वा सप्तम भावमें सूर्य स्थित होवे और शनैश्चरसे युक्त और बलवान् होवे तौ प्रथम पुत्रजन्म होता है और पीछे कन्या होवे है, यह शौनकमत है। चंद्रमासे द्वादश दशम पञ्चम इन भावोंमें सूर्य स्थित होवे और चंद्रमा निर्बल होवे तौ उस पुरुषकी कन्याही पहिले नहीं जी सक्ती है और पुत्र तौ किसी प्रकार भी नहीं जी सक्ता है ॥ ५१ ॥

अथ वधूखचरः प्रबलः सुते स्मरगृहे रमणीजनिदः पुरा ॥
नरसुते नरनायकवीक्षिते प्रथमसेव सुतस्य जनुर्भवेत् ॥ ५२ ॥

यदि स्त्रीसंज्ञक ग्रह बलवान् होकर पञ्चम वा सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पहले स्त्रीका जन्म देता है। यदि पञ्चम भावमें पुरुषराशि होवे और पुरुषग्रहसे दृष्ट होवे तौ प्रथम पुत्रका जन्म होता है ॥ ५२ ॥

सुतगृहे शुभदृष्टियुतेर्बलाद्भवति संततिरत्र न चान्यथा ॥
सुतगृहो निजनाथनिरीक्षितः सशुभदृष्ट्युतः सदपत्यदः ॥५३॥

यदि पञ्चमभाव शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ बलसे सन्तान होवे है और अन्य प्रकारसे नहीं होवे है। यदि पञ्चम भाव अपने स्वामीसे दृष्ट होवे अथवा शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ अच्छे सन्तानको देता है ॥ ५३ ॥

द्वितनुगा विधुभौमसिताः पुरा ददति संततिमेव यदा त्विमे ॥
धनुगता न कदाप्यथ पंचमेक्षकनृदारखगैःप्रमिताः क्रमात्॥५४॥

यदि चंद्रमा मंगल शुक्र ये ग्रह द्विस्वभावराशिमें स्थित होवें तौ पहिलीही अवस्थामें संतानको करते हैं और यदि चंद्रमा मंगल शुक्र ये ग्रह धनुराशिमें स्थित होवें तौ कदापि पहिले संतानको नहीं देते हैं। पंचम भावके देखनेवाले पुरुष स्त्रीसंज्ञक ग्रहोंके समान पुत्र कन्या होवे हैं ॥ ५४ ॥

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचंद्राः संतानमादौ जनयंति नूनम् ॥
एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथांते गदितं महद्भिः ॥ ५५ ॥

यदि शुक्र मंगल चन्द्रमा द्विस्वभावराशिमें स्थित होवें तौ प्रथम अवस्था-

मेंही संतानको उत्पन्न करते हैं, परन्तु यह ग्रह धनुराशिमें स्थित होवें तौ पहिले संतान नहीं करते हैं, किन्तु आयुके पिछले भागमें महात्माओंने संतान कहा है ॥५५॥

सुतसुताः स्युरिहैव सतां दृशो द्विगुणदास्त्वसतां परथाफलाः ॥
उभयथा यदि मिश्रफलप्रदा यदि सुते गुरुभं सुतसौख्यहृत् ॥५६॥

पञ्चमभावराशिके संख्यासमान पुत्र पुत्री होते हैं, परन्तु शुभ ग्रहोंकी दृष्टि होवे तौ द्विगुण संतान देती है और पाप ग्रहोंकी दृष्टि होवे तौ अन्यथा फलवाली होवे है और शुभ ग्रह और पाप ग्रह दोनोंकी दृष्टि होवे तौ मिला हुआ फल देती है। यदि पञ्चम भावमें बृहस्पतिके राशि धनु वा मीन होवे तौ संतानसुखको हरता है ॥ ५६ ॥

कस्यामवस्थायां पुत्रप्राप्तिस्तदाह बादरायणसंहितायाम्।

पुत्रं लभते बाल्ये लग्ने संस्थः शुभश्च पश्येद्वा ॥
दशमे शुभस्तु कुर्याद्यौवनकाले नृणां पुत्रम् ॥ ५७ ॥

यदि शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवे वा लग्नको देखता होवे तौ बाल्य अवस्थामें पुत्रको प्राप्त होता है और दशम भावमें शुभ ग्रह स्थित होवे अथवा दशम भावको देखता होवे तौ तरुण अवस्थामें पुत्रको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

जायायां यौवनांते पुत्रं कुर्याच्छुभस्तु पश्येद्वा ॥
यदि तुर्ये शुभखेटो वार्धक्ये पुत्रसंभवं कुरुते ॥ ५८ ॥

यदि शुभ ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवे वा सप्तम भावको देखता होवे तौ जवानीके अन्तमें पुत्रको करता है और शुभ ग्रह यदि चतुर्थ भावमें स्थित होवे अथवा चतुर्थ भावको देखता होवे तौ बुढापेमें पुत्रजन्म करता है ॥ ५८ ॥

बहुकालांतरे पुत्रप्राप्तियोगानाह सारावल्याम्।

भौमे विलग्नजाते चाष्टमराशिस्थिते दिनेशसुते ॥
सूर्ये वाथ सुतर्क्षे पुत्रः कालांतरे भवति ॥ ५९ ॥

मंगल लग्नमें स्थित होवे और शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे अथवा सूर्य पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुत्र कालान्तरमें होता है ॥ ५९ ॥

बहुग्रहसहिते लग्ने लाभसंस्थे निशाधिपे ॥
पूर्णे गुरुसितसंस्थैः पापैः पुत्रः कालांतरे भवति ॥ ६० ॥

यदि लग्न बहुत ग्रहोंसे युक्त होवे और पूर्ण चंद्रमा एकादश भावमें स्थित होवे और पाप ग्रह बृहस्पति शुक्रसे युक्त होवें तौ पुत्र कालान्तरमें होता है ॥ ६० ॥

लग्ने दिनकृत्तनये अष्टमसंस्थे गुरौ च य यदि ॥
भौमे पंचमराशौ पुत्रं कालांतरे विंद्यात् ॥ ६१ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर स्थित होवे और बृहस्पति अष्टम भावमें स्थित होवे और मंगल पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रको कालान्तरमें जाने ॥ ६१ ॥

पुत्रप्राप्तेरन्यावधिमाह यवनः ।

सुतलग्नेशदारेशलग्नेशानां यदा तदा ॥
संगमस्तु तदा पुत्रलाभः स्याद्यवनोदितम् ॥ ६२ ॥

पञ्चमभावपति और सप्तमभावपति और लग्नपति इन तीनोंका संयोग जब होवे तब पुत्रका लाभ होता है यह यवनचार्यका मत है ॥ ६२ ॥

लग्नपुत्रकलत्रेशयोगे यदि दशा भवेत् ॥
सुतयुक्तर्क्षयोगेन पुत्रसिद्धिस्तदा भवेत् ॥ ६३ ॥

लग्नपति और पञ्चमपति और सप्तमभावपति इनके योगमें जब पञ्चमभावपतिकी दशा होवे तब पुत्रसिद्धि होवे है ॥ ६३ ॥

सुतपतिगुर्वोरथवा तद्युतराश्यंशपानां वा ॥
बलसहितस्या दशायाः परिपाके वा भवेत्सुतप्राप्तिः ॥६४॥

पञ्चमभावपति और बृहस्पति अथवा पञ्चमभावपतिका आश्रितराशिनवांशपति और बृहस्पतिका आश्रितराशि नवांशपति इनके मध्यमें जो बली होवे उसके दशाकालमें पुत्रप्राप्ति होवे है ॥ ६४ ॥

पंचमस्थराशिवशात्पूर्वं पुत्रपुत्रीयोगानाह बादरायणसंहितायाम् ।

वृश्चिकझषकर्कटका येषामपत्यभावमापन्नाः ॥
बहुलापत्या ज्ञेया कन्यापूर्वप्रजाश्चापि॥ ६५ ॥

जिन पुरुषोंके पंचमभावमें वृश्चिक मीन कर्क यह राशि स्थित होवें तौ बहुत संतान करनेवाले होवे है और कन्याका जन्म पहिले होता है ॥ ६५ ॥

कन्या वृषो मृगो वा येषां सुतभावगो नृणां कुर्युः ॥
कन्यानामुत्पत्तिं पुंग्रहदृष्टा युता नृणां कुर्युः ॥ ६६ ॥

जिनके पञ्चम भावमें कन्या वृष मकर राशि होवें तौ भी कन्याका जन्म करते हैं। और यह राशि पुरुषग्रहसे दृष्ट वा युक्त होवें तौ पुरुषका जन्म करते हैं ॥६६॥

घटभृन्मिथुनं प्रसवे सुतभावे यस्य योगमुपजातम् ॥
जनयति तस्य च बहुलान्पुत्रान्स्वल्पायुषो नीचान् ॥ ६७ ॥

जिसके जन्मसमयमें पञ्चम भावमें कुंभ वा मिथुन राशि स्थित होवे तौ उस पुरुषके थोडे आयुवाले नीच पुत्रोंको बहुधा उत्पन्न करता है ॥ ६७ ॥

यस्य तुलाधरराशिस्तनयस्थाने कथंचिदुद्गच्छेत् ॥
एकः श्रेष्ठः पुत्रो यद्यपि शुभगः प्रसूयते नूनम् ॥ ६८ ॥

जिस पुरुषके पञ्चम भावमें तुलाराशि किसी प्रकार प्राप्त होवे और शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ एक श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न होता है ॥ ६८ ॥

स्वल्पापत्ययोगानाह ।

धनस्थानं यदा क्रूरं क्रूरग्रहनिरीक्षितम् ॥
न पश्यति निज क्षेत्रं तदाल्पप्रसवो भवेत् ॥ ६९ ॥

यदि द्वितीय भाव पाप ग्रहसे युक्त होवे और पाप ग्रहसे दृष्ट होवे और द्वितीय भावको द्वितीयभावस्वामी नहीं देखता होवे तौ थोडा संतानवाला होता है ॥ ६९ ॥

भार्याधिपे सुतस्थे भार्यानाशोऽथवाल्पपुत्रो वा ॥
पापखगे वक्तव्यं सौम्ये खेटे तु विपरीतम् ॥ ७० ॥

यदि सप्तमभावपति पाप ग्रहोंकर पंचम भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीका नाश होता है और थोडे संतानवाला होता है और सप्तमभावपति शुभ ग्रह होकर पंचम भावमें स्थित होवे तौ विपरीत फल होता है ॥ ७० ॥

भौमे शशिवेश्मस्थे द्वितीयपाणिग्रहे सुतं विद्यात् ॥
तत्रस्थेऽपि शशांके स्वल्पापत्यो बहुस्त्रीकः ॥ ७१ ॥

यदि पंचम भावमें मंगल चन्द्रमाके राशिमें स्थित होवे तौ द्वितीय विवाहसे पुत्रको जाने और यदि उसी राशिपर चन्द्रमा स्थित होवे तौ पुरुष थोडे संतान और बहुत स्त्रियोंवाला होता है ॥ ७१ ॥

इंदोर्वेश्मनि जीवे पुत्रस्थे दारिकाबहुलं स्यात् ॥
सौम्ये चाल्पसुतत्वं शुक्रे बहुपुत्रभाक्तृतीयभार्यायाम् ॥ ७२ ॥

यदि चन्द्रराशिका बृहस्पति पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ कन्या बहुतसी होवे हैं और चन्द्रराशिका बुध पंचम भावमें स्थित होवे तौ तृतीय स्त्रीसे बहुत पुत्रवाला होता है ॥ ७२ ॥

बहुकन्याप्रसवयोगानाह सारावल्याम् ।

सितशशिवर्गे धीस्थे ताभ्यां दृष्टेऽथवा युक्ते ॥
प्रायेणकन्यका स्यात्समराशिगणेऽपि तत्तथा वाच्यम् ॥ ७३ ॥

शुक्र और चन्द्रमाका राशि पंचम भावमें स्थित होवे तथा शुक्र और चन्द्रमासे दृष्ट वा युक्त होवे और पंचम भावमें वह शुक्र चन्द्रराशि समसंज्ञक होवे तौ बहुधा करके कन्या होवे है ॥ ७३ ॥

चंद्रे सुतसंजाते रविगेहे दारिकाबहुलं स्यात् ॥
कन्यायां हिमरश्मौ तथैव वाच्यं तु हिबुके वा ॥ ७४ ॥

यदि सूर्यके राशिका चन्द्रमा पंचम भावमें स्थित होवे तौ कन्या बहुत होवे हैं और कन्याराशिका चन्द्रमा पंचम भावमें वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ कन्या बहुत होवे हैं ॥ ७४ ॥

एकादशे यदा क्रूरः पंचमे शुक्रशीतगू ॥
प्रथमं कन्यकाजन्म माता तस्य सकष्टका ॥ ७५ ॥

यदि एकादश भावमें पाप ग्रह स्थित होवे और पंचम भावमें शुक्र चन्द्रमा होवे तौ पहिले कन्याका जन्म होवे है और उसकी माता कष्टयुक्त होवे है ॥ ७५ ॥

संतानावरोधयोगानाह सारावल्याम् ।

पापैर्बलिभिर्युक्ते पापर्क्षे पंचमे यदा राशौ ॥
जातः पुरुषोऽपुत्रः सौम्यग्रहदर्शनातीते ॥ ७६ ॥

यदि पंचम भाव बली पाप ग्रहोंसे युक्त होवे वा और पंचम भावमें पाप ग्रहका राशि होवे और शुभ ग्रहकी दृष्टिसे हीन होवे तौ पुरुष विना पुत्रवाला होता है ७६

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापनिरीक्षितो वापि ॥
संततिबाधां कुरुते केंद्रे कोणे द्विलाभगे चेन्न ॥ ७७ ॥

यदि पंचमभावपति अस्तको प्राप्त होवे वा पाप ग्रहसे युक्त वा पाप ग्रहसे दृष्ट स्थित होवे तौ संतानकी बाधा करता है परन्तु पंचमभावपति केन्द्र त्रिकोणभावें वा द्वितीय एकादश भावमें स्थित होवे तौ संतानकी बाधा नहीं करता है ॥ ७७ ॥

धनजनसुतहीनः पंचमस्थैश्च पापैर्भवति हि कुत एव क्ष्मासुते तत्र जाते ॥ दिवसकरसुते स्याद्व्याधिभिस्तप्तदेहः सुरगुरुबुधशुक्रैः सौख्यसंपद्धनाढ्यः ॥ ७८ ॥

यदि पाप ग्रह पंचम भावमें स्थित होवें तौ धन जन पुत्रसे हीन होता है । यदि पंचम भावमें मंगल स्थित होवे अथवा शनैश्चर स्थित होवे तौ व्याधियोंसे संतप्त शरीरवाला होता है । यदि बृहस्पति बुध शुक्र पंचम भावमें स्थित होवें तौ सुख संपदा धनसे युक्त होता है ॥ ७८ ॥

ऋतुस्तु भौमे विज्ञेयो रेतः शुक्रः प्रकीर्तितः ॥
ऋतुं रेतो न पश्येत रेतसं न ऋतुस्तथा ॥
अप्रसूतो भवेज्जातः परिणीता बहुस्त्रियः ॥ ७९ ॥

ऋतुसंज्ञक शुक्र जानना चाहिये वीर्यसंज्ञक मंगल कहा है। यदि ऋतुसंज्ञक ग्रहको वीर्यसंज्ञक ग्रह नहीं देखता होवे और वीर्यसंज्ञक ग्रहको ऋतुसंज्ञक ग्रह नहीं देखता होवे तौ प्राणी संतानहीन होता है चाहे बहुतसी स्त्रियां विवाहित होवें ॥ ७९ ॥

ऋतुरेतसोः संपर्काज्जायते संततिर्ध्रुवम् ॥
असंपर्कात्तयोर्जातो वंध्यो भवति निश्चितम् ॥ ८० ॥

ऋतु और रेतसके संयोगसे संतान निश्चयही होवे है और तिनके असंयोगसे पुरुष वंध्य होता है ॥ ८० ॥

अस्तंगते पंचमेशे पापाक्रांते च दुर्बले ॥
नापत्यं जायते दैवाज्जातोऽपि म्रियते शिशुः ॥ ८१ ॥

यदि पञ्चमभावपति अस्तको प्राप्त होकर पाप ग्रहसे युक्त और दुर्बल होवे तौ संतान नहीं होता है। यदि दैवसे उत्पन्न हो जावे तौ मृत्युको प्राप्त होवे है ॥ ८१ ॥

यवनः।

सूर्यार्किभौमैकतमाश्रिते च तद्वीक्षिते तद्ग्रहभावयोगे ॥
एषां गृहस्थे च कुजेऽल्पवीर्ये समुद्भवः कीर्तितमप्रजानाम् ॥ ८२ ॥

यदि पञ्चम भाव सूर्य शनैश्वर मंगल इनमेंसे एकसे युक्त होवे और इनमेंसे एक वा दो करके देखा गया होवे और इनमेंसे किसीके राशिका पञ्चम भावमें योग होवे अथवा इनके राशियोंमें निर्बल होकर मंगल पंचममें स्थित होवे तौ अपुत्रवालोंका जन्म कहा है ॥ ८२ ॥

सौम्यदृष्टिविहीने च पापैर्बलिभिरन्विते ॥
पापभे पंचमे तत्र ह्यनपत्यो भवेन्नरः ॥ ८३ ॥

यदि पञ्चम भाव पाप ग्रहके राशिसे युक्त होवे और बलवान् पापग्रहोंसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होवे तौ पुरुष निःसंतान होता है ॥ ८३ ॥

सुतारिरिःफगः पापः संतानाधिपतेर्यदि ॥
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जीवो न पश्यति ॥ ८४ ॥

यदि पञ्चमभावपतिसे पंचम षष्ठ द्वादश इन भावोंमें पाप ग्रह स्थित होवे तौ संतानका अभाव होता है जो उस पाप ग्रहको बृहस्पति नहीं देखता होवे तौ ॥ ८४ ॥

ओजे समर्क्षे ऋतुरेतसंस्थे सौर्यर्कदृष्टे सुतवर्जितः स्यात् ॥
इज्येक्षितं चैव सकृत्सुतं च प्राप्नोति वृद्धत्ववयस्थजातः ॥८५॥

यदि विषमराशिपर ऋतुसंज्ञक ग्रह स्थित होवे और सम राशिमें वीर्यसंज्ञक ग्रह स्थित होवे और शनैश्चर और मंगलसे दृष्ट होवे तौ पुत्रसे वर्जित होता है और वह विषमराशिस्थित ऋतुसंज्ञक ग्रह और समराशिस्थित वीर्यसंज्ञक ग्रह बुध बृहस्पतिसे दृष्ट होवे तौ वृद्धत्व अवस्थामें जाकर पुत्रको प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥

ऋतुश्च कथितो भौमो रेतः शुक्रः प्रकीर्तितः ॥
यद्वर्षे पश्यतश्चोभौ तद्वर्षे गर्भसंभवः ॥ ८६ ॥

मंगल ऋतुसंज्ञक कहा है और शुक्र वीर्यसंज्ञक कहा है जिस वर्षमें यह दोनों परस्पर देखें उसी वर्षमें गर्भकी उत्पत्ति होवे है ॥ ८६ ॥

लग्ने शशिनि विनष्टे सूर्यं प्राप्ते गुरौ शशिक्षेत्रे ॥
पापैस्त्रिकोणसंस्थैः पुत्रसुखात्पूर्वमेव निधनं स्यात् ॥ ८७ ॥

यदि लग्नमें क्षीण होकर चंद्रमा स्थित होवे और बृहस्पति चंद्रराशिमें सूर्यको प्राप्त होवे अर्थात् अस्तका होवे और पाप ग्रह नवम पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रसुखसे पहिलेही मरण हो जाता है ॥ ८७ ॥

पापर्क्षे पंचमे राशौ पापैर्बलिभिरन्विते ॥
सौम्यग्रहैरसंदृष्टे पुत्राभावो भवेन्नृणाम् ॥ ८८ ॥

यदि पञ्चम भावमें पाप ग्रहका राशि होवे और बली पाप ग्रहोंसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंसे नहीं देखा गया होवे तौ पुरुषोंके पुत्रका अभाव होता है ॥ ८८ ॥

रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचे वा पंचमे स्थितः ॥
भूमिजः पुत्रशोकार्तं करोति नियतं नरम् ॥ ८९ ॥

यदि मंगल शत्रुराशि वा नीच राशिमें स्थित होकर शत्रुग्रहसे दृष्ट होवे तौ पुरुषको पुत्रशोकसे दुःखित करता है ॥ ८९ ॥

अत्र दंपत्योर्मध्ये कस्य पापेनावरोधस्तद्विचारो जातकरत्ने ।

अपत्यसंभवं दुःखं यथा पुंसस्तथा स्त्रियः ॥
पूर्वजन्मकृतं कर्म द्वयोरेवं ततो भवेत् ॥ ९० ॥

जिस प्रकार पुरुषके ग्रहोंसे संतानका दुःख होता है तिसी प्रकार स्त्रीके ग्रहोंसे संतानका दुःख होता है, स्त्री पुरुष दोनोंका जो कि पूर्वजन्मका किया कर्म है तिसीसे सन्तानका दुःख होता है ॥ ९० ॥

अपत्यसंभवं दुःखं पंचधा तदाह।

वियोगान्मरणात् क्लैब्यात् तथा चाप्रसवादपि ॥
देशांतरे च गमनात्पुत्रदुःखं हि पंचधा ॥ ९१ ॥

वियोग होनेसे तथा मरणसे तथा नपुंसकतासे तथा नहीं उत्पन्न होनेसे तथा देशान्तरमें चले जानेसे पांच प्रकारका पुत्रदुःख होता है ॥ ९१ ॥

दंपत्योः पूर्वकर्मविचारणे विधिः।

विलिख्य नाम दंपत्योः सप्तसप्तसमन्वितम् ॥
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषांकेन विचारयेत् ॥ ९२ ॥

स्त्रीपुरुषोंका पृथक् २ नाम लिखकर सात २ जोड देवे और तीनका भाग देवे शेष अंकसे विचार करे ॥ ९२ ॥

एकेन पुरुषो ज्ञेयो द्वाभ्यां नारी प्रकीर्तिता ॥
शून्ये स्त्रीपुंसयोः कर्म मिलितं हि निगद्यते ॥ ९३ ॥

यदि एक अंक शेष बचे तौ पुरुषका दोष जानना और दो अंक शेष बचे तौ स्त्रीका दोष जानना और शून्य शेष बचे तौ स्त्री पुरुष दोनोंका मिला हुआ कर्म कहा जाता है ॥ ९३ ॥

अन्यच्च।

लग्नधीस्थानतः पुंसो द्यूनधीस्थानतः स्त्रियाः ॥
क्रूरग्रहसमायोगादेवं दोषो विचार्यते ॥ ९४ ॥

लग्नसे जो कि पंचम भाव है तिससे पुरुषका और सप्तम भावसे जो कि पञ्चम भाव है तिससे स्त्रीका क्रूर ग्रहके संयोगसे ऐसा दोष विचारा जाता है ॥ ९४ ॥

ग्रहभावदृष्टिवशात्फलतारतम्यमाह।

एकपादं द्विपादं च त्रिपादं सकलं च वा ॥
विचार्य दृष्टिं चादृष्टिं वक्तव्यं ग्रहभावतः ॥ ९५ ॥

एक चरण और दो चरण और तीन चरण और समस्त चरणसंबन्धिनी ग्रहोंकी दृष्टि और अदृष्टिको विचार कर ग्रहके भावसे कम बढ फल कहना चाहिये ॥ ९५ ॥

वंध्यायोगानाह वैष्णवतंत्रे ।

स्वर्क्षस्थितौ रंध्रगतौ यमार्कौ प्रष्टुः स्त्रियं संदिशतश्च वंध्याम् ॥
छिद्रस्थितौ चंद्रबुधौ सदोषां वा काकवंध्यां ददतोऽङ्गनां वै ॥९६॥

यदि शनैश्चर और सूर्य अपनी राशिमें स्थित होकर अष्टम भावमें स्थित होवें तौ पूछनेवालेकी स्त्रीको वंध्या करते हैं। अथवा चंद्रमा बुध अपनी राशिमें स्थित होकर अष्टम भावमें स्थित होवें तौ पूछनेवालेको दोषयुक्त वा वंध्या स्त्रीको देता है॥९६॥

मृतप्रजां छिद्रगयोः सितेज्ययोः गर्भस्रवां भूमिसुतोऽष्टमस्थः ॥
छिद्रेश्वरे छिद्रगते बलान्विते पुष्पं न विंदत्यबला सुगर्भदम् ॥९७॥

यदि शुक्र और बृहस्पति अष्टम भावमें स्थित होवें तौ मृत्युप्राप्तसंतानवाली स्त्रीको प्राप्त करते हैं और मंगल अष्टम भावमें स्थित होवे तौ गर्भपातवाली स्त्रीको प्राप्त करता है। यदि बलवान् होकर अष्टमभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री गर्भदायक पुष्पको नहीं प्राप्त होवे है ॥ ९७ ॥

अन्यच्च जातकदीपे ।

नो सूर्ये तनुगेऽर्कजे द्युनगते वा मंदसूर्यौ द्युने
कर्मेंदुं न गुरुः प्रपश्यति यदा नो गर्भिणी जायते ॥
दृश्येऽर्द्धे रविसूर्यजौ द्विषि विधौ द्यूने च चोग्रे स्थितो
नो सूतेऽथ रिपौ शनिक्षितिसुतौ तोयर्क्षगौ नोद्भवः ॥ ९८ ॥

यदि सूर्य लग्नभावमें स्थित होवे और शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री गर्भवती नहीं होवे है। अथवा शनैश्चर सूर्य दोनों ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवें और दशमभावपर चंद्रमाको बृहस्पति नहीं देखता होवे तौ स्त्री गर्भवती नहीं होवे है। यदि सूर्य शनैश्चर दोनों चक्रके दृश्य भागमें स्थित होवें, चन्द्रमा छठे भावमें स्थित होवे और सप्तम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ स्त्री संतानको नहीं उत्पन्न करती है और जलराशिके[1] होकर शनि मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ भी संतानका जन्म नहीं होता है ॥ ९८ ॥

सुतस्थाने त्रिपापेषु त्रिपापैर्यदि वीक्षिते ॥
उभौ स्त्रीपुरुषौ वंध्यौ विज्ञेयौ शत्रुवीक्षिते ॥ ९९ ॥

यदि पंचम भावमें तीन पाप ग्रह स्थित होवें अथवा पंचम भाव तीन

१–" कुंभकर्कटकौ मीनमकरालितुलावराः ॥
सजला राशयः प्रोक्ता निर्जलाः शेषराशयः ॥ १ ॥"–सर्वार्थचिन्तामणौ ।

पाप ग्रहोंसे देखा जावे और पञ्चम भाव अपने स्वामीके शत्रुसे भी दृष्ट होवे तौ स्त्री पुरुष दोनों वंध्य होवे हैं ॥ ९९ ॥

मृतवत्सायोगानाह ।

वाचस्पतिर्दिनकरः क्षितिनंदनो वा नीचो विरश्मिरिपुराशि-
गतः सुतस्थः ॥ जातं सुतं झटिति नाशमुपैति नूनं चंद्रा-
द्वदंति मुनिगर्गपराशराद्याः ॥ १०० ॥

यदि बृहस्पति वा सूर्य वा मंगल नीच वा अस्तगत वा शत्रुराशिगत होकर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ उत्पन्न पुत्रको शीघ्र नाशको प्राप्त करता है और इस योगको गर्ग पराशर आदि मुनिगण चंद्रमासे भी कहते हैं ॥ १०० ॥

पंचमराशौ पापो जातं जातं विनाशयेत्पुत्रम् ॥
सप्तमराशौ पापौ द्वे भार्ये बादरायणनोक्ते ॥ १०१ ॥

यादि पंचम भावमें पाप ग्रह स्थित होवे तौ उत्पन्न हुए पुत्रका नाश करता है और सप्तम भावमें पाप ग्रह होवे तौ बादरायणने दो स्त्री कही हैं ॥ १०१ ॥

भौमेन राहुणा वापि युक्तः स्यात्पंचमेश्वरः ॥
राहुभौमांतरस्थो वा पुत्रनाशकरो भवेत् ॥ १०२ ॥

यदि पंचमभावपति मंगल वा राहुसे युक्त होवे, अथवा राहु मंगलके मध्यममें स्थित होवे तौ पुत्रका नाश करनेवाला होता है ॥ १०२ ॥

नीचस्थे शत्रुगेहे रविकिरणयुते निर्जिते पापयुक्ते
सौम्यैर्दृष्टिविवर्जित सुतगृहे तत्पे तथैव स्थिते ॥
शुक्रे भौमेऽपियुक्ते विषमगृहयुते चंद्रदृष्ट्या विहीने
एवं योगद्वये नुः सुतमरणकरं तस्य भार्यापि वंध्या ॥१०३॥

यादि पंचम भाव और पंचमभावपति नीचराशि वा शत्रुराशिमें स्थित होवे अथवा अस्तगत होवे अथवा पाप ग्रहोंसे निर्जित होवे वा युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होवे अथवा पंचम भाव शुक्र मंगलसे युक्त होवे और विषय राशिसे युक्त होवे और चंद्रमाकी दृष्टिसे हीन होवे इन दोनों योगोंमें पुरुषके पुत्रका मरण होता है और उस पुरुषकी स्त्री वंध्या होवे है ॥ १०३ ॥

नीचारिभांशोपगते जिते स्यात्काव्ये कुजे जन्ममृतप्रजानाम् ॥
शुक्रेंदुभस्थे च सुतप्रजानां शेषांशके शेषमृतप्रजानाम् ॥१०४॥

यदि शुक्र मंगल नीच वा शत्रुराशिके नवांशमें स्थित होकर पंचम भावमें स्थित होवें और पाप ग्रहसे जीते गये होवें तौ मृत्युको प्राप्त होनेवाले संतानवालोंका जन्म होता है और चंद्रराशिका शुक्र पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रसंतानवालोंका जन्म होता है और शेषराशियोंके नवांशमें स्थित होकर शुक्र मंगल पंचम भावमें स्थित होवें तौ कुछ शेष और कुछ मृत संतानवालोंका जन्म होता है ॥ १०४ ॥

पापः पंचमसंस्थः पुत्रविनाशं करोति बलहीनः ॥
सौम्यः शुभं विधत्ते बलसहितश्चाष्टमाधिपं हित्वा ॥ १०५ ॥

यदि निर्बल होकर पाप ग्रह पंचम भावमें स्थित होवें तौ पुत्रके विनाशको करता है और शुभ ग्रह बलवान् होकर पंचम भावमें स्थित होवे तौ संतानके विषयमें शुभ फलको करता है, परन्तु अष्टमभावस्वामीके विना । भाव यह है,अष्टमभावपति शुभ ग्रह होकर बलवान् हुआ भी पंचम भावमें स्थित होवे तौ संतानके विषयमें शुभ फल नहीं करता है ॥ १०५ ॥

पंचमे नवमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ॥
अग्रे जाता विनश्यंति पश्चाज्जीवंति वै सुताः ॥ १०६ ॥

यदि पञ्चम भाव नवम भाव चतुर्थ भाव इनमें ग्रह विद्यमान होवें तौ अगार उत्पन्न हुए पुत्र मृत्युको प्राप्त होते हैं किन्तु पीछे उत्पन्न हुए जीवते हैं ॥ १०६ ॥

जीवे मकरं याते पंचमभे आत्मजमृतिं विद्यात् ॥
मीनस्थितेऽपि चैवं नवमे शुभसंस्थितेऽल्पजीवी च ॥ १०७ ॥

यदि मकर राशिमें प्राप्त होकर बृहस्पति पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रका मरण जाने और मीनराशिका स्थित होवे तौ भी ऐसा फल जाने । यदि यह योग होनेपर नवम भावमें शुभ ग्रह स्थित होवे तौ अल्पजीवी संतान होवे है ॥ १०७ ॥

जीवस्थितस्य राशेः पंचमभे पापसंयुक्ते ॥
पुत्रविनाशं विद्यात् सौम्यक्षेत्रं तु शुभदं स्यात् ॥ १०८ ॥

बृहस्पतिके आश्रित राशिसे पंचम भाव पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ पुत्रविनाशको जाने और यदि बृहस्पतिसे पंचम भावमें शुभ ग्रहकी राशि होवे तौ संतानके शुभ फल देनेवाला होता है ॥ १०८ ॥

राहौ पंचमभवने विसुतः पुण्येन परिहीनः ॥
भौमयुते सुतमरणं दृष्टे स्त्रीराशिके भवेत्स्त्रीकः ॥ १०९ ॥

यदि राहु पंचम भावमें प्राप्त होवे तौ पुरुष निःसंतान और पुण्यहीन

होता है और पञ्चमभाव मंगलसे युक्त होवे तौ पुत्रका मरण होता है और पंचम भावमें स्त्रीराशि होवे और मंगलकर देखा गया होवे तौ स्त्रीसंतानवाला होता है॥१०९

पुत्रभावे कुजक्षेत्रे जातं जातं विनाशयेत् ॥
गुरुशुक्रयुतश्चापि न च सर्वग्रहेक्षितः ॥ ११० ॥

यदि पञ्चम भावमें मंगलका राशि स्थित होवे तौ यह योग उत्पन्न हुए बालकको नाश करता है । यदि ऐसा योग होनेपर वह पंचम भाव बृहस्पति शुक्रसे युत होवे अथवा समस्त शुभ ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ ऐसा फल नहीं होता है ॥ ११० ॥

अस्य केन कारणेन संततिमरणं तदाह जातकरत्ने ।

पुत्रस्थानादष्टमस्थे सूर्ये पीडा ज्वराद्भवेत् ॥
चंद्रे च जलशीताभ्यां शस्त्रेण क्षितिनंदने ॥ १११ ॥

यदि पंचम भावसे सूर्य अष्टम भावसे स्थित होवे तौ संतानको ज्वरसें पीडा होवे है और चंद्रमा स्थित होवे तौ जल और शीतसे पीडा होवे है और मंगल स्थित होवे तौ शस्त्रसे पीडा होवे है ॥ १११ ॥

बुधे च शीतलादोषाद्गुरौ च विषसर्पतः ॥
पश्वादिभिर्दैत्यपूज्ये शनौ बालग्रहैर्मृतिः ॥ ११२ ॥

बुध स्थित होवे तौ शीतलादेवीसे पीडा होवे है और बृहस्पति स्थित होवे तौ विष और सर्पसे पीडा होवे है और शुक्र स्थित होवे तौ पशु आदि शृंगवालोंसे पीडा होवे है। शनैश्चर स्थित होवे तौ बालग्रहोंसे बालकोंका मरण होता है ॥ ११२ ॥

राहौ वृक्षादिभिः केतौ विकारैः पीडनं भवेत् ॥ ११३ ॥

राहु स्थित होवे तौ वृक्षादिकसे पीडा होवे है और केतु होवे तौ विकारोंसे पीडा होवे है ॥ ११३ ॥

बालानां कस्यामवस्थायां मरणं तदाह जातकरत्ने ।

प्रसवांते मृतिः सूर्ये षण्मासात्परतोऽष्टमे ॥
चंद्रे पौगंडके नष्टः कुजे सद्योमृतः शिशुः ॥ ११४ ॥

यदि सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे तौ प्रसवके अन्तमें वा छः मास पीछे बालकका मरण कहे, चंद्रमा होवे तौ पौगंड अवस्थामें बालक नष्ट हो जावे और मंगल होवे तौ तत्काल ही बालक मृत्युको प्राप्त हो जावे ॥ ११४ ॥

बुधे विवाहतो नष्टः कैशोरे च बृहस्पतौ ॥
यौवने दैत्यपूज्ये च मध्यभागात्परे शनौ ॥ ११५ ॥

बुध होवे तौ विवाहसे पीछे बालक मृत्युको प्राप्त हो जावे और बृहस्पति होवे तौ कैशोर अवस्थामें मृत्युको प्राप्त हो जावे और शुक्र होवे तौ जवानीकी अवस्थामें बालक मृत्युगत होवे । शनैश्चर होवे तौ मध्यभागसे पीछे मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ११५ ॥

राहौ गर्भे मृतो बालः केतौ शस्त्रैः प्रपीडितः ॥
बलाबलं ग्रहाणां च विचार्यैव निगद्यते ॥ ११६ ॥

राहु होवे तौ गर्भमें बालक मृत्युको प्राप्त हो जावे, केतु होवे तौ शस्त्रोंसे पीडित होकर मृत्युको प्राप्त होवे, परन्तु ग्रहोंका बल अबल विचार कर ऐसा फल कहा जाता है ॥ ११६ ॥

संतानावरोधवतः पुंस औरसादिदशपुत्राणां मध्ये केन सुखं भविष्यति तदाह सारावल्याम् ।

गुर्वर्कवर्गे पुत्रक्ष शुभक्ष वा शुभस्थिते ॥
लग्नाधिपे वा सबले नृणां पुत्रास्तु औरसाः ॥ ११७ ॥

यदि पंचम भावमें बृहस्पति सूर्यकी राशि होवे अथवा शुभ ग्रहकी राशि वा शुभ ग्रहसे युक्त होवे अथवा लग्नपति बलवान् होवे तौ मनुष्योंके औरस पुत्र होते हैं ॥ ११७ ॥

एकतमे गुरुवर्गे सुतराशावौरसो भवेत्पुत्रः ॥
लग्नाच्चंद्रादथवा बलयोगाद्वीक्षितेऽपि वा सौम्यः ॥ ११८ ॥

यदि पंचम भावमें अकेला ही बृहस्पतिकी राशि स्थित होवे तौ औरस पुत्र होता है। अथवा लग्न चंद्रमा इनमें जो बलवान् होवे उससे पंचम भाव शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ भी औरस पुत्र होता है ॥ ११८ ॥

सौरर्क्षे सौरगणे बुधदृष्टे गुरुकुजाऽर्कदृग्घीने ॥
क्षेत्रजपुत्रं जनयति बोधे गणेऽपि रविजयुग्दृष्टे ॥ ११९ ॥

यदि पञ्चम भावमें शनैश्चरकी राशि और षड्वर्ग होवे और बुधसे दृष्ट होवे और बृहस्पति मंगल सूर्य इनकी दृष्टिसे हीन होवे तौ क्षेत्रज पुत्रको उत्पन्न करता है और पञ्चम भावमें बुधकी राशि और षड्वर्ग स्थित होवे और शनैश्चरसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ भी क्षेत्रज पुत्रको उत्पन्न करता है ॥ ११९ ॥

मांदं सुतर्क्षमिंदुनिरीक्षिते यदि शनैश्चरेण ॥
दत्तकपुत्रोत्पत्तिः क्रीतश्च बुधेन चैव स्यात् ॥ १२० ॥

यदि पंचम भाव शनैश्चरके राशिके युक्त होवे और शनैश्चरसे युक्त होवे और चंद्रमासे दृष्ट होवे तौ दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होवे है और बुधसे दृष्ट होवे तौ खरीदा हुआ पुत्र प्राप्त होता है ॥ १२० ॥

सप्तमभावे कौजे सौरयुते पंचमे सदा भवने ॥
कृत्रिमपुत्रं विद्याच्छेषग्रहदर्शनान्मुक्ते ॥ १२१ ॥

यदि सप्तम भाव मंगलके राशिसे युक्त होवे और पंचम भाव शनैश्चरसे युक्त होवे और शेष ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होवे तौ कृत्रिम पुत्रको जाने ॥ १२१ ॥

सर्वे पंचमराशौ सौरे सूर्येण वात्र संयुक्ते ॥
लोहितदृष्टे वाच्यं जातस्य सुतो धनप्रसवः ॥ १२२ ॥

यदि सब ग्रह पंचम भावमें स्थित होवें अथवा शनैश्चर सूर्यसे युक्त होकर पंचम भावमें स्थित होवे और मंगलसे दृष्ट होवे तौ उत्पन्न हुए प्राणीका पुत्र धनप्रसव होता है ॥ १२२ ॥

चंद्रे भौमांशगते धीस्थे मंदावलोकिते भवति ॥
गूढोत्पन्नः पुत्रः शेषग्रहदर्शनाऽयाते ॥ १२३ ॥

यदि मंगलके नवांशमें स्थित होकर चंद्रमा पंचम भावमें स्थित होवे और शनैश्चरसे दृष्ट होवे और शेष ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होवे तौ गूढोत्पन्न पुत्र होता है ॥१२३॥

शनिवर्गस्थे चंद्रे शनियुक्ते पंचमे सदा भवने ॥
शुक्ररविभ्यां दृष्टे पुत्रः पौनर्भवो भवति ॥ १२४ ॥

यदि शनैश्चरके राशि वा षड्वर्गमें स्थित हुआ चंद्रमा पंचम भावमें स्थित होवे और शनैश्चरसे युक्त होवे और शुक्र सूर्यसे दृष्ट होवे तौ पौनर्भव पुत्र होता है ॥ १२४ ॥

तस्मिन्नेव च भवने शशिवर्गस्थे निरीक्षिते रविणा ॥
पुरुषस्य भवति पुत्रः परिविद्धश्चेति मुनिवचनात् ॥१२५॥

यदि उसी पंचम भावमें चंद्रमाका राशि स्थित होवे और सूर्यकर देखा गया होवे तौ पुरुषका परिविद्ध पुत्र होता है इस प्रकार मुनिवचनसे जानना ॥ १२५ ॥

वर्गे रविचंद्रमसोः सुतगेहे चंद्रसूर्यसंयुक्ते ॥
शुक्रेण दृष्टमात्रे पुनः कथितः सहोढश्च ॥ १२६ ॥

यदि पंचम भावमें सूर्य चंद्रमाका राशि होवे और सूर्य चंद्रमासे युक्त होवे और शुक्रसे दृष्ट होवें तौ सहोढ पुत्र कहा है ॥ १२६ ॥

सितलवे सुतभे सितवीक्षिते बहुलसंततिरेवमपींदुतः ॥
सुतपनंदलवोन्मितसंततिर्भवति दास्युदराच्च धृतोदरात् ॥१२७॥

यदि पंचम भावमें शुक्रका नवांश स्थित होवे और शुक्रकर देखा गया होवे तौ बहुत संतान होवे हैं और पंचम भावमें चंद्रमाका नवांश स्थित होवे और चंद्रमासे दृष्ट होवे तौ बहुत संतान होवे हैं। पंचमभावपतिके नवांशके समान संतानसंख्या होवे है। इसी प्रकार दासीके उदरसे वा धरेली स्त्रीके उदरसे संतानसंख्या होवे है ॥ १२७ ॥

गर्भक्षययोगानाह ।

पंचमाधीश्वरस्यांशा यावद्भिः पापखेचरैः ॥
वीक्ष्यंते तत्समा गर्भा विलीयंते शुभैः शुभाः ॥ १२८ ॥

यदि पंचमभावपतिके नवांश जितने पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवें उतनेही गर्भ नष्ट होते हैं और जितने शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें उतनेही कुशल रहते हैं ॥ १२८ ॥

पञ्चमैकादशे भौमे शनिनात्र निरीक्षिते ॥
गर्भपातभवं दुःखं मृतापत्यभयं भवेत् ॥ १२९ ॥

यदि पंचम भाव वा एकादश भावमें मंगल स्थित होवे और शनैश्वरसे दृष्ट होवे तौ गर्भपातसे उत्पन्न दुःख और मृतसंतानका भय होता है ॥ १२९ ॥

पुत्रे कलत्रे च भवंति पापा महीसुतो मृत्युगतो यदि स्यात् ॥
गर्भस्रवं तस्य भवेच्च पत्न्या ग्रहप्रमाणं प्रवदंति धीराः ॥१३०॥

यदि पंचम भावमें और सप्तम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें और मंगल अष्टम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्रीका गर्भपात ग्रहोंके समान पंडित कहते हैं १३०

कर्कालिमीनांशगते सुतेऽस्ते शुक्रे तनौ सौरियुते सुखं न ॥
तस्यापि पत्नीं च वदंति वंध्यां गर्भस्रवां पापखगैर्मदस्थैः ॥१३१॥

यदि कर्क वृश्चिक मीन इनके नवांशमें प्राप्त होकर शुक्र पंचम वा सप्तम भावमें स्थित होवे और लग्न शनैश्वरसे युक्त होवे तौ संतानका सुख नहीं होता है। यदि पाप ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्रीको वंध्या और गर्भपातवाली मुनिजन कहते हैं ॥ १३१ ॥

एषामवरोधकर्तॄणां ग्रहाणामुपायं बादरायणसंहितायां पूर्वं रव्यादित्रयाणामुपायमाह।

आदित्ये व्रतवेदपाठकरणं जाप्यं तथा त्र्यंबकं ।
चाश्वत्थं वटवृक्षपूजनमथो दानं च वेदोदितम् ॥

सत्पुत्रं लभते तथैव हरिवंशेन श्रुतेऽर्के स्थिते ।
नष्टेंदौ हरिवासरे बहुविधिं संतर्पयेद्ब्राह्मणान् ॥ १३२ ॥

यदि सूर्य पंचमभावमें संतानके अवरोधकर्त्ता होकर स्थित होवे तौ रविवारके दिन व्रत और वेदपाठ करना और त्र्यंबकमंत्रका जप करना और पीपल तथा वडवृक्षका पूजन करना और वेदोक्त रीतिसे दान करना और हरिवंशका श्रवण करना ऐसा होनेपर पुरुष सत्पुत्रको प्राप्त होता है और यदि संतानावरोधक होकर क्षीण चंद्रमा पंचम भावमें स्थित होवे तौ द्वादशीतिथिमें बहु प्रकार ब्राह्मणोंको तृप्त करे ॥ १३२ ॥

गावः श्वेतहिरण्यवस्त्रसहितं मुक्ताफलैः संयुतं
पात्राणामखिलं च धान्यसहितं देयं द्विजेभ्यस्तदा ॥
कृत्वा वेदपुराणशास्त्रविधिना भानुर्यदा पंचमे
नित्यं पार्थिवपूजनं व्रतकरं पुत्रक्षगे भूमिजे ॥ १३३ ॥

गौ तथा सुवर्णवस्त्रसहित और मोतियोंसे युक्त और अन्नसहित समस्त पात्र ब्राह्मणोंके लिये देने चाहिये । सूर्य पंचम भावमें होवे तौ समस्त कर्म वेदशास्त्रपुराणके विधिसे करके करे और मंगल पंचम भावमें संतानके अवरोध करनेवाला होकर स्थित होवे तौ अनुष्ठानपूर्वक पार्थिव पूजन करना चाहिये ॥ १३३ ॥

अन्यत् ।

हरिवंशेन रविः शशी शिवव्रताद्भौमस्तु गौर्यर्चना
सौम्यः संपुटकांस्यपात्रकनकैर्जीवस्तु पित्रर्चनात् ॥
शुक्रो गोः प्रतिपालनात्प्रकुरुते सौरिस्तु मृत्युंजयात्
कन्यादानमखात्तमस्तु कपिलादानाच्छिखी संततिम् ॥ १३४ ॥

हरिवंशके पाठसे सूर्य प्रसन्न होता है और शिवके व्रतसे चंद्रमा प्रसन्न होता है और गौरीके पूजनसे मंगल प्रसन्न होता है और गौके पालन पोषणसे शुक्र प्रसन्न होता है और बुध संपुट कांस्यपात्र और सुवर्णके दानसे प्रसन्न होता है और पितृपूजनसे बृहस्पति प्रसन्न होता है और मृत्युंजयके जपसे शनैश्चर प्रसन्न होता है और कन्यादानरूप यज्ञसे राहु प्रसन्न होता है और गौके दानसे केतु प्रसन्न होता है इस प्रकार प्रत्येक ग्रह प्रसन्न होकर संतानको करता है ॥ १३४ ॥

वंध्याद्यष्टधावंध्यानां पापनिवारणार्थमुपायाः ।

बालघाती च पुरुषो मृतवत्सः प्रजायते ॥
ब्राह्मणोद्वाहनं तेन कर्तव्यं तस्य शुद्धये ॥ १३५ ॥

जो कि पुरुष बालघाती हो वह मृतवत्स उत्पन्न होता है उसके तिस पापको शुद्धिके लिये ब्राह्मणका विवाह कराना चाहिये ॥ १३५ ॥

श्रवणं हरिवंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि ॥
महारुद्रस्य जाप्यं वा कारयेच्च यथविधि ॥ १३६ ॥

हरिवंशका श्रवण यथाविधि करना चाहिये और यथाविधि महारुद्रका जाप्य करावे ॥ १३६ ॥

एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्याश्च दक्षिणाः ॥
पदान्येकादश तथा दूर्वायाश्चाहुतिं सृजेत् ॥ १३७ ॥

ग्यारह सुवर्णके निष्क दक्षिणामें देने चाहिये और ग्यारह सुवर्णके पदक दान करने चाहिये और अग्निमें दूर्वाकी आहुतिका दान करे ॥ १३७ ॥

स्नापयेद्दंपती वापि मंत्रैर्वारुणदैवतैः ॥
एकादशषडंगैश्च रुद्री समभिधीयते ॥ १३८ ॥

वरुण देवतावाले मंत्रोंसे स्त्री पुरुष दोनोंको स्नान करावे । ग्यारह षडंग पाठों-करके एक रुद्री कही जावे है ॥ १३८ ॥

एकादशभिरेताभिः प्रोक्तो रुद्रो मनीषिभिः ॥
रुद्रैकादशभिश्चापि महारुद्रः प्रकीर्तितः ॥ १३९ ॥

ग्यारह रुद्रीयोंकरके पंडितोंने एक रुद्र कहा है और ग्यारह रुद्रों करके एक महारुद्र कहा है ॥ १३९ ॥

एकादशमहारुद्रैर्महारुद्री निगद्यते ॥
एकादशभिरेताभिरतिरुद्री निगद्यते ॥ १४० ॥

और ग्यारह महारुद्रोंकरके एक महारुद्री कही है और एकादश महारुद्रीयों-करके एक अतिरुद्री कही है ॥ १४० ॥

अत्यंतोग्रस्य पापस्य नाशः सर्वस्य जायते ॥
शीतलैः सलिलैः शुद्धैर्वस्त्रपूतैः सचंदनैः ॥ १४१ ॥
लक्षसंख्यैर्घटैर्भक्त्या स्नापयेच्च महेश्वरम् ॥
लक्षपुष्पैरर्चयित्वा धूपदीपादिभिस्तथा ॥ १४२ ॥

यह जो कि रुद्री रुद्र महारुद्र महारुद्री अतिरुद्री हैं तिनसे समस्त अत्यन्त घोर महापापका नाश हो जाता है । वस्त्रोंसे पवित्र किये ऐसे चन्दनसहित शुद्ध-

शीतल जलोंसे भरे हुए एक लाख घटोंसे महेश्वरका स्नान करावे और लक्ष पुष्प तथा धूप दीप आदिसे पूजन करके महेश्वरको प्रसन्न करे ॥ १४१ ॥ १४२ ॥

करवीरार्कधत्तूरचंपकैर्मल्लिभिः सह ॥
नैवेद्यं विविधं दद्यात्पक्वान्नं विविधं तथा ॥ १४३ ॥

कनेर आक धतूरा चंपा मल्लिका इनके पुष्पोंसहित महेश्वरका पूजन करे और तरह २ के नैवेद्य और तरह २ के पक्वान्न अर्पण करे ॥ १४३ ॥

भोजयेच्च मुदायुक्तश्चतुर्दश धरासुरान् ॥
चतुर्दशीव्रतं कुर्यान्निर्जलं वा स्त्रिया सह ॥ १४४ ॥

प्रसन्नचित्त होकर चौदह ब्राह्मणोंका पूजन करे और स्त्रीसहित आप निर्जल चतुर्दशीका व्रत करे ॥ १४४ ॥

उद्यापनं चरेत्पूर्व पश्चाद्व्रतं समाचरेत् ॥
एकं धर्मघटं दद्याद्ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ १४५ ॥

पहिले व्रतका उद्यापन करे पीछे व्रत करे । ब्रह्मविष्णुशिवरूप एक धर्मघटका दान करे ॥ १४५ ॥

एवं वर्षव्रतं कुर्यादपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥
मृतपुत्रोऽपि चाप्नोति पुत्रं वै दीर्घजीविनम् ॥ १४६ ॥

इस प्रकार वर्षपर्यन्त व्रत करे तो अपुत्र पुरुष पुत्रवान् होता है और मरे हुए पुत्रवाला पुरुष दीर्घजीवी पुत्रको प्राप्त होता है ॥ १४६ ॥

सुशीलां विप्रकन्यां वा यथाविधि विवाहयेत् ॥
स्वशक्त्या च द्वयं कुर्याद्वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥ १४७ ॥

सुशीला ब्राह्मणकन्याका यथाविधि विवाह करे, अथवा अपनी शक्तिसे दो विप्रकन्याओंके विवाह करे, धनकी कृपणता नहीं करे ॥ १४७ ॥

सूर्यवारे व्रतं कुर्यादथवा जलवर्जितम् ॥
अष्टकादिपितृश्राद्धहीनो निःशंकघातकः ॥ १४८ ॥

अथवा रविवारके दिन निर्जल व्रत करे । जो पुरुष कि अष्टकादि पितृश्राद्धोंसे हीन है अथवा विश्वास रखनेवालेका घातक है ॥ १४८ ॥

प्राणिनामनिशं द्वेषी विप्राणां द्वेषकोऽपि वा ॥
भक्षको मृगशावानां नरकांतेऽन्यजन्मनि ॥ १४९ ॥

मृतपुत्रश्चर्मकीलव्याधियुक्तो भवेन्नरः ॥
दुर्मनाश्च वै जायेत तस्यैवं निष्कृतिः परा ॥ १५० ॥

अथवा प्राणियोंका सदैव वैर करनेवाला है अथवा ब्राह्मणोंसे वैर करनेवाला है अथवा मृगवच्चोंके खानेवाला है ऐसा पुरुष नरकयातनाका अन्त होनेपर अन्य जन्ममें मरे हुए पुत्रवाला अथवा कुष्ठी वा व्याधियुक्त होता है अथवा दुष्टचित्तवाला होता है उस पुरुषके कल्याणार्थ यह परम प्रायश्चित्त है ॥१४९॥१५०॥

कृच्छ्रचांद्रायणं कुर्याद्धोमं कूष्मांडसंज्ञकम् ॥
ग्रहणे च स्वर्णदानं भूमिदानं तथापरम् ॥ १५१ ॥

ऐसा पुरुष कृच्छ्रचान्द्रायणव्रतको करे और कूष्माण्डसंज्ञक होमको करे, ग्रहणकालमें सुवर्णदान तथा भूमिदान करे ॥ १५१ ॥

कन्यादानं च पंचम्यां श्राद्धं कुर्वीत यत्नतः ॥
सहस्रनामजापी च भवेदेवं विमुच्यते ॥ १५२ ॥

पंचमीके दिन कन्यादान करे और यत्नसे श्राद्ध करे और सहस्रनामस्तोत्रका जप करनेवाला होवे तौ पापफलसे छूट जाता है ॥ १५२ ॥

नानाग्रंथान्समालोक्य मदनेन सुधीमता ॥
कृतो जनुःसंग्रहोऽयं विज्ञैः संसेव्यते सदा ॥ १५३ ॥

नानाग्रंथोंको देखकर मदनाचार्यने इस प्रायश्चित्तका संग्रह किया है, विद्वानोंको सदा सेवन करना चाहिये ॥ १५३ ॥

अन्यच्च ।

ज्ञशुक्रदोषे शिवपूजनात्सुतः शशीज्ययोरौषधयन्त्रमन्त्रतः ॥
अगोः सुतां गां शिखिनश्च यच्छतो यमारयोः स्याद्गिरिशाभिषेचनात् ॥ १५४ ॥

यदि बुध शुक्रका दोष होवे तौ शिवके पूजनसे पुत्र उत्पन्न होता है और चंद्रमा बृहस्पतिका दोष होवे तौ औषध यन्त्रमंत्रसे पुत्र उत्पन्न होता है और राहुका दोष होवे तौ कन्यादान करनेवालेको पुत्र होता है और केतुका दोष होवे तौ गौके दान करनेवालेको पुत्र प्राप्त होता है, शनैश्चर मंगलका दोष होवे तौ महादेवके अभिषेक करनेसे पुत्र उत्पन्न होता है ॥ १५४ ॥

रवेस्तु दोषे हरिवंशसंश्रवात् सोमे तु सन्तानमुकुंदवन्दनात् ॥
सुतोद्भवः स्यात्क्षितिजार्कयोर्व्रते कृते विधानान्मदनव्रते ध्रुवम् १५५

यदि सूर्यका दोष होवे तौ हरिवंशके श्रवण करनेसे संतानकी उत्पत्ति होवे है और चंद्रमाका दोष होनेपर सन्तानगोपालके प्रसन्न करनेसे पुत्रका जन्म होता है। समस्त ग्रहोंका दोष होवे तौ मंगल सूर्यका विधानसे व्रत करनेपर तथा कामदेवका व्रत करनेपर निश्चय संतान होवे है ॥ १५५ ॥

सुतभावे मेषादिराशिफलम् ।

मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रायेण पुत्रान्विधनांस्तथा च ॥
क्रूरान्सुखेनाविकृतानपत्यान्मोहानुरक्तान्कुचारित्रयुक्तान् १५६॥

यदि मेषराशि पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य बहुधा निर्धन और क्रूरस्वभाव पुत्रोंको प्राप्त होता है और सुखसे हीन तथा मोहयुक्त तथा दुष्ट चालवाले संतानको प्राप्त होता है ॥ १५६ ॥

वृषे सुतस्थे जनने मनुष्यः प्राप्नोत्यपत्यानि मनोहराणि ॥
सुशीलयुक्तानि गुणाधिकानि प्रभासमेतानि बलाधिकानि १५७॥

यदि जन्मसमय वृषराशि पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य मनोहर तथा अच्छे शीलयुक्त और गुणी तथा प्रभावाले और बली संतानोंको प्राप्त होता है ॥ १५७ ॥

मिथुने यस्य पुत्रस्थे तस्य पुत्रो गुणान्वितः ॥
सुरूपः सुशीलश्च बली प्राज्ञः सुकौशलः ॥ १५८ ॥

जिस पुरुषके पञ्चम भावमें मिथुन राशि स्थित होवे उस पुरुषका पुत्र गुणी और अच्छे रूपवाला तथा शीलवान् और बली तथा पंडित और चतुर होताहै ॥ १५८

कर्के सुतर्क्षे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्प्रसिद्धान् सुतलालसांश्च ॥
विस्तीर्णकीर्तींश्चमहानुभावान्धनेन युक्तान् विनयेन युक्तान् १५९

यदि कर्क राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य विख्यात तथा पुत्रोंकी लालसावाले और विस्तीर्णकीर्ति तथा बडे प्रभाववाले तथा धनी और विनयसंपन्न पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १५९ ॥

सिंहे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः क्रूरस्वभावांस्तनयानकांतान् ॥
मांसप्रियान्स्त्रीस्वजनान्सुतीव्रान्विदेशभाजोक्षुधयासमेतान् १६०

यदि सिंह राशी पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य क्रूरस्वभाव कान्तिहीन मांसप्रिय तथा स्त्रीस्वजन और बडे तीव्र तथा विदेशमें रहनेवाले तथा क्षुधासंपन्न पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६० ॥

कन्या यदा पंचमगा तदा स्यात् कन्या नराणां स्वजनैर्विहीना ॥
पतिप्रियापत्यपरा प्रगल्भा प्रशांतकामा गुणभूषणा च ॥ १६१ ॥

यदि कन्या राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंका कन्या स्वजनोंसे हीन तथा पतिप्रिया और संतानपरायण और प्रगल्भ और प्रशान्तकामवाली तथा गुणभूषण होवे है ॥ १६१ ॥

तुला यदा पंचमगा नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि ॥
भवंत्यपत्यानि सुरूपकांतिक्रियासमेतानि सुखोचितानि ॥१६२॥

यदि तुला राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंके सुन्दरशीलयुक्त और मनोहर और रूपकान्तिक्रियायुक्त तथा सुखोचित संतान होवे हैं ॥ १६२ ॥

कीटेसुतस्थे जनयेद्द्वियोनौ पुत्रान्मनुष्यः सुभगान् सुशीलान् ॥
आढ्यानदोषान्प्रणयेन युक्तान्सदानुरक्तान्निजगोत्रधर्मैः ॥१६३॥

यदि वृश्चिक राशि पंचम भावमें होवे तौ मनुष्य द्वियोनिमें सुंदर ऐश्वर्ययुक्त तथा सुन्दरशीलसंपन्न तथा धनी और निर्दोष स्नेहसे युक्त और अपने गोत्रधर्मोंसे युक्त पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६३ ॥

चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः सुतान्विचित्राह्वयमार्गयुक्तान् ॥
धानुष्कचापान् हतशत्रुदक्षान्सेवाप्रियान्पार्थिवमानयुक्तान् १६४॥

यदि धनु राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य चित्रविचित्रमार्गयुक्त तथा धनुषधारी तथा वैरियोंके हन्ता और सेवाप्रिय तथा राजसत्कारयुक्त पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६४ ॥

मृगेसुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्मृषापापमतीन्कुरूपान् ॥
युक्तान्कुकर्मण्यनुलोमधर्मान् क्लीबस्वभावानगभीरचेष्टान् ॥१६५॥

यदि मकर राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य मिथ्याचारी और पापबुद्धि तथा बुरे रूपवाले तथा कुकर्ममें युक्त तथा अनुलोमधर्म तथा नपुंसकस्वभाव और अगंभीरचेष्टायुक्त पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६५ ॥

कुंभे सुतस्थे स्थिरतासमेतान् गंभीरचेष्टानतिशक्तियुक्तान् ॥
पुत्रान्मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धानष्टात्मजान् कष्टमहाप्रसूतान् ॥१६६॥

यदि कुंभ राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य स्थिरतायुक्त और गंभीर चेष्टावाले तथा अतिशक्तिसंपन्न तथा विख्यात और कष्टप्रसूत ऐसे आठ पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६६ ॥

मीने सुतस्थे ललनानुरक्तान् पुत्रान्मनुष्यो लभतेऽल्पवीर्यान् ॥
रोगान्वितान्पापरतान्सुरूपान् सहास्यतान्स्त्रीवशगान्सदैव १६७

यदि मीन राशि पंचम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य थोडे बलवाले तथा स्त्रियोंमें अनुरक्त तथा रोगी तथा पापी और रूपवान् तथा हास्यकर्त्ता और स्त्रीके वशीभूत पुत्रोंको उत्पन्न करता है ॥ १६७ ॥

सुतेशस्य भावफलम् ।

लग्नगतः पंचमपः प्रसिद्धमस्तोकतनयपरिकलितम् ॥
शास्त्रविदं गीतविदं सुकर्मनिरतं नरं कुरुते ॥ १६८ ॥

यदि पंचमभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुषको विख्यात और बहुतसे पुत्रोंसे युक्त तथा शास्त्रवेत्ता तथा गीतवेत्ता और सुकर्ममें सावधान करता है ॥ १६८ ॥

पंचमपतिर्धनस्थः क्रूरः खचरो धनोज्झितं कुरुते ॥
गीतादिकाव्यकलितं कष्टभुजं स्थानप्रचुरं च ॥ १६९ ॥

यदि पंचमभावपति पाप ग्रह होकर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको धनहीन करता है और गाने बजाने आदि कर्म और कविता करनेमें चतुर और कष्टभोगी तथा स्थानाधिक करता है ॥ १६९ ॥

तनयपतिः सहजगतः समधुरवाचं सुबंधुजनविदितम् ॥
कुरुते सुतांस्तदीयांस्तनया पालयति तद्बंधून् ॥ १७० ॥

यदि पंचमभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको मधुर बोलनेवाला और अच्छे बंधुजनोंमें विख्यात करता है और उस पुरुषके पुत्रों तथा उसके बंधुओंको पुत्री पालती है ॥ १७० ॥

पाताले पंचमपो गुरुभक्तिरतं पितृकर्मनिरतं च ॥
पुरुषं जननीभक्तं कुरुते क्रूरस्तु विपरीतम् ॥ १७१ ॥

यदि पंचमभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको गुरुभक्तिमें तत्पर तथा पिताके कार्यमें युक्त और माताका भक्त करता है और पाप ग्रह होवे तौ इससे विपरीत फल होता है ॥ १७१ ॥

तनयगतस्तनयपतिर्मतिमंतं मानिनं वचनकुशलम् ॥
सुतकलितं प्रचुरधनं ख्यातियुतं मानवं कुरुते ॥ १७२ ॥

यदि पंचमभावपति पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको बुद्धिमान् तथा मानी और कहनेमें प्रवीण और पुत्र युक्त तथा बहुत धनसे संपन्न और ख्यातियुक्त करता है ॥ १७२ ॥

पंचमपतिस्तु षष्ठे शास्त्रप्रियमात्मजैर्हीनम् ॥
रोगयुतं धनरहितं क्रूरः खचरः करोति क्रूरतरम् ॥ १७३ ॥

यदि पंचमभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको शास्त्रप्रिय और पुत्रहीन तथा रोगी और निर्धनी करता है और पाप ग्रह होवे तौ अतीव दुष्ट करता है ॥ १७३ ॥

तनयपतौ सप्तमगे सुप्रसूता सुभगाथ दैवरता ॥
गुरुभक्ता प्रियवचना सच्छीला तस्य जायते दयिता ॥१७४॥

यदि पंचमभावपति सप्तम भावमें होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री सुन्दर संतानवाली तथा सौभाग्ययुक्त और भाग्यवती तथा गुरुभक्ता और प्रिय बोलनेवाली और अच्छे शीलवाली होवे है ॥ १७४ ॥

सुतपे निधनगृहस्थे कुत्सितवाङ्निरालयो मंदः ॥
नष्टा व्यंगाः सहजास्तनया अपि संभवंति तथा ॥ १७५ ॥

यदि पंचमभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष बुरे वचन बोलनेवाला तथा स्थानहीन और मूर्ख होता है और उस पुरुषके भ्राता वा पुत्र नष्ट और अंगहीन होते हैं ॥ १७५ ॥

सुकृतस्थस्तनयपतिः सुबोधविद्याढ्यगीतरतम् ॥
नृपपूजितं स्वरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते ॥ १७६ ॥

यदि पंचमभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको सुन्दर ज्ञान विद्यासे युक्त तथा गानमें निपुण और राजासे सत्कार पानेवाला और सुन्दर रूप और नाटकरसिक करता है ॥ १७६ ॥

तनयपतिर्नृपगृहगो नृपकर्माणं नृपाकलितम् ॥
सत्कर्मरतं प्रवरं जननीकृतसुखाशनं कुरुते ॥ १७७ ॥

यदि पंचमभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको राजकाज करनेवाला और राजपुरुषोंसे सेवित तथा सत्कर्ममें निपुण और श्रेष्ठ और माताके किये सुखके भोगनेवाला करता है ॥ १७७ ॥

सुतनाथे लाभगते शूरः सुतवान् सुकृत्यकृद्रोगी ॥
गीतादिकलासु कलितो नृपलाभी जायते मनुजः ॥१७८॥

यदि पंचमभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष शूरवीर पुत्र-

वान् और अच्छे कार्यके करनेवाला और भोगवान् और गीत आदि कलाओंमें निपुण और राजासे लाभवाला होता है ॥ १७८ ॥

पंचमगे द्वादशगे क्रूरे सुतरहितः शुभे ससुतः ॥
सुतसंतापकृतो विदेशगमनोद्यतो मनुजः ॥ १७९ ॥

इति जातकसंग्रहे सुतभावविचारः समाप्तः ॥ ५ ॥

यदि पंचमभावपति पाप ग्रह होकर द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पुत्रहीन होता है और शुभ ग्रह होवे तौ पुत्रयुक्त होता है और पुत्रसंतापसे युक्त और परदेशके जानेमें तत्पर मनुष्य होता है ॥ १७९ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां सुतभावविचारः समाप्तः ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावविचारः ।

रिपुभावः तत्र रिपुभावे किं चिंत्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

वैरिव्रातक्रूरकर्मामयानां चिंताशंकामातुलानां विचारः ॥
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिंत्यम् ॥ १ ॥

वैरियोंका समूह और अशुभ कर्म और रोग तथा चिन्ता, शंका और मामाओंका शुभाशुभ इनका विचार ज्योतिषशास्त्ररूप समुद्रके पारगामी विद्वानोंको षष्ठ भावमें विचारना चाहिये ॥ १ ॥

षष्ठेशलग्नेशशुभेन्दुसंस्थितिः षष्ठे प्रदत्ते रिपुरोगदुर्मतीः ॥
पापारिपुघ्नाश्च रुजा विनाशका विद्भिद्भिरित्यत्र सदा विचार्यताम् ॥ २ ॥

षष्ठ भावपति और लग्नपति और शुभ ग्रह और चन्द्रमा इनकी षष्ठ भावमें जो कि स्थिति है वह शत्रु रोग दुर्बुद्धिको देती है और षष्ठ भावमें पाप ग्रह शत्रुनाशक तथा रोगनाशक होते हैं । इस प्रकार इस षष्ठ भावमें विद्वानोंको सदैव विचारना चाहिये ॥ २ ॥

अरिभावे ग्रहस्थितिफलम् ।

षष्ठे भावे स्थिते भानावतिकामोदरानलः ॥
बली ख्यातगुणो भूपो दंडनेताथवा भवेत् ॥ ३ ॥

यदि सूर्य षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष अतिकामी और अति उदराग्निवाला होता है और बलवान् तथा विख्यात गुण और राजा अथवा दंड देनेवाला होता है ॥ ३ ॥

लग्नात्षष्ठस्थिते चंद्रे मृदुकायः स्मरानलः ॥
अनेकारिर्भवेत्तीक्ष्णो रिष्टं स्यान्मृत्युरेव च ॥ ४ ॥

यदि लग्नसे षष्ठ भावमें चन्द्रमा स्थित होवे तौ कोमल शरीरवाला तथा कामाग्निसे युक्त और अनेक शत्रुओंसे युक्त और तीक्ष्णस्वभाव पुरुष होता है और उस पुरुषको अरिष्ट वा मृत्यु होवे है ॥ ४ ॥

बहुदाराग्निपुंस्कः स्यात्सुकार्यो बलवान्कुजे ॥
स्वबंधुविजयी जातः प्रधानश्च रिपुस्थिते ॥ ५ ॥

यदि मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष बहुतसी स्त्रियोंवाला तथा प्रबल अग्निवाला और अच्छे कार्यसे युक्त और बली तथा स्वबंधुविजयकर्त्ता और प्रधान होता है ॥ ५ ॥

विवादी कलही व्याधियुतो निष्ठुरवाग्भवेत् ॥
नरपालस्य शत्रुः स्याल्लग्नात्षष्ठस्थिते बुधे ॥ ६ ॥

यदि लग्नसे षष्ठ भावमें बुध स्थित होवे तौ पुरुष विवादकर्त्ता तथा कलहकर्त्ता और व्याधियुक्त और निष्ठुर बोलनेवाला तथा राजाका शत्रु होवे है ॥ ६ ॥

स्वल्पोदराग्निपुंस्कः स्यात् स्त्रीजितो रिपुहा गुरौ ॥
लग्नात्षष्ठस्थिते जातो दुर्बलोऽलससंयुतः ॥ ७ ॥

यदि लग्नसे षष्ठ भावमें बृहस्पति स्थित होवे तौ पुरुष थोडे उदरके अग्निवाला और स्त्रीसे जीता हुआ तथा शत्रुनाशक और दुर्बल और आलसी होता है ॥ ७ ॥

भीरुर्भूरिरिपुः स्त्रीणामनिष्टो विभवेप्सितः ॥
विक्लवश्च भवेल्लग्नाद्भार्गवे रिपुराशिगे ॥ ८ ॥

यदि लग्नसे षष्ठ भावमें शुक्र स्थित होवे तौ पुरुष डरनेवाला और बहुतसे शत्रुओंसे युक्त तथा स्त्रियोंका अप्रिय तथा धनकी इच्छावाला तथा असावधान होता है ॥ ८ ॥

विद्वेषिपक्षक्षपितः शूरो विषमचेष्टितः ॥
बह्वाशी बहुकाव्यश्चारिदाहो रिपुगे शनौ ॥ ९ ॥

यदि षष्ठ भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ पुरुष वैरियोंके पक्षसे संतप्त तथा शूरवीर तथा विषम चेष्टावाला और बहुत भोजनकर्त्ता तथा बहुतसी कवितासे युक्त और शत्रुओंका दाहक होता है ॥ ९ ॥

शूरः सुभगः प्राज्ञो नृपतुल्यो जायते मनुजः ॥
रिपुभवनस्थो राहुर्जनमान्योऽतिविख्यातः ॥ १० ॥

यदि राहु षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष शूरवीर तथा सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त और पंडित और राजाके समान तथा जनमान्य और अतीव विख्यात होता है ॥ १० ॥

अन्यच्च।

रिपुं कुर्यात्कुजः षष्ठे विलग्नाच्च निरीक्षितः ॥
सौम्ययुक्तेक्षिते भौमे नात्यंतमरिजं भयम् ॥ ११ ॥

यदि षष्ठ भावमें मंगल पाप ग्रहसे दृष्ट होवे तौ शत्रुको करता है और शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ अत्यन्त शत्रुकृत भय नहीं होता है ॥ ११ ॥

षष्ठे पापाक्रांते शत्रुभयं भवति नियमेन ॥
सौम्याक्रांते सौम्येक्षिते भवति शत्रुमित्रत्वम् ॥ १२ ॥

यदि षष्ठ भावमें मंगल पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ नियमसे शत्रुभय होता है और शुभ ग्रहसे युक्त वा शुभ ग्रहसे दृष्ट होकर मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुकी मित्रता होवे है ॥ १२ ॥

यवनः।

षष्ठाश्रितेऽर्के विषशत्रुदाहःक्षुद्रोपशत्रुव्यसनोपनाशः ॥
काष्ठाश्मघाताद्धि विकीर्णदेहः श्रुतौष्ठवाग्दंतनखक्षतांगः ॥ १३ ॥

यदि षष्ठ भावमें सूर्य स्थित होवे तौ विष और शत्रुसे संताप होता है तथा क्षुद्र शत्रु और कष्टोंका नाश होता है और काष्ठ और पत्थरके प्रहारसे विदीर्ण देहवाला होता है और कान होठ वाणी दन्त नख इनमें घाववाले अंगसे युक्त होता है ॥ १३ ॥

जलोदरेणामयजैर्विकारैश्चंद्रोऽम्बुजैर्वा कफतप्तदेहः ॥
शरीरशोफक्षयरोगकृत्स्यादत्रैव सूर्येण विमिश्रमूर्तिः ॥ १४ ॥

यदि षष्ठ भावमें चंद्रमा स्थित होवे तौ पुरुष जलोदररोगसे संतप्त होता है और रोग और जलसे उत्पन्न हुए विकारोंसे युक्त होता है वा कफसे संतप्त देहवाला होता है और सूर्यसे युक्त हुए मूर्त्तिवाला चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शरीरमें सूजन और क्षयरोगको करता है ॥ १४ ॥

मीनांशके मेषगृहांशके वा चंद्रः स्थितोऽत्रैव हि पापदृष्टः ॥
किलासकुष्ठादिविनष्टदेहमिष्टेक्षितः कंडुविकारिणं च ॥ १५॥

यदि मीनके नवांश वा मेषके नवांशमें स्थित होकर चंद्रमा पाप ग्रहसे दृष्ट हुआ षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको श्वेतकुष्ठ और कुष्ठादिसे संतप्त शरीरवाला करता है और शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे तौ पुरुषको खुजली रोगवाला करता है ॥ १५ ॥

षष्ठेश्वरे वृश्चिककर्कटांशे कुजेक्षिते गुप्तरुगार्दितांगः ॥
सौरेक्षिते मारुतशोणितार्तो हृद्रोगिणं सूर्यग्रहांशकस्थः ॥ १६ ॥

वृश्चिक वा कर्कके नवांशमें स्थित हुआ षष्ठभावपति यदि मंगलसे दृष्ट होवे तौ पुरुष गुप्तरोगसे पीडित अंगवाला होता है और शनैश्चरसे दृष्ट होवे तौ पवन और रुधिरविकारसे पीडित होता है और षष्ठभावपति सूर्यके नवांशमें स्थित होवे तौ पुरुषको हृदयमें रोगवाला करता है ॥ १६ ॥

शस्त्रप्रहाराग्निरुगग्निदाहप्रतप्तमिंदुःक्षितिसूनुयुक्तः ॥
सौरस्तु षष्ठेशविमिश्रमूर्तिर्निहंति वाताश्मचतुष्पदाद्यैः ॥ १७ ॥

यदि षष्ठभावपति चंद्रमा मंगलसे युक्त होवे तौ पुरुषको शस्त्रप्रहार तथा अग्निरोग तथा अग्निदाहसे संतप्त देहवाला करता है। यदि षष्ठभावपतिसहित शनैश्चर होवे तौ पुरुषको पवन पत्थर चौपायोंसे हनता है ॥ १७ ॥

कुजो ह्यसृक्शस्त्रपरिक्षतांगं देशाटने वा नृपदर्शने च ॥
सारीश्वरोऽश्मावनिवातपातबुभुक्षया चोपहतं च कुर्यात् ॥१८॥

यदि षष्ठभावपतिसहित मंगल होवे तौ पुरुषको रुधिर और शस्त्रप्रहारसे संतप्त देहवाला तथा देशाटन करनेमें तथा राजदर्शन करनेमें युक्त करता है और पत्थर तथा पृथ्वी और पवन इनके प्रहारसे युक्त करता है और भूखसे संतप्त करता है ॥ १८ ॥

बुधेक्षितः प्रस्खलितः प्रपातलोष्टाहतांगं जितविद्विषं च ॥
ख्यातं रिपुद्वेषभयप्रसक्तमस्वस्थदेहं भृगुसूनुजीवौ ॥ १९ ॥

यदि षष्ठभावपति बुधसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ पुरुषको गिर जानेसे वा लोहप्रहारने विदीर्ण अंगवाला तथा जीते हुए शत्रुवाला करता है। यदि शुक्र बृहस्पति षष्ठभावपतिसे युक्त होवें तौ पुरुषको विख्यात तथा शत्रुके वैरके भयसे युक्त और अस्वस्थ देहवाला करते हैं ॥ १९ ॥

त्रिकोणकेंद्रोपगतैस्तु सौम्यैः पापा यथोक्तं विनिवर्तयंति ॥
पापेक्षितास्ते तु शुभांशसंस्थाः कुर्वंति मृत्युं विकसांगकं वा २०

यदि शुभ ग्रह त्रिकोण और केन्द्रभावोंमें स्थित होवें तौ पाप ग्रह यथोक्त फलको लौट देते हैं और वह पाप ग्रह शुभ ग्रहके नवांशमें स्थित होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे और पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ पुरुषका मृत्यु वा पुरुषको विकल शरीरवाला करते हैं ॥ २० ॥

शत्रुगृहेंशतुल्यां संख्यां तेषां विनिर्दिशेत्प्राज्ञः ॥
भावाध्याये विहिताद्विस्ताराच्चिंतयेच्छेषम् ॥ २१ ॥

षष्ठ भावमें नवांशके समान तिन शत्रुओंकी संख्याको पंडित कहे। भावाध्यायमें जो कि विस्तार कहा गया है उसीसे षष्ठ भावके शेष फलको विचारे ॥ २१ ॥

गर्गमतेन।

रिपुं हंति सहास्रांशुः शत्रौ सोपचये यदि ॥
शत्रुभिर्दृष्टयुक्तो वा बहून् शत्रून् प्रयच्छति ॥ २२ ॥

यदि उपचयस्थानसहित षष्ठ भावमें सूर्य स्थित होवे तौ शत्रुका नाश करता है और शत्रु ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ बहुतसे शत्रुओंको देता है ॥ २२ ॥

निधनं कुरुते चंद्रः पापर्क्षे पापसंयुते ॥
पूर्णः षष्ठोऽरिघाती च गुरुगेहगतो यथा ॥ २३ ॥

यदि पाप ग्रहके राशिपर पाप ग्रहसहित चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ मृत्यु करता है और पूर्ण होकर बृहस्पतिके राशिपर स्थित होवे तौ शत्रुका नाश करता है२३

षष्ठे नीचारिभवने संन्यासं कारयेद्बुधः ॥
वर्द्धयेत्त्वन्यथा शत्रुं पुंसां धरणिनंदनः ॥ २४ ॥

यदि नीच राशि वा शत्रुराशिमें स्थित होकर बुध षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ संन्यास करता है और नीच वा शत्रुराशियोंसे अन्य राशिमें स्थित होकर मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुको बढाता है ॥ २४ ॥

रिपून् विजयते सौम्यः सौम्यैर्दृष्टोऽथवा युतः ॥
नीचं प्राप्तश्च वक्रश्च षष्ठर्क्षे रिपुरिष्टकृत् ॥ २५ ॥

शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होकर शुभ ग्रह षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुओंको विजय करता है और नीच राशि वा वक्र होकर शुभ ग्रह षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुकष्टको करता है ॥ २५ ॥

स्वगेहे शुभगेहे वा षष्ठे गुरुरमित्रहा ॥
शत्रुगेहेऽरिणा दृष्टे शत्रुपीडां ददाति सः ॥ २६ ॥

यदि अपने राशिमें वा शुभ ग्रहके राशिमें स्थित होकर बृहस्पति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुका नाश करता है और शत्रुके राशिमें शत्रुग्रहकर देखा हुआ बृहस्पति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुपीडाको देता है ॥ २६ ॥

नीचास्तगामी रिपुमंदिरस्थः करोति वैरं कलहागमं च ॥
अन्यत्र शुक्रो रिपुदर्पहारी स्वर्क्षे तु षष्ठे तु सदातिसिद्धिः ॥२७॥

यदि नीच वा शत्रु राशिमें स्थित होकर शुक्र षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ वैर और कलह प्राप्ति करता है और अन्य राशिमें स्थित होकर शुक्र षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शत्रुगर्वके नाश करनेवाला होता है और अपने राशिमें स्थित होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ सदा अतिसिद्धि होवे है ॥ २७ ॥

षष्ठे नीचगतः सौरिर्जनयेन्नीचवैरिणाम् ॥
अन्यथा वैरिणं हंति निर्वैरं स्वगृहे गतः ॥ २८ ॥

यदि नीच राशिमें स्थित होकर शनैश्वर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ नीच वैरियोंको उत्पन्न करता है और अन्य राशिमें स्थित होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ वैरीको हनता है और अपने घरमें स्थित होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ निर्वैर करता है ॥ २८ ॥

राहुः शत्रुं गृहे कुर्याच्छत्रुं संग्राममूर्द्धनि ॥
हंति सर्वान्यरिष्टानि सर्वग्रहनिरीक्षितः ॥ ॥ २९ ॥

यदि राहु षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ संग्रामके मध्य शत्रुको करता है और समस्त ग्रहोंसे दृष्ट होकर षष्ठ भावमें राहु स्थित होवे तौ समस्त अरिष्टोंको दूर करता है ॥ २९ ॥

सौम्ये वित्तपसंयुक्ते षष्ठे द्विशुभवीक्षिते ॥
विजयो नामयोगोऽयमाहवे वाहनायुधैः ॥ ३० ॥

यदि द्वितीयभावपतिसहित शुभ ग्रह षष्ठ भावमें स्थित होवे और दो शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ विजय नाम योग होता है । यह विजयनाम योग संग्राममें वाहन और शस्त्रोंसे विजय देता है ॥ ३० ॥

षष्ठे क्रूरा नरं कुर्युः शत्रुपक्षक्षयंकरम् ॥
सौम्याः षष्ठे महारोगं षष्ठे चंद्रस्त्वरिष्टदः ॥ ३१ ॥

यदि षष्ठ भावमें पाप ग्रह होवे तौ पुरुषको वैरियोंके पक्षका क्षय करनेवाला करते हैं और षष्ठ भावमें शुभ ग्रह होवें तौ महारोग करते हैं और चंद्रमा होवे तौ अरिष्ट देता है ॥ ३१ ॥

अन्यच्च।

चंद्रो वा भार्गवो वापि यदा जीवबुधौ तथा ॥
सबलौ शत्रुगौ स्यातां तदा स्याद्गोधनं बहु ॥ ३२ ॥

यदि षष्ठ भावमें चंद्रमा वा शुक्र अथवा बृहस्पति बुध यह बलवान् होवें तौ गौधन बहुतसा होता है ॥ ३२ ॥

बहवो वृषभास्तस्य संभवंति गृहे सदा ॥
मार्तंडो मंगलो वापि यदि तत्र भवेत्किल ॥ ३३ ॥

यदि बली होकर सूर्य वा मंगल षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषके गृहमें बहुतसे बैल होते हैं ॥ ३३ ॥

तदाजगवकं स्वं स्याद्गौरवं पशुबंधनम् ॥
तत्सर्वं भविता गेहे उष्ट्राणां च गणैर्युतम् ॥ ३४ ॥

उस पुरुषके छाग और गोधनरूप बहुत धन होता है और उसकी पशुशाला बहुत बडी होवे है और ऊंटोंसे भी युक्त उसकी पशुशाला होवे है ॥ ३४ ॥

बलिष्ठे च तथा राहौ शनौ केतौ तथैव च ॥
महिषाणां धन तस्य बहुलं जायते गृहे ॥ ३५ ॥

यदि बलवान् होकर राहु वा केतु वा शनैश्चर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषके गृहमें बहुतसी भैंसोंका धन होता है ॥ ३५ ॥

सैंहिकेयः शनिश्चैव मातुले भवने स्थितौ ॥
प्रजाहीनो मातुलः स्यात् कन्यापत्योऽथवा तदा ॥ ३६ ॥

यदि राहु और शनैश्चर दोनों षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ उस पुरुषका मामा संतानसे हीन होता है, अथवा कन्यासंतानवाला होता है ॥ ३६ ॥

गुरुर्भृगुः शशांको वा रिपुगेहे यदा भवेत् ॥
तदा भ्रातृस्वसृणां च मातुलानां महासुखम् ॥ ३७ ॥

यदि बृहस्पति वा शुक्र वा चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ भ्राता और भगिनी तथा मामाओंको बडा सुख होता है ॥ ३७ ॥

चंद्रशुक्रबुधैर्वाच्यं कन्यापत्योऽथ मातुलः ॥
जीवेन पुत्रसंयुक्तः सुखी च सधनः सदा ॥ ३८ ॥

यदि चन्द्रमा वा शुक्र वा बुध षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ कहना चाहिये कि मामा कन्यासंतानवाला होगा और षष्ठ भावमें बृहस्पतिसे युक्त होवे तौ मामा पुत्रयुक्त और सुखी और धनवान् होता है ॥ ३८ ॥

यस्य जीवो भवेत्षष्ठे भवने तेजसा युतः ॥
शुभं तस्य प्रवक्तव्यं जातस्य पृच्छकस्य वा ॥ ३९ ॥

जिस पुरुषके षष्ठ भावमें बृहस्पति बलवान् होकर स्थित होवे तौ उस पुरुषको शुभ फल कहना चाहिये, चाहे उत्पन्न हुएके जन्मलग्नसे वा पूछनेवालेके प्रश्नलग्नसे यह योग होवे ॥ ३९ ॥

सौम्ययोगे क्रूरदृष्टौ न सुखं मातुलस्य च ॥
तस्य वंशोद्भवः कोऽपि गतो देशांतरे मृतः ॥
भ्रातृधर्मारिषु क्रूरैः स्वल्पं भ्रातृसुखं भवेत् ॥ ४० ॥

यदि षष्ठ भावपर शुभ ग्रहका योग और पाप ग्रहकी दृष्टि होवे तौ मामाका सुख नहीं होता है और उस पुरुषका वंशोद्भव पुत्र कोई देशान्तरमें जाकर मृत्युको प्राप्त होता है । यदि तृतीय नवम षष्ठ इन भावोंमें पाप ग्रह होवें तौ भ्राताका थोडा सुख होता है ॥ ४० ॥

राहुयुक्ते धरापुत्रे बुधयुक्तावलोकिते ॥
मातृष्वसा मृतापत्या रंडा देशांतरं गता ॥ ४१ ॥

राहुसे युक्त होकर मंगल यदि बुधसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ उस पुरुषकी माताकी बहिनि अर्थात् मौसी मृतसंतानवाली होती है अथवा रंडा वा देशान्तरमें जाकर मृत्युको प्राप्त हो जाती है ॥ ४१ ॥

उदयभास्करात् ।

यदि रिपौ पतिसौम्ययुतेक्षिते भवति शत्रुरुजोऽपरथा न चेत् ॥
सखलवैरिपतिस्तनुमृत्युगो व्रणकृदेवमथ स्वजनेष्वपि ॥ ४२ ॥

यदि षष्ठ भावका स्वामी शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ शत्रुका भय होता है और अन्य प्रकार शत्रुभय नहीं होता है और यदि पापग्रहसहित षष्ठभावपति लग्न वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ व्रण नाम फोडाको करता है । यदि ऐसा योग माता पिता भ्राता भार्या पुत्रादि भावोंके स्वामीसे पाया जावे तौ माता-

पितादि स्वजनोंमें फोडाको करता है जैसे चतुर्थभावका स्वामी पापग्रहसहित लग्न वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ माताके शरीरमें फोडा करता है इसी प्रकार और भी जानने ॥ ४२ ॥

यदि कुजार्कसुतौ रिपुगौ तदा स्वगददौ यदि तुंगगतेऽरिपु ॥
नरतनौ रिपुतोऽपि च गूढरुग्यदि खलाढ्यविधू रिपुगः प्ररुक्॥४३॥

यदि मंगल और शनैश्चर षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ अपना २ धातुजन्यरोगको देते हैं और षष्ठभावपति उच्चराशिगत वा विषय राशिमें स्थित होकर षष्ठभावमें स्थित होवे तौ शत्रुसे भी गूढ रोग होता है और यदि पापग्रहसहित चंद्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ अतीव रोग करता है ॥ ४३ ॥

शिरसि भानुरनुष्णगुरानने धरणिजश्च गले हृदये बुधः ॥
सुरगुरौ च कटौ भृगुरक्षिगोऽथ इनजश्चरणाधरयोस्ततः ॥४४॥

यदि पापग्रहसहित लग्न वा अष्टम भावमें स्थित हुआ षष्ठभावपति सूर्य होवे तौ शिरमें व्रण होता है, चंद्रमा होवे तौ मुखमें, मंगल होवे तौ गलेमें, बुध होवे तौ हृदयमें, बृहस्पति होवे तौ कटिमें, शुक्र होवे तौ नेत्रमें, शनैश्चर होवे तौ पांवोंमें, राहु वा केतु होवे तौ होटमें व्रण होता है ॥ ४४ ॥

तनुपतिर्यदि भौमबुधर्क्षगः कुजबुधेक्षितकोऽक्षिविनाशनः ॥
अरिपतिस्तनुगोऽरिहरो धने सुतगृहीतधनः कुमतोऽनुजे ॥४५॥
नगरदुःखनिधिर्दृढनाभिरुग् यदि लयांगपती रिपुसंस्थितौ ॥
भवति दक्षिणनेत्ररुजा यदा शनिकवी पदरुग्यदि दानवः ॥४६॥
अधरदंतरुजाथ शिखी रिपौ तनुपतिर्यदि वा शुभवीक्षितः ॥
कुजबुधर्क्षगतोऽपि च कुत्रचित्किल तदासनकाधरुजान्वितः॥४७॥

यदि लग्नपति मंगल बुधकी राशिमें स्थित होवे और मंगल बुधकर देखा गया होवे तौ नेत्रका विनाश करता है। यदि षष्ठभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ शत्रुका नाश करता है और द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुत्रसे छीने हुए धनवाला और अतिदुष्ट होता है और तृतीय भावमें स्थित होवे तौ नगरदुःखकी खानि होता है और नाभिमें दृढ रोग होता है और यदि अष्टमभावपति और लग्नपति षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ दाहिने नेत्रमें पीडा होवे है और शनैश्चर और शुक्र षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ पांवोंमें रोग होता है दानव नाम राहु वा शिखी नाम केतु षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ होठ और दांतोंमें रोग होता है। यदि मंगल बुधकी राशिमें स्थित

हुआ लग्नपति शुभ ग्रहसे दृष्ट होकर किसी स्थानमें स्थित होवें तौ आसनके अर्द्धभागमें रोगी होता है ॥ ४६–४७ ॥

षष्ठास्थितानां खगानामवधिवर्षाण्याह हिल्लाजः ।

सूर्यस्त्रिनेत्रशरदि स्वमरौ हिमांशुर्मृत्युं कुजो जिनमिते प्रददाति पुत्रम् ॥ सप्तत्रिके विदरिभे मृतिमीज्यको खाब्धौ शत्रुभीः सित इलायमशस्त्रमृत्युम् ॥ ४८ ॥

यदि षष्ठ भावमें सूर्य होवे तौ तेईस वर्षमें धनको देता है और चंद्रमा मृत्युको देता है और मंगल चौवीस वर्षमें पुत्रको देता है और सैंतीस वर्षमें बुध मृत्युको देता है और बृहस्पति चालीस वर्षमें वैरियोंसे भय देता है और शुक्र इक्कीस वर्षमें शस्त्रसे मृत्यु देता है ॥ ४८ ॥

यवनः ।

दशाधिपस्तीक्ष्णकरः प्रदिष्टः सहस्रनाथो रजनीकरश्च ॥
वक्रार्कजौ हीनपरौ सदैव दोषाणि चंद्रेण समः पतंगाः ॥४९॥

यदि सूर्य षष्ठ भावमें स्थित होवे तो दश दोष देता है और चंद्रमा होवे तौ हजार और मंगल शनैश्चर होव तौ कुछ भी नहीं और शेष ग्रह चंद्रमाके समान होकर हजार दोषोंको देते हैं ॥ ४९ ॥

रिपुभावे राशिफलमाह वृद्धयवनः ।

मेषे रिपुस्थे प्रभवंति पुंसां चतुष्पदास्तीक्ष्णतराः सुरौद्राः ॥
तच्छत्रवो म्लेच्छसमुद्भवाश्च कार्यं विना चैव नरस्य लोके ॥५०॥

यदि मेषराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंके बड़े तीक्ष्ण और भयंकर चौपाये होते हैं और उस पुरुषके लोकमें विना कार्य म्लेच्छोंसे उत्पन्न हुए पुरुष शत्रु होते हैं ॥ ५० ॥

चतुष्पदाथ प्रभवेच्च वैरं सदा नराणां वृषभे रिपुस्थे ॥
असत्यमार्गेण तथांगनानां सङ्गान्नितांतं निजबंधुवर्गे ॥ ५१ ॥

यदि वृषराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ चौपायोंके अथ वा असत्यमार्गसे वा स्त्रियोंके संगसे अपने बंधुवर्गोंमें मनुष्योंका वैर होता है ॥ ५१ ॥

तृतीयराशौ रिपुगे नराणां वैरं भवेत्स्त्रीजनित सदैव ॥
तथा नराणां सहितं च पापैर्वणिग्जनैर्नीचजनानुरक्तैः ॥ ५२॥

यदि मिथुनराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीके कारणसे दुष्ट वा वणिग्जन वा नीचजनानुरागियोंके साथ वैर होता है ॥ ५२ ॥

कर्के रिपुस्थे गृहसंभवं च भवेन्मनुष्यस्य सदातुरस्य ॥
समं द्विजेंद्रेण नराधिपैश्च महाजनेनैव पुरानुरोधात् ॥५३॥

यदि कर्कराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ गृहके कारण वा पुरके कारण ब्राह्मणोंके साथ वा राजाओंके साथ वा बडे लोगोंके साथ सदैव रोगयुक्त मनुष्यका वैर होता है ॥ ५३ ॥

सिंहे रिपुस्थे भवने च वैरं पुत्रैः समं बंधुजनेन नित्यम् ॥
धनोत्थमार्तस्यविनिर्जितस्य यद्वामनुष्यस्यवराङ्गनाभिः ॥५४॥

यदि सिंहराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुत्र वा बंधुजनोंके साथ अथवा उत्तम स्त्रियोंके साथ उस रोगी और पराजित पुरुषका धनके कारण वैर होता है ॥ ५४ ॥

कन्यास्थिते शत्रुगृहे स्ववैरं समं सुताभिः प्रभवेन्नराणाम् ॥
दुश्चारिणीभिश्च सदांगनाभिर्वेश्याभिरेवात्र गतत्रपाभिः ॥ ५५ ॥

यदि कन्याराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुत्रियोंके साथ वा दुश्चारिणी स्त्रियोंके साथ वा निर्लज्ज गणिकाओंके साथ वैर होता है ॥ ५५ ॥

तुलाधरे शत्रुगृहे नरस्य निधिस्थितिस्थं प्रभवेच्च वैरम् ॥
कार्ये सुधर्मस्य नरस्य साधोः स्वबंधुवर्गाच्च निजालयाच्च ॥५६॥

यदि तुलाराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ उस साधु पुरुषका खजानेकी स्थितिके कारण धर्मार्थ बंधुवर्गसे वा अपने स्थानके कारण किसी प्रकारका वैर होता है ॥ ५६ ॥

कौर्प्ये रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं कार्ये सुधर्मस्य नरस्य कुर्यात् ॥
सार्द्धं द्विजेंद्रैश्च सरीसृपैश्चव्यालैर्मृगैश्चौरगणैर्नराणाम् ॥ ५७ ॥

यदि वृश्चिकराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ धर्मकार्यमें ब्राह्मणोंसे तथा सरीसृप और सर्प और मृग तथा चौर इनसे भी वैर होता है ॥ ५७ ॥

चापे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं शरैः समेतं च शरासनैश्च ॥
सदा मनुष्यैश्च हयैर्गजैश्च पुनस्तथान्यैः परिवंचनैश्च ॥ ५८ ॥

यदि धनुराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ बाण और धनुषके कारण मनुष्य घोडा हाथी और अन्य ठग आदमियोंके साथभी वैर होता है ॥ ५८ ॥

मृगे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं सदा नराणां धनसंभवं च ॥
मित्रैः समं साधुमहाजनेन प्रभूतकालं गृहसंभवेन ॥ ५९ ॥

यदि मकरराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ धनके कारण मित्र वा अच्छे सज्जनोंसे बहुत कालतक अथवा गृहके कारणसे वैर होता है ॥ ५९ ॥

कुंभे रिपुस्थे च तथार्थहेतोर्नराधिपेनैव जलाश्रयैश्च ॥
वापीतडागादिभिरेव नित्यं क्षेत्रादितोऽन्यैः पुरुषैःकुवन्यैः॥६०॥

यदि कुम्भराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ धनके कारण राजासे और और बावडी कूप तालाव आदि जलाशयोंके कारण वा क्षेत्रादिके कारण अन्य पुरुषोंसे वा निन्दित वनचारियोंके साथ वैर होता है ॥ ६० ॥

मीने रिपुस्थे च भवेन्नराणां वैरं च नित्यं सुतवस्त्रजातम् ॥
स्त्रीहेतुकं स्वीयतया पुराणामपि श्रयाणामितरेतरं च ॥ ६१ ॥

यदि मीनराशि षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुत्र और वस्त्रके निमित्त वा स्त्रीके कारण वा पुर वा गृहोंके कारण परस्पर वैर होता है ॥ ६१ ॥

षष्ठेशभावफलम् ।

षष्ठेशे लग्नगते नीरुग्निरुत्सवकुटुंबकष्टकरः ॥
बहुपक्षो रिपुहंता भवति नरः स्वैरवचनधनः॥ ६२ ॥

यदि षष्ठभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष रोगहीन तथा उत्सववर्जित और कुटुम्बके कष्ट करनेवाला और बहुतसे पक्षवाला तथा शत्रुनाशक और इच्छानुसार कहनेवाला और धनवाला होता है ॥ ६२ ॥

षष्ठपतौ द्रविणस्थे दुष्टश्चतुरो हि संग्रहवान् ॥
स्थानप्रवरो विदितः सव्याधिस्तनुजहृद्वित्तः ॥ ६३ ॥

यदि षष्ठभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष दुष्ट और चतुर और संग्रहकर्त्ता और स्थानप्रवर तथा विख्यात और व्याधिवाला तथा पुत्रसे हरे हुए धनवाला होता है ॥ ६३ ॥

षष्ठपतिः सहजस्थः क्रूरः कुरुते स्वलोककष्टकरम् ॥
जनकरमारमणमतिं त्वतिकष्टं ग्रामलोकस्य ॥ ६४ ॥

यदि षष्ठभावपति तृतीय भावमें क्रूर ग्रह होकर स्थित होवे तौ पुरुषको अपने जनोंके कष्टकर्त्ता करता है और पिताकी लक्ष्मीसे विलास करनेकी बुद्धिवाला तथा ग्रामजनको अतिकष्टदायक करता है ॥ ६४ ॥

पष्ठाधिपतिस्तुर्ये पितृतनयौ वैरिणौ मिथः कुरुते ॥
संकरजसुतः पितृतो लक्ष्मीं लभते सुचिरतराम् ॥ ६५ ॥

यदि षष्ठभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पिता पुत्र दोनोंको परस्पर वैरी करता है और वह पुरुष संकरजातिका पुत्र होकर बहुकालीन पिताकी लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

रिपुभवनपतौ सुतगे पितृसुतयोर्वैरितामतिकृत् ॥
क्रूरे शुभे च निधनः पदवीदुष्टश्च तत्फलति ॥ ६६ ॥

यदि षष्ठभावपति पाप ग्रह होकर पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पिता पुत्रकी वैरबुद्धि करनेवाला होता है और शुभ ग्रह होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ निर्धन और मार्गदुष्ट होता है ॥ ६६ ॥

रिपुभवनपे रिपुस्थे नीरुग्वैरी सुखी कृपणः ॥
नहि जन्मतोऽपि सीदति स्थानकवासी भवेन्मनुजः ॥६७॥

यदि षष्ठभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष रोगहीन तथा वैरकर्त्ता और सुखी तथा कृपण होता है और जन्मसे लेकर कदापि दुःखित नहीं होता है और अपने स्थानपर रहनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

अहितपतौ सप्तमगे क्रूरे भार्या विरोधिनी चंडा ॥
तापकरी त्वथ सौम्ये वंध्या वा गर्भपतनपरा ॥ ६८ ॥

यदि षष्ठभावपति पाप ग्रह होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री विरोध करनेवाली बडी प्रचण्ड और संताप करनेवाली होवे है और शुभ ग्रह होकर षष्ठभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री वंध्या और गर्भ गिरानेमें तत्पर होवे है ॥ ६८ ॥

रिपुपतिर्मृतिभे गृहिणीमृतिर्विषधराच्च कुजौ विषतो बुधः ॥
सपदि चंद्र इनौ नृपसिंहयोः कविगुरू रिपुलोचनयो रुजम् ॥
शनेर्ग्रहणिकारुजा वातदोषतः स्त्रीमृतिः ॥ ६९ ॥

यदि षष्ठभावपति मंगल होकर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ सर्पसे स्त्रीका मृत्यु होता है और बुध होकर स्थित होवे तौ विषसे स्त्रीका मृत्यु होता है और चंद्रमा और सूर्य होकर स्थित होवे तौ राजा वा सिंहसे भय होता है और बृहस्पति और शुक्र होकर स्थित होवे तौ शत्रुपीडा वा नेत्रपीडा होवे है और शनैश्चर होकर स्थित होवे तौ संग्रहणीरोग तथा वातदोषसे स्त्रीका मरण होता है ॥ ६९ ॥

शत्रुपतिर्यदि नवमे क्रूरः खचरस्तदा भ्रष्टः ॥
विबुधविरोधी क्रूरो न मन्यते याचकं च गुरुम् ॥ ७० ॥

यदि षष्ठभावपति पाप ग्रह होकर नवम भावमें स्थित होवे तो वह पुरुष भ्रष्ट होता है और देवविरोधी और क्रूर होकर याचक और गुरुको नहीं मानता है ॥७०॥

अरिगृहपे दशमस्थे क्रूरे मातरि रिपुस्तदा दुष्टः ॥
धर्मसुतपालकमतिर्मातृद्वेषी भवेन्मनुजः ॥ ७१ ॥

यदि षष्ठभावपति पाप ग्रह होकर दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष अतिदुष्ट होकर मातासे वैर करता है और धर्म और पुत्रके पालन करनेमें बुद्धिवाला और मातृद्वेषी होता है ॥ ७१ ॥

वैरिपतिर्लाभगते क्रूरे मरणं विपक्षतो भवति ॥
तस्करकृता च हानिः स्याच्चतुष्पदाल्लाभवान्मनुजः ॥७२॥

यदि षष्ठभावपति पाप ग्रह होकर ग्यारहवें भावमें स्थित होवे तौ शत्रुसे मरण होता है और चौरकी की हुई हानि होवे है और चौपायोंसे लाभवाला पुरुष होता है ॥ ७२ ॥

षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पदधनधान्ययुतः ॥
चपलो मदांधो लक्ष्म्या लक्ष्म्याह्लादपरो नरो भवति ॥७३॥

यदि षष्ठभावपति बारहवें भावमें स्थित होवे तौ पुरुष चौपाये धनधान्यसे युक्त होता है और चपल तथा लक्ष्मीसे मदान्ध और लक्ष्मीके आनन्दसे युक्त होता है ॥ ७३ ॥

शत्रुभनाथः शत्रुगृहे चेज्ज्ञातिविरोधः स्यात्सहजस्य ॥
अन्यजनैः सत्सौहृदवृद्धिर्यानयुतः सद्धीनजनर्द्धिः ॥ ७४ ॥

षष्ठभावपति षष्ठ गृहमें स्थित होवे तो ज्ञातिजन वा सहोदरसे विरोध होता है और अन्य जनोंके साथ शुभ मित्रताकी वृद्धि होवे है और यान (सवारी) की वृद्धि होवे है और नीच जनोंकी वृद्धि होवे है ॥ ७४ ॥

शत्रुभनाथे सप्तम आये वा तनुगेहे साहसवान्स्यात् ॥
पुत्रविहीनो मान्य उदारः सद्गुणकीर्तिर्द्रव्यसमेतः ॥ ७५ ॥

यदि षष्ठभावपति सप्तम वा एकादश वा लग्नभावमें स्थित होवे तौ पुरुष

साहसी और पुत्रहीन और सर्वमान्य तथा उदारचित्त और अच्छे गुणकीर्तिवाला और धनवान् होता है ॥ ७५ ॥

शत्रुभनाथे रिःफमृतिस्थे रोगनिशांतः कोविदवैरी ॥
प्राणिविहिंसातत्परचित्तोऽथो परदारासक्तमनस्कः ॥ ७६ ॥

यदि षष्ठभावपति द्वादश वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष रोगयुक्त तथा पंडितोंसे वैर करनेवाला और प्राणियोंकी हिंसा करनेमें तत्पर चित्तवाला तथा परस्त्रीगामी होता है ॥ ७६ ॥

शत्रुभनाथे भाग्यगृहस्थे दारुशिलादेर्विक्रयकर्त्ता ॥
संव्यवहारे क्वापि च हानिः क्वापि च वृद्धिश्चन्द्रकलावत् ७७॥

यदि षष्ठभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ काष्ठ और शिला आदिका बेचने वाला होता है और चंद्रकलाके समान किसी संव्यवहारमें हानि और किसीमें वृद्धि होवे है ॥ ७७ ॥

शत्रुभनाथे व्योम्नि धने वा साहसयुक्तो वंश्यजनाग्र्यः ॥
कर्मसु निष्ठावान्सुखयुक्तो नैकनिवासः प्रोक्तनिरुक्तः ॥७८॥

यदि षष्ठभावपति दशम वा द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष साहसी और अपने वंशज पुरुषोंमें श्रेष्ठ और कर्मोंमें निष्ठावाला तथा सुखी और अनेक जगह रहनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

शत्रुभनाथे भ्रातरि तुर्ये वातिरुषा स्याल्लोहितनेत्रः ॥
वा पिशुनो द्वेषी चलचित्तो वित्तसमेतः क्वापि मनस्वी ॥७९॥

यदि षष्ठभावपति तृतीय वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ अतीव क्रोधसे लाल नेत्रवाला होता है वा चुगल और वैरकर्त्ता और चंचलचित्त और कभी धनी और मनस्वी उदारचित्त होता है ॥ ७९ ॥

शत्रुभनाथे पंचमगेहे चंचलमित्रद्रव्यसुखाढ्यः ॥
प्रीत्यनुकम्पावानतिसौम्यः स्यान्निजकार्येऽसौ निपुणोऽपि ॥८०॥

इति जातकसंग्रहे रिपुभावविचारः समाप्तः ॥ ६ ॥

यदि षष्ठभावपति पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ चञ्चल मित्र धन तथा सुखसे युक्त होता है और प्रीति और कृपायुक्त तथा अतीव सौम्य और अपने कार्यमें अतिचतुर होता है ॥ ८० ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां रिपुभावविचारः समाप्तः ॥ ६ ॥

सप्तमभावविचारः ।

सप्तमभावस्तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

रणांगणं चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारो गमनप्रमाणम् ॥
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ १ ॥

संग्रामका मैदान और वणिक्क्रिया व्यापार और स्त्रीविचार और यात्रा प्रमाण यह सब विद्वानोंको सप्तम भावमें विचारने चाहिये ॥ १ ॥

चन्द्रसौम्यकलत्रेशलग्नेशावस्थितिः कलत्रप्राप्त्यादिहेतुः उक्तं च जातकरत्ने ।

लग्नाच्चंद्राच्च वीर्याढ्यं कलत्रं सप्तमं यदि ॥
स्वेशसौम्येक्षितं युक्तं स्त्रीप्राप्त्यै चान्यथा नहि ॥ २ ॥

इस सप्तम भावमें चन्द्रमा शुभग्रह सप्तमभावपति और लग्नभावपति इनकी स्थिति स्त्रीप्राप्तिका कारण है ऐसा जातकरत्नमें कहा है । लग्न और चन्द्रमासे जो कि सप्तम भाव है वह बलवान् होवे और अपने स्वामी शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ स्त्रीप्राप्तिके वास्ते होवे है और अन्य प्रकार स्त्रीप्राप्तिके वास्ते नहीं होवे है ॥ २ ॥

लग्नेंद्वोर्मदने सितेंदुसहिते दृष्टेऽथ तद्भे गणे ।
स्त्रीबाहुल्यमिनेज्यवित्कुजलवे चैका मृतिः सोग्रके ॥
व्यंगाधीद्युनधर्मभे सहितयोः शुक्रार्कयोः स्यात्प्रिया ।
सप्तान्त्योदयभैः खलैः क्षयविधौ पुत्र सुतस्त्रीवियुक् ॥ ३ ॥

यदि लग्न और चन्द्रमासे सप्तम भाव शुक्र और चन्द्रमासे युक्त होवे अथवा शुक्र और चन्द्रमासे दृष्ट होवे अथवा शुक्र और चन्द्रमाका राशि सप्तमभावमें होवे तौ स्त्रियोंकी बहुल्यता होवे है । यदि सप्तमभावमें सूर्य बृहस्पति बुध मंगल इनका नवांश होवे तौ एक स्त्रीप्राप्ति होवे है और यदि सप्तमभावमें सूर्य बृहस्पति बुध मंगल इनका नवांश पापग्रहसे युक्त होवे तौ स्त्रीका मरण होवे और पञ्चम सप्तम नवम इन भावोंमें शुक्र सूर्य दोनों स्थित होवें तौ स्त्री अंगहीन होवे है[1] और सप्तम भाव और द्वादश भाव इनमें पापग्रह होवें और क्षीण चन्द्रमा पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पुत्र स्त्रीसे हीन होता है[2] ॥ ३ ॥

---

१ धर्मास्तात्मजगौ सिताकौं जायाहीनः इति जातकतत्त्वे । व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु वृद्धयालयर्ग हिमांशौ । कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यः ॥ १ ॥ इति जातकाभरणे ।

सामान्यविचारेण मदस्थरव्यादीनां फलानि तत्र सूर्यफलम्।

युवतिभवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी न भवति सुखभागी चंचलः पापशीलः॥ उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वो कपिलनयनरूपः पिंगकेशः कुमूर्तिः॥ ४॥

यदि सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष स्त्रीसे विलास करनेवाला और सुखभागी नहीं होता है और चंचल और पापी होता है और उदरके समान शरीर-वाला न अति बडा न छोटा होता है और कपिलवर्णनयन और रूपवाला होता है और पिंगल केशोंसे युक्त और कुमूर्ति होता है॥ ४॥

चंद्रफलम्।

विमलवपुषि चंद्रे सप्तमस्थे मनुष्यो रुचिरयुवतिनाथो कांच-नाढ्यः सुदेही॥ शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टे न भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिः स्यात्॥ ५॥

यदि परिपूर्ण निर्मल शरीर चंद्रमा सप्तम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य सुन्दर स्त्रीका स्वामी और सुवर्णयुक्त तथा सुन्दरशरीरवाला होता है क्षीणचंद्रमा पाप ग्रहके राशिका पाप ग्रहसे दृष्ट होकर सप्तम भावमें होवे तौ सुखभागी नहीं होता है और रोगिणी स्त्रीका स्वामी होता है॥ ५॥

भौमफलम्।

मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम्॥ मकरगृहनिजस्थे मान्यपत्नीं च धत्ते चपल-मतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम्॥ ६॥

यदि नीचराशि वा शत्रुग्रहके राशिमें स्थित होकर मंगल सप्तम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्योंको स्त्रीमरणका दुःख होता है और मकरराशि वा अपने राशिमें स्थित होकर मंगल सप्तम भावमें स्थित होवे तौ चपल बुद्धिसे अतिविशाल और दुष्टचित्त तथा विरूप सत्कृत स्त्रीको प्राप्त होता है॥ ६॥

बुधफलम्।

तुरगभावगते हरिणांकजे भवति चंचलबुद्धिनिरीक्षितः॥ विपुलवंशभवप्रमदापतिः स च भवेच्छुभगे शशिवंशजे॥ ७॥

यदि बुध सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष चंचल बुद्धिसे युक्त होवे

और यदि शुभ राशिका बुध सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उत्तम वंशमें उत्पन्न हुई स्त्रीका पति होता है ॥ ७ ॥

गुरुफलम् ।

युवतिमंदिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः ॥
अमृतिराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः ॥८॥

यदि बृहस्पति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष राजाके तुल्य सुखको प्राप्त होता है और अमृतराशिके समान मीठे वचनवाला और पंडित और सुन्दर शरीर और प्रियदर्शनवाला होता है ॥ ८ ॥

भृगुफलम् ।

युवतिमंदिरगे भृगुजे नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः ॥
विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी ॥ ९॥

यदि शुक्र सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष बहुतसे पुत्र और धनसे युक्त होता है और उत्तम वंशमें उत्पन्न हुई स्त्रीका स्वामी होता है और सुन्दर शरीर और प्रसन्न चित्त तथा सुखी होता है ॥ ९ ॥

शनिफलम् ।

विश्रामभूतां विनिहंति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान् ॥
धत्ते पुनर्दंभधरांगहीनं मित्रस्य वंशेन हता सुहृच्च ॥ १० ॥

यदि शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ विश्रामभूत स्त्रीका नाश करता है और पुरुषको कपटी और अंगहीन करता है और वह पुरुष मित्रके वंशसे हरे हुए शत्रुओंवाला होता है ॥ १० ॥

राहुफलम् ।

जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नानाविविधांश्च भोगान् ॥
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥ ११ ॥

यदि राहु सप्तम भावमें स्थित होवे तौ धन खर्चनेवाली स्त्रीको देता है और अनेक विविध भोगोंको देता है और शेष पाप ग्रहोंसे युक्त होवे तौ पापिनी और कुटिल और कुशील स्त्रीको देता है ॥ ११ ॥

अन्यच्च ।

स्यात्सप्तमं बस्तिरिहांगनादेर्वादप्रयायानवणिक्क्रियादेः ॥
अन्योन्यमिष्टार्थफलं नृनार्योः पितामहादेश्च फलं विचार्यम् ॥ १२ ॥

सप्तम भाव अस्तिसंज्ञक है इस सप्तमभावमें स्त्री आदिका तथा वाद प्रवादका तथा प्रपा यान और वाणिक्कर्म इत्यादिका फल तथा परस्पर इष्ट अर्थका फल और नर और नारी और पितामह आदिका फल विचारना चाहिये ॥ १२ ॥

शुभे शुभं स्यादशुभेन शोभनं गुरौ सितेऽब्जे च बलान्वितेऽङ्गना॥ सुवर्णवर्णा विदि नीलभा कुजे सुशोणभा श्यामतरा शनावगौ १३॥

यदि सप्तम भावमें शुभ ग्रह होवे तौ इनका शुभ फल होता है और अशुभ ग्रह होवे तौ इनका अशुभ फल होता है । यदि बृहस्पति वा शुक्र वा चंद्रमा बलवान् होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री सुवर्णसमान वर्णवाली होवे है और बुध होवे तौ नीलकान्ति होवे है और मंगल होवे तौ लालकान्ति होवे है और शनैश्चर और राहु होवे तौ अतीव श्यामवर्ण होवे है ॥ १३ ॥

सूर्ये ज्ञेया कालजीर्णा ज्ञविध्वोर्बाला शुक्रे यौवनाढ्या कुजेऽपि ॥ पूज्ये रम्या सूनुसूःसद्गुणा स्याद्वृद्धैव स्यादर्कजेऽगौ च जाया १४

यदि सप्तम भावमें सूर्य स्थित होवे तौ कालसे जीर्ण हुई स्त्री होवे है और बुध और चंद्रमा स्थित होवे तौ बाला स्त्री होवे है और शुक्र होवे तौ यौवनयुक्त स्त्री होवे है और मंगल होवे तौभी यौवनयुक्त स्त्री होवे और बृहस्पति होवे तौ पुत्रोंके उत्पन्न करनेवाली मनोहर स्त्री होवे है और शनैश्चर वा राहु स्थित होवे तौ स्त्री वृद्धा होवे है ॥ १४ ॥

क्लीबा राहौ वा शनौ स्त्रीस्वभावा शुक्रेऽब्जे चान्येषु सा पुंस्वभावा ॥ सौम्यैर्युक्तं सौम्यभं सौम्यदृष्टं श्वश्रूपक्षात्स्यात्सुखं चान्यथान्यत् १५

यदि राहु वा शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री नपुंसकस्वभाववाली होवे और शुक्र वा चंद्रमा सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीस्वभाववाली स्त्री होवे है और शेष ग्रह स्थित होवें तौ स्त्री पुरुषस्वभाववाली होवे है । यदि सप्तम भाव शुभ ग्रहोंसे युक्त और सौम्य ग्रहके राशिसे युक्त और सौम्य ग्रहसे दृष्ट होवें तौ श्वश्रूपक्षसे सुख होवे है, अन्यथा होवे तौ अन्य फल होवे है ॥ १५ ॥

वर्गे सितस्य सितदृग्यदि तत्र पत्न्यो बह्व्यः सुखाय गुरुभे तु मतैकपत्नी ॥ नीचे सितेऽपि विधुपूज्यसितर्क्षकेऽत्र शुक्रादृष्टिसहिते वनिता सगर्वा ॥ १६ ॥

यदि सप्तम भावमें शुक्रकी राशि षड्वर्ग आदि होवे और शुक्रकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ बहुतसी स्त्रियां सुखके वास्ते होवे हैं और सप्तम भावमें बृहस्पतिकी राशि और

बृहस्पतिकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ एक स्त्री होवे है। यदि नीच राशिका शुक्र सप्तम भावमें स्थित होवे अथवा चंद्रमा बृहस्पति शुक्र इनकी राशि सप्तम भावमें स्थित होवे अथवा शुक्र और मंगलकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ स्त्री गर्वयुक्त होवे है ॥ १६ ॥

द्यूने यमेऽसृजि तदीक्षणतश्च वातार्ता चंचला सरुधिरा कटिचिह्नयुक्ता ॥ साब्जे कुजे मृतिमुपैत्युदरामयेनार्क्यगवो-र्जलक्रिमिरुजा पशुडाकिनीभिः ॥ १७ ॥

यदि सप्तम भावमें शनैश्चर वा मंगल होवे अथवा शनैश्चर मंगलकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ स्त्री वातरोगसे पीडित और चंचल और रुधिरविकारवाली तथा कटिचिह्नसे युक्त होवे है। यदि चंद्रमासहित मंगल सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उदरके रोगसे स्त्री मृत्युको प्राप्त होवे है। शनैश्चर और राहु सप्तम भावमें स्थित होवें तौ जलक्रिमिसे पीडा तथा पशु डाकिनियोंसे पीडा होवे है ॥ १७ ॥

द्यूने शुभैः सुमदनोऽथ खरस्मरोऽन्यैः क्लीबैर्नपुंस्त्वमगुना तु न दारयोगः ॥ चेत्स्यान्म्रियेत शुभदृष्टयुते विलम्बाद्रन्ध्रे-ऽर्कजेऽसृजि मदे वनिताद्वयं स्यात् ॥ १८ ॥

यदि सप्तम भावमें शुभ ग्रह स्थित होवें तौ सुन्दर कामदेवसे युक्त होता है और अन्य पाप ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवें तौ तीक्ष्ण कामदेववाला होवे है। यदि नपुंसक ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको नपुंसकता होवे है और राहु सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीका योग नहीं होता है और यदि स्त्री प्राप्त हो जावे तौ मृत्युको प्राप्त होवे है। शुभ ग्रह दृष्ट वा युक्त होवे तौ विलम्बसे स्त्रीकी प्राप्ति होवे है। शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे और मंगल सप्तम भावमें स्थित होवे तौ दो स्त्री होवे हैं ॥ १८ ॥

चन्द्रदृक् चेन्मदे चञ्चला चाबला जीववर्गे ज्ञयुग्दृष्ट इन्दौ तथा ॥ आर्क्यसृग्वर्गयोस्तत्र तद्दृग्यदा दम्पती चञ्चलौ चेत्सितोऽन्यारतः ॥ १९ ॥

यदि सप्तम भावमें चंद्रमाकी दृष्टि होवे तौ स्त्री चंचल स्वभाव होवे है और बृहस्पतिकी राशिमें चंद्रमा स्थित होवे और बुधसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ भी स्त्री चंचल होवे है। यदि सप्तम भावमें शनैश्चर और मंगलकी राशि होवे और शनैश्चर और मंगलकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ स्त्री पुरुष दोनों चंचल होते हैं और शनैश्चर मंगलके राशिका शुक्र शनैश्चर मंगलकर देखा गया होवे तौ पुरुष अन्यस्त्रीगामिनी होवे है[1] ॥ १९

१ शन्यारके शुक्रे भौमार्कदृष्टे व्यभिचारी । इति जातकतत्त्वे ।

मन्देन्द्वारा युक्तदृष्टा विधुर्वा मध्येऽसृक्शन्योस्तयोः पुंश्चलत्वम् ॥ सौम्यांशे वा द्यूनपे सौम्यदृष्टे वेश्याकारा कामिनी स्यान्नरस्य ॥ २० ॥

शनैश्वर चंद्रमा मंगल यह तीनों ग्रह परस्पर युक्त होवें और आपसमें देखते होवें अथवा शनैश्वर मंगल इन दोनोंके मध्यमें चंद्रमा स्थित होवे तौ स्त्री पुरुष दोनोंका व्यभिचार होता है। यदि सप्तम भावपति बुधके नवांशमें स्थित होवे और बुधसे दृष्ट होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री वेश्याकार होती है ॥ २० ॥

लग्नस्मरव्ययगता अशुभाः सुतेऽब्जे क्षीणेऽथवा खलभगे च न तद्विवाहः ॥ षष्ठे व्यये वपुषि वा ज्ञरवी तदैका कोणे द्युने च विकलैव यदा सितारौ ॥ २१ ॥

यदि लग्न सप्तम द्वादश इन भावोंमें पाप ग्रह स्थित होवें और पाप ग्रहके राशिका क्षीण चंद्रमा पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका विवाह नहीं होता है। यदि बुध सूर्य दोनों षष्ठ भावमें वा द्वादश भावमें वा लग्नमें स्थित होवें तौ एक स्त्री होवे है और नवम पञ्चम भावमें वा सप्तम भावमें शुक्र मंगल दोनों स्थित होवें तौ स्त्री विकल होवे है ॥ २१ ॥

गण्डान्तर्क्षे द्यूनगे वा सितेऽगे मन्दे वन्ध्येशः सुतर्क्षे न सच्चेत् ॥ पापः कामेऽब्जात्तनोर्वा नसन्तो मन्देन्द्वोर्द्यूनेपुनर्भूपतिःस्यात् २२

यदि गंडान्तनक्षत्रमें स्थित होकर शुक्र सप्तम भावमें स्थित होवे और शनैश्वर लग्नमें स्थित होवे और पञ्चम भावमें शुभ ग्रह नहीं स्थित होवें तौ पुरुष वंध्यापति होता है। यदि चंद्रमा वा लग्नसे सप्तम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें और शुभ ग्रह नहीं स्थित होवें और सप्तम भावमें शनैश्वर और चंद्रमा स्थित होवें तौ पुरुष पुनर्भूपति होता है ॥ २२ ॥

भार्याः स्युर्द्यूनेशनन्दांशसंख्याः खेटेक्षातुल्याश्च गोंशे ज्ञशन्योः ॥ वारार्के चैकैकिकाथारिगोऽसृङ्मृत्यौ मन्देऽगौ मदे स्त्री न तिष्ठत् ॥ २३ ॥

सप्तमभावपतिके नवांशतुल्य पुरुषके स्त्री होवे हैं अथवा सप्तम भावमें ग्रहोंकी दृष्टियोंके समान भी स्त्री होवे हैं। बुध शनैश्वर वा मंगल सूर्य इनका नवांश होनेपर एक एक स्त्री होवे है और षष्ठ भावमें मंगल और अष्टम भावमें शनैश्वर और सप्तम भावमें राहु स्थित होवे तौ उस पुरुषके स्त्री नहीं ठहरती है ॥ २३ ॥

जन्मलग्नाद्वधूं कुर्याद्दुर्भगां सप्तमे रविः ॥
पापर्क्षे नीचगो हन्यात्पापदृष्टयुतोऽपि वा ॥ २४ ॥

यदि जन्मलग्नसे सप्तम भावमें सूर्य स्थित होवे तौ स्त्रीको दुर्भगा करता है और वही सूर्य पाप राशिका वा नीच राशिका होवे वा पाप ग्रहसे दृष्ट या युक्त होवे तौ स्त्रीका विनाश करता है ॥ २४ ॥

कृशांगीं विकलां कुर्यात् क्षीणश्चेद्विधुरस्तगः ॥
पूर्णः शुभैर्युतो दृष्टः कांतकांताशतप्रदः ॥ २५ ॥

यदि क्षीण चंद्रमा सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीको कृश अंगसे युक्त और विकल करता है । पूर्ण चंद्रमा शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ सुन्दर स्त्रियोंका देनेवाला होता है ॥ २५ ॥

द्वितीयामबलां हन्यान्नीचस्थः शत्रुगेहगः ॥
स्वर्क्षे तुंगे शुभैर्दृष्टः कुजो दत्ते शुभां स्त्रियम् ॥ २६ ॥

यदि मंगल नीच राशिका वा शत्रुराशिका होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ द्वितीय स्त्रीको विनाशता है और अपनी राशि वा उच्च राशिका मंगल शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ सुन्दर स्त्रीको देता है ॥ २६ ॥

वक्रःस्मरस्थो विनिहंति नारीं पापर्क्षगामी खलु मंदगामी ॥
पुनर्भवा वाप्यथवाऽरिरूपा शुभेक्षितस्तुंगसुहृद्भसंस्थः ॥ २७ ॥

यदि पाप राशिका मंगल मंदगामी होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीका विनाश करता है और वह मंगल यदि उच्च वा मित्रराशिका स्थित होकर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ स्त्री पुनर्भवा वा शत्रुरूपा होवे है ॥ २७ ॥

उपायः ।

द्यूने द्यूनेश्वरे क्रूरयुक्ते जाया विनश्यति ॥
विधिवद्भूमिदानं च पत्नीदानं विशेषतः ॥
दासीदानं ततो दद्यात्सौख्यदं गोप्रदानकम् ॥ २८ ॥

यदि सप्तमभावपति क्रूर होकर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री नष्ट हो जावे है । विधिपूर्वक पृथ्वीदान तथा स्त्रीदान तथा दासीदान तथा गोदान देवे तौ पुरुष सौख्यभागी होता है ॥ २८ ॥

द्विग्रहयोगाः ।

शुक्रशशिभ्यामस्ते सहिते चेदतनयो विभार्यो वा ॥
स्त्रीपुंभ्यां संदृष्टौ दंपती परिणततनू स्तः ॥ २९ ॥

यदि शुक्र चंद्रमा इन दोनों ग्रहोंसे सप्तम भाव युक्त होवे तौ पुरुष विना पुत्र वा विना स्त्रीवाला होता है। यह दोनों स्त्रीपुरुषसंज्ञक दो ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ परिणत शरीरवाले दोनों स्त्री पुरुष होते हैं ॥ २९ ॥

सुतमित्रोनितरुयाढ्यो द्यूनेऽर्कशशिनो भवेत् ॥
स्त्रीवियुक् स्थिरदेहश्च द्यूने भौमार्कयोर्नरः ॥ ३० ॥

यदि सूर्य चंद्रमा दोनों सप्तम भावमें स्थित होवें तौ पुरुष पुत्रमित्रोंसे हीन और स्त्रीसे युक्त होता है। यदि सप्तम भावमें मंगल सूर्य इन दोनोंकी स्थिति होवे तौ पुरुष स्त्रीसे हीन और स्थिर शरीरवाला होता है ॥ ३० ॥

स्त्रीयुतः सधनो राजद्वेषी जीवार्कयोर्मदे ॥
निर्धनः पृथुदेहोऽद्रिचारी स्त्र्याढ्यः सितार्कयोः ॥ ३१ ॥

सप्तम भावमें बृहस्पति सूर्य इनकी स्थिति होवे तो पुरुष स्त्रीसे युक्त और धनवान् तथा राजवैरी होता है। यदि सप्तम भावमें शुक्र और सूर्य इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष निर्धन और वडे शरीरवाला तथा पर्वतचारी और स्त्रीसे युक्त होता है ॥ ३१ ॥

प्रेष्यो दारिद्र्ययुङ्नीचो भान्वर्क्योः पदबंधयुक् ॥
असत्यवाक्कृतेर्ष्यालुर्द्यूनारेन्द्वोः प्रलापयुक् ॥ ३२ ॥

यदि सप्तम भावमें सूर्य शनैश्चर इनकी स्थिति होवे तौ चाकरी करनेवाला तथा दरिद्रतायुक्त तथा नीच कर्ममें तत्पर और पदबंधसे युक्त होता है। यदि सप्तम भावमें मंगल चंद्रमा इनकी स्थिति होवे तौ झूठ बोलनेवाला और ईर्षावाला तथा प्रलाप करनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

नृपो वा नृपसन्मान्यो विदिन्द्वोः सत्कविर्द्युने ॥
कन्याढ्यो नृपतिः प्राज्ञः सवाणिज्योऽब्जजीवयोः ॥ ३३ ॥

यदि सप्तम भावमें बुध चंद्रमा इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष राजा वा राजासे मान पानेवाला तथा अच्छा पंडित होता है। यदि सप्तम भावमें चंद्रमा बृहस्पति इन दोनोंकी स्थिति होवे तौ कन्याओंसे युक्त और राजा तथा पंडित और वणिजीसे युक्त होता है ॥ ३३ ॥

कन्यायुक्चाल्पपुत्रस्वः स्त्रीयुग्द्यूने सिताब्जयोः ॥
स्त्रीहीनो नगराध्यक्षो द्यूनेऽब्जार्क्योःपुरेचरः ॥ ३४ ॥

यदि सप्तम भावमें शुक्र चंद्रमा इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष कन्याओंसे युक्त और थोडे पुत्रोंवाला तथा थोडे धनवाला तथा स्त्रीसे युक्त होता है। यदि

सप्तम भावमें चंद्रमा शनैश्चर इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष स्त्रीसे हीन और नगरका स्वामी तथा नगरमें विचरनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

मृताद्यस्त्रीर्विवादाढ्यः शूरो द्यूने बुधारयोः ॥
शैलांबुवनचारी स्त्रीहीनो जीवारयोर्द्युने ॥ ३५ ॥

यदि सप्तम भावमें बुध और मंगल इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष मृत्युको प्राप्त हुई पहिली स्त्रीवाला होता है और विवादी तथा शूरवीर होता है। यदि सप्तम भावमें बृहस्पति मंगल इन ग्रहोंकी स्थिति होवे तौ पुरुष पर्वत जल वन इनमें विचरनेवाला होता है और स्त्रीसे हीन होता है ॥ ३५ ॥

स्त्रीहेत्वनर्थयुग्दुष्टाजारो द्यूनारशुक्रयोः ॥
स्त्रीदिष्टो विधिनोऽन्यस्त्रीरतो द्यूनार्किभौमयोः ॥ ३६ ॥

यदि सप्तम भावमें मंगल शुक्र इनकी स्थिति होवे तौ स्त्रीके कारण अनर्थसे युक्त होवे और दुष्टाचारवाला रहे। यदि सप्तम भावमें शनैश्चर मंगल इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष स्त्रीके वशमें रहनेवाला तथा निर्धन और अन्य स्त्रीमें रत होता है ॥३६॥

स्वाचारः सुकलत्राढ्यः स्वजनाढ्यो बुधेज्ययोः ॥
नृपमंत्री सकल्याणः स्त्रीचेष्टः स्त्रीज्ञशुक्रयोः ॥ ३७ ॥

यदि बुध बृहस्पति इनकी सप्तम भावमें स्थिति होवे तौ पुरुष अच्छे आचारवाला तथा उत्तम स्त्रीसे युक्त तथा स्वजनोंसे युक्त होता है। यदि सप्तम भावमें बुध शुक्र इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष राजाका मंत्री और कल्याण कर्मवाला तथा स्त्रीकी चेष्टा करनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

स्त्रीपुत्रसुखहीनश्च सरुग्धनः शनिज्ञयोः ॥
भोगी स्त्रीरत्नसंयुक्तः सकन्यो जीवशुक्रयोः ॥ ३८ ॥

यदि सप्तम भावमें शनैश्चर बुध इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष स्त्री पुत्र सुख इनसे हीन होता है और रोगी तथा सधन होता है। यदि सप्तम भावमें बृहस्पति शुक्र इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष भोगी तथा स्त्रीरत्नसे युक्त और कन्याओंसे युक्त होता है ॥ ३८ ॥

मूर्खस्त्रीवैरनष्टस्वः पितृस्वः स्त्रीज्यमंदयोः ॥
वित्तस्त्रीरत्नसौख्याढ्यः शुक्रार्क्योः कीर्तियुग्द्युने ॥ ३९ ॥

यदि सप्तम भावमें बृहस्पति शनैश्चर इन दोनोंकी स्थिति होवे तौ मूर्ख

स्त्रियोंके वैरसे नष्ट धनवाला तथा पिताके धनवाला होता है। यदि सप्तम भावमें शुक्र शनैश्चर इनकी स्थिति होवे तौ पुरुष धन स्त्री रत्न सौख्य इनसे युक्त होता है तथा कीर्त्तिमान् होता है ॥ ३९ ॥

स्त्रीप्राप्तिस्त्रीसुखयोगानाह जातकरत्ने।

लग्नाच्चंद्राच्च वीर्याढ्यं कलत्रं सप्तमं यदि ॥
स्वेष्टसौम्येक्षितं युक्तं स्त्रीप्राप्त्यै त्वन्यथा न सत् ॥ ४० ॥

यदि लग्न और चन्द्रमासे सप्तम भाव बलवान् होवे और अपने स्वामी वा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ स्त्रीप्राप्तिके वास्ते होता है और अन्य प्रकार शुभ नहीं होता है ॥ ४० ॥

दंपत्योः प्रीतियोगाः।

लग्नेश्वरो लग्नगतः स्मरेशो जायास्थितो द्वावथ लग्नसंस्थौ ॥
यामित्रगौ द्वावथ भर्तृवध्वोः प्रेमातिरेकं कुरुते विशेषात्॥४१॥

यदि लग्नपति लग्नमें स्थित होवे और सप्तमभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे अथवा दोनों लग्नमें स्थित होवें वा सप्तम भावमें स्थित होवें तौ भर्त्ता और वधू इन दोनोंकी प्रेमकी अधिकता करते हैं ॥ ४१ ॥

शत्रुदृष्ट्या च दंपत्योर्नित्यं ह्यकटको भवेत् ॥
लग्नेशास्तपयोः सत्यमदृष्ट्या प्रीतिरल्पिका ॥ ४२ ॥

यदि लग्नपति और सप्तमभावपति इन दोनोंकी परस्पर शत्रुदृष्टि होवे तौ स्त्री पुरुष दोनोंमें झगडा होता है। लग्नपति और सप्तमभावपति इन दोनोंकी परस्पर दृष्टि न होवे तौ अल्पप्रीति होवे है ॥ ४२ ॥

सतीं सुशीलां कुलजां विधत्ते नानाविधां स्त्रीं स्फुटरश्मिजालः ॥
पापः शुभोच्चस्मरगोऽस्तनीचः करोति भार्यां चपलां विशीलाम्॥४३

यदि प्रकट किरणसमूहोंवाला पाप ग्रह शुभ राशि वा उच्च राशिका सप्तम भावमें स्थित होवे तौ अनेक प्रकारसे स्त्रीको पतिव्रता सुशील और कुलीन करता है और अस्तगत वा नीचराशिका होकर सप्तम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें तौ स्त्रीको चपल और दुःशीला करता है ॥ ४३ ॥

गौरीं सुरूपां स्फुटपंकजाक्षीं सितः शुभर्क्षे शुभदृष्टयुक्तः ॥
चिरायुषं भाग्ययुतं नरं च कुर्याद्गुरुर्दर्पकदर्यवासी ॥ ४४ ॥

यदि शुक्र शुभ राशिका शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्त होकर सप्तम भावमें स्थित

होवे तौ स्त्रीको रूपवती और प्रफुल्लित कमलके समान नेत्रवाली करता है और इस प्रकार बृहस्पति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको बडे आयुवाला और भाग्यशाली करता है ॥ ४४ ॥

जायास्थो भार्गवः कुर्याद्बहुरत्नसुताबलाम् ॥
नरं सदा सुशीलं च सुंदरं कुलभूषणम् ॥ ४५ ॥

यदि शुक्र सप्तम भावमें स्थित होवे तौ बहुतसे रत्नपुत्रोंवाली स्त्रीको करता है और पुरुषको सुशीलवान् और सुन्दर और कुलभूषण करता है ॥ ४५ ॥

लग्नेशे सप्तमस्थे वा भार्यादेशकरः पतिः ॥
लग्नस्थे सप्तमेशे तु भर्तुरादेशकृद्वधूः ॥ ४६ ॥

यदि लग्नपति सप्तमभावमें स्थित होवे तौ पति भार्याका आज्ञाकारी होता है और सप्तमभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ स्त्री भर्त्ताकी आज्ञा करनेवाली होती है ॥४६॥

मदगता यदि पापखगास्तदा दयितया सह नैव सुखं लभेत् ॥
शुभखगा दयिता सुखकारकाः शशिमुखी बहुरूपगुणान्विता॥४७॥

यदि पाप ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष स्त्रीसे सुखको नहीं पाता है और शुभ ग्रह स्थित होवें तौ स्त्रीका सुख करते हैं और स्त्री चन्द्रसमान मुखवाली और बहु गुणवती होवे है ॥ ४७ ॥

गुरुसितावपि मंदयुतक्षितौ मदगतौ चतुरा वनिता तदा ॥
स्मितमुखी बहुरूपविभूषणा बहुसुता धनधान्यसमन्विता॥४८॥

यदि बृहस्पति शुक्र दोनों शनैश्चरसे युक्त वा दृष्ट होकर सप्तम भाववें स्थित होवें तौ स्त्री चतुर और मन्द मुसकरानेवाली और बहुरूप विभूषणा तथा बहुतसे पुत्रोंवाली तथा धन धान्यसे युक्त होती है ॥ ४८ ॥

खलयुतेक्षितमस्तगृहं यदि खलगृहं च खलांतरितं तथा ॥
चपलमत्र कलत्रमथो नरश्चपलदारवशात्परदारयुक् ॥ ४९ ॥

यदि सप्तम भाव पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे और पापग्रहका गृह होवे अथवा पाप ग्रहोंके मध्यमें होवे तौ स्त्री चपल होवे है और चपल स्त्रीके वशसे पुरुषभी परस्त्रीगामी होता है ॥ ४९ ॥

स्वस्त्रीतः पुंसो मृतियोगः ।

शनिकुजौ मदगौ मदनाधिपो निधनगोऽपि रिपुव्ययगोऽथवा ॥
मरणमेति तदा स्वकलत्रतस्त्वथ रविर्विषदा वनिता भवेत् ॥५०॥

यदि शनैश्चर मंगल सप्तम भावमें स्थित होवें और सप्तमभावपति अष्टम भाव वा षष्ठ वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ अपनी स्त्रीसे मरणको प्राप्त होता है और सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे और सप्तमभावपति अष्टम षष्ठ द्वादश इन भावोंमेंसे किसीमें स्थित होवे तौ स्त्री विष देनेवाली होवे है ॥ ५० ॥

स्त्रीरूपविचारः कल्याणवर्मा ।

शुक्रेंदुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन ॥ एषां गृहेऽपि च गणेऽपि विलोकने वा संति स्त्रियो भवनवर्गखगस्वभावाः ॥ ५१ ॥

यदि शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति, बुध इन सब ग्रहोंसे वा तीन ग्रहोंसे वा दो ग्रहोंसे वा एक ग्रहसे सप्तमभाव युक्त होवे अथवा इन ग्रहोंका राशि वा षड्वर्ग वा दृष्टि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषके स्त्री होवे है परन्तु स्त्रीका स्वभाव राशि वा षड्वर्ग वा ग्रहके अनुकूल होता है ॥ ५१ ॥

अन्यच्च ।

शुक्रांशपसमाना स्त्री वर्णरूपगुणैर्युता ॥
मदपांशपतुल्यं हि स्वभाववरणं तथा ॥ ५२ ॥

शुक्रके नवांशपतिके समान वर्ण रूप गुणोंसे युक्त स्त्री होवे है अथवा सप्तमभावपतिके नवांशपतिके समान स्त्रियोंका स्वभाव चलन होता है ॥ ५२ ॥

स्त्रीणां संख्यायोगाः होरासारे ।

द्युनेशो यतमेंऽशे स्याद्यावंतो वा द्युनेक्षकाः ॥
तावंत्यः स्युः स्त्रियो नृणामेकैवार्किकुजांशके ॥ ५३ ॥

यदि सप्तमभावपति जिस संख्यावाले नवांशमें स्थित होवे अथवा सप्तम भावको जितने ग्रह देखते होवें उतनीही स्त्रियां पुरुषोंके होवे हैं और शनैश्वर वा मंगलका नवांश होवे तौ एकही स्त्री होवे है ॥ ५३ ॥

तुलावृषभकर्केषु शुक्रेंदुपतिदृष्टयः ॥
राशिसंख्यासमाना हि स्त्रीणां प्राप्तिर्निगद्यते ॥ ५४ ॥

तुला वृष कर्क इन राशियोंपर शुक्र चंद्र जो इन राशियोंके स्वामी हैं इनकी दृष्टि होवे तौ जो कि जन्मराशि है उसके समान स्त्रियोंकी प्राप्ति होवे है ॥ ५४ ॥

उदयभास्करात् ।

मदनगा विहगाः स्वपतीक्षिताः स्वमिति तुल्यविवाहकरा मताः ॥
इह रवींदुकुजाः प्रबलाः क्रमाद्रसदशस्वमितप्रमदाप्रदाः ॥ ५५ ॥

जितने अधिक बली ग्रह सप्तम भावमें स्थित होवें और सप्तमभावपतिकर देखे गये होवें तौ अपनी संख्याके समान विवाहकर्त्ता होते हैं। यदि सप्तम भावमें बली सूर्य स्थित हो और सप्तमभावपतिकर देखा गया होवे तौ छः स्त्रियोंको देता है और चंद्रमा दश स्त्रियोंको देता है और मंगल दो स्त्रियोंको देता है ॥ ५५ ॥

अन्यत् ।

जायास्थाने यदा सौम्याः सौम्यैर्वा यदि वीक्षितः ॥
जायेशो वाथ लग्नेशस्तदा जाया सतां मता ॥ ५६ ॥

यदि सप्तम भावमें शुभ ग्रह होवें अथवा शुभ ग्रहोंसे सप्तमभावपति वा लग्नपति देखा गया होवे तौ पुरुषकी स्त्री सज्जनोंके मानने योग्य होवे है ॥ ५६ ॥

सप्तमे गुरुसौम्यौ चेत्तदैका वनिता भवेत् ॥
यामित्रे चंद्रशुक्रौ च बहुपत्नीः प्रजायते ॥ ५७ ॥

यदि सप्तम भावमें बृहस्पति वा बुध स्थित होवे तौ पुरुषके एकही स्त्री होवे है और सप्तम भावमें चंद्रमा शुक्र दोनों स्थित होवें तौ पुरुषके बहुतसी स्त्रियां होवे हैं ॥ ५७ ॥

यामित्रे चंद्रसितयोर्वर्गः शुक्रेण वीक्षितः ॥
बहुपत्न्योऽथवा शुक्रवर्गश्चेद्बहुवल्लभाः ॥ ५८ ॥

यदि सप्तम भावमें चंद्रमा वा शुक्रका राशि स्थित होवे और शुक्रसे देखा गया होवे तौ बहुतसी स्त्रियां होवे हैं। अथवा सप्तम भावमें शुक्रका राशि होवे और शुक्रसे देखा गया होवे तौभी पुरुषके बहुत स्त्रियां होवे हैं ॥ ५८ ॥

जायाधिपौ सूर्यभौमौ तदैका वनिता भवेत् ॥
वेश्या प्रिया भवेत्पुंसां बुधांशे सप्तमाधिपे ॥ ५९ ॥

यदि सप्तमभावपति सूर्य वा मंगल होवे तौ एक स्त्री होवे है। यदि सप्तमभावपति बुधके नवांशमें स्थित होवे तौ पुरुषोंको वेश्या प्यारी होवे है ॥ ५९ ॥

भवनाधिपांशतुल्या भवंति नार्यो निरीक्षणाद्वापि ॥
एकैकरविकुजांशे गुरुबुधयोश्चापि यामित्रे ॥ ६० ॥

सप्तमभावपतिके नवांशतुल्य अथवा सप्तमभावपर ग्रहोंकी दृष्टियोंके समान पुरुषके स्त्रियां होवे हैं। यदि सप्तमभावपति सूर्य वा मंगलके नवांशमें स्थित होवे तौ एकही स्त्री होवे है। अथवा सप्तम भावमें बृहस्पति वा बुध स्थित होवे तौभी एकही स्त्री होवे है ॥ ६० ॥

अस्य सवर्णा वान्यवर्णजा भार्येति विचारो होराप्रदीपे ।

जायेशे गुरुशुक्रांशे सवर्णा बहुवल्लभा ॥
रविभौमशनेरंशे जायेशे न्यूनजातिका ॥ ६१ ॥

यदि सप्तमभावपति बृहस्पति और शुक्रके नवांशमें स्थित होवे तौ पुरुषको अतिप्रिया सवर्णा स्त्री होवे है और सप्तमभावपति सूर्य मंगल शनैश्चर इनके नवांशमें स्थित होवे तौ न्यूनजातीय स्त्री प्रिया होवे है ॥ ६१ ॥

शेषांशे सप्तमाधीशे मध्यजातेश्च कामिनी ॥ ६२ ॥

और सप्तमभावपति शेष ग्रहोंके नवांशमें स्थित होवे तौ मध्यजातिकी स्त्री होवे है ॥ ६२ ॥

अन्यस्त्रीवेश्यादिरतियोगाः जातकसारे ।

भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽथवा ॥
भौमेन युतदृष्टे वा परस्त्रीभोगमिच्छति ॥ ६३ ॥

यदि शुक्र मंगलके नवांशमें स्थित होवे अथवा मंगलके राशिमें स्थित होवे अथवा मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ परस्त्रीसे भोगकी इच्छा करता है ॥ ६३ ॥

अन्यन्मनुष्यजातके ।

शुक्रे स्मरे सौरमहीजवर्गे शन्यारदृष्टेऽन्यकलत्रगामी ॥
तत्र सचंद्रौ यदि भूमिजार्कौ तदा नृनार्यौ व्यभिचारिणौ स्तः ॥६४॥

यदि शनैश्चर वा मंगलके राशिका शुक्र सप्तम भावमें स्थित होवे और शनैश्चर वा मंगलसे दृष्ट होवे तौ पुरुष अन्य स्त्रीसे गमन करनेवाला होता है । यदि चन्द्रमासहित मंगल और शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवें तौ स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होते हैं ॥ ६४ ॥

शनैश्चरे सप्तमगे विलग्ने यदा नवांशो धरणीसुतस्य ॥
वृद्धांगनासक्तरतो मनुष्यः सदा भवेत्कामनिपीडितात्मा ॥६५॥

यदि शनैश्चर सप्तम भावमें स्थित होवे और लग्नमें मंगलका नवांश होवे तौ मनुष्य वृद्ध स्त्रीसे भोग करनेवाला होता है और सदैव कामसे पीडित रहता है ॥ ६५ ॥

यदा विलग्ने सधनुः शशांके नवांशकः स्याद्रविनंदनस्य ॥
वेश्यानुरक्तं कुरुते मनुष्यं सदातुरं पापरतं नृशंसम् ॥ ६६ ॥

यदि लग्नमें धनुराशिका चन्द्रमा स्थित होवे और लग्नमें शनैश्वरका नवांश होवे तौ मनुष्यको वेश्यानुरागी तथा आतुर और पापी और क्रूर करता है ॥ ६६ ॥

विर्योनिरतियोगः ।

सिंहांशके सूर्यसुते विलग्ने वा भौमदृष्टेरविजेऽस्तसंस्थे ॥
नरो भवेद्रक्कभगोऽत्र योगे विपर्ययं वक्ररतानुरक्तः ॥ ६७ ॥

यदि शनैश्वर सिंहके नवांशमें स्थित होकर लग्नमें स्थित होवे अथवा मंगलकर देखा हुआ शनैश्वर सप्तम भावमें स्थित होवे तौ इस योगमें पुरुष वियोनिसे भोग करनेमें अनुरागी होता है ॥ ६७ ॥

कन्यारतियोगः यवनजातके ।

कन्यांशके सौम्यदृशा विहीनो विलग्नसंस्थो भृगुजोऽत्र जातः ॥
कन्यारतिं वांछति पापयुक्तः स्त्रीलंपटः स्यात्सततं विलज्जः ॥६८॥

यदि कन्याराशिके नवांशमें स्थित होकर शुक्र लग्नमें स्थित होवे और बुधकी दृष्टिसे हीन होवे तौ वह पुरुष स्त्रीलंपट तथा पापी और निर्लज्ज होकर कन्यासे भोगकी इच्छा करता है ॥ ६८ ॥

तनुशनिश्च शुचिः स्मरगः सितो विशुभदृक् सततं वृषलीपतिः ॥
तरणिबंधुरनंमगतोऽवरे विधुरजीवदृशा वृषलीपतिः ॥ ६९ ॥

यदि लग्नमें शनैश्वर होवे और शुक्र सप्तम भावमें होवे और शुभ ग्रहकी दृष्टिसे हीन होवे तौ पुरुष निरन्तर वृषली नाम शूद्रीका पति होता है । यदि शनैश्वर सप्तम भावमें स्थित होवे और चंद्रमा दशम भावमें स्थित होवे और बृहस्पतिकी दृष्टिसे हीन होवे तौ पुरुष वृषलीपति होता है ॥ ६९ ॥

दंपत्योः काणयोगः उदयभास्करे ।

रविविधू व्ययवैरिगतौ यदैकनयनौ रमणीपुरुषौ मतौ ॥
यदि शनिर्मदने हिमदीधितेः करतलेन हि वीर्यपरिच्युतिः ॥७०॥

यदि सूर्य चंद्रमा दोनों द्वादश षष्ठ इन स्थानोंमें क्रमसे स्थित होवें तौ स्त्री पुरुष दोनों एक नेत्रवाले होते हैं । यदि चंद्रमासे सप्तम भावमें शनैश्वर स्थित होवे तौ हाथसे वीर्यका गिराना होता है ॥ ७० ॥

अथ विधौ शनिभौमयुतेक्षिते परखगादिवियोनिगुदावशात् ॥
परवधूरतयोग उ पुंदृशा यदि भवेद्धि गुदारमणस्तदा ॥७१॥

यदि चन्द्रमा शनैश्वर और मंगलसे युक्त वा दृष्ट होवे और शेष ग्रह दशम

भावमें स्थित होवें और स्त्रीग्रहकी दृष्टि होवे तौ पुरुष परस्त्रीगामी होता है और पुरुषग्रहकी दृष्टि होवे तौ गुदासे रमण करनेवाला होता है ॥ ७१ ॥

यदि च दृश्यदलेऽर्कशनी रिपौ हिमगुरस्तगतो विदवीक्षितः ॥
कुवृषलीपतिरार्किकुजौ यदाऽरिसुखयोस्तरुणीकिल गुर्विणी॥७२॥

यदि चक्रके दृश्यभागमें अर्थात् जितने लग्नके अंश उदयको प्राप्त हुए होवें उनसे लेकर द्वादश एकादश दशम नवम अष्टम और सप्तमके उन भागोंतक जितने कि लग्नके उदयको प्राप्त होनेको शेष रहे होवें यदि इनमें सूर्य शनैश्चर दोनों स्थित होवें और चन्द्रमा षष्ठ भावमें स्थित होवे और बुध सप्तम भावमें स्थित होवे और शुभ ग्रहसे दृष्ट नहीं होवे तौ पुरुष निन्दित वृषलीका स्वामी होता है और शनैश्चर मंगल दोनों क्रमसे छठे भाव और चतुर्थ भावमें स्थित होवें तौ उस पुरुषको गर्भवती स्त्री प्राप्त होवे है ॥ ७२ ॥

वृद्धवयसि विवाहयोगानाह ।

यदि सितेंदुसुतौ मदनोपगौ विलग्नो यदि तौ शुभवीक्षितौ ॥
वयसि पश्चिमके रमणीप्रदौ धनसुतादिसुखानि प्रदर्शकौ ॥७३॥

यदि शुक्र बुध दोनों सप्तम भावमें स्थित होवें तौ पुरुष स्त्रीसे हीन होता है और वह सप्तमभावस्थ शुक्र बुध यदि शुभ ग्रहसे दृष्ट होवें तौ बुढापेमें स्त्रीको देते हैं तथा धनपुत्रादि सुखोंको भी दिखाते हैं ॥ ७३ ॥

आमययोगाः ।

मदगृहं रविपुत्रयुतेक्षितं भवति गुल्मगुदामयमेहकृत् ॥
रविकुजावपि तद्गृहवर्णवद्बहुगदाद्वपुलांछनकारकाः ॥ ७४ ॥

यदि सप्तम भाव शनैश्चरसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ गुल्म या गुदारोग तथा प्रमेहरोगके करनेवाला होता है और शनश्चरके समानही सूर्य मंगलभी पीडा करते हैं। सप्तम भावमें युक्त वा द्रष्टा होकर यह तीनों ग्रह बहुतसे रोगसे शरीरको कलंकित करते हैं ॥ ७४ ॥

विवाहे वर्षज्ञानमुक्तं श्रीगुरुचरणैः ।

शुक्राच्चंद्रात्सप्तमं यद्गृहं तत्संख्यातुल्यैर्वत्सरैःसंयुतैर्वा ॥
स्यादुद्वाहो वत्सरे तद्दशांते वंशो रूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम्॥७५॥

शुक्रसे और चन्द्रमासे जो सप्तम भाव है उसकी संख्या तुल्य वर्षों करके अथवा शुक्र चन्द्रमासे जो कि सप्तम भाव हैं तिन दोनोंको जोडकरके जो वर्ष होते

होवें उतने वर्षोंकरके विवाह होता है अथवा चंद्रमा शुक्रकी दशाके मध्यमें विवाह होता है । सप्तमभावपतिका जैसा वंश रूप होवे तैसाही स्त्रीका विचारना चाहिये ॥७५॥

स्त्रीपुंसयोर्मध्ये प्रथमं कस्य मरणं भविष्यतीति ज्ञानमुक्तं तत्रैव ।

नाम्नो मात्राकृतगुणा द्विगुणाक्षरसंयुताः ॥
तष्ट त्रिभिर्द्विशेषे स्त्री म्रियते खैकयोः पुमान् ॥ ७६ ॥

नामकी मात्रा चतुर्गुण करे फिर द्विगुण अक्षरोंसे जोडे फिर तीनका भाग देवे दो शेष बचें तौ पहिले स्त्री मृत्युको प्राप्त होवे है और शून्य और एक शेष बचे तौ पुरुष प्रथम मृत्युको प्राप्त प्राप्त होता है ॥ ७६ ॥

सप्तमभावे राशिफलमाह वृद्धयवनः ।

मेषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां चपलस्वभावम् ॥
पापानुरक्तं कठिनं नृशंसं वित्तप्रियं स्वार्थपरं सदैव ॥ ७७ ॥

यदि मेषराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री क्रूर और चपलस्वभाव तथा पापयुक्त, कठिन, क्रूर और धनाप्रिय तथा स्वार्थपरायण होवे है ॥ ७७ ॥

वृषेऽस्तसंस्थे च सुरूपदंतं भवेत्कलत्रं प्रणतं प्रशांतम् ॥
पतिव्रतं चारुगुणेन युक्तं लक्ष्माधिकं ब्राह्मणदेवभक्तम् ॥ ७८ ॥

यदि वृषराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री अच्छे रूप और दांतोंवाली तथा नम्र और शान्तिमय और पतिव्रता तथा सुन्दर गुणोंसे युक्त तथा लक्षणवती तथा ब्राह्मणदेवताओंकी भक्ता होवे है ॥ ७८ ॥

तृतीयराशौ च भवेत्कलत्रं कलत्रयुक्तं सधनं सुवृत्तम् ॥
रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं नवीनवेषं गुणवर्जितं च ॥ ७९ ॥

यदि मिथुनराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री अच्छे आचरणसे युक्त धनवती तथा रूपवती और सर्व गुणसे युक्त और नवीन वेष तथा गुणवर्जित होवे है ॥ ७९ ॥

कर्केऽस्तसंस्थे सुमनोहराणि सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि ॥
भवंति सौख्यानि कलत्रकाणि कलंकहीनानि सुसंयतानि॥८०॥

यदि कर्कराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ सुन्दर मनोहर तथा सौभाग्ययुक्त और गुणसंपन्न तथा गुणरूप तथा कलंकहीन और सावधानचित्त स्त्री होवे है ॥८०॥

सिंहेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीक्ष्णस्वभावं चपलं सुदुष्टम् ॥
विहीनवेषं परवेश्मसंस्थं बह्वाशनं स्वल्पवृतं कृशं च ॥ ८१ ॥

यदि सिंहराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री तीक्ष्णस्वभाव तथा चपल और दुष्ट तथा हीनवेष तथा पराये घरमें रहनेवाली और बहुत भोजन करनेवाली तथा अल्प आचरणसे युक्त और दूबरी होवे है ॥ ८१ ॥

कन्यास्तसंस्थे च भवंति दाराः सुरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः ॥
सौभाग्यभोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदाः सत्यधनप्रगल्भाः॥८२॥

यदि कन्याराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री सुन्दर रूप और शरीरवाली तथा पुत्रोंसे हीन तथा सौभाग्य भोग तथा धन और नीतिसे युक्त होवे है और प्रिय वचन बोलनेवाली तथा सत्य धनसे प्रगल्भ होवे है ॥ ८२ ॥

तुलेऽस्तसंस्थे गुणगर्विताङ्ग्यो भवंति नार्यो विविधप्रकाराः ॥
पण्यप्रिया धर्मरताः सुदंताः प्रभूतपुत्राः प्रथिता विनीताः॥ ८३॥

यदि तुलाराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री गुणसे गर्वीले अंगवाली तथा अनेक प्रकारसे व्यवहारप्रिया और धर्ममें सावधान तथा सुन्दर दांतोंवाली और बहुतसे पुत्रोंवाली तथा विख्यात और विनीत होवे है ॥ ८३ ॥

कीटेऽस्तसंस्थे च कलासमेता भवंति भार्याः कृपणा नराणाम् ॥
सुकुत्सिताङ्ग्यः प्रणयेन हीना दौर्भाग्यदोषैर्विविधैः समेताः ॥८४॥

यदि वृश्चिकराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंकी स्त्री कलायुक्त और कृपण तथा निन्दित अंगोंसे युक्त तथा स्नेहसे हीन तथा अनेक प्रकारके दुर्भगताके दोषसे युक्त होवे है ॥ ८४ ॥

चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तेषां नराणां पुरुषाकृति च ॥
सुनिष्ठुरं भक्तिनयेन हीनं प्रशांतिसौख्यं नतिवर्जितं च ॥ ८५ ॥

यदि धनुराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उन पुरुषोंकी स्त्री पुरुषाकार तथा अतिनिष्ठुर तथा भक्ति और नीतिसे हीन तथा शान्ति सुख नम्रता इनसे वर्जित होवे है ॥ ८५ ॥

मृगेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम् ॥
विस्रस्तलज्जं परलोकरक्तं युद्धप्रियं दंभसमन्वितं च ॥ ८६ ॥

यदि मकरराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंकी स्त्री अति दुष्ट और हीन स्वभाव तथा निर्लज्ज और पर पुरुषमें रत तथा युद्धप्रिय और कपटयुक्त होवे है ॥ ८६ ॥

घटेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं स्थिरस्वभावं पतिकर्मदक्षम् ॥
देवद्विजानां सततं प्रहृष्टं धर्मध्वजं संशयतासमेतम् ॥ ८७ ॥

यदि कुंभराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री स्थिरस्वभाव और पतिसेवामें चतुर और देवता ब्राह्मणोंको निरन्तर प्रसन्न करनेवाली तथा धर्मध्वज और संशययुक्त होवे है ॥ ८७ ॥

मीनेऽस्तसंस्थे च विकारयुक्तं भवेत्कलत्रं कुमतिं कुपुत्रम् ॥
अधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा नराणां कलहप्रियं च ॥ ८८ ॥

यदि मीनराशि सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंकी स्त्री विकारयुक्त तथा कुबुद्धि और कुपुत्रवाली तथा अधर्मशील और स्नेहसे हीन कलहप्रिय होवे है ॥८८॥

सप्तमेशभावफलम् ।

दयितेशो लग्नगतः स्तोकं निःस्नेहमन्यतरभार्यम् ॥
भोगभुजं रूपयुतं सुस्त्रीकं जनप्रतिलोलचित्तं च ॥ ८९ ॥

यदि सप्तमभावपति लग्नमें स्थित होवे तो पुरुषको अतितुच्छ तथा स्नेहसे वर्जित और अन्य स्त्रीसे युक्त तथा भोगी और रूपवान् तथा अच्छी स्त्रीसे युक्त और जनोंके प्रति चंचल चित्तवाला करता है ॥ ८९ ॥

जायापतौ धनस्थे पुष्टा दयिता सुतोज्झिता भवति ॥
वित्तं च कलत्रकरं सततं दुःखानुषंगं च ॥ ९० ॥

सप्तमभावपति द्वितीयभावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री अतिपुष्ट और पुत्रहीन होवे है और उस पुरुषका धन स्त्रीके हाथमें रहता है और निरन्तर उस पुरुषको दुःखानुषंगी करता है ॥ ९० ॥

सप्तमपः सहजगतश्चात्मजवत्सलो दुःखी ॥
देवररता सुरूपा गृहिणी क्रूरे तु तद्गृहगे ॥ ९१ ॥

यदि सप्तमभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पुत्रवत्सल तथा दुःखी होता है और सप्तमभावपति क्रूर ग्रह होकर तृतीय भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री रूपवती होकर देवरसे भोग करती है ॥ ९१ ॥

जायेशे तुर्यस्थे लोलः पितृवैरसाधकः स्नेही ॥
अस्य पिता दुर्वाक्यस्तद्भार्यां पालयेच्च पिता ॥ ९२ ॥

यदि सप्तमभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ पुरुष चंचल तथा पितासे

वैर करनेवाला तथा स्नेहयुक्त होता है और उसका पिता खोटे वचन कहनेवाला होता है और पिता उस पुरुषकी स्त्रीका पालनकर्त्ता होता है ॥ ९२ ॥

सप्तमपतौ सुतस्थे सौभाग्ययुतः सुतान्वितः पुरुषः ॥
प्रियसाहसदुष्टमतिस्तत्तनयः पालयेद्दयिताम् ॥ ९३ ॥

यदि सप्तमभावपति पंचम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सौभाग्ययुक्त और पुत्रवान् और प्रियसाहस और दुष्टबुद्धि और उसका पुत्र उसकी प्रियाका पालन करता है ॥ ९३ ॥

रिपुगृहगः कांतेशः प्रियासहवैरिणं सरुग्भार्यम् ॥
वनितासंगात् क्षपिणं क्रूरः कुरुते च मृत्युपदम् ॥ ९४ ॥

यदि सप्तमभावपति षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको स्त्रीके साथ वैर करनेवाला तथा रोगवती स्त्रीवाला और स्त्रीके संगसे क्षयको प्राप्त होनेवाला करता है और सप्तमभावपति पाप ग्रह होकर षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको मृत्युके आश्रय करता है ॥ ९४ ॥

सप्तमपे सप्तमगे परमायुः प्रीतवत्सलः पुरुषः ॥
निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वी जायते सततम् ॥ ९५ ॥

यदि सप्तमभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष बडे आयुवाला तथा प्रसन्नचित्त और कृपायुक्त स्नेही और निर्मलशीलसे युक्त तथा तेजस्वी होता है॥९५॥

रमणीशे निधनगते गणिकासुरतपरो गृहे विरतः ॥
विद्वद्द्वितीयासक्तो न स्त्रीसेवाकरः पुरुषः ॥ ९६ ॥

यदि सप्तमभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष गणिकासे भोग करनेमें तत्पर और अपनी स्त्रीसे प्रेमवर्जित और विदुषी द्वितीय स्त्रीमें आसक्त स्त्रीकी सेवा नहीं करनेवाला होता है ॥ ९६ ॥

सुकृतगते रमणीशे तेजस्वी शिल्पवान् प्रियाप्येवम् ॥
क्रूरे तु खंडरूपा लग्नशवीक्षिते तपःप्रबलः ॥ ९७ ॥

यदि सप्तमभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष तेजस्वी और शिल्प नाम कारीगरीसे युक्त होता है और उस पुरुषकी स्त्री भी इसी प्रकार होवे है और सप्तमभावपति क्रूर ग्रह होकर नवम भावमें स्थित होवे तौ स्त्री खंडरूपवाली होवे है और लग्नपतिसे दृष्ट होकर सप्तमभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष तपसे अधिक बलवाला होता है ॥ ९७ ॥

गृहिणीपे दशमस्थे नृपदोषी लंपटः पुमान् क्रूरः ॥
क्रूरे दुष्टः श्वशुरः ख्यातश्च सर्वतो दिक्षु ॥ ९८ ॥

यदि सप्तमभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष राजदोषवाला तथा व्यभिचारी लंपट और क्रूर होता है और पाप ग्रह होकर स्थित होवे तौ उस पुरुषका श्वशुर बडा दुष्ट और दिशाओंमें विख्यात होता है ॥ ९८ ॥

लाभस्थे जायेशे भक्ता रूपान्विता सुशीला च ॥
दयिता परिणीता स्याद् म्रियते सा च प्रसवसमये ॥९९॥

यदि सप्तमभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुषकी स्त्री भक्ता तथा रूपवती और शुभशीलयुक्त विवाहिता स्त्री होवे है और वह स्त्री संतान उत्पन्न करनेके समय मृत्युको प्राप्त होवे है ॥ ९९ ॥

सप्तमपे द्वादशगे गृहबंधूज्झिता भवेद्भार्या ॥
लोला सा दुष्टा च पुनरुच्चलितस्य पुरुषस्य ॥ १०० ॥

इति जातकसंग्रहे सप्तमभावविचारः समाप्तः ॥ ७ ॥

यदि सप्तमभावपति द्वादश भावमें स्थित होवे तौ उस चंचल पुरुषकी स्त्री गृह बांधवोंसे हीन और चंचल तथा दुष्ट होवे है ॥ १०० ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां सप्तमभावविचारः समाप्तः ॥ ७ ॥

अष्टमभावविचारः ।

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटं चेति सर्वम् ॥
रंध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥ १ ॥

नदीका उतरना, अत्यन्त मार्गकी विषमता और दुर्ग किला और शस्त्र तथा आयु और संकट यह सब पूर्वाचार्योंकी आज्ञासे जातकवेत्ताओंकर अष्टम भावमें विचारने चाहिये ॥ १ ॥

नद्युत्तरे च नौकायां मार्गवैषम्यसंस्थितौ ॥
दुर्गस्य वेष्टने चैव फलं तस्माद्विचिंतयेत् ॥ २ ॥

नदीके उतरनेमें और नौकामें और मार्गकी विषमताकी स्थितिमें और दुर्गके घेरनेमें जो फल विचारा जाता है वह सब अष्टम भावसे विचारे ॥ २ ॥

वस्तुनाशहते वापि शत्रुभिः कारिते भये ॥
अथवा युद्धसमये तथा व्याधिसमुद्भवे ॥ ३ ॥
छिद्रालोकान्यलीकानि चिंतयेच्चाष्टमे बुधः ॥
अष्टमे भवने क्रूरे रोगार्तो म्रियते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

वस्तुके नाश और हननेमें और शत्रुसे किये हुए भयमें और युद्धसमयमें तथा व्याधिकी उत्पत्तिमें जो कि विचार हैं और जो कि अप्रिय छिद्र विचार हैं तिन सबको पंडित अष्टम भावमें विचारे। यदि अष्टम भावमें पाप ग्रह होवे तौ जो रोगी होवे वह मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ ४ ॥

बंधनान्मुच्यते बद्धो नरो नात्र विचारणा ॥
नौकायां चाष्टमे क्रूरे सुखेनायाति पूरिता ॥ ५ ॥

जो कि बंधनको प्राप्त हुआ है वह बंधनसे छूट जाता है इसमें कुछ संदेह नहीं है। नौकाके प्रश्नमें यदि पाप ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवे तौ नाव धनादिसे भरी हुई सुखसे आ जाती है ॥ ५ ॥

द्वितीये चाष्टमे क्रूरे युद्धतः कलहश्चिरम् ॥
अष्टमे संस्थिते क्रूरे दुर्गभंगो न जायते ॥
लग्नपे च विशेषेण देवेंद्रेऽपि समागते ॥ ६ ॥

यदि द्वितीय भाव और अष्टम भावमें पाप ग्रह होवे तौ बहुत कालतक युद्धसे कलह होता है और पाप ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवे तौ दुर्गका भंग नहीं होता है और लग्नपति पाप ग्रह होकर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ इन्द्रके आ जानेपरभी दुर्गका भंग नहीं होता है ॥ ६ ॥

सामान्यविचारेणाऽष्टमस्थरव्यादीनां फलानि गर्गमतेन।

तुंगर्क्षे ह्यष्टमः सूर्यः सुखमृत्युं प्रयच्छति ॥
अन्यत्र दुःखमरणं दत्ते काष्ठाच्च यातनाम् ॥ ७ ॥

इसके अनन्तर सामान्य विचार कर अष्टमभावस्थ सूर्यादि ग्रहोंके फल गर्गाचार्यके मतसे कहते हैं। यदि उच्च राशिमें स्थित हुआ सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे तौ सुखपूर्वक मृत्युको देता है और अन्य राशिका सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे तौ दुःखपूर्वक मरण देता है और काष्ठसे कष्टको देता है ॥ ७ ॥

विक्रमस्थेन पापेन क्रूरेण मृत्युगो रविः ॥
युक्तो दृष्टः स्थूलभूरिर्यमदूतो विनाशयेत् ॥ ८ ॥

यदि बली पाप ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होकर सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका यमदूत होकर नाश करता है ॥ ८ ॥

चंद्रफलम् ।

चंद्रोऽष्टमे मृत्युकरो नराणां क्षीणो मृतिं यच्छति बाल्य एव ॥
काले त्रिदोषज्वरदाहदाता नयत्यधः क्षीणतनुर्धरित्र्याम् ॥ ९ ॥

चंद्रमा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्योंका मरण करता है और क्षीण होकर चंद्रमा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ बाल्यसमयमें मृत्युको देता है और अष्टमभावस्थित क्षीण चंद्रमा त्रिदोषज्वरदाहको देता है और पृथ्वीमें नीचे बालकको प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

मंगलफलम् ।

मृत्युंगतो मृत्युपरो महीजः शस्त्रादिलूतादिभिरग्नितो वा ॥
कुष्ठप्रणाशो गृहिणीप्रपीडा नयत्यधो नाशकमानयेच्च ॥ १० ॥

यदि मंगल अष्टम भावमें स्थित होवे तौ शस्त्रादिसे वा लता आदिसे वा अग्निसे मृत्युको करता है और कुष्ठरोगसे नाश तथा स्त्रीको पीडा होवे है। बालकको पृथ्वीके अधोभागमें प्राप्त करता है और नाशको प्राप्त करता है ॥ १० ॥

बुधफलम् ।

करोति मृत्युं निधनस्थितो बुधः सुखेन तीर्थे सुखदे निराविले ॥
शूलस्य जंघोदररोगपीडा पापो पिधायांतकरो नराणाम् ॥ ११ ॥

यदि बुध अष्टम भावमें स्थित होवे तौ सुखपूर्वक सुखदायक निर्मल तीर्थमें मृत्यु करता है और जंघा और पेटमें शूलरोगकी पीडा होवे है और अष्टम भावमें स्थित हुए बुधको पाप ग्रह ढककर स्थित होवे तौ पुरुषोंका मृत्यु करता है ॥ ११ ॥

गुरुफलम् ।

जीवे मृत्युगते ज्ञानात्सुतीर्थे मरणं भवेत् ॥
शुभर्क्षे स्वगृहे चेत्स्यादन्यत्र मरणं श्रमात् ॥ १२ ॥

यदि बृहस्पति शुभ राशि वा अपने गृहमें स्थित होकर अष्टम भावमें होवे तौ ज्ञानसे सुन्दर तीर्थमें मरण होता है और अन्य राशिका होकर बृहस्पति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ श्रमसे मरण होता है ॥ १२ ॥

शुक्रफलम् ।

आनृण्यं पितुराधत्ते तीर्थे मरणमेव च ॥
नयेत्पितृकुलं पुण्यं रंध्रगो भृगुनंदनः ॥ १३ ॥

यदि शुक्र अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पिताकी अनृणता और तीर्थमें मरण करता है और पिताके कुलको पवित्र करता है ॥ १३ ॥

शनिफलम्।

विदेशतो नीचसमीपतो वा सौरिर्मृतिं रंध्रगतो विधत्ते ॥
हृच्छोककासामयवह्निषूचीनानाविधं रोगगणं विधाय ॥ १४ ॥

यदि शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ विदेशमें वा नीचके समीप पुरुषका मृत्यु करता है और हृदयशोक खांसी विषूचिकादि नाना प्रकारके रोगसमूहको करता है ॥ १४ ॥

राहुफलम्।

दुष्टचौर्यापवादेन कुरुते निधनं तमः ॥
बहुकिल्बिषमाधत्ते धत्ते कष्टात्स यातनाम् ॥ १५ ॥

यदि राहु अष्टम भावमें स्थित होवे तौ दुष्ट चोरीकी निन्दासे मरण करता है और बहुत कष्ट देता है और कष्टसे यातनाको करता है ॥ १५ ॥

अष्टमस्थरव्यादीनां विशेषफलम्।

वीर्यान्वितः पश्यति मृत्युभं यस्तद्धातुकोपान्मृतिमामनंति ॥
तद्युक्तकालाख्यनरस्य गात्रे तस्मिन्प्रदेशे बहुभिर्बहूनाम् ॥ १६ ॥

जो कि बली ग्रह अष्टम भावको देखता होवे उसके वातपित्तकफादिरूप धातुके प्रकोपसे पुरुषका मृत्यु पंडितजन कहते हैं। परन्तु अष्टम भावमें जो राशि स्थित होवे वह राशि कालपुरुषके[1] जिस अंगका संबंधी होवे उसी अंगमें पीडाको प्राप्त होकर पुरुषका मृत्यु होता है। यदि बहुतसे बलवान् ग्रहोंकर अष्टम भाव दृष्ट होवे तौ बहुतसे धातुओंके बिगडनेसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

सूर्यादिभिर्निधनगैर्निधनं हुताशतोयायुधज्वरजमामयजं
क्रमेण ॥ क्षुत्तृट्कृतं च चरभे परदेशगस्य स्यात्तत्स्थिरे
स्वविषये पथि च द्विमूर्तौ ॥ १७ ॥

यदि सूर्यादि ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवें तौ क्रमसे अग्नि आदिक रोगोंके द्वारा किया हुआ मृत्यु होता है अर्थात् सूर्य अष्टम भावमें स्थित होवे तौ

१ कालपुरुषस्य मेषादिराशिपूर्वमंगविभागमाह लघुजातके। शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणि कटिवस्ति गुह्यसंज्ञानि ॥ ऊरू जानू जंघे चरणाविति राशयोऽजाद्याः ॥ १ ॥ अर्थ–कालपुरुषका मेषराशि शिर, वृष मुख, मिथुन बाहू, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला वस्ति, वृश्चिक गुह्यभाग, धनु ऊरु, मकर जानु, कुंभ जंघा और मीन चरण हैं।

अग्निद्वारा मृत्यु होता है और चंद्रमा होवे तौ जलसे मृत्युको प्राप्त होता है और मंगल होवे तौ शस्त्रद्वारा मृत्यु होता है, बुध होवे तौ ज्वरद्वारा मृत्यु होता है, बृहस्पति होवे तौ रोगसे मृत्यु होता है, शुक्र होवे तौ क्षुधासे मरण होता है, शनैश्चर होवे तौ तृषासे मरण होता है। यदि अष्टम भावमें चरसंज्ञक राशि होवे तौ परदेशमें प्राप्त हुएका मरण होता है और स्थिरसंज्ञक राशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ अपनेही देशमें मरण होता है और द्विस्वभावसंज्ञक राशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ मार्गमें मरण होता है ॥ १७ ॥

वह्न्यंव्वाशुधतो ज्वरामयतृपाक्षुत्तोऽर्कमुख्यैर्मृती
रंध्रस्थैः सबलेक्षकाच्च निधनं वा रंध्रपत्यंशपात् ॥
पित्ताद्वातकफाच्च पित्तत इह त्रिभ्यः कफाच्चानिल-
श्लेष्मभ्यां मारुतोऽर्कतस्तु मरणं छिद्रांगके कोपतः ॥ १८ ॥

यदि सूर्यादि ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवें तौ क्रमसे अग्नि जल शस्त्र ज्वर आमय तृषा क्षुधा इनसे मृत्यु होता है अथवा बली ग्रहकी दृष्टिसे मरण होता है अर्थात् जो बलवान् ग्रह अष्टम भावको देखता होवे उसका जो धातु वा मृत्युकारण उपद्रव है उससे मरण होता है। अथवा अष्टमभावपतिके नवांशपतिका धातु वा मृत्युकारण उपद्रव है उससे मरण होता है। यदि सूर्य अष्टम भावमें स्थित हो तौ पित्तप्रकोपसे और चन्द्रमा होवे तौ वातकफप्रकोपसे और मंगल होवे तौ पित्तप्रकोपसे और बुध होवे तौ त्रिदोषसे और बृहस्पति होवे तौ कफसे और शुक्र होवे तौ वातकफसे और शनैश्चर होवे तौ वातप्रकोपसे मरण होता है ॥ १८ ॥

छिद्रेशे स्वभगे च तीर्थमरणं लग्नेशयुक्ते तथा
जीवाढ्ये च सितान्वितेऽथ चरभे छिद्रेऽन्यदेशे विपत् ॥
षष्ठाष्टस्थबुधारयोर्यदि तदा चौरोऽस्य पादौ करौ
नश्येतां खसुखस्थसूर्यकुजयोः शैलाग्रपाताद्वधः ॥ १९ ॥

यदि अष्टमभावपति अपने राशिमें स्थित होवे अथवा लग्नपतिके साथमें वा बृहस्पतिके साथमें वा शुक्रके साथमें स्थित होवे तौ अच्छे तीर्थमें मरण होता है। यदि चरसंज्ञक राशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ परदेशमें मृत्यु होता है। यदि षष्ठ और अष्टम भावमें क्रमसे बुध और मंगल यह स्थित होवें तौ वह पुरुष चोर होता है और उस चौरके पांव हाथ कट जाते हैं। यदि दशम और चतुर्थ भावमें क्रमसे सूर्य और मंगल स्थित होवे तौ पर्वतके शिखरसे गिरनेसे मरज होता है ॥ १९ ॥

अल्पायुर्योगाः ।

गुरुसितेंदुसुता निधनेऽथवा स्थिरभगाः सततं बहुकष्टदाः ॥
भवति शैशवदुष्टकृदष्टपो यदि शुभो भवगो विरतौ सुखी ॥२०॥

बृहस्पति शुक्र बुध यह अष्टम भावमें स्थित होवें अथवा स्थिरसंज्ञक राशिमें स्थित होवें तौ निरन्तर अतीव कष्टदायक होते हैं। यदि अष्टमभावपति शुभ ग्रह होकर एकादश भावमें स्थित होवे तौ बालपनमें दुष्ट फल करता है और पीछे सुख करता है ॥ २० ॥

यदि खलो लघुजीवनकृत्तथा शुभयुतो बहुजीवनदः स्मृतः ॥
निधनपः खलखेटयुतो व्ययारिभगतो यदि वा निधनेश्वरः॥२१॥
सतनुपो द्रुतमृत्युकरो भवेदथ षडष्टगतौ मृतिदेहपौ ॥
गतबलौ हि रणे परमार्तिदौ प्रबलिनौ विजयाय परं मतौ॥२२॥

अष्टमभावपति पाप ग्रह होकर अष्टम भावमें स्थित होवे तौ अल्पायु करता है और शुभ ग्रहके साथमें होवे तौ दीर्घायु देता है। यदि अष्टमभावपति पापग्रहसहित द्वादश वा षष्ठ भावमें स्थित होवे अथवा अष्टमभावपति लग्नपतिसहित द्वादश वा षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ शीघ्र मृत्यु करता है। यदि अष्टमभावपति और लग्नपति दोनों निर्बल होकर षष्ठ वा अष्टम भावमें स्थित होवें तौ संग्राममें परम कष्ट देते हैं और बलवान् होकर स्थित होवें तौ विजयके वास्ते माने गये हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥

यवनजातके मृत्युयोगाः ।

तनौ रविः सुते भौमो ह्यष्टमस्थः शनैश्चरः ॥
नवमे चंद्रमा यस्य लोभान्मृत्युर्न संशयः ॥ २३ ॥

यदि लग्नमें सूर्य, पञ्चममें मंगल, अष्टममें शनैश्चर और नवममें चन्द्रमा होवे तो लोभसे मृत्यु होता है इसमें संशय नहीं ॥ २३ ॥

दशमोऽङ्गारको जीवः सूर्यो यदि च सप्तगः ॥
योगेऽस्मिञ्जायते मृत्युस्तुरगान्मानवस्य च ॥ २४ ॥

यदि दशम मंगल और बृहस्पति स्थित होवें और सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे इस योगमें जो पुरुष उत्पन्न होवे उस पुरुषका मरण घोडेसे होता है ॥ २४ ॥

तनौ शनी रिपौ सूर्यश्चास्ते ज्ञो दशमे शशी ॥
नवमे भूसुतो मृत्युर्वृषभेणाथवाग्निना ॥ २५ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर आर षष्ठ भावमें सूर्य और सप्तम भावमें बुध और दशम भावमें चन्द्रमा और नवम भावमें मंगल स्थित होवै तौ वृष वा अग्निसे मरण होता है ॥ २५ ॥

षष्ठे वा दशमे भौमे धने चंद्रोऽष्टमेऽथवा ॥
भगंदरेण कुष्ठेन मृत्युरेव न संशयः ॥ २६ ॥

यदि षष्ठ भाव वा दशम भावमें मंगल और चन्द्रमा द्वितीय वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ भगन्दर वा कुष्ठसे मृत्यु होता है इसमें संशय नहीं ॥ २६ ॥

तनौ रविसुतो भौमः सूर्यः सप्तमगो भवेत् ॥
योगेऽस्मिञ्जायते मृत्युः खड्गेनैव तु निश्चितम् ॥ २७ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर और मंगल स्थित होवें और सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे, इस योगमें उत्पन्न होवे तौ तलवारसे मृत्यु होता है ॥ २७ ॥

रविरंगारकश्चैव चतुर्थभवने गतौ ॥
दशमे रविसूनुश्च गजान्मृत्युर्न संशयः ॥ २८ ॥

यदि सूर्य मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवें और शनि दशम भावमें स्थित होवे तौ गजसे निःसंशय मरण होता है ॥ २८ ॥

यदिक्रूरग्रहाक्रांतौ स्थानावष्टमपंचमौ ॥
तस्य बंधुवशान्मृत्युनादिष्टो मुनिपुंगवैः ॥ २९ ॥

यदि पापग्रहोंसे युक्त अष्टम और पंचम भाव होवें तौ उस पुरुषका मरण बन्धुजनोंके वशसें मुनिश्रेष्ठोंने कहा है ॥ २९ ॥

हिबुके भास्करो यस्य द्वितीयस्थो निशाकरः ॥
शूलिकायां भवेत्तस्य मृत्युरेव न संशयः ॥ ३० ॥

यदि चतुर्थ भावमें सूर्य और चन्द्रमा द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ शूलीके विषे निःसंशय मरण होता है ॥ ३० ॥

यस्य जन्मनि जायस्थाश्चंद्रभौमशनैश्चराः ॥
जायते परदारार्थं विनाशस्तस्य निश्चितम् ॥ ३१ ॥

जिसके जन्मसमय सप्तम भावमें चन्द्रमा मंगल और शनैश्चर स्थित होवें तौ उस पुरुषका परस्त्रीके निमित्त मरण होता है ॥ ३१ ॥

धर्मस्थाने गते चंद्रे कर्कमध्ये धने शनौ ॥
जलोदरेण रोगेण मृत्युरेव न संशयः ॥ ३२ ॥

यदि नवम भावमें चन्द्रमा स्थित होवे और कर्कराशिपर शनैश्चर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ जलोदररोगसे निःसंशय मरण होता है ॥ ३२ ॥

मूर्तौ गतौ तु मंदार्कौ भौमचंद्रौ तु सप्तमे ॥
द्वितीये यदि शुक्रस्तु मृत्युः स्त्रीकारणेन तु ॥ ३३ ॥

यदि शनैश्चर सूर्य यह लग्नमें स्थित होवें और मंगल चन्द्रमा यह सप्तम भावमें स्थित होवें और शुक्र द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ स्त्रीके कारणसे मरण होता है ॥ ३३ ॥

षष्ठे क्रूरग्रहो यस्य नवमे चाष्टमे यदा ॥
शत्रुमध्ये न संदेहो मृत्युरेव न संशयः ॥ ३४ ॥

यदि जिसके षष्ठ नवम अष्टम इन तीनों भावोंमें पाप ग्रह होवें तौ शत्रुओंके मध्यकर निःसंशय मरण होता है ॥ ३४ ॥

पातालगो यदा क्रूरो दशमस्थस्तपोधनः ॥
तदा तलप्रहारेण मृत्युस्तस्य प्रजायते ॥ ३५ ॥

यदि पाप ग्रह चतुर्थ भावमें स्थित होवे और बृहस्पति दशम भावमें स्थित होवे तौ तलवारके प्रहारसे मृत्यु होता है ॥ ३५ ॥

सुहृत्संस्थो यदा भौमो दशमस्थः प्रजायते ॥
वायुशूलाद्भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ॥ ३६ ॥

यदि मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ उत्पन्न हुए पुरुषका वातशूलसे मरण होता है ॥ ३६ ॥

चतुर्थगः शनिर्यस्य दशमस्थो धरात्मजः ॥
अपमृत्युर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ॥ ३७ ॥

यदि चतुर्थ भावमें शनैश्चर स्थित होवे और दशम भावमें मंगल स्थित होवै तौ उस पुरुषका अपमृत्यु होता है इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ३७ ॥

नवमे रजनीनाथो कर्कसंस्थो धने शनिः ॥
जलोदरेण रोगेण मृत्युः स्यात्तस्य निश्चितम् ॥ ३८ ॥

यदि चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे और कर्कराशिका शनैश्चर द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका मरण जलोदररोगसे होता है ॥ ३८ ॥

अन्ये योगाः ।

सूर्यर्क्षे रविजे कुजर्क्षगगुरौ ना पापयुक्ते भुज-
च्छेदोऽथोऽरिगृहे शनिः सितयुतो वैरीक्षितोऽङ्घ्र्येकहृत् ॥ ३९ ॥

यदि शनैश्वर सूर्यके राशिमें स्थित होवे और बृहस्पति मंगलके राशिमें युक्त होवे और शुभ ग्रहसे युक्त नहीं होवे तौ भुजाका छेदन होता है । यदि शनैश्वर शत्रुगृहमें स्थित होवे और शुक्रसहित होवे और शत्रुग्रहसे दृष्ट होवे तौ एक चरणके हरनेवाला होता है ॥ ३९ ॥

कर्केऽगौ हरिगेऽब्ज उद्धृतशिराश्छिद्रेंद्विनौ तक्कः
सदृग्घीनविधौ च शत्रुगृहगे पापत्रयाढ्येऽक्षिहृत् ॥ ४० ॥

यदि राहु कर्कराशिपर और चन्द्रमा सिंहराशिपर स्थित होवे तौ पुरुष कटे शिरवाला होता है। यदि अष्टम भावमें चन्द्रमा सूर्य दोनों स्थित होवें तौ पुरुष अपने-अंगको काटनेवाला होता है । यदि शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन चन्द्रमा शत्रुके गृहमें स्थित होवे और तीन पाप ग्रहोंसे युक्त होवे तौ नेत्र हरनेवाला होता है ॥ ४० ॥

ब्रह्मघ्नगोघ्नयोगौ ।

सूर्यारेक्षितपापराशिगविधौ स्याद्ब्रह्मघाती पुन-
र्मंदाढ्ये खलु गोवधी त्रितयकेऽजात्स्थूलघातः खगैः ॥
सौम्ये शत्रुगृहे रवीक्षितयुते षष्ठाष्टमेंदौ कजै-
र्नाशः शत्रुगृहे कुजारिगृहगे छिद्रे द्विजिह्वान्मृतिः ॥ ४१ ॥

यदि सूर्य मंगलसे देखा हुआ चन्द्रमा पाप ग्रहके राशिमें स्थित होवे तौ ब्रह्म-घाती होता है और वह चन्द्रमा यदि शनैश्वरसे युक्त होवे तौ गोवध करनेवाला होता है और शनैश्वरसे युक्त चन्द्रमा मेष वृष मिथुन इन राशियोंपर स्थित होवे तौ पक्षियोंसे स्थूल घात होता है और बुध शत्रुगृहमें स्थित होवे और सूर्यसे दृष्ट वा युक्त होकर चन्द्रमा षष्ठ वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ जलजीवोंसे नाश होता है । चन्द्रमा यदि मंगल वा शत्रुके गृहमें स्थित होकर षष्ठ भाव वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ सर्पसे मरण होता ॥ ४१ ॥

सिंहे कर्किणि सप्तमाष्टगविधौ साऽगौ विनश्येत्पशोः
सागौ स्वारिगृहे शनौ रिपुदृशा युक्तेऽतिपापी स्मृतः ॥
कर्केंदौ सशनौ शुभग्रहदृशा हीने तु खंजो भवेत्
भानौ धर्मगते शशीक्षितयुते शत्रोर्गृहे सर्पतः ॥ ४२ ॥

सिंह वा कर्कराशिका सप्तम वा अष्टम भावमें चंद्रमा स्थित होवे और राहुसे युक्त होवे तौ पशुसे नष्ट हो जाता है यदि राहुसहित शनैश्वर अपने शत्रुके गृहमें स्थित होवे और शत्रुग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ अतिपापी होता है। यदि शनैश्वर-सहित कर्कराशिपर चंद्रमा स्थित होवे और शुभ ग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ खज नाम लंगडा होता है। यदि सूर्य नवम भावमें शत्रुके गृहमें स्थित होवे और चन्द्रमासे दृष्ट वा युक्त होवे तौ सर्पसे मरण होता है ॥ ४२ ॥

अन्यत्सारावल्याम् ।

कन्यास्थयोरिनेंद्वोः पापेक्षितयोर्मृतिः स्वजनात् ॥
उभयोरप्यर्कशशिनोर्यदा तदा तोयमज्जनतः ॥ ४३ ॥

यदि कन्याराशिपर सूर्य वा चंद्रमा स्थित होवे और पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ स्वजनसे मरण होता है। यदि सूर्य चंद्रमा दोनों कन्याराशिपर स्थित होवें और पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ जलके डूबनेसे मरण होता है ॥ ४३ ॥

मृत्युर्जलाद्दिशेन्मंदे कुलीरे मकरे विधौ ॥
सवह्निशस्त्रजश्चंद्रे कुजक्षे पापमध्यगे ॥ ४४ ॥

यदि कर्कराशिपर शनैश्वर और मकरराशिपर चंद्रमा स्थित होवे तौ जलसे मरण होता है। यदि चंद्रमा पापग्रहोंके राशिमें स्थित होकर पाप ग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे तौ अग्निशस्त्रसे मरण होता है ॥ ४४ ॥

कन्यायां पापमध्यस्थे चंद्रे रक्तोत्थशोफजः ॥
शस्त्राग्निपाततो मृत्युः पापांशे सौरभे विधौ ॥ ४५ ॥

कन्याराशिपर पाप ग्रहोंके मध्यमें चंद्रमा स्थित होवे तौ रक्तविकार वा शोफ-विकारसे मरण होता है। यदि चंद्रमा शनैश्वरके राशिमें पाप ग्रहके नवांशमें स्थित होवे तौ शस्त्र और अग्नि गिरनेसे मरण होता है ॥ ४५ ॥

सौम्याऽदृष्टौ खलौ धर्मधीस्थौ बंधान्मृतिप्रदौ ॥
वधत्र्यंशे च पाशादौ हिमगुश्छिद्रगस्तथा ॥ ४६ ॥

यदि पाप ग्रह नवम और पंचम भावमें स्थित होवें और शुभ ग्रहसे दृष्ट नहीं होवें तौ बंधनसे मरण देते हैं। यदि लग्नमें पाशादि द्रेष्काण होवे और चंद्रमा अष्टम भावमें होवे तौ बंधनसे मरण होता है ॥ ४६ ॥

सपापे शीतगौ द्यूने मीनराश्युद्गमे रवौ ॥
मेषे शुक्रेऽगनाहेतुर्मरणं मंदिरे भवेत् ॥ ४७ ॥

पापग्रहसहित चन्द्रमा सप्तम भावमें स्थित होवे और मीनराशिके उदयमें सूर्य स्थित होवे और मेषराशिपर शुक्र स्थित होवे तौ स्त्रीके कारण मन्दिरमें मरण होता है ॥ ४७ ॥

शूलोद्भिन्नमृतिर्भौमे सुखेऽर्के वा यमेऽम्बरे ॥
त्रिकोणायगतैः पापैर्युगपत्सक्षशेंदुभिः ॥ ४८ ॥

यदि चतुर्थ भावमें मंगल स्थित होवे और सूर्य वा शनैश्चर दशम भावमें स्थित होवे तौ शूलसे मरण होता है । यदि क्षीण चंद्रमासहित पाप ग्रह नवम पंचम भावमें और एकादश भावमें स्थित होवें तौभी शूलसे मरण होता है ॥ ४८ ॥

रुधिरे सुखेऽथवार्के विपद्यमे क्षीणचंद्रसंयुक्ते ॥
पापैस्त्रिकोणलग्ने शूलप्रोतस्य निर्दिशेन्मरणम् ॥ ४९ ॥

यदि चतुर्थ भावमें मंगल वा सूर्य स्थित होवे और शनैश्चर क्षीण चन्द्रमासे युक्त होवे और पाप ग्रह त्रिकोण और लग्नमें स्थित होवें तौ शूलसे प्रोत मनुष्यका मरण होवे है ॥ ४९ ॥

चतुर्थे वांबरे भौमे क्षीणचंद्रसमन्विते ॥
मंदद्दष्टे मृतिं याति दंडकष्टेन ताडितः ॥ ५० ॥

चतुर्थ वा दशम भावमें क्षीण चंद्रमासहित मंगल स्थित होवे और शनैश्चरसे दृष्ट होवे तौ दंडसे ताडा हुआ मरणको प्राप्त होता है ॥ ५० ॥

क्षीणेंदुमंदार्किकुजैश्च रंध्रलग्नांबुखस्थैर्लगुडाहतांगः ॥
तैः कर्मलग्नात्मजधर्मसंस्थैर्धूमाग्निमृत्युर्गतिकुंठितांगैः ॥ ५१ ॥

क्षीण चंद्रमा, शनैश्चर, सूर्य, मंगल, अष्टमभाव, लग्नभाव, चतुर्थभाव, दशमभाव इनमें क्रमसे स्थित होवें तो लाठीसे हतशरीर होता है और वहही क्षीण चन्द्रमा, शनैश्चर, सूर्य, मंगल क्रमसे दशम, लग्न, पञ्चम, नवम इन भावोंमें स्थित होवें तौ चलनेसे थके हुए अंगोंकरके मरण होता है ॥ ५१ ॥

सुखास्तखस्थैः कुजसूर्यमंदैर्मृत्युस्तु शस्त्रानलभूपकोपात् ॥
तथाक्षतोत्थक्रिमिजोऽगनाशो मंदेंदुभौमैर्धनबंधुखस्थैः ॥ ५२ ॥

यदि चतुर्थ सप्तम दशम इन भावोंमें क्रमसे मंगल सूर्य शनैश्चर स्थित होवें तौ शस्त्र अग्नि तथा राजप्रकोपसे मृत्यु होती है । यदि शनैश्चर चंद्रमा मंगल क्रमसे द्वितीय चतुर्थ दशम भावमें स्थित होवें तौ कीडाओंके घावसे शरीरका नाश होता है ॥ ५२ ॥

सूर्येऽबरे सुखे भौमे मृत्युर्यानप्रपाततः ॥
यंत्रोत्पीडनया द्यूने भौमे खे ज्ञेऽस्तबंधुगे ॥ ९३ ॥

यदि दशम भावमें सूर्य होवे और चतुर्थ भावमें मंगल होवे तौ सवारीके गिरनेसे मरण होता है । यदि सप्तम भावमें मंगल होवे और दशम भावमें बुध होवे अथवा सप्तम चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ यंत्रकी पीडासे मरण होता है ॥ ९३ ॥

बलान्वितारवीक्षिते कृशे विधौ मृते शनौ ॥
कृमिक्षताद्गुदामयान्मृतिश्च शस्त्रदाहजा ॥ ९४ ॥

यदि बली मंगलसे दृष्ट क्षीण चन्द्रमा होवे और अष्टम भावमें शनैश्चर स्थित होवे तौ कीडाओंके घावसे तथा गुदाके रोगसे तथा शस्त्र वा अग्निसे मरण होता है ॥ ९४ ॥

सभौमे भास्करे द्यूने रंध्रसंस्थे शनैश्चरे ॥
पाताले शीतगौ क्षीणे मृत्युः पक्षिकृतो भवेत् ॥ ९५ ॥

यदि मंगलसहित सूर्य सप्तम भावमें स्थित होवे और शनैश्चर अष्टम भावमें स्थित होवे और चतुर्थ भावमें क्षीण चन्द्रमा स्थित होवे तौ पक्षीद्वारा मरण होता है ॥ ९५ ॥

लग्नधीमृत्युधर्मेषु सूर्यमंदकुजेंदुभिः ॥
मृत्युर्भवति शैलागकुड्याऽशनिनिपाततः ॥ ९६ ॥

यदि लग्न, पञ्चम, अष्टम, नवम इन भावोंमें क्रमसे सूर्य, शनैश्चर, मंगल चन्द्रमा स्थित होवें तौ पर्वतके शिखर वा भीति वा वज्रके गिरनेसे मरण होता है ॥ ९६ ॥

अत्र यस्योक्तयोगानां वक्ष्यमाणयोगानां मध्ये चान्यतमो न भवति न चाष्टमं स्थानं ग्रहयुतवीक्षितं भवति तदा तस्य द्वाविंशतिद्रेष्काणाधिपाष्टमराश्यधिपयोर्बलवान् तदुक्तदोषेण वातपित्तकफादिना प्रागुक्तहुताशतो वायुधादिना मृत्युर्वाच्यः ॥ ९७ ॥

जिसके कहे हुए और कहे जानेवाले योगोंके मध्यमें कोई योग नहीं होवे और अष्टम स्थानभी किसी ग्रहसे युक्त वा दृष्ट नहीं होवे तौ उसके बाईसवें द्रेष्काणके स्वामी और अष्टमभावपतिके स्वामी इनमें जो बली होवे उसीके कहे हुए वात-

पित्तकफादि दोषकरके वा पहिले कहे हुए अग्नि जल शस्त्र आदिसे मरण कहना चाहिये ॥ ५७ ॥

द्रेष्काणफलं होराप्रदीपात् उक्तं च ।

द्रेष्काणः कारणं मृत्योर्द्वाविंशो हि विलग्नतः ॥
तस्येश्वरे भनाथो वा सूचयेत्स्वगुणैर्मृतिम् ॥ ५८ ॥

लग्नसे जो कि बाईसवां द्रेष्काण है उसका स्वामी वा अष्टमभावपति अपने गुणोंसे मरण सूचित करता है ॥ ५८ ॥

बादरायणः ।

मेषाद्ये द्रेष्काणे क्रूरवीक्षितेन शुभदृष्टे ॥
वृश्चिककर्कटसर्पैर्द्विपदाद्यैः पित्तरोगैर्वा ॥ ५९ ॥

यदि मेषराशिका प्रथम द्रेष्काण होवे और पाप ग्रहसे दृष्ट होवे और शुभ ग्रहसे दृष्ट नहीं होवे तौ वीछू कँकैंटा सर्प तथा द्विपद जीव वा पित्तरोगसे मरण होता है ॥ ५९ ॥

अद्भिर्नक्राद्यैर्वा मृत्युर्जलजैर्द्वितीयद्रेष्काणे ॥
एवं तृतीयभागे तडागवापीप्रपानाद्वा ॥ ६० ॥

यदि मेषराशिका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ जलसे वा नक्र आदिक जलचारियोंसे मरण होता है और तीसरा द्रेष्काण होवे तौ तडाग बावडी आदिमें गिरनेसे मरण होता है ॥ ६० ॥

वृषभाद्ये द्रेष्काणे तुरगखरोष्ट्रैर्मृतिर्भवति पुंसाम् ॥
वापित्ताग्निचौर्यादजाविनोर्वा द्वितीयेऽत्र वा ॥ ६१ ॥

वृषके प्रथम द्रेष्काणमें घोडा गधा ऊंटोंसे पुरुषोंका मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ पित्त अग्नि चौरी तथा बकरी भेडोंके द्वारा मरण होता है६१

यानादिकपातात्संग्रामे वा मृतिर्वृषस्यांते ॥
मिथुनाद्ये द्रेष्काणे खलरोगः श्वासकासैर्वा ॥ ६२ ॥

यदि वृषका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ सवारी आदिके गिरनेसे अथवा संग्राममें मरण होता है और मिथुनका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ दुष्ट रोगोंसे वा श्वास वा खांसीसे मरण होता है ॥ ६२ ॥

महिषवृषयोर्मिथुनद्विपद्रेष्काणके निपाताद्वा ॥
तृतीयेन निपाताच्चतुष्पदाद्वा मृतिररण्ये ॥ ६३ ॥

यदि मिथुनका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ भैंसा बैलोंके द्वारा अथवा गिरनेसे मरण होता है, तृतीय द्रेष्काण होवे तौ गिरनेसे वा चौपायोंसे वा वनमें मरण होता है ॥ ६३ ॥

ककटकाद्ये मृत्युः कंठरुजामांद्यतोऽथवाऽस्त्रवशात् ॥
तत्रैव मध्यभागे दंडाभिहतस्य मुष्टिघाताद्वा ॥ ६४ ॥

यदि कर्कका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ कंठके रोग तथा मंदाग्निसे वा शस्त्र अस्त्रके द्वारा मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ दंड आदिसे मृत्युको प्राप्त होनेवालेका मरण होता है अथवा मुष्टिप्रहारसे मरण होता है ॥ ६४ ॥

तत्रैवांत्ये भागे मृत्युरतीसारतस्तथाऽजीर्णात् ॥
प्लीहवातगुल्मरोगैः प्रमेहमूर्च्छाभिघाताद्वा ॥ ६५ ॥

कर्कका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ अतीसार वा अजीर्ण रोगसे मरण होता है अथवा प्लीहा वातगुल्म आदि रोगोंसे वा प्रमेह मूर्च्छा आदि रोगोंसे मरण होता है ॥ ६५ ॥

सिंहाद्ये द्रेष्काणे विषदोषाद्बहुचराज्जलाद्वापि ॥
भवति हि मरणनिमित्तैनानाकारैस्तथा रोगैः ॥ ६६ ॥

यदि सिंहका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ विषदोष वा बहुत खानेवाले पशु आदिसे वा जलसे तथा अनेक प्रकारके मरणनिमित्त रोगोंसे मरण होता है ॥ ६६ ॥

जलजहृदयामयकृतो मृत्युः स्यात्सिंहमध्यमे ह्यंशे ॥
तस्यांते गुदरोगैर्विषेण शस्त्रेण वा भवति ॥ ६७ ॥

सिंहका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ जलजीव वा हृदयरोगसे किया मरण होता है और सिंहके तृतीय द्रेष्काणमें गुदारोग तथा विष वा शस्त्रसे मरण होता है ॥ ६७ ॥

कन्याद्ये चौरानलपक्षिभिरंतोऽथवा शिरोरोगात् ॥
दुर्गाहिदंष्ट्रितुरगैस्तृषयापि मृतिर्द्वितीयांशे ॥ ६८ ॥

यदि कन्याका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ चौर अग्नि पक्षी इनसे वा शिरके रोगसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें दुर्ग सर्प तथा डाढवाले जीव वा घोडाओंसे मरण होता है अथवा तृषासे मरण होता है ॥ ६८ ॥

करभखरशस्त्रतोयादपि शापात्स्त्रीकृतान्नपानाद्वा ॥
अंत्ये कन्या अंशे नृणां हि मृत्युः समादिष्टः ॥ ६९ ॥

कन्याके तृतीय द्रेष्काणमें ऊंट गधा शस्त्र जल इनसे वा शाप वा स्त्रीकृत अन्नपानसे पुरुषोंका मरण कहा है ॥ ६९ ॥

आद्यतुलाधर अंशेऽगनाचतुष्पदनिपातजो मृत्युः ॥
मध्ये तु जठररोगैरंत्येऽप्यालाबुपातेभ्यः ॥ ७० ॥

तुलाके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्रीके द्वारा वा चौपायेके द्वारा वा गिरनेसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें पेटके रोगोंसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें तुंबी आदिके ऊपर गिर जानेसे मरण होता है ॥ ७० ॥

अलिनः प्रथमे अंशे शस्त्रविषस्त्रीकृतान्नपानैः स्यात् ॥
मध्ये श्वादिभिरेणेभोष्ट्रादिघाततोऽत्ये मृतिर्भवति ॥ ७१ ॥

और वृश्चिकके प्रथम द्रेष्काणमें शस्त्र विष तथा स्त्रीकृत अन्नपानसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें कुत्ता आदिसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें मृग हाथी ऊंट आदिके प्रहारसे मरण होता है ॥ ७१ ॥

चापाद्ये शकृदनिलद्विषानलान्मध्यमे त्र्यंशे ॥
भवति हि जठरामयजैस्तृतीये जलजेन वा मृत्युः ॥ ७२ ॥

धनुके प्रथम द्रेष्काणमें पुरीष वा वातप्रकोपसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें विष या अग्निसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें पेटके रोगोंके विकारसे वा जलचारीसे मृत्यु होता है ॥ ७२ ॥

हरिशूकरादिराजभिरंतो मकरादिद्रेष्काणे स्यात् ॥
मध्ये जलजैः कशया अंते शस्त्राग्निचौरघातेन ॥ ७३ ॥

मकरके प्रथम द्रेष्काणमें सिंह सूकर आदिसे वा राजाओंके द्वारा मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें जलजीवोंसे वा कशा नाम हंटरसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें शस्त्र अग्नि वा चौरप्रहारसे मरण होता है ॥ ७३ ॥

कुंभाद्ये जलजस्त्रीविषादन्तो मदनगुदरुजा मध्ये ॥
अंत्ये मृत्युश्चतुष्पदमुखरोगैर्भवति द्रेष्काणे ॥ ७४ ॥

कुम्भके प्रथम द्रेष्काणमें जलचारी जीव स्त्री विष इनसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें कामाग्नि वा गुदाके रोगसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें चौपाये तथा मुखरोगोंसे मरण होता है ॥ ७४ ॥

मीनाद्ये संग्रहणात्प्रमेहगुल्मैरथ द्वितीयांशे ॥
कूर्पराज्जलरोगादर्शविमूत्रोद्भवोंऽत्येंऽशे ॥ ७५ ॥

मीनके प्रथम द्रेष्काणमें संग्रहणीरोगसे मरण होता है और द्वितीय द्रेष्काणमें प्रमेह वा गुल्मरोगसे मरण होता है और तृतीय द्रेष्काणमें कूर्पर अंगसे वा जलरोगसे वा अर्शरोगसे वा मूत्रकृच्छ्रसे मृत्यु होता है ॥ ७५ ॥

जातकोत्तमे काश्यपकृते ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे वा शुभवर्गेऽथ नीचभे ॥
नीचांशे क्रूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥ ७६ ॥

अपने उच्च राशिमें और अपने उच्च नवांशमें और शुभ षडर्गमें और नीच राशिमें और नीच नवांशमें और क्रूर षडर्गमें और मित्रराशिमें और मित्रनवांशमें ॥ ७६ ॥

वर्गोत्तमेऽरिभेर्यंशे स्वर्क्षे द्वादशधा क्रमात् ॥
फलमष्टमभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ ७७ ॥

वर्गोत्तम नवांशमें और शत्रुराशिमें और शत्रुनवांशमें और अपने राशिमें प्राप्त होकर ग्रह अष्टम भावका वारह प्रकारसे क्रमसे फल करता है वह फल यवनाचार्यने कहा है ॥ ७७ ॥

रविफलम् ।

भक्तिजाग्निप्रवेशेन जनह्रीतः प्रमादतः ॥
दावाग्नितो दंभकृतो दीपनेन विषादनात् ॥ ७८ ॥

अष्टमभावस्थित सूर्य अपने उच्च राशिमें स्थित होवे तौ भक्तिपूर्वक अग्निप्रवेशसे और उच्च नवांशमें होवे तौ जनलज्जासे और शुभ षडर्गमें होवे तौ प्रमादसे और नीच राशिमें होवे तौ दावाग्निसे और नीच नवांशमें होवे तौ दंभसे और क्रूर षड्वर्गमें होवे तौ जलनेसे और मित्रराशिमें स्थित होवे तौ विषभोजनसे और मित्रनवांशमें स्थित होवे तौ बंधनसे ॥ ७८ ॥

बंधनाच्चैव लोहाच्च रक्तकोपात्तथैव च ॥
क्षयकासादातपाच्च मृत्युर्मृत्युगते रवौ ॥७९ ॥

वर्गोत्तममें होवे तौ लोहसे और शत्रुराशिका होवे तौ रक्तप्रकोपसे और शत्रुनवांशमें होवे तौ क्षयकासरोगसे और अपने राशिमें स्थित होवे तौ आतप (घाम) से मरण होता है ॥ ७९ ॥

चंद्रफलम् ।

जलप्रवेशाद्धस्ताभिघातादसिनिपाततः ॥
स्त्रीहस्तात्पित्तकफतो दोषत्रयभवामयात् ॥ ८० ॥

अष्टमभावस्थित चंद्रमा अपने उच्चराशिमें होवे तौ जलप्रवेशसे और अपने उच्च-नवांशमें होवे तौ हाथके प्रहारसे और शुभ षड्गर्गमें होवे तौ तलवारके प्रहारसे और नीचराशिमें स्त्रीके हाथसे और नीचनवांशमें पित्तकफसे और क्रूर षडर्गमें सन्निपातो-त्पन्नरोगसे ॥ ८० ॥

जठराद्गुदरोगाच्च पशुपादाभिघाततः ॥
गुदरोगाच्छृंगघातात् क्षयाच्चंद्रेऽष्टमे मृतिः ॥ ८१ ॥

मित्रराशिमें पेटके रोगसे और मित्रनवांशमें गुदाके रोगसे और वर्गोत्तममें पशु-ओंके पादप्रहारसे और शत्रुराशिमें गुप्तरोगसे और मित्रनवांशमें शृंगप्रहारसे और अपने राशिमें क्षयरोगसे मरण होता है ॥ ८१ ॥

भौमफलम् ।

संग्रामाद्गोग्रहणतः स्वहस्तान्निजशत्रुतः ॥
द्विजपार्श्वादश्मपातात् काष्ठात्कूपप्रपाततः ॥ ८२ ॥

अष्टमभावस्थित मंगल अपने उच्च राशिमें होवे तौ संग्रामसे और उच्च नवांशमें गौके ग्रहणसे और शुभ षडर्गमें अपने हाथसे और नीचराशिमें अपने शत्रुसे और नीच नवांशमें ब्राह्मणके पार्श्वसे और क्रूर षडर्गमें पत्थरके प्रहारसे और मित्रराशिमें काष्ठप्रहारसे और मित्रनवांशमें कूपके गिरनेसे ॥ ८२ ॥

भित्तिपाताद्गुप्तरोगाद्विषभक्षणतस्ततः ॥
चौरप्रहरणाद्भौमे मृत्युः स्यान्मृत्युभावगे ॥ ८३ ॥

वर्गोत्तममें भीतिके गिरनेसे और शत्रुराशिमें गुप्तरोगसे और शत्रुनवांशमें विषभ-क्षणसे और अपने राशिमें चौरके प्रहारसे मरण होता है ॥ ८३ ॥

बुधफलम् ।

ज्वरात् कफविकारोत्थं वातरोगाद्व्रणेन च ॥
महामयात् प्रियजनवियोगाद्वदनामयात् ॥ ८४ ॥

यदि अष्टम भावमें स्थित हुआ बुध अपने उच्च राशिमें होवे तौ ज्वरप्रकोपसे और अपने उच्च नवांशमें कफविकारसे और शुभ षड्वर्गमें वातरोगसे और नीच राशिमें व्रण नाम घावसे और नीच नवांशमें महारोगसे और पाप षड्वर्गमें प्रियजनके वियो-गसे और मित्रराशिमें मुखके रोगसे पुरुषका मरण होता है ॥ ८४ ॥

नेत्ररोगाद्वायुरोगाद्वांधनेनोदरामयात् ॥
पादव्रणाद्बुधे मृत्युर्मृत्युभावगते क्रमात् ॥ ८५ ॥

अष्टमभावस्थित बुध मित्रनवांशमें स्थित होवे तौ नेत्ररोगसे और वर्गोत्तमनवांशमें वातरोगसे और शत्रुराशिमें बन्धनसे और शत्रुनवांशमें पेटके रोगसे और अपने राशिमें पांवके घावसे पुरुषका मरण होता है ॥ ८५ ॥

गुरुफलम् ।

नानारोगैः शूलरोगैः कर्णरोगात्तथैव च ॥
स्वजनाद्विषूचिकातोऽतीसारान्निजमृत्युतः ॥ ८६ ॥

यदि अष्टमभावस्थित बृहस्पति अपने उच्च राशिमें होवे तौ अनेक रोगोंसे और उच्च नवांशमें शूलरोगोंसे और शुभ षड्वर्गमें कर्णरोगसे और नीचराशिमें स्वजनसे और नीच नवांशमें विषूचिकारोगसे और पाप षड्वर्गमें अतीसाररोगसे और मित्रराशिमें अपने पुरुषके मरणसे पुरुषका मरण होता है ॥ ८६ ॥

रक्तकोपात्तुरगतो निजेशाद्राजकोपतः ॥
बहुभक्षणाद्भवेन्मृत्युर्जीवे स्यान्मृत्युभावगे ॥ ८७ ॥

यदि अष्टमभावस्थित बृहस्पति अपने मित्रके नवांशमें होवे तौ रक्तकोपसे और वर्गोत्तमनवांशमें घोडेसे और शत्रुराशिमें अपने स्वामीसे और शत्रुनवांशमें राजकोपसे और अपनी राशिमें बहुत भक्षण करनेसे पुरुषका मरण होता है ॥८७॥

भृगुफलम् ।

तृष्णातो मुखरोगाच्च दंतदोषात्त्रिदोषतः ॥
विषूच्या वनसत्वेनभुजंगाद्विषभक्षणात् ॥ ८८ ॥

यदि अष्टमभावस्थित शुक्र अपने उच्च राशिमें होवे तौ तृष्णासे और अपने उच्च नवांशमें मुखरोगसे और शुभ षड्वर्गमें दन्तदोषसे और नीच राशिमें त्रिदोषसान्निपातसे और नीच नवांशमें विषूचिकारोगसे और पाप षड्वर्गमें वनचारी जीवसे और मित्रराशिमें सर्पसे और मित्रनवांशमें विषभक्षणसे मरण होता है ॥ ८८ ॥

लूतया विषकंठेन सुरतोत्थप्रकोपतः ॥
बहुदुःखाद्भवेन्मृत्युर्मृत्युभावगते सिते ॥ ८९ ॥

यदि अष्टमभावस्थित शुक्र वर्गोत्तम नवांशमें होवे तौ लूता नाम मकरी फरजानेसे और शत्रुराशिमें विषकंठसे और शत्रुनवांशमें रतिभोगप्रकोपसे और अपनी राशिमें बहु दुःखसे पुरुषका मरण होता है ॥ ८९ ॥

शनिफलम् ।

बुभुक्षया लंघनेन तथा प्रायोपवेशनात् ॥
बंधुवर्गादरिकरात् क्षयतः पृथुदद्रुतः ॥ ९० ॥

यदि अष्टमभावस्थित शनैश्चर अपने उच्च राशिमें होवे तौ भूंखसे और अपने उच्च नवांशमें लंघनसे और शुभ षड्वर्गमें प्रायोपवेशन नाम अन्नत्यागसे और नीचराशिमें बन्धुवर्गसे और नीचवर्गसे और नीचनवांशमें शत्रुके हाथसे और पाप षड्वर्गमें क्षयरोगसे और मित्रराशिमें महादद्रुरोगसे पुरुषका मरण होता है ॥ ९० ॥

चटकैर्व्रणकोपेन हयपादाभिघाततः ॥
हस्तितः खरतो मृत्युर्मंदे स्यान्मृत्युभावगे ॥ ९१ ॥

अष्टमभावस्थित शनैश्चर अपने मित्रनवांशमें होवे तौ चटकपक्षियोंके द्वारा और वर्गोत्तम नवांशमें व्रण नाम घावके प्रकोपसे और शत्रुराशिमें घोडेके चरणप्रहारसे और शत्रुनवांशमें हाथीसे और अपनी राशिमें गधेसे पुरुषका मरण होता है ॥९१॥

होरासारेऽपि।

प्रजातानां हि जंतूनां मरणं येन केनचित् ॥
निमित्तपरतो ज्ञानं वक्ष्ये निर्याणलक्षणम् ॥ ९२ ॥

उत्पन्न हुए प्राणियोंका जिस किसी निमित्तसे मरण होता है उसका मरणलक्षणज्ञान कहेंगे ॥ ९२ ॥

लग्नादष्टमराशेः स्वभावदोषोद्भवं विजानीयात् ॥
निधनेशस्य नवांशस्थितराशिनिमित्तदोषजनितं वा ॥९३॥

लग्नसे जो कि अष्टम राशि है तिसके स्वभावदोषसे उत्पन्न हुआ मरण जाने, अथवा अष्टमभावपतिका जो कि नवांशस्थित राशि है उसके निमित्तदोषसे उत्पन्न मरण होता है ॥ ९३ ॥

मेषांशे मेषे वा ज्वरविषजठराग्निपित्तसंभवतः ॥
येन ग्रहेण युक्ते दृष्टे वा तस्य धातुदोषेण ॥ ९४ ॥

यदि अष्टम भावमें मेषनवांश वा मेषराशि स्थित होवे तौ ज्वर वा विष वा पेटकी अग्निसे वा पित्तप्रकोपसे पुरुषका मरण होता है, अथवा अष्टमभावस्थित मेषराशि वा मेषराशिनवांश जिस ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ उस ग्रहके धातुदोषसे मरण होता है ॥ ९४ ॥

वृषभे वृषभांशे वा त्रिदोषशोकपरास्त्रदाहाद्यैः ॥
ग्रहरहिते प्रोक्तफलं ग्रहयुक्ते तत्समानदोषेण ॥ ९५ ॥

यदि अष्टम भावमें वृषराशि वा वृषनवांश स्थित होवे तौ त्रिदोष वा शोक वा परशस्त्र वा दाह आदिकर मरण होता है। यदि अष्टमभावस्थित वृषराशि-

वा वृषभनवांश ग्रहसे हीन होवे तौ कहा हुआ फल ही होता है और किसी ग्रहसे युक्त होवे तौ उस ग्रहके समान दोषसे पुरुषका मरण होता है ॥ ९५ ॥

मिथुने मिथुनांशे वा श्वासकासोद्भवैश्च शूलाद्यैः ॥
कर्के कर्कांशे वा तन्मांद्यादरोचनाद्वापि ॥ ९६ ॥

यदि अष्टम भावमें मिथुनराशि वा मिथुननवांश होवे तौ श्वास कास वा शूल आदि रोगोंसे मरण होता है। यदि अष्टम भावमें कर्कराशि वा कर्कनवांश होवे तौ मंदाग्निसे वा अरुचिसे मरण होता है ॥ ९६ ॥

सिंहे सिंहांशे वा विस्फोटकशस्त्रज्वराद्यश्च ॥
कन्यायां कन्यांशे जठराग्निगृह्यकलहपातनाद्यैश्च ॥ ९७ ॥

यदि अष्टम भावमें सिंहराशि वा सिंहनवांश होवे तौ विस्फोटक (फोडा) वा शस्त्र वा ज्वर आदिसे मरण होता है। यदि अष्टम भावमें कन्याराशि वा कन्यानवांश होवे तौ जठराग्नि वा गुह्यरोग वा कलह वा पातन इत्यादिसे मरण होता है ॥ ९७ ॥

जूके तदंशके वा स्वबुद्धिदोषेण हन्यते पुरुषः ॥
ज्वरसन्निपातदोषैर्मरणं ब्रूयादशंकितो नूनम् ॥ ९८ ॥

यदि अष्टम भावमें तुलाराशि वा तुलाराशिनवांश होवे तौ अपनी बुद्धिके दोषसे पुरुष मृत्युको प्राप्त होता है, अथवा ज्वर वा सन्निपातदोषोंसे निःसंदेह होकर विद्वान् उस पुरुषका मरण कहे ॥ ९८ ॥

वृश्चिकराशौ चांशे पांडुग्रहणीग्रहादिदोषेण ॥
वृक्षजलशस्त्रकाष्ठैश्चापांशके चापयुते मृत्युः ॥ ९९ ॥

यदि अष्टम भावमें वृश्चिकराशि वा वृश्चिकनवांश होवे तौ पांडुरोग वा संग्रहणीरोग वा ग्रहादि दोषसे पुरुषका मरण होता है। यदि अष्टम भावमें धनुराशि वा धनुर्नवांश होवे तौ वृक्ष जल शस्त्र काष्ठ इनमेंसे किसीसे मरण होता है ॥ ९९ ॥

मकरे मकरांशे वा स्थूलान्नाऽरुचिबुद्धिसंभ्रमान्मृत्युः।
पापयुते व्याघ्राद्यैः सर्पाद्यैर्वा न संदेहः ॥ १०० ॥

यदि अष्टम भावमें मकरराशि वा मकरनवांश होवे तौ स्थूलान्नकी अरुचिसे वा बुद्धिभ्रांतिसे मरण होता है और यदि पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ व्याघ्र आदि वा सर्प आदि जीवोंसे निःसंदेह मरण होता है ॥ १०० ॥

कुंभे कुंभांशे वा व्याघ्रैः शस्त्रभुजंगमाद्यैर्वा ॥
श्वासज्वरक्षयकृतं मरणं ब्रूयाद्विशेषेण ॥ १ ॥

यदि अष्टम भावमें कुंभराशि वा कुंभनवांश होवे तौ व्याघ्रसे वा शस्त्र वा सर्प आदिसे अथवा श्वास ज्वर क्षय इनसे किया हुआ मरण विशेषकरके कहे ॥ १ ॥

मीने मीनांशे वा सर्पेण हतोऽध्वगस्तत्र ॥
अब्जैर्वा जलमध्ये जलधरकोपेन पीडितो मृत्युम् ॥ २ ॥

यदि अष्टम भावमें मीनराशि वा मीननवांश होवे तौ मार्गमें प्राप्त हुआ पुरुष सर्पसे मृत्युको प्राप्त होता है, अथवा जलके मध्यमें जलजीवोंसे वा मेघप्रकोपसे पीडित होकर मरणको प्राप्त होता है ॥ २ ॥

पूर्वोक्तमृत्युभागे शशिनि विलग्ने व्ययेऽथवा निधने ॥
जलयंत्रकारणैर्वा निधनं नृणां समुद्दिष्टम् ॥ ३ ॥

यदि चन्द्रमा लग्न वा द्वादश भाव वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ जलयंत्र-कारणोंसे मनुष्योंका मरण कहा है ॥ ३ ॥

अर्केन्दू लग्नगतौ द्विदेहलग्नेषु पापयुग्दृष्टौ ॥
कुरुतः प्राणवियोगं जलमध्ये निश्चितं ब्रूयात् ॥ ४ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों द्विस्वभावराशियोंपर लग्नमें स्थित होवें और पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवें तौ जलके मध्यमें प्राणवियोग करते हैं ऐसा पंडित निश्चय ही कहे ॥ ४ ॥

भौमार्कजभवनेऽब्जे पापद्वयमध्यगेन सौम्ययुते ॥
कन्यायां हिमगौ वा ज्वराग्निसन्निपातदोषेण ॥ ५ ॥

यदि मंगलकी राशिमें वा शनैश्चरके राशिमें चन्द्रमा स्थित होवे, अथवा कन्या-राशिमें चन्द्रमा होवे और दो पाप ग्रहोंके मध्यमें होवे और शुभ ग्रहसे युक्त न होवे तौ ज्वर अग्नि सन्निपात इन दोषोंसे मरण होता है ॥ ५ ॥

सौरे हिमगौ व्ययगे रिपुरंध्रगते सुखे वापि ॥
नियतं वारिनिधौ स्यान्निधनेशे पापमध्यरंध्रगते ॥ ६ ॥

यदि शनैश्चर चन्द्रमा द्वादश भावमें वा षष्ठ भावमें वा अष्टम भावमें वा चतुर्थ भावमें होवें और अष्टमभावपति दो पाप ग्रहोंके मध्यमें अष्टम भावमें स्थित होवे तौ नदी वा समुद्रमें निश्चय मरण होता है ॥ ६ ॥

चंद्रात्त्रिकोणसंस्थे पापैर्लग्नात्त्रिकोणसंस्थैर्वा ॥
उद्वेगबंधनाद्यैर्निधने भौमेन संयुक्ते ॥ ७ ॥

यदि चंद्रमासे नवम पञ्चम भावमें अथवा लग्नसे नवम पञ्चम भावमें पाप ग्रह स्थित होवें और अष्टम भाव मंगलसे युक्त होवे तौ उद्वेग वा बंधन आदिसे मरण होता है ॥ ७ ॥

राहुध्वजान्वितेऽर्के यामित्रे रंध्रसंस्थिते शुक्रे ॥
पापग्रहोदयगश्चेदुद्बंधनेन हन्यते पुरुषः ॥ ८ ॥

सूर्य यदि राहु वा केतुसे युक्त होकर सप्तम भावमें स्थित होवे और शुक्र अष्टम भावमें स्थित होवे और पाप ग्रह लग्नमें होवे तौ बंधनसे पुरुष मरणको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

पापद्वयमध्यगते होरेशे केंद्रसंस्थिते यस्य ॥
यःकश्चिन्निधनंगतो निधनं स्यादात्मकोपजनितं वा ॥ ९ ॥

यदि लग्नपति दो पाप ग्रहोंके मध्यमें स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे और कोई ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवे तौ स्वक्रोधसे उत्पन्न हुआ मरण होता है ॥ ९ ॥

अर्कोदयेऽर्कपुत्रे सुतरंध्रकुजे विधौ भाग्ये ॥
वृक्षाऽशनिकूटपातैर्योगे जनितस्य निर्दिशेन्मरणम् ॥ १० ॥

सूर्यके आश्रित लग्नमें शनैश्वर होवे और पञ्चम वा अष्टम भावमें मंगल होवे और नवम भावमें चंद्रमा होवे तौ इस योगमें उत्पन्न पुरुषका मरण वृक्ष वा वज्र वा कूट (पर्वत) शिखर वा घन वा हलाग्रके प्रहारसे कहे ॥ १० ॥

क्षीणेंदौ निधनस्थे सुखगे च शनौ च यामित्रे ॥
भौमे कुटुंबसंस्थे योगे जातस्य काष्ठघातेन ॥ ११ ॥

यदि क्षीण चंद्रमा अष्टम भाव वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे और शनैश्वर सप्तम भावमें स्थित होवे और मंगल द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ इस योगमें उत्पन्न हुए का मरण काष्ठप्रहारसे होता है ॥ ११ ॥

क्षीणेंदौ दशमं याते कुजर्क्षे भास्करे स्थिते ॥
चंद्रे मन्दगृहं याते विण्मध्ये मरणं भवेत् ॥ १२ ॥

यदि क्षीण चंद्रमा दशम भावमें स्थित होवे और मंगलके राशिमें सूर्य स्थित होवे और चंद्रमा शनैश्वरके राशिमें होवे तौ विष्ठाके मध्यमें मरण होता है ॥ १२ ॥

भौमे सुखेऽस्तगे वा मंदे दशमेऽष्टमे ग्रहः कश्चित् ॥
क्षितिपालकोपजनितं निधनं ब्रूयात्स्वशस्त्रदोषाद्वा ॥ १३ ॥

यदि मंगल चतुर्थ वा सप्तम भावमें स्थित होवे और शनैश्चर दशम भावमें होवे और अष्टम भावमें कोई ग्रह होवे तौ राजकोपसे उत्पन्न मरण वा अपने शस्त्रदोषसे मरण कहे ॥ १३ ॥

सुखदशमस्थैः पापैः क्षीणेंदौ रंध्रषष्ठरिःफे वा ॥
मृत्युर्यात्राकाले प्रपतनाच्छस्त्रदोषाद्वा ॥ १४ ॥

यदि पाप ग्रह चतुर्थ और दशम भावमें स्थित होवें और क्षीण चंद्रमा अष्टम वा षष्ठ वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ यात्राकालमें गिर जानेसे वा शस्त्रदोषसे मरण होता है ॥ १४ ॥

अर्ककुजौ व्ययसंस्थौ राहुः शशी सप्तमे गुरुः केंद्रे ॥
जातस्य हि मृतिं विद्यात्प्रशस्तभूमौ सुरालयोद्याने ॥१५॥

यदि सूर्य मंगल दोनों द्वादश भावमें स्थित होवें और राहु चंद्रमा सप्तम भावमें होवें और बृहस्पति केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ उत्पन्न हुए जीवका मरण श्रेष्ठ भूमि वा देवमंदिर वा वगीचामें जाने ॥ १५ ॥

रंध्रेशे जलभवने जलसंस्थे शत्रुरिःफभवने वा ॥
व्यालमृगोरगहेतोर्मृत्युः कूपेऽथवा गृहे भवति ॥ १६ ॥

यदि अष्टमभावपति जलराशि नाम कुंभ मीन कर्क मकर वृश्चिक तुला इन राशियोंमें स्थित होकर चतुर्थ भाव वा षष्ठ वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ सिंह मृग सर्प इनके कारणसे कूपमें वा गृहमें मरण होता है ॥ १६ ॥

शिखिसहितेऽष्टमराशौ निधनेशे केन्द्रगे व्यये पापे ॥
लग्नेशे हीनबले मरणं दुर्मार्गे रोगजनितं वा ॥ १७ ॥

यदि अष्टम भाव केतुसे युक्त होवे और अष्टमभावपति केन्द्रभावमें स्थित होवे और पाप ग्रह द्वादश भावमें स्थित होवे और लग्नपति निर्बल होवे तौ दुर्मार्गमें रोगजनित मरण होता है ॥ १७ ॥

विषघटिकायां जातो निधनं क्रूरैर्विषाग्निशस्त्रैर्वा ॥
निधनेश्वरे विषांशे क्रूरयुते तन्निमित्तदोषेण ॥ १८ ॥

यदि विषघटिकाओंमें पुरुषजन्मको प्राप्त होवे तौ क्रूर जीव वा विष अग्नि शस्त्र इनसे मरण होता है । यदि अष्टमभावपति नक्षत्रके उन अंशोंमें प्राप्त होवे जो

कि विषघटिकाओंसे युक्त होवे और पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ विषके निमित्तदोषसे मरण होता है[1] ॥ १८ ॥

भौमार्कजौ यदि परस्परभागसंस्थौ क्षेत्रेऽथवा निधनभेशयुते च केंद्रे ॥ तस्यावसानसमये क्षितिपालकोपाच्छूलादिनायुधशतैर्निधनं समेति ॥ १९ ॥

---

१ नक्षत्रविषघटिका आह मुहूर्तचिन्तामणौ-"खरामतो ३० ऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे खवेदतः ४० केरदतश्च ३२ सार्पभे । खवाणतो ५० ऽश्वे धृतितो १८ ऽर्यमाम्बुपे कृते २० भंगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ १ ॥ मनो १४ द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे कुपक्षतः २१ शैवकरेऽष्टि १६ तोऽजभे । युगाश्वितो २४ वुध्न्यभतोययाम्यभे खचंद्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ॥ २ ॥ मूलेऽङ्कबाणा ५६ द्विषनाडिकाः कृता वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः ॥ निघ्नाभभोगेन खतर्क ६० भाजिताः स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ३ ॥

नक्षत्रविषनाडिकाकोष्ठम् ।

नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.
घटिका	५१	२५	३१	४१	१५	२२	३१	२१	३३	३१	२१	१९	२२	२१
	५२	२६	३२	४२	१६	२३	३२	२२	३४	३२	२२	२०	२३	२२
	५३	२७	३३	४३	१७	२४	३३	२३	३५	३३	२३	२१	२४	२३
	५४	२८	३४	४४	१८	२५	३४	२४	३६	३४	२४	२२	२५	२४
ध्रुव	५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२	३०	२०	१८	२१	२०

नक्षत्र	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
घटिका	१५	१५	११	१५	५७	२५	२१	११	११	१९	१७	२५	३१
	१६	१६	१२	१६	५८	२६	२२	१२	१२	२०	१८	२६	३२
	१७	१७	१३	१७	५९	२७	२३	१३	१३	२१	१९	२७	३३
	१८	१८	१४	१८	६०	२८	२४	१४	१४	२२	२०	२८	३४
ध्रुव	१४	१४	१०	१४	५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

अथ तिथिविषघटिका आह वासिष्ठः-"तिथीषु नागाद्रिगिरीषु वारिधिर्गजाद्रिदिक्पावकदिग्विभाकराः । मुनीभसंख्या प्रतिपत्तिथेः क्रमात्परं विषं स्याद् घटिकाचतुष्टयम् ॥ १ ॥" अथ वारविषघटिका आह वृद्धगर्गः-"विंशच्चतुर्द्वादशदिक्च शैला वाणाश्च तत्त्वानि यथाक्रमेण । सूर्यादिवारेषु भवत्यनन्तरं नाडीविषाख्यं घटिकाचतुष्टयम् ॥ २ ॥

तिथिविषघटिकाकोष्ठम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	६	९	८	८	६	५	९	८	११	४	११	१३	८	९
१७	७	१०	९	९	७	६	१०	९	१२	५	१२	१४	९	१०
१८	८	११	१०	१०	८	७	११	१०	१३	६	१३	१५	१०	११
१९	९	१२	११	११	९	८	१२	११	१४	७	१४	१६	११	१२
१५	५	८	७	७	५	४	८	७	१०	३	१०	१२	७	८

वारविषघटिकाकोष्ठम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२१	५	१३	११	८	६	२६
२२	६	१४	१२	९	७	२७
२३	७	१५	१३	१०	८	२८
२४	८	१६	१४	११	९	२९
२०	४	१२	१०	७	५	२५

यदि मंगल शनैश्चर दोनों परस्पर नवांश वा राशिमें स्थित होवें अर्थात् मंगलके नवांश वा राशिमें शनैश्चर स्थित होवे और शनैश्चरके नवांश वा राशिमें मंगल होवे और केन्द्रमें अष्टमभावपति स्थित होवे तौ उस पुरुषके अन्तसमयमें राजाके क्रोधसे शूल आदि शस्त्रोंसे मरण प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

लग्ने शशी दिनकरे विवलेऽष्टमस्थे लग्नाद्व्ये सुखगतेऽपि च पापखेटे ॥ जातः स्वहस्तनयनच्युतदेहमृत्युः शस्त्रेण वा विषविषादकृतेन वा स्यात् ॥ २० ॥

यदि लग्नमें चंद्रमा और सूर्य निर्बल होकर अष्टम भावमें स्थित होवे और लग्नसे द्वितीय और चतुर्थ भावमें पाप ग्रह होवे तौ उत्पन्न हुआ प्राणी अपने हाथ और नेत्रोंसे हीन हुए देहके मरणवाला होता है वा शस्त्रसे वा विषके विषादकर कष्टसे मरण होता है ॥ २० ॥

लग्नसुतरंध्रभावयोगः स्याद्यत्र तत्र राशौ हि ॥
सार्द्धं सुतेन मरणं तथैव दारेण संयुतं तद्वत् ॥ २१ ॥

जिस किसी राशिमें लग्नभाव पञ्चम भाव अष्टम भाव इन भावोंके स्वामियोंका मरणकर्त्ता योग होवे तौ पुत्रसहित मरण होता है और तिसी प्रकार लग्नभाव सप्तम भाव अष्टम भाव इनके स्वामियोंका जिस किसी राशिमें मरणकर्त्ता योग होवे तौ स्त्रीसहित मरण होता है ॥ २१ ॥

मरणसमये मोहज्ञानम् ।

अनुदितनवांशकाले मोहो द्विगुणः शुभग्रहे लग्ने ॥
क्षेत्रोच्चांशकयुक्ते त्रिगुणो निधने च पापसंयुक्ते ॥ २२ ॥

लग्नमें जितने नवांश उदयको प्राप्त होनेको शेष रहे होवें उतने ही कालपर्यन्त मरणसमय मोह होवे और शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवे तौ वह मोहका समय दूना कहना चाहिये और यदि वह शुभ ग्रह अपनी राशि वा उच्च राशि वा अपने नवांशमें स्थित होकर लग्नमें स्थित होवे तौ वह मोहकाल तिगुना कहना चाहिये। अथवा पाप ग्रह अष्टम भावमें स्थित होवे तौ भी तिगुना कहना चाहिये ॥ २२ ॥

शवदाहयोगः ।

लग्नेशे जलभांशे जलराशौ चंद्रशुक्रयोर्दृष्टे ॥
व्ययनिधने वा पापे शवदहनं नास्य जातस्य ॥ २३ ॥

यदि लग्नपति जलराशिके नवांशमें स्थित होकर जलराशिमें स्थित होवे

और चन्द्रमा शुक्र इनसे देखा गया होवे और पाप ग्रह द्वादश वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ उत्पन्न हुए प्राणीका शवदाह नहीं होता है ॥ २३ ॥

परलोकप्राप्तिज्ञानम् ।

जीवक्षेत्रोदये लग्ने सुरलोकं गमिष्यति ॥
सूर्यभौमोदयक्षेत्रे तिर्यग्योनिषु संविशेत् ॥ २४ ॥
मंदराश्युदये क्षेत्रे क्षीणलोकं गमिष्यति ॥ २५ ॥

यदि बृहस्पतिका राशि वा उदय लग्नमें होवे तौ प्राणी स्वर्गलोकको जावेगा और सूर्य मंगल इनका उदय वा राशि लग्नमें होवे तौ प्राणी तिर्यग्योनियोंमें जावेगा और शनैश्चरका राशि वा उदय लग्नमें होवे तौ जीव क्षीणलोकको जावेगा ॥ २४ ॥ २५ ॥

मोक्षयोगः।

अष्टमाधिपतिरेव पुण्यगो जीवशुक्रबुधचंद्रवीक्षितः ॥
द्वारिकां प्रति मृतिं करोत्यसौ तस्य शुद्धमतिसंयुतस्य च॥२६॥

यदि अष्टमभावपति नवम भावमें स्थित होवे और बृहस्पति शुक्र बुध चंद्रमा इनमेंसे किसीकर देखा गया होवे तौ उस शुद्ध बुद्धिवाले जीवका मरण द्वारिकामें करता है ॥ २६ ॥

नैधनेशो यदा सौम्यग्रहो भवति यस्य नुः ॥
सौम्यैर्दृष्टं च निधनं तदा तीर्थे समादिशेत् ॥ २७ ॥

जिस पुरुषके अष्टमभावपति शुभ ग्रह होवे और अष्टम भाव शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ उस पुरुषका मरण तीर्थमें कहे ॥ ३७ ॥

जीवे प्रयागमरणं विधुना च काश्यां द्वारावतीं बुधसितौ यदि धर्मभावे ॥ द्रेष्काणपेऽप्यथ कुजे परदेशमृत्युं जीवे स्वभूमिमरणं प्रवदंति संतः ॥ २८ ॥

यदि अष्टमभावपति वा अष्टमभावद्रेष्काणपति होकर बृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे तौ प्रयागमें मरण होता है और अष्टमभावपति वा अष्टमभावद्रेष्काणपति होकर चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ काशीमें मरण होता है और इसी प्रकार होकर बुध शुक्र नवम भावमें स्थित होवें तौ द्वारावतीतीर्थमें मरण होता है और इसी प्रकार होकर मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ परदेशमें मरणको कहे और इसी प्रकार होकर बृहस्पति नवम भावमें होवे तौ अपनी भूमिमें मरणको कोई २ महात्मा कहते हैं ॥ २८ ॥

धर्मस्थितः कुजो मृत्युं मार्गे कुर्याच्च चंद्रजः ॥
शिवालये मृतिं दत्ते तीर्थ धर्मेश्वरे तथा ॥२९॥

यदि मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ मार्गमें मरणको कहे और बुध नवम भावमें होवे तौ शिवालयमें मरणको देता है और नवमभावपति नवम भावमें स्थित होवे तौ तीर्थमें मरण होता है ॥ २९ ॥

चंद्रो यदा नवमभावपतिर्मृतिस्थः सन्मृत्युरेव हरितीर्थ-
समाश्रमे स्यात् ॥ एवं भृगुर्भवति मुक्तिपुरीस्थितस्य जीवे
स्वगेहमरणं विधिना शुभेन ॥ ३० ॥

यदि नवमभावपति होकर चंद्रमा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ विष्णुसंबंधी तीर्थके आश्रममें शुभ मरण होता है । यदि नवमभावपति शुक्र होकर अष्टम भावमें होवे तौ मुक्तिपुरी काशीनगरीमें स्थित हुए पुरुषका मरण होता है और नवम-भावपति होकर बृहस्पति अष्टम भावमें होवे तौ शुभविधिसे अपने गृहमें मरण होता है ॥ ३० ॥

पुण्यभावपतिरेव मृत्युगो यस्य जन्मनि भवेच्छुभग्रहः ॥
सौम्यखेटसहितः खलुदृष्टस्तस्य मृत्युरुदितः खलु काश्याम् ॥३१॥

यदि जिस पुरुषके जन्मसमय नवमभावपति शुभ ग्रह होकर अष्टम भावमें स्थित होवे और शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ उस पुरुषका मरण काशीमें होता है ॥ ३१ ॥

त्रयो ग्रहा यदैकत्र जन्मराशिविवर्जिताः ॥
हित्वा पापसहस्राणि म्रियते जाह्नवीजले ॥ ३२ ॥

जन्मराशिसे वर्जित होकर तीन ग्रह एक राशिमें स्थित होवें तौ वह पुरुष हजार पापोंको त्यागकर गंगाजलके समीप मरणको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

धर्माधिपः पश्यति धर्मभावं लग्नाधिपः पश्यति चेद्विलग्नम् ॥
मृत्युं यदा पश्यति मृत्युनाथस्तदा सुतीर्थे नियतं च मृत्युः ॥३३॥

यदि नवमभावपति नवम भावको देखता होवे और लग्नपति लग्नको देखता होवे और अष्टमभावपति अष्टम भावको देखता होवे तौ शुभ तीर्थमें मरण होता है ॥ ३३ ॥

मृतिपतिः खलु कंटकगो यदा भवति जन्मनि यस्य शुभग्रहः ॥
स च सुतीर्थगतिं लभते पुमान् भवति मुक्तिरियं हरिनामतः ॥३४॥

यदि जिसके जन्मसमय अष्टमभावपति शुभ ग्रह होकर केन्द्रमें स्थित होवे तौ वह पुरुष सुन्दर तीर्थगमनको प्राप्त होता है और उस पुरुषकी हरिकीर्तनसे मुक्ति होवे है ॥ ३४ ॥

खलखेटो जन्मकाले द्यूनगो निधनेश्वरः ॥
यदा तदा भवेन्मार्गे मृत्युस्तस्य न संशयः ॥ ३५ ॥

जिसके जन्मसमय पाप ग्रह होकर अष्टमभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका मरण मार्गमें निःसंदेह होता है ॥ ३५ ॥

मृतिपतिस्तु खलो यदि लग्नगस्तनुपतिश्च विलोकयते यदा ॥
मृतिकरः सहसा स्वगृहे भवेन्निजजनै रहितः खलदृष्टियुक् ॥ ३६ ॥

यदि अष्टमभावपति पाप ग्रह होकर लग्नमें स्थित होवे और लग्नपति देखता होवे तौ अकस्मात् ही अपने गृहमें मरण करता है और पाप ग्रहसे दृष्ट होवे तो पुरुष मरणसमय स्वजनोंसे हीन होता है ॥ ३६ ॥

शनिः कर्कटके तिष्ठेन्मकरे भूमिनंदनः ॥
स चौरत्वमिह प्राप्य च्छेदं प्राप्नोति वै करे ॥ ३७ ॥

यदि शनैश्चर कर्कराशिमें और मंगल मकरराशिमें होवे तौ वह पुरुष चौरत्वको प्राप्त होकर हाथमें छेदनको प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥

कुंभे धनुषि मीने वा मिथुने चैव नित्यशः ॥
यदि पापग्रहाः सर्वे वज्रपातेन नश्यति ॥ ३८ ॥

यदि कुम्भ धनु मीन मिथुन इन राशियोंमें समस्त पाप ग्रह होवें तौ वह पुरुष वज्रप्रहारसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

मृत्युं करोति दूरं च मृत्युस्थानं गतोऽब्जजः ॥
वृथाशत्रुर्महाग्रीवो मरणं किल्बिषान्वितम् ॥ ३९ ॥

यदि बुध अष्टम भावमें स्थित होवे तौ दूर मरण करता है और वह पुरुष वृथा शत्रुओंवाला और बडी ग्रीवावाला होता है और उसका मरण कष्टयुक्त होता है ॥ ३९ ॥

मृत्युभावे शुभैर्दृष्टयुते वा स्वामिसंयुते ॥
सुतीर्थे स्वजनाक्रान्ते स्थिरांशे मृत्युमाप्नुयात् ॥ ४० ॥

यदिअष्टम भावमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट और युक्त होवे अथवा स्वामीसे युक्त-

होवे तौ वह पुरुष अच्छे तीर्थमें मरणको प्राप्त होता है और अष्टम भावमें स्थिर राशिका नवांश होवे तौ स्वजनोंसे युक्त देशमें मरणको प्राप्त होता है ॥ ४० ॥

मरणभूमिज्ञानं वराहमतेन ।

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौ योगेक्षणादिभिरतः परिकल्प्यमेतत् ॥ मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः स्वेशेक्षिते द्विगुणतस्त्रिगुणः शुभैश्च ॥ ४१ ॥

जन्मसमय लग्नमें जो नवांशक होवे उसका जो स्वामी ग्रह होवे उस ग्रहसे जो राशि युक्त होवे उस राशिकी जो योग्य भूमि होवे उस भूमिमें मरणको प्राप्त होता है जैसे मेष होवे तौ बकरी भेडोंके जगह, वृष होवे तौ बैल ढोरोंके जगह, मिथुन होवे तौ गृहके जगह, कर्क होवे तौ कूपके समीप, सिंह होवे तौ वनके जगह, कन्या होवे तौ कूपके समीप, तुला होवे तौ बाजार दुकानके समीप, वृश्चिक होवे तौ छिद्रके जगह, धनु होवे तौ घोडोंके जगह, मकर होवे तौ जलके समीप, कुंभ होवे तौ गृहके जगह, मीन होवे तौ जलके समीप पुरुष मरणको प्राप्त होता है । इस कथनसे यहभी जानना कि जिनका मृत्युयोगोंमें जलादिमें मरण कहा है तिनका मृत्यु तौ जलादिकमें ही होता है उन पुरुषोंका मरण इस प्रकार राशिवशसे भूमिप्रदेशमें नहीं कहना चाहिये । वह लग्ननवांशपति जिस राशिमें स्थित होवे उस राशिमें जिस किसी ग्रहके साथ लग्ननवांशपतिका योग होवे तौ उस ग्रहकी योनिभेदाध्यायमें जो भूमि कही है उसी भूमिमें मरण होता है अथवा जो ग्रह लग्न नवांशपतिको देखता होवे और आदिशब्दसे लग्ननवांशपति जिसके नवांशमें स्थित होवे उसकी जो भूमि कही है तिसमें मरणको प्राप्त होता है । यदि बहुतसी भूमियोंका होना पाया जावे तौ बली ग्रहके सकाशसे मरण भूमि कहनी चाहिये।यहांपर ग्रहकी भूमि वह जाननी चाहिये जो कि ग्रहके स्वराशिकी भूमि है और जिस ग्रहके दो राशि हैं उसका जो मूलत्रिकोणराशि है उसकी जो भूमि है वह भूमि उस ग्रहकी जाननी चाहिये । जैसे सूर्यकी राशि सिंह, तिसकी भूमि वन, चन्द्रमाका कर्क राशितिसकी भूमि जलसमीप, मंगलका मूलत्रिकोणराशि मेष तिसकी भूमि भेड बकरीकी जगह, बुधका मूलत्रिकोणराशि कन्या तिसकी भूमि जलसमीप, बृहस्पतिका मूलत्रिकोण राशि धनु तिसकी भूमि घोडोंकी जगह, शुक्रका मूल त्रिकोण राशि तुला तिसकी भूमि दूकानकी जगह,शनैश्चरका मूलत्रिकोण राशि कुंभ तिसकी भूमि गृहकी जगह, इसी प्रकार इससे औरभी विचारना चाहिये । लग्नके जितने नवांश उदयको प्राप्त होनेको शेष रहे होवें तिनके मिलनेसे जितना काल होवे उतने कालपर्यन्त मृत्युसमय मोह होवे है । यदि लग्न अपने स्वामीसे दृष्ट होवे तौ

वह मोहकाल द्विगुण होता है और लग्न शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ वह मोहकाल त्रिगुण होता है और स्वामी शुभ ग्रह दोनोंसे यदि लग्न दृष्ट होवे तौ वह मोह-समय छः गुण होता है ॥ ४१ ॥

मृतस्य शरीरपरिणामज्ञानं वराहमतेन।

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशोषैर्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गैर्विडन्तः ॥ इति शवपरिणामश्चिंतनीयं यथोक्तं पृथुविरचितशास्त्राद्गत्यनूकादिचिंत्यम् ॥ ४२ ॥

यदि अष्टम भावमें अग्निद्रेष्काण अर्थात् शुभ ग्रहोंका द्रेष्काण होवे और पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ मृतकके शवका अन्त भस्म नाम अग्निसंस्कारसे होता है और अष्टम भावमें जलद्रेष्काण अर्थात् शुभ ग्रहोंके द्रेष्काण होवे और शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ मृतकके शवका अन्त संक्लेद नाम जलसंस्कारसे होता है और अष्टम भावमें मिश्रद्रेष्काण अर्थात् पापग्रहयुक्त शुभ ग्रहका द्रेष्काण अथवा शुभग्रहयुक्त पापग्रहका द्रेष्काण होवे तौ न अग्निसंस्कारसे और न जलसंस्कारसे किन्तु सूखनेसे मृतकके शवका अन्त होता है और अष्टम भावमें सर्पद्रेष्काण होवे तौ मृतकके शवका विष्ठा-रूप अन्त होता है अर्थात् कुत्ता गीदड आदिसे भक्षण किया जाता है। कर्कके प्रथम द्वितीय दोनों द्रेष्काण और वृश्चिकके प्रथम द्वितीय दोनों द्रेष्काण और मीनका अन्तद्रेष्काण यह सर्पसंज्ञक हैं। इस प्रकार मृतकजनोंके शवका अन्त विचारना चाहिये। पृथुविरचित शास्त्रसे जीवका गत्यनूकादि विचारना चाहिये अर्थात् मृतककी क्या गति होवेगी और उत्पन्न हुआ जीव कहांसे आया है और आदि-शब्दसे यहभी जानना कि जिस लोकसे आया है वहां कैसा रहा और जहां जायगा तहां कैसा रहेगा इत्यादि बातेंभी विचारनी चाहिये ॥ ४२ ॥

गत्यनूकादिज्ञानं वराहः।

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः ॥ दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितत्र्यंशनाथाः प्रवरसमनिकृष्टांस्तुंगह्रासादनूके ॥ ४३ ॥

सूर्य चन्द्रमा इन दोनोंमें जो बलसे युक्त होवे उसके द्रेष्काणके स्वामी होकर बृहस्पति, चन्द्रमा शुक्र, सूर्य मंगल, शनैश्चर बुध यह क्रमसे स्वर्गलोक, पितृलोक, तिर्यग्लोक, नरकलोक इनको करते हैं और तिनमेंभी उच्च नीचके हिसाबसे उत्तम, मध्यम, हीन करते हैं। भाव यह है कि सूर्य चंद्रमामें जो बली होवे उसका द्रेष्काण-पति बृहस्पति होवे तौ स्वर्गलोकसे, चंद्रमा शुक्र होवें तौ पितृलोकसे, सूर्य मंगल

होवें तौ तिर्यग्लोकसे, शनैश्चर बुध होवें तौ नरकलोकसे आया हुआ प्राणी होता है। यदि वह ग्रह उच्च होवे तौ उस लोकमें जीव उत्तम होता है, उच्चसे भ्रष्ट होवे तौ मध्यम होता है और नीच होवे तौ नीच होता है यह फल पूर्वजन्ममें जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

मृतगतिज्ञानम् ।

गतिरथ रिपुरंध्रे त्र्यंशपोऽस्तास्थितो वा गुरुरथ रिपुकेन्द्र-च्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थः ॥ उदयति भवनेऽन्त्ये सौम्यभागे च मोक्षो भवति यदि वलेन प्रोज्झितास्तत्र शेषाः ॥ ४४ ॥

जिसके जन्मसमय जन्मलग्नसे षष्ठ अष्टम सप्तम इन भावोंमें जो ग्रह स्थित होवें तिनमें जो बली होवे उस ग्रहके लोकमें जन्मे हुएकी मरणानन्तर गति होवे है। यदि जन्मलग्नसे षष्ठ सप्तम अष्टम यह भाव ग्रहवर्जित होवे तौ षष्ठ भाव और अष्टम भावमें जो द्रेष्काण होवे उनके जो स्वामी होवें तिनमें जो बली होवे उस ग्रहके लोकमें मरणानन्तर गमन होता है। यदि उच्चराशिमें स्थित होकर बृहस्पति लग्नसे षष्ठ भाव केंद्रभाव अष्टम भाव इनमें स्थित होवे तौ जीवका मोक्ष होता है अथवा मीनराशि शुभ नवांशसे युक्त होकर लग्नमें प्राप्त होवे और तिसमें बृहस्पतिवर्जित शेष ग्रह वलसे हीन होकर स्थित होवें तौ मोक्ष होता है ॥ ४४ ॥

मोक्षयोगो जन्मलग्नान्मरणलग्नाच्च ज्ञेयः तथाच लघुजातके ।

षष्ठाष्टमकंटकगो गुरुरुच्चो वावसानलग्ने वा ॥
शेषैरवलैर्जन्मनि मरणे मोक्षगतिमाहुः ॥ ४५ ॥

यदि जन्मसमय और मरणसमयमें. उच्च होकर बृहस्पति षष्ठ अष्टम केन्द्र इन भावोंमें स्थित होवे, अथवा मीनराशि लग्नमें होवे और तिनमें बृहस्पतिवर्जित शेष निर्वल ग्रह स्थित होवे तौ मोक्षगति महात्मा कहते हैं ॥ ४५ ॥

संहितास्कंधेन ग्रहमुक्तिप्रकरणे देशा निरूपितास्तेषु यानि तीर्थानि तेषु मृतिर्वक्तव्या तदुक्तं होराचिंतामणौ ।

न स्युर्नैर्याणका योगाः प्रोक्ता मृत्युद्रकाणजाः ॥
वलिनः केंद्रषष्ठाष्टद्यूने स्युर्मोक्षहेतवः ॥ ४६ ॥

जिसके कहे हुए निर्याणके योग नहीं होवें उसके अष्टम भावका द्रेष्काणपति वली होकर केन्द्र षष्ठ सप्तम इन भावोंमें स्थित होवे तौ मोक्षका हेतु होता है ॥ ४६ ॥

रविर्मोक्षदृकाणेशो रेवापूर्वतटे मृतिः ॥
शोणस्य यमुनायाश्च कूले दक्षिणके मृतिः ॥ ४७ ॥

यदि ऐसा मोक्षद्रेष्काणपति सूर्य होवे तौ रेवानदीके पूर्वतट अथवा शोणके वा यमुनाके दक्षिणतटमें मरण होता है ॥ ४७ ॥

चंद्रो मोक्षदृकाणेशस्तदा शोणोत्तरे तटे ॥
अयोध्यायां सरस्वत्यां वेत्रवत्यामथापि वा ॥ ४८ ॥

यदि ऐसा मोक्षद्रेष्काणपति चन्द्रमा होवे तौ शोणके उत्तरतट अथवा अयोध्या वा सरस्वती वा वेत्रवतीमें मरण होता है ॥ ४८ ॥

भौमे चैव तु कृष्णायां गोदावर्यां च नर्मदा ॥
तीर्थे मृतिर्भवेत् फल्गुतीर्थे मंदाकिनीतटे ॥ ४९ ॥

यदि इस प्रकार मोक्षद्रेष्काणपति मंगल होवे तौ कृष्णा वा गोदावरी वा नर्मदा-तीर्थ वा फल्गुतीर्थ वा गंगाके तटपर मरण होता है ॥ ४९ ॥

बुधश्चैव दृकाणेशो प्राप्य गंगां च कौशिकीम् ॥
गंभीरां चापि वासिष्ठीं सिंधौ वा लोहिते मृतिः ॥ ५० ॥

यदि इस प्रकार मोक्षद्रेष्काणपति बुध होवे तो गंगा वा कौशिकी वा गंभीर वा वासिष्ठी नदीको प्राप्त होकर मरण होता है अथवा सिन्धुमें वा लोहितमें मरण होता है ॥ ५० ॥

जीवे मोक्षदृकाणेशे सिंधुं वा मथुरां पुरीम् ॥
विपाशां प्राप्य मरणं निश्चितं यदि मानवः ॥ ५१ ॥

यदि इसी प्रकार मोक्षद्रेष्काणपति बृहस्पति होवे तौ सिन्धु वा मथुरापुरी वा विपाशानदीको प्राप्त होकर मनुष्य मरणको प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥

काशीमैरावतीं कांचीं गंगां रामपुरीं तथा ॥
गुरुः केंद्रगतः स्वोच्चो प्राप्य मृत्युं प्रयच्छति ॥ ५२ ॥

यदि अपने उच्च राशिमें स्थित होकर बृहस्पति केन्द्रभावमें होवे तौ काशी वा ऐरावती वा कांची वा गंगा वा रामपुरीको प्राप्त करके मनुष्यको मरण होता है॥५२॥

शुक्रः शतद्रुं संप्राप्य चंद्रभागामिरावतीम् ॥
गंगां च देविकां वापि मृत्युं यच्छति तुंगगः ॥ ५३ ॥

यदि इसी प्रकार उच्चराशिस्थ मोक्षद्रेष्काणपति शुक्र होवे तौ शतद्रु वा चंद्रभागा वा इरावती वा गंगा वा देविकाके प्रति मरण देता है ॥ ५३ ॥

शनौ प्रभासे मृत्युः स्यात्कुरुक्षेत्रे वटेश्वरे ॥
सरस्वत्यां दृषद्वत्यामित्याहुः पूर्वसूरयः ॥ ५४ ॥

यदि इसी प्रकार मोक्षद्रेष्काणपति शनैश्चर होवे तौ प्रभासक्षेत्र वा कुरुक्षेत्र वा वटेश्वर वा सरस्वती वा दृषद्वतीमें मरण होता है ऐसा पूर्व पंडितनये कहते है ॥ ५४ ॥

अष्टमस्थानां रव्यादीनामवाधिवर्षाणि हिल्लाजः ।

छिद्रे स्त्रियामृतिमिनो हिमगुः षडब्दे नाशं कुजो विदिपहाक्षियसेऽथ सौम्यः ॥ मन्वब्दके धनलयं गुरुरिंदुरामे रोगं सितोभ्रसमके स्वपराक्रमं च ॥ ५५ ॥

यदि अष्टम भावमें सूर्य होवे तौ स्त्रीका मरण करता है और चन्द्रमा होवे तौ छः वर्षमें नाश करता है और मंगल होवे तौ बाईसवें वर्षमें विपत्ति होवे है और बुध होवे तौ चौदह वर्षमें धनका नाश करता है बृहस्पति होवे तौ इकतीसवें वर्षमें रोग करता है और शुक्र होवे तौ दशवें वर्षमें धन और पराक्रम करता है ॥ ५५ ॥

अष्टमभावे राशिफलम् ।

मेषेऽष्टमस्थे निधनं नराणां भवेद्विदेशाद्भजनाश्रितानाम् ॥
कथासु स्मृत्यां च हरेःस्थितानां महाधमानामपि दुष्कृतानाम् ॥ ५६ ॥

यदि मेषराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ भजनाश्रित जनोंका मरण विदेशसे होता है और वह जन महानीच और दुष्ट होकर भी विष्णुकी कथा और स्मरणमें तत्पर हो जाते हैं ॥ ५६ ॥

वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेष्मकृताद्विकारात् ॥
हयासनाद्वाथ चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा हृष्टजनादृतानाम् ॥ ५७ ॥

यदि वृषराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ गृहमें कफकृतविकारसे वा घोडेके चढनेसे वा चौपायेसे हर्षित जनोंसे आदरको प्राप्त होनेवाले जनोंका रात्रिमें मरण होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयराशौ हि भवेन्नराणां मृतिस्थिते मृत्युरनिष्टसंगात् ॥
स्नेहोद्भवे वासरसंभवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात् ॥ ५८ ॥

यदि मिथुनराशि अष्टम भावमें स्थित होते तौ अप्रियके संगसे वा स्नेहसंभव वा गुदप्रकोपसे वा प्रमेहरोगसे मरण होता है ॥ ५८ ॥

कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसंगात्कीटात्तथा चैव विभीषणाद्वा ॥
भवेद्विनाशोऽपरहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य नूनम् ॥ ५९ ॥

यदि कर्कराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ जलके संगसे वा भयंकर कीडेसे वा पराये हाथसे विदेशवासी जनका मरण होता है ॥ ५९ ॥

सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद्विनाशो मनुजस्य सम्यक् ॥
व्यालोद्भवो[1] वापि वनाश्रितस्य चौरोद्भवो वाथ चतुष्पदोत्थः ॥ ६० ॥

यदि सिंहराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ सर्पसे वा सिंहसे वा चौरोंसे वा चौपायेसे वनमें रहनेवाले मनुष्यका मरण होता है ॥ ६० ॥

कन्या यदा चाष्टमगा विलग्नात् तदा स्ववित्तान्मनुजस्य विद्यात् ॥
स्त्रीणां हि हिंस्राद्विषप्राशनाद्वा स्त्रीणां कृते च स्वगृहाश्रितस्य ॥ ६१ ॥

यदि कन्याराशि लग्नसे अष्टम भावमें स्थित होवे तौ अपने धनसे वा स्त्रियोंके मध्यमें वा हिंसक जीवकसे वा विषभोजनसे वा स्त्रियोंके निमित्त गृहमें स्थित हुए पुरुषका मरण होता है ॥ ६१ ॥

तुलाधरे चाष्टमगे च मृत्युर्भवेन्नराणां द्विपदोत्थ एव ॥
निशागमे संगकृतोपवासाद्विलंबिकोत्थोऽप्यथवा प्रपातात् ॥ ६२ ॥

यदि तुलाराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ द्विपदजीवसे अथवा रात्रिमें अथवा संगकृत किसी उपवाससे वा किसी विलम्बको प्राप्त हुए कार्यसे वा गिर जानेसे मरण होता है ॥ ६२ ॥

स्थानेऽष्टमस्थेऽष्टमराशिसंगे नृणां विनाशो वदनोद्भवेन ॥
रोगेण वा कीटसमुद्भवश्च स्वस्थानसंस्थस्य विषोद्भवो वा ॥ ६३ ॥

यदि वृश्चिकराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ स्थानपर स्थित हुए पुरुषोंका विनाश मुखके रोगसे होता है अथवा अपने स्थानपर स्थित हुए पुरुषका मरण कीडोंसे वा विषसे होता है ॥ ६३ ॥

चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युः स्वसंस्थासरिताश्रितानाम् ॥
गुल्मोद्भवे नाभिगदेन वापि चतुष्पदोत्थश्च विसंस्थलोत्थः ॥ ६४ ॥

यदि धनुराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ अपने स्थान वा नदियोंपर आश्रित जनोंका मरण गुल्मरोगसे वा चौपायोंसे वा बुरे स्थलसे मरण होता है ॥ ६४ ॥

मकरो रन्ध्रगेहस्थो जलजन्तुमृतिप्रदः ॥
विद्यावांश्च गुणी प्राज्ञः कामी च विततोदरः ॥ ६५ ॥

यदि मकरराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तौ जलजीवसे मरण होता है, और वह पुरुष विद्यायुक्त और गुणी तथा विद्वान् और कामी तथा बडे पेटवाला होता है ॥ ६५ ॥

---

1 व्यालो दुष्टगजे सर्पे खले श्वापदसिंहयोरिति विश्वमेदिन्यौ ।

घटेऽष्टमस्थे तु भवेद्विनाशो वैश्वानरप्रायगतस्य जंतोः ॥
नानाद्रवैर्वा द्रवजैर्विकारैर्मृत्युर्भवेद् ग्रामगतस्य नूनम् ॥ ६६ ॥

यदि कुम्भराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तो अग्निमें बहुधा प्राप्त हुए जन्तुका मरण होता है और ग्राममें प्राप्त हुए मनुष्यका नाना द्रव और द्रवसे उत्पन्न हुए विकारोंसे मरण होता है ॥ ६६ ॥

मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच्च मृत्युर्नृणामतीसारकृतात्सुकष्टात् ॥
पित्तज्वराद्वा सलिलभयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् ॥६७॥

यदि मीनराशि अष्टम भावमें स्थित होवे तो मनुष्योंका मरण अतीसारने किये हुए कष्टसे वा पित्तज्वरसे वा जलरोगसे वा रक्तप्रकोपसे वा शस्त्रसे होता है ॥ ६७ ॥

अष्टमेशस्य भावफलमाह वृद्धयवनः ।

अष्टमपे लग्नगते बहुविघ्नैर्दीर्घरोगभृत्स्तेनः ॥
इष्टानुवादनिरतो लक्ष्मीं लभते नृपतिसंगेन ॥ ६८ ॥

यदि अष्टमभावपति लग्नमें स्थित होवे तो पुरुष बहुतसे विघ्नोंसे युक्त और दीर्घ रोगवाला तथा चोर और इष्टानुवादमें युक्त और राजाके संगसे लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ ६८ ॥

निधनपतौ धनभवने धनलाभो नैव स्यान्नरश्चौरः ॥
क्रूरे सौम्येऽतिशुभमंते क्षितिपालतो मरणम् ॥ ६९ ॥

यदि अष्टमभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे और पाप ग्रह होवे तो धनलाभ नहीं होवे और वह नर चोर होता है और शुभ ग्रह होवे तो अति शुभ फल होता है, अन्तमें राजाके प्रकोपसे मरण होता है ॥ ६९ ॥

निधनपतिर्यदि सहजे बंधुविरोधात्सुहृद्विरोधी च ॥
व्यंगो दुर्बललोलः सोदररहितो भवत्यथवा ॥ ७० ॥

यदि अष्टमभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तो बंधुजनोंके विरोधसे मित्रजनोंसे विरोध करता है और वह पुरुष अंगहीन तथा दुर्बल और चंचल होता है अथवा सहोदर भ्रातासे वर्जित होता है ॥ ७० ॥

निधनेशे तुर्यगते पितृतोऽन्यायाल्लभेत तल्लक्ष्मीम् ॥
पितृपुत्रयोश्च युद्धं पिता च रोगान्वितो भवति ॥ ७१ ॥

यदि अष्टमभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे तो पितासे अन्यायपूर्वक

पिताकी लक्ष्मीको प्राप्त होता है और पिता पुत्र दोनोंका परस्पर युद्ध और उसका पिता रोगी होता है ॥ ७१ ॥

छिद्रपतौ तनयस्थे सुतविरहितः शुभे ससुतः ॥
जातोऽपि नैव जीवति जीवत्यपि कितवकर्मरतः ॥ ७२ ॥

यदि अष्टमभावपति पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ पुत्रहीन होता है और शुभ ग्रह होवै तौ पुत्रसहित होता है । प्रथम तौ उत्पन्न होकर जीवता नहीं है और यदि जीवता है तौ कपटी होता है ॥ ७२ ॥

छिद्रेशे रिपुसंस्थिते दिनकरे भूभृद्विरोधी गुरौ ।
स्वांगे सीदति दृष्टिरोगकलितः शुक्रे सरोगो विधौ ॥
भौमे कोपयुते बुधेऽहिभयभृद्दुःखाभिभूतः शनौ ।
कष्टं राहुबुधे हि तत्र शशभृत्सौम्येक्षितेनैव किम्॥ ७३ ॥

यदि षष्ठ भावमें अष्टमभावपति सूर्य होवे तौ राजासे विरोध कर्त्ता होता है और बृहस्पति होवे तौ अपने अंगमें कष्ट भोगता है और शुक्र होवे तौ नेत्ररोगसे युक्त होता है, चन्द्रमा होवे तौ रोगयुक्त होता है, मंगल होवे तौ क्रोधी होता है, बुध होवे तौ भयभीत होता है, शनैश्चर होवे तौ दुःखी होता है, यदि षष्ठ भावमें राहु बुध होवें तौ कष्ट होता है और षष्ठस्थित चन्द्रमा शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे तौ कुछभी कष्ट नहीं होता है ॥ ७३ ॥

मृत्युपतौ सप्तमगे दुष्टकुलस्त्रीप्रियो गुदव्याधिः ॥
क्रूरे भार्याद्वेषी कलत्रदोषान्मृतिं लभते ॥ ७४ ॥

यदि अष्टमभावपति सप्तम भावमें स्थित होवे तौ दुष्ट कुलकी स्त्रीका प्रिय होता है और गुदामें व्याधिवाला होता है । यदि क्रूर ग्रह होवे तौ स्त्रीसे वैर कर्त्ता होता है और स्त्रीके दोषसे मरणको प्राप्त होता है ॥ ७४ ॥

निधनपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक् ॥
कितवकलाकुलितवपुः कितवकुले जायते विदितः ॥७५ ॥

यदि अष्टमभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष व्यवसायी और व्याधिहीन और रोगहीन होता है और कपटकलासे युक्त शरीरवाला तथा कपटकुलमें विख्यात होता है ॥ ७५ ॥

मृतिनाथे नवमस्थे निःसंगो जीवघातकः पापी ॥
निर्बंधुर्निःस्नेही पूज्ये विमुखो व्यंगः ॥ ७६ ॥

यदि अष्टमभावपति नवम भावमें युक्त होवे तौ संगहीन तथा जीवघाती और पापी तथा बन्धुहीन और स्नेहवर्जित और पूज्यके सेवन करनेमें विमुख और मुखमें अंगहीन होता है ॥ ७६ ॥

कर्मस्थे निधनेशे नृपकर्मा नीचकर्मनिरतश्च ॥
अलसः क्रूरोऽन्यभवस्तनयवान्न जीवति माता ॥ ७७ ॥

यदि अष्टमभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष राजकर्म करनेवाला तथा नीच कर्ममें युक्त तथा आलसी और क्रूर तथा अन्यपुरुषसे उत्पन्न होनेवाला तथा पुत्रवान् होता है और उसकी माता नहीं जीव सक्ती है ॥ ७७ ॥

लाभस्थे चाष्टमपे वाल्ये दुःखी भवेत्पश्चात् ॥
दीर्घायुः सौम्यखगे पापेऽल्पायुर्नरो भवति ॥ ७८ ॥

यदि अष्टमभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ वालपनमें दुःखी और पीछे सुखी होता है और शुभ ग्रह होवे तौ दीर्घ आयुवाला होता है और पाप ग्रह होवे तौ थोडे आयुवाला होता है ॥ ७८ ॥

व्ययभवनेऽष्टमपे क्रूरो वा तस्करो निकृष्टश्च ॥
अनात्मगतिर्व्यंगवपुर्मृतस्तु काकादिभिर्भक्ष्यः ॥ १७९ ॥

इति जातकसंग्रहे अष्टमभावविचारः समाप्तः ॥ ८ ॥

यदि अष्टमभावपति द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष क्रूर वा चोर वा नीच होता है और आत्मज्ञानसे हीन और अंगहीनशरीरवाला तथा काक आदि पक्षियोंसे भक्षण करने योग्य होता है ॥ १७९ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायाम् अष्टमभावविचारः समाप्तः ॥ ८ ॥

नवमभावविचारः ।

नवमभावः तत्र किंविचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

धर्मक्रियायां हि मनःप्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ॥
तीर्थं प्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १ ॥

धर्मसंवन्धी क्रियाओंमें मनकी प्रवृत्ति और भाग्यकी सिद्धि और विमलशील और तीर्थ और यात्रा और स्नेह यह सब नवम भावमें पूर्वाचार्योंने कहे हैं ॥ १ ॥

विहाय सर्वं गणकैर्विचिंत्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात् ॥
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवंति धन्याः ॥ २ ॥

सर्व विचारोंको त्यागकर ज्योतिषियोंको केवल यत्नसे नवम भावही विचारना चाहिये क्योंकि भाग्यवान् पुरुषकरकेही आयु माता पिता वंश यह सब धन्य होते हैं ॥ २ ॥

कल्याणकर्माह।

लग्नान्निशाकराद्वावन्नवमं गृहं तद्भवेद्भाग्यम् ॥
अनयोर्यो बलयुक्तो भाग्यर्क्षं चिंतयेत्तस्मात् ॥ ३ ॥

लग्नसे और चन्द्रमासे जो कि नवम भाव है वह भाग्यसंज्ञक है अथवा लग्न चन्द्रमा इन दोनोंमें जो बलवान् होवे उससे भाग्यभवनको विचारे ॥ ३ ॥

भाग्यर्क्षपतिः कस्मिन्को वा भाग्याश्रितो विहगः ॥
बलावान्मंदबलो वा तस्याधिपतिस्तु कारको ज्ञेयः ॥ ४ ॥

नवम भावका स्वामी किस भावमें है और कौन ग्रह है अथवा नवममें स्थित हुआ ग्रह बलवान् है वा हीनबल है और नवम भावका स्वामी कारक ग्रह कैसा है यह सब भाग्यभावके फल कहनेमें तत्त्वसे जानने चाहिये ॥ ४ ॥

भाग्यविचारः।

भाग्ये स्वभोच्चगखगे शुभभाग्य इज्ये वा स्वेशदृग्युजि निजे फलदं परेऽन्यैः ॥ केंद्रस्थजीवतनुजन्मभपैः सुभाग्यो धान्यङ्कलग्नगखगैर्यदि भाग्यदृग्वा ॥ ५ ॥

यदि नवम भावमें अपने राशि वा उच्च राशिका ग्रह विराजमान होवे अथवा बलवान् बृहस्पति होवे तौ पुरुष शुभ भाग्यवाला होता है। यदि भाग्य नाम नवम भाव अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट होवे तो अपने देशमें भाग्योदय होता है और अन्य ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ परदेशमें भाग्योदय होता है। यदि बृहस्पति जन्मलग्नपति जन्मराशिपति यह केन्द्रभावमें स्थित होवें तौ पुरुष सुन्दर भाग्यवाला होता है। अथवा पंचम तृतीय नवम लग्न इन भावोंमें स्थित हुए बली ग्रहोंकी यदि नवम भावपर दृष्टि होवे तौ भी पुरुष सुन्दर भाग्यवाला होता है ॥ ५ ॥

चंद्राद्द्यूनाष्टरिपुगैः सुग्रहैः सुभाग्यश्चंद्रे स्वकेऽष्टलवगेऽहनि जीवदृष्टे ॥ लक्ष्मीयुतो निशि तथा च सितेक्षितेऽथ केंद्रादिगेज्य इनतोऽधममध्यमोच्चः ॥ ६ ॥

---

१ भाग्यं यदा स्वामियुतेक्षितं च भाग्योदयः स्यान्निजदेशमध्ये। अन्यग्रहैः। पापशुभैर्युतं चेद्भाग्योदयस्तत्परदेशभूमौ। इति वचनेनास्य वाक्यस्यैक्यम्।

यदि चन्द्रमासे सप्तम अष्टम षष्ठ इन भावोंमें शुभ ग्रह होवें तौ पुरुष सुन्दर भाग्यवाला होता है । यदि दिनका चन्द्रमा अपने नवांश वा मित्रके नवांशमें स्थित होवे और बृहस्पतिकर देखा गया होवे तौ पुरुष लक्ष्मीयुक्त होता है । रात्रिका चंद्रमा अपने नवांश वा मित्रके नवांशमें स्थित होवे और शुक्रसे दृष्ट होवे तौ लक्ष्मीवान् होता है । यदि सूर्यसे क्रमसे केन्द्र पणफर आपोक्लिम भावमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष नीच भाग्य तथा मध्य भाग्य तथा उच्च भाग्यवाला होता है । भाव यह है कि सूर्यसे बृहस्पति केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ नीचभाग्य पुरुष होता है और पणफरभावमें स्थित होवे तौ मध्यभाग्य होता है और आपोक्लिम भावमें स्थित होवे तौ उच्चभाग्य पुरुष होता है ॥ ६ ॥

नीचारिभांशगखलाः शुभदृष्टिहीना भाग्ये स्थिता मलिन-
दुःखितजन्म कुर्युः ॥ भाग्ये खलाः स्वगृहगाः शुभदृष्टि-
युक्ताः ख्यातं नरं विपुलसौख्यगुणैः समेतम् ॥ ७ ॥

यदि पाप ग्रह नीच राशि वा शत्रुराशि वा नीच नवांश वा शत्रुनवांश इनमेंसे किसीमें स्थित होकर नवम भावमें होवे और शुभ ग्रहोंसे हीन होवे तो मलिन और दुःखी जनोंका जन्म करते हैं । यदि नवम भावमें पाप ग्रह अपने राशिके स्थित होवें और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होवें तौ पुरुषको विख्यात और बहुतसे सुख और गुणोंसे युक्त करते हैं ॥ ७ ॥

लग्नपेऽभ्यंतरे राशौ जन्मकाले गते सति ॥
भाग्यपे च विशेषेण महाभाग्योदयो भवेत् ॥ ८ ॥

यदि जन्मकालके समय लग्नपति अभ्यन्तर राशिमें अर्थात् लग्नसे लेकर सप्तमभावपर्यन्त किसी राशिमें स्थित होवे और नवमभावपतिभी तिनही राशियोंमेंसे किसीमें स्थित होवे तौ महाभाग्योदय होता है ॥ ८ ॥

एकेन मध्यभाग्यः स्यादभावे हीनभाग्यकः ॥
लग्नात्सप्तमभं यावद्राशयोऽभ्यंतराः स्मृताः ॥ ९ ॥

यदि लग्नपति और नवमभावपति इनमेंसे अभ्यन्तर राशिमें एक ग्रह होवे तौ मध्यम भाग्यवाला होता है और इन दोनोंका अभाव होवे तो हीनभाग्यवाला होता है । लग्नसे सप्तमभावपर्यन्त जो कि राशि हैं वे अभ्यन्तर राशि कहे हैं ॥९॥

नवमभावपती रिपुमध्यगो नवमभं रिपुदृष्टयुतं तथा ॥
यदि तदा परधर्मरतो नरः शुभखगैरथ धर्मरतः स्वके ॥ १० ॥

यदि नवमभावपति शत्रुग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे और नवम भाव शत्रुग्र-

हसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ पराये धर्ममें तत्पर रहता है। यदि शुभ ग्रहोंके मध्यमें और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ अपने धर्ममें तत्पर रहता है॥ १०॥

नीचस्थो वा शत्रुगेहे गतश्चेद्भाग्यस्वामी रिःफरंध्रारिगो वा॥
पापैः खेटैःसंयुतो वाथ दृष्टो भाग्यैर्हीनःस्याद्दरिद्री सदैव॥११॥

यदि नवम भावका स्वामी नीचराशि वा शत्रुराशिमें स्थित होवे अथवा द्वादश अष्टम इन भावोंमें स्थित होवे और पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ पुरुष भाग्यहीन और सदैव दरिद्री रहता है॥ ११॥

सामान्यविचारेण भाग्यस्थसूर्यादीनां फलं गर्गमतेन तत्रादौ रवेः।

हंति भाग्यं च पुण्यं च सूर्यः पुण्यगतो नृणाम्॥
तुंगस्वर्क्षगृहे जातः पुष्कलं धर्ममादिशेत्॥ १२॥

यदि सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ मनुष्योंके भाग्य और पुण्यका विनाश करता है। उच्च राशि वा स्वराशिमें स्थित होकर सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ पुष्कल धर्मको करता है॥ १२॥

चंद्रफलम्।

मध्यभाग्यो भवेद्धर्मपितृपक्षपरायणः॥
धर्मे पूर्णनिशानाथे क्षीणे सर्वं विनाशयेत्॥ १३॥

यदि पूर्ण चंद्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष मध्यभाग्य और धर्म और पितृपक्षमें युक्त होता है और क्षीण चंद्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ सबका नाश करता है॥ १३॥

भौमफलम्।

कुजे रक्तपटानंदी भवेत्पाशुपतिव्रती॥
भाग्यहीनाश्च सततं नरः पुण्यगृहे गते॥ १४॥

यदि मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष लाल वस्त्रोंके पहरनेसे आनन्द माननेवाला और महादेवका व्रत रखनेवाला और भाग्यहीन होता है॥ १४॥

बुधफलम्।

मंदभाग्यो बुधे पापे नरो बौद्धमतानुगः॥
भाग्यवान् धार्मिको वापि शुभे सौम्ये तु धर्मगे॥ १५॥

यदि बुध पाप ग्रह होकर नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष मंदभाग्य और बौद्धमतका अनुयायी होता है और शुभ ग्रह होकर बुध नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष भाग्यवान् और धर्मात्मा होता है॥ १५॥

गुरुफलम् ।

विविधतीर्थकरः सुकलेवरः सुरगुरौ नवमे सुखवान् गुणी ॥
त्रिदशयज्ञकरः परमार्थवित्प्रचुरकीर्तिकरः कुलवर्द्धनः ॥ १६ ॥

यदि बृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष अनेक तीर्थकर्त्ता और सुन्दर शरीर तथा सुखी और गुणी तथा देवयज्ञकर्त्ता और परमार्थवेत्ता और अधिक कीर्त्तिकर्त्ता और कुल बढानेवाला होता है ॥ १६ ॥

भृगुफलम् ।

भवति भाग्यविधिर्धनवल्लभो बहुगुणी द्विजभक्तिपरायणः ॥
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुनंदने ॥ १७ ॥

यदि शुक्र नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष भाग्यनिधि और धनप्रिय और बहुत गुणी और ब्राह्मणोंकी भक्तिसे युक्त और अपने भुजाओंसे इकट्ठे किये भाग्य और बडे उत्सववाला होता है ॥ १७ ॥

शनिफलम् ।

दंभप्रधानसुकृतः पितृदैवतवञ्चकः ॥
क्षीणभाग्यः सुधर्मा च स्यान्नरो नवमे शनौ ॥ १८ ॥

यदि नवम भावमें शनैश्चर होवे तो कपटप्रधान, अच्छा कार्य करनेवाला, पितृ-देवताओंके ठगनेवाला, क्षीणभाग्य और शुभधर्म युक्त पुरुष होता है ॥ १८ ॥

स्वोच्चे स्वभे शनौ भाग्ये वैकुंठादागतो नरः ॥
राज्यं कृत्वा स्वधर्मेण पुनर्वैकुंठमेष्यति ॥ १९ ॥

यदि अपने उच्चराशि वा स्वराशिमें स्थित होकर नवम भावमें शनि स्थित होवे तौ पुरुष वैकुंठसे आया है व यहां स्वधर्मसे राज्य करके फिर वैकुंठको जावेगा १९॥

राहुफलम् ।

नीचधर्मानुरक्तः स्यात्सत्यशौचविवर्जितः ॥
भाग्यहीनश्च मंदश्च धर्मगे सिंहिकासुते ॥ २० ॥

यदि राहु नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष नीच धर्मका अनुरागी और सत्य शौचसे हीन और भाग्यहीन और मंदबुद्धि होता है ॥ २० ॥

केतुफलम् ।

नवमस्थानगः केतुर्बालत्वे पितृकष्टकृत् ॥
भाग्यहीनो विधर्मश्च म्लेच्छाद्भाग्योदयो भवेत् ॥ २१ ॥

यदि केतु नवम भावमें स्थित होवे तौ बालपनमें पिताको कष्ट करता है और भाग्यहीन और धर्मभ्रष्ट तथा लेछसे भाग्यवृद्धिवाला होता है ॥ २१ ॥

कस्मिन्वयसि भाग्योदयस्तमाह।

भाग्याधिपश्चेद्यदि केंद्रसंस्थश्चाद्ये वयस्येव सुखोदयः स्यात् ॥
त्रिकोणगः स्वोच्चगतोऽथवा चेन्मध्ये वयस्येऽस्य फलप्रदः स्यात्२२

यदि नवमभावपति केन्द्रमें स्थित होवे तौ पहिली अवस्थामें सुखका उदय होता है और त्रिकोण भावमें वा अपने उच्चराशिमें स्थित होवे तौ मध्य अवस्थामें उस पुरुषको फल देता है ॥ २२ ॥

भाग्याधिनाथः स्वगृहेऽथ मित्रगृहेऽथवा स्याद्वयसोंऽत्यभागे ॥
भाग्योदयं तस्य वदंति तज्ज्ञाः शुभग्रहेंद्रैश्च युतेक्षितश्च ॥ २३ ॥

यदि नवमभावपति अपने राशिमें अथवा मित्रराशिमें युक्त होवे तौ अवस्थाके अन्तभागमें उस पुरुषके भाग्योदयको पंडित कहते हैं परन्तु वह नवमभावपति शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ पूर्वोक्त फल होता है ॥ २३ ॥

आयुःपर्यंतसुखयोगः।

नवमभावपतिर्यदि केंद्रगो नवमपंचमगश्च यदा भवेत् ॥
प्रसवलग्नपतिर्यदि तुंगगः सुखसमृद्धियुतो मरणांतकः ॥ २४ ॥

यदि नवमभावपति केन्द्रभाव और नवम पंचम भावमें स्थित होवे और जन्मलग्नपति उच्च राशिमें स्थित होवे तौ पुरुष मरणपर्यन्त सुखसमृद्धिसे युक्त होता है ॥ २४ ॥

नवमभावगतः स्वगृहे शनिर्भवति चेत्समहेश्वरयज्ञकृत् ॥
अतिशयं कुरुते जयसंयुतं नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितम् ॥ २५ ॥

यदि अपने राशिका शनैश्चर नवम भावमें स्थित होवे तौ वह पुरुष महेश्वरका यज्ञ करता है और नवमभावस्थित स्वगृही शनैश्चर उस पुरुषको अतिशय करके जययुक्त और राजवाहनोंके चिह्नसे युक्त करता हैं ॥ २५ ॥

क्रूरा धर्मे धर्महीनं कर्कशं चपलं तथा ॥
सौम्याः कुर्वंति भाग्याढ्यं दयालुं प्रियभाषिणम् ॥ २६ ॥

यदि पाप ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको धर्महीन और कठोरस्वभाव तथा चंचल करते हैं और शुभ ग्रह होवें तौ भाग्यवान् और दयायुक्त और प्रिय बोलनेवाला करते हैं ॥ २६ ॥

गुरुर्भाग्ये भवेन्मंत्री महाभाग्योऽखिलेश्वरः ॥
अबलेऽपि शुभेखेटे भाग्यस्थे धार्मिको नरः ॥ २७ ॥

यदि बृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष मंत्री और महाभाग्यवाला तथा सबका स्वामी होता है । यदि शुभ ग्रह निर्बल होकरभी नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुप धर्मात्मा होता है ॥ २७ ॥

पूर्णेंदुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्वसमन्वितौ च ॥
वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वंति सौम्योत्थदृशा विशेषात् ॥२८॥

यदि पूर्ण चंद्रमासे युक्त होकर सूर्य और मंगल दोनों नवम भावमें स्थित होवें और बली होवें तौ पुरुषको वंशसे अनुमानसे मंत्री या राजा करते हैं और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ विशेषकर ऐसा फल करते हैं ॥ २८ ॥

भाग्यस्थितगुरौ रव्यादिदृष्टिफलं होराप्रदीपात् ।

अर्कदृष्टे गुरौ भाग्ये मंत्री नृपसमोऽथवा ॥
कांताभोगी शशांकेन भौमेन धनभाग्भवेत् ॥ २९ ॥

यदि नवम भावमें बृहस्पति सूर्यसे दृष्ट होवे तौ पुरुष मंत्री अथवा राजतुल्य होता है और चन्द्रमासे दृष्ट होवे तौ कान्ताप्रियाका भोगनेवाला होता है और मंगलसे दृष्ट होवे तौ धनवान् होता है ॥ २९ ॥

धर्मे बुधेन शुक्रेण गोवाहनधनान्वितः ॥
दृष्टे सौरेण महिषस्थावरसंयुतवित्तकः ॥ ३० ॥

यदि नवम भावमें बृहस्पति बुधसे वा शुक्रसे दृष्ट होवे तौ पुरुष गौ वाहन धन इनसे युक्त होता है और शनैश्वरसे दृष्ट होवे तौ भैंसा वृक्ष इनसे युक्त हुए धनवाला होता है ॥ ३० ॥

समृद्धो धार्मिको जातस्तेजोरूपगुणान्वितः ॥
स्यात्समस्तग्रहैर्दृष्टे भाग्यस्थे सुरमंत्रिणि ॥ ३१ ॥

यदि नवम भावमें स्थित हुआ बृहस्पति सब ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ पुरुष समृद्ध और धर्मात्मा और तेजस्वी और रूपवान् तथा गुणवान् होता है ॥ ३१ ॥

सर्वे राज्यप्रदा ज्ञेया भाग्यर्क्षस्थाः शुभग्रहाः ॥
धनस्थाः सर्वधान्यायुधर्मसौभाग्यवृद्धिदाः ॥ ३२ ॥

यदि समस्त शुभ ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ राज्यदाता जानने

चाहिये और समस्त शुभ ग्रह द्वितीय भावमें स्थित होवें तौ सब धान्य और आयु और धर्म और सौभाग्यकी वृद्धि देनेवाले होते हैं ॥ ३२ ॥

स्वस्वराशौ स्थिताः पापग्रहा भाग्यर्क्षसंयुताः ॥
शुभैर्दृष्टा नरं कुर्युः प्रभूतगुणमुत्तमम् ॥ ३३ ॥

यदि अपने २ राशिमें स्थित होकर पाप ग्रह नवम भावमें स्थित होवें और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होव तौ पुरुषको अधिक गुणी और उत्तम करते हैं ॥ ३३ ॥

स्वोच्चगः खचरो भाग्ये करोति विभवान्वितम् ॥
सर्वे शुभेक्षिता भूपं कुर्वंति विजितद्विषम् ॥ ३४ ॥

यदि अपने उच्च राशिका ग्रह नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको धनवान् करता है और समस्त ग्रह नवम भावमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ पुरुषको जीते हुए वैरियोंवाला राजा करते हैं ॥ ३४ ॥

सकलगगनचाराः स्वोच्चगा भाग्यराशौ कनकधनसमृद्धिश्रेय उत्पादयंति ॥ अथ शुभविहगेंद्रैस्तत्र दृष्टा नरेंद्रं विहतरिपु-समूहं दिव्यकायं सुकांतिम् ॥ ३५ ॥

यदि समस्त शुभ अशुभसंज्ञक ग्रह अपने उच्च राशिके नवम भावमें स्थित होवें तौ सुवर्णधनसमृद्धि और कल्याणको करते हैं और जो शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ पुरुषको दूर किये वैरियोंके समूहवाला और दिव्य शरीर और सुन्दरकान्तियुक्त राजा करते हैं ॥ ३५ ॥

त्रिचतुःपंचखगेंद्रास्तथा च षट् सप्त संस्थिता भाग्ये
प्रत्यर्पितधनवित्तं कुर्युर्नृपतिं बुधरहिताः ॥ ३६ ॥

यदि नवम भावमें तीन चार पांच और छः सात ग्रह बुधसे हीन होकर स्थित होवें तौ क्रमसे पुरुषको किसीसे प्राप्त किये धन वित्तवाला और राजा करते हैं अर्थात् तीन चार पांच ग्रह बुधहीन होकर नवम भावमें होवे तौ धनवान् और वा सात ग्रह बुधसे हीन होकर नवम भावमें स्थित होवें तौ राजा करते हैं ॥ ३६ ॥

जनयंति भाग्यसंस्था गुरुभौमविवर्जिता ग्रहाः पुरुषम् ॥
व्याधिप्रायमकांतं धनहीनं बंधनार्तमतिहीनम् ॥ ३७ ॥

यदि नवम भावमें बृहस्पति मंगलसे वर्जित होकर ग्रह स्थित होवें तौ पुरुषको व्याधियुक्त तथा कान्तिहीन और धनहीन तथा बंधनसे दुःखित और मतिहीन उत्पन्न करते हैं ॥ ३७ ॥

उदयभास्करे विशेषः ।

नवमपे तनुगे गुरुवीक्षिते नृपपतिर्यदि वांबुपतिस्तनौ ॥
नवपतिर्द्वितये स्वगृहेक्षकः सकलसंपदितो धरणीपतिः ॥३८॥

नवमभावपति लग्नमें स्थित होवे और बृहस्पतिसे दृष्ट होवे तौ पुरुष नृपपति होता है अथवा चतुर्थभावपति लग्नमें स्थित होवे और बृहस्पतिसे दृष्ट होवे तौ भी नृपपति होता है। यदि नवमभावपति द्वितीय भावमें स्थित होकर अपने गृहको देखता होवे तौ सकल संपदासे युक्त और पृथ्वीपति होता है ॥ ३८ ॥

यदि मृतौ नवपः कुभगोऽपि वा द्रुतवियोगिकुवाहपतिर्भवेत् ॥
नवपतौ भवगे नृपपूजितस्तदनु कोशवपुःसुखपः स्वभे ॥ ३९ ॥
नवपतिस्तनुगो गजवाहनोऽथ भवनेशयुतौ गुरुभार्गवौ ॥
नवचतुष्टयपंचमगौ तदा प्रवरवाहनदौ यदि भाग्यपः ॥
निजभगोंऽबुनि वासितजीवयुग् बहुधनो ध्वजिनीपतिरीश्वरः४०

यदि नवमभावपति अष्टम भावमें स्थित होवे अथवा पाप ग्रहके राशिमें स्थित होवे तौ बहुत शीघ्र वियोगवाले निन्दित वाहनका स्वामी होता है। यदि नवमभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ राजासे पूजित होता है और द्वितीयभावपति द्वितीय भावमें और लग्नपति लग्नभावमें और चतुर्थभावपति चतुर्थ भावमें स्थित होवे और नवमभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ गजवाहनवाला होता है। बृहस्पति शुक्र यदि चतुर्थभावपतिसे युक्त होकर नवम और केन्द्र और पञ्चम इन भावोंमें स्थित होवें तौ उत्तम वाहनवाला होता है। नवमभावपति यदि शुक्र बृहस्पतिसे युक्त होकर अपने भावमें अर्थात् नवमभावमें वा चतुर्थ भावमें स्थित होवे तौ बहुतसा धनी और सेनापति वा राजा होता है ॥ ३९ ॥ ४० ॥

भाग्यस्थगुरोरुपरि द्विग्रहयोगाः ।

ख्यातो नृपसमः प्राज्ञो बहुदारसमन्वितः ॥
पितृमातृप्रियो जीवे समृद्धार्केंदुवीक्षिते ॥ ४१ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि बली सूर्य चन्द्रमा इन दोनोंकर देखा गया होवे तौ पुरुष विख्यात और राजतुल्य तथा पंडित और बहुत स्त्रियोंसे युक्त और समृद्ध होवे है ॥ ४१ ॥

---

१ जातकालंकारे । लब्धिश्चान्तर्दशायामथ गुरुभृगुजौ वाहनाधीशयुक्तौ केन्द्रे याने त्रिकोणे त्वथ गुरुकवियुग वाहनस्थानगो वा भाग्याधीशः स्वराशौ भवति नरपतिर्वाहनव्यूहनाथः ।

साहसी वा धनी स्वर्क्षेऽर्थभृत्परधनान्वितः ॥
बलिकुजार्कसंदृष्टे जीवे भाग्यगृहस्थिते ॥ ४२ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि बली मंगल सूर्य इन दोनोंसे देखा गया होवे तौ पुरुष बडा साहसी और धनी होता है और अपने राशिमें स्थित होवे तौ पराये धनसे युक्त होता है ॥ ४२ ॥

सुभगो ललितः कांतो धनस्त्रीभूषणान्वितः ॥
जीवे बुधार्कसंदृष्टे भाग्ये काव्यकलाकृतिः ॥ ४३ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि बुध सूर्य इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष सुन्दर ऐश्वर्य-वाला तथा मनोहर और स्त्री भूषण इनसे युक्त होता है और काव्यकलाओंका जानने-वाला होता है ॥ ४३ ॥

सामज्ञोत्सवशीलो गोमहिषाजखरान्वितः ॥
साहसिको गुरौ भाग्ये विमित्रोऽर्कसितेक्षिते ॥ ४४ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि सूर्य शुक्र इनसे दृष्ट होवे तौ वह पुरुष साम वेदके जाननेवाला और उत्सवकर्त्ता और गौ महिषी छाग गधा इनसे युक्त और साहस-वाला होता है ॥ ४४ ॥

निधीशः संग्रही प्राज्ञः ख्यातो भाग्ये गुरौ गुणी ॥
भवेद्देशगुरुः श्रेणीनायकोऽर्कार्किवीक्षिते ॥ ४५ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि सूर्य शनैश्चर इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष कोशपति और संग्रहकर्त्ता और चतुर और विख्यात और गुणी तथा देशगुरु और श्रेणी-नायक होता है ॥ ४५ ॥

चंद्रयोगाः ।

सेनाचार्यो गुरौ भाग्ये चंद्रभौमनिरीक्षिते ॥
सौख्यभाक् सुभगः स्फीतो मंत्री वा जायते नरः ॥ ४६ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि चंद्रमा मंगल इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष सेनाचार्य और सौख्ययुक्त और सुन्दर ऐश्वर्य युक्त और संपन्न वा मंत्री होता है ॥ ४६ ॥

सगेहशयनान्नादिभोगी तेजोन्वितः क्षमी ॥
मतिमाञ्जायते भाग्ये गुरौ चंद्रबुधेक्षिते ॥ ४७ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि चंद्रमा बुध इनसे दृष्ट होवे तौ वह पुरुष

गेह शयन अन्नादि इनके भोगवाला तथा तेजस्वी और क्षमाशील और बुद्धिमान् होता है ॥ ४७ ॥

कर्मयुक्तः शुभः शूरः समृद्धः परिवारवान् ॥
चंद्रशुक्रेक्षिते जीवे भाग्यस्थे जायते नरः ॥ ४८ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति चंद्रमा शुक्र इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष कर्मयुक्त और शुभाचार और शूरवीर और संपन्न और परिवार युक्त होता है ॥ ४८ ॥

विवादशीलः प्रियवाग्व्ययेशनेक्षिते गुरौ ॥
चिरजीवी च कुमदो भाग्ये चंद्रार्किवीक्षिते ॥ ४९ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति द्वादशभावपतिसे दृष्ट होवे तौ पुरुष विवादकर्त्ता और प्रिय बोलनेवाला होता है और चंद्रमा सूर्य इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष बहुत आयुवाला और निन्दित मदसे युक्त होता है ॥ ४९ ॥

भौमयोगाः।

तेजस्वी सत्यवान् सेवारतो निपुण्यधीर्नरः ॥
जायते बुधभौमाभ्यां दृष्टे भाग्यस्थिते गुरौ ॥ ५० ॥

नवमस्थ बृहस्पति बुध मंगल इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष तेजस्वी और सत्ययुक्त और सेवाकर्ममें तत्पर और चतुरबुद्धि होता है ॥ ५० ॥

धनी निपुणधीर्विद्वान् सात्यकश्च विदेशगः ॥
भौमभार्गवसंदृष्टे भाग्यस्थे सुरमंत्रिणि ॥ ५१ ॥

नवमभावस्थ बृहस्पति यदि मंगल शुक्र इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष धनवान् और चतुरबुद्धि और सत्यभाषी और विदेशगामी होता है ॥ ५१ ॥

नीचो विदेशगः प्रेष्यः पिशुनो वंचको नरः ॥
भाग्यराशिगते जीवे भौममंदनिरीक्षिते ॥ ५२ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति मंगल शनैश्चर इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष नीच और विदेशगामी और चाकरीवाला और निन्दक चुगल तथा ठगाई करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

बुधयोगाः।

शिल्पवित्सुभगो विद्वान्कृतवेषश्च शीलवान् ॥
गृहीतवचनो जीवे भाग्यस्थे ज्ञसितेक्षिते ॥ ५३ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति बुध शुक्र इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष कारीगरीके जाननेवाले तथा सुन्दरभाग्ययुक्त विद्वान् और अच्छे वेषके धारण करनेवाला तथा शीलवान् और आज्ञापालक होता है ॥ ९३ ॥

सुभगो ललितो विद्वान् वक्ता शूरः सुखी गुरौ ॥
विनीतश्च भवेद्भाग्ये बुधमंदनिरीक्षिते ॥ ९४ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि बुध शनैश्चर इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष सुन्दर ऐश्वर्यवाला और मनोहर विद्वान् तथा वक्ता और शूर वीर तथा सुखी और विनयसंपन्न होता है ॥ ९४ ॥

भृगुयोगाः ।

राष्ट्राध्यक्षो धनी जीवे भाग्ये शुक्रार्किवीक्षिते ॥
पंचदृष्टिफलं जीवे भाग्ये नान्यैर्निरीक्षिते ॥ ९५ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि शुक्र शनैश्चर इनसे दृष्ट होवे तौ पुरुष देशपति और धनी होता है । यह पांच दृष्टियोंका फल है । यदि नवमभावस्थित बृहस्पति इनसे अन्य ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ ऐसा फल नहीं होता है ॥ ९५ ॥

समृद्धः पार्थिवो जातस्तेजोरूपगुणान्वितः ॥
स्यात्समस्तग्रहैर्दृष्टे भाग्यस्थे सुरमंत्रिणि ॥ ९६ ॥

नवमभावस्थित बृहस्पति यदि समस्त ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ पुरुष समृद्ध और पृथ्वीपति और तेजरूप गुणसे युक्त होता है ॥ ९६ ॥

भाग्यस्थरव्यादिद्विग्रहयोगाः ।

भाग्यर्क्षस्थौ दिनेशेंदू कुरुतोऽल्पायुषं नरम् ॥
नेत्ररोगिणमाढ्यं च सुभगं कलहप्रियम् ॥ ९७ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको थोडे आयुवाला और नेत्ररोगी और सुभाग्ययुक्त और कलहप्रिय करते हैं ॥ ९७ ॥

सवक्रो भास्करो भाग्ये दुःखितं कलहप्रियम् ॥
शूरं प्रचंडं निपुणं करोति नृपवल्लभम् ॥ ९८ ॥

यदि मंगलसहित सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको दुःखी और कलहप्रिय और शूरवीर तथा प्रचण्ड और राजप्रिय करता है ॥ ९८ ॥

सबुधो भास्करो भाग्ये निपुणं बहुविद्विषम् ॥
दुःखान्वितं नरं चैव नानारोगसमन्वितम् ॥ ९९ ॥

यदि बुधसहित सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको विद्वान् और बहुतोंसे वैर करनेवाला और दुःखी और नानारोगी करता है ॥ ५९ ॥

सजीवो भास्करो भाग्ये रोगिणं कुरुते नरम् ॥
अलंकरणसद्वस्त्रगंधमाल्यप्रियं सदा ॥ ६० ॥

यदि बृहस्पतिसहित सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको रोगी और भूषण वस्त्र गंध पुष्प प्रिय करता है ॥ ६० ॥

सरोगं जनकं नेत्ररोगिणं कलहप्रियम् ॥
सभृगुर्भास्करो भाग्ये भाग्ययुक्तं सुमतिं नरम् ॥ ६१ ॥

यदि शुक्रसहित सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषको रोगी तथा नेत्ररोगी और कलहप्रिय और भाग्यवान् और सुन्दर बुद्धिवाला करता है ॥ ६१ ॥

शठं धूर्तं सरोगं च युद्धप्रियमनर्थभृत् ॥
निर्धनं कुरुतो भाग्ये सूर्यार्की स्वल्पजीविनम् ॥ ६२ ॥

यदि सूर्य शनैश्चर दोनों नवम भावमें स्थित होवें तौ शठ और धूर्त और रोगी और युद्धप्रिय, अनर्थकर्ता और निर्धन और थोडे आयुवाला करता है ॥ ६२ ॥

चन्द्रयोगाः ।

सभूद्धः सव्रणो मातुरनिष्टो भाग्यसंस्थिते ॥
शशांके विकलांगः स्याद्धरणीसुतसंयुते ॥ ६३ ॥

यदि मंगलसहित चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुषसंपन्न और घावयुक्त और माताका अप्रिय और विकल अंगवाला होता है ॥ ६३ ॥

विसुतो विकलांगः स्याद्बहुवागुत्तमो नरः ॥
शास्त्रज्ञः पंडितो भाग्ये सज्ञे चंद्रे प्रजायते ॥ ६४ ॥

यदि बुधसहित चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पुत्रहीन और विकल-शरीर और बहुत बोलनेवाला और उत्तम और शास्त्र जाननेवाला और पंडित होता है ॥ ६४ ॥

सौभाग्यधनसंपन्नः सुखी गुणसमन्वितः ॥
उत्तमश्च नरो भाग्ये सजीवे हिमरोचिषि ॥ ६५ ॥

यदि बृहस्पतिसहित चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सौभाग्य धनसे युक्त और सुखी गुणवान् और उत्तम होता है ॥ ६५ ॥

मातुः सपत्नी कुरुते व्याधितः कुलटापतिः ॥
समृद्धः पुरुषो भाग्ये स्याच्छुक्रेण विधौ नरः॥ ६६ ॥

यदि शुक्रसहित चंद्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष माताकी सपत्नीको करता है और वह पुरुष व्याधियुक्त और व्यभिचारिणीका पति और धनसंपन्न होता है ॥ ६६ ॥

नरोऽतिकष्टकमा स्यात्समंदे हिमदीधितौ ॥
भाग्यस्थे जननी वाऽस्य जायते स्वकुलच्युता ॥ ६७ ॥

यदि शनैश्चरसहित चन्द्रमा नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष अतिकष्ट कर्मवाला होता है और उस पुरुषकी माता अपने कुलसे भ्रष्ट होवे है ॥ ६७ ॥

भौमयोगाः।

प्रधानशास्त्रकुशलः सुभगो भोगसंयुतः ॥
नित्योद्विग्नो नरो भाग्ये सज्ञे भौमे प्रजायते ॥ ६८ ॥

यदि बुधसहित मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष मंत्रियोंके शास्त्रमें चतुर और सुंदर भाग्ययुक्त और नित्य उद्विग्नचित्त रहता है ॥ ६८ ॥

सजीवे भूमिजे भाग्ये पूज्यो धान्यधनान्वितः ॥
व्याधिगांतो नरो क्लिष्टो जायते व्रणसंयुतः ॥ ६९ ॥

यदि बृहस्पतिसहित मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष पूज्य और धान्य धनसे युक्त और व्याधियुक्त शरीरवाला और क्लेशयुक्त और घावसे युक्त होता है ॥ ६९ ॥

परदेशगतः क्रूरः प्रचंडः परदेशगः ॥
चंडः प्रधानः स्त्रीद्वेषी भाग्ये भौमे सभार्गवे ॥ ७० ॥

यदि शुक्रसहित मंगल नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष परदेशगामी तथा क्रूर और महावीर और परदेशवासी तथा प्रधान और स्त्रीसे वैरकर्ता होता है ॥ ७० ॥

नष्टसौख्यधनः पापी दुराचारोऽन्यदारगः ॥
समंदे भूमिजे भाग्ये जायते स्वजनोज्झितः ॥ ७१ ॥

शनैश्चरसहित मंगल यदि नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष नष्ट हुए सौख्य धनवाला और पापी और दुराचारयुक्त और अन्यस्त्रीगामी और स्वजनहीन होता है ॥ ७१ ॥

बुधयोगाः ।

शास्त्रज्ञो न्यायवान् भोक्ता सर्वसंपत्समन्वितः ॥
सजीवे ज्ञे पुण्यगते समर्थो जायते पुमान् ॥ ७२ ॥

यदि बृहस्पतिसहित बुध नवम भावमें होवे तौ पुरुष शास्त्र जाननेवाला और न्यायी और भोगी तथा सर्व संपदावाला और समर्थ होता है ॥ ७२ ॥

प्राज्ञो गीतप्रियः ख्यातः सुवाग्धीरः सुपंडितः ॥
समर्थो जायते भाग्ये सशुक्रे सोमनंदने ॥ ७३ ॥

यदि शुक्रसहित बुध नवम भावमें होवे तौ पुरुष पंडित तथा गीतप्रिय तथा विख्यात और अच्छा बोलनेवाला तथा धीर विद्वान् और समर्थ होता है ॥ ७३ ॥

आढ्यः प्रियान्वितो रोगी निपुणो विषमो नरः ॥
द्वेष्यो बहुपथो भाग्ये समंदे ज्ञे प्रजायते ॥ ७४ ॥

यदि शनैश्चरसहित बुध नवम भावमें होवे तौ पुरुष धनी तथा प्रिय जनोंसे युक्त और रोगी और चतुर तथा विषमस्वभाव और वैरकर्ता और बहुमार्गी होता है ॥ ७४ ॥

गुरुयोगाः ।

सजीवे भार्गवे भाग्ये भाग्यवान्सुभगो नृपः ॥
चिरजीवी सुभाग्यः स्यान्नानाविधसुखान्वितः ॥ ७५ ॥

यदि बृहस्पतिसहित शुक्र नवम भावमें होवे तौ पुरुष भाग्यवान् और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त तथा राजा और बडे आयुवाला और सुन्दर भाग्यसंपन्न और नाना प्रकारके सुखसे युक्त होता है ॥ ७५ ॥

समंदे वाक्पतौ भाग्यराशिस्थे धनरत्नभाक् ॥
पूज्यः स्वजनहीनश्च व्याधितः पुरुषो भवेत् ॥ ७६ ॥

यदि शनैश्चरसहित बृहस्पति नवम भावमें होवें तौ पुरुष धनरत्नवाला और स्वजनहीन तथा व्याधियुक्त होता है ॥ ७६ ॥

भृगुयोगाः ।

यशस्वी भूमिपालश्च व्याधितः शीलसंयुतः ॥
ससौरे भार्गवे भाग्ये बहुमित्रश्च जायते ॥ ७७ ॥

यदि शनैश्चरसहित शुक्र नवम भावमें होवे तौ पुरुष यशवाला तथा पृथ्वीपति व्याधियुक्त तथा शीलवान् और बहुतसे मित्रोंवाला होता है ॥ ७७ ॥

भाग्ये त्रिग्रहयोगाः सारावल्याम् ।

सव्रणगात्रं रूक्षं मृतपितृकं भ्रातृवर्जितं कुर्युः ॥
रुद्रद्वेष्यं हिंस्रं भाग्ये रविचंद्रभूपुत्राः ॥ ७८ ॥

यदि नवम भावमें सूर्य चन्द्रमा मंगल ये तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको घावसहित शरीरवाला और रूखा तथा मरे हुए पितावाला तथा भ्रातृहीन और रुद्रका वैरी और हिंसक करते हैं ॥ ७८ ॥

रविचंद्रबुधा भाग्ये क्लीबाचारं नरं प्रसूयंते ॥
सर्वजनानां द्वेष्यं विक्रांतं सत्यवचनं च ॥ ७९ ॥

यदि नवम भावमें सूर्य चन्द्रमा बुध ये तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको नपुंसकके समान आचरण करनेवाला और सब जनोंका वैरी और पराक्रमी तथा सत्यभाषी उत्पन्न करते हैं ॥ ७९ ॥

भास्करशशांकगुरवो भाग्ये यस्य भवंति पुरुषस्य ॥
स भवत्युत्तमकुलजो वाहनधनसौख्यसंयुक्तः ॥ ८० ॥

जिस पुरुषके यदि नवम भावमें सूर्य चन्द्रमा बृहस्पति ये तीनों ग्रह होवें तौ वह पुरुष उत्तम कुलीन और वाहन धन सौख्य इनसे युक्त होता है ॥ ८० ॥

रविचंद्रसिता भाग्ये स्त्रीकलहान्नष्टधनसौख्यम् ॥
नृपसम्मतं सुयज्ञं जनयंति नरं प्रियालापम् ॥ ८१ ॥

यदि नवम भावमें सूर्य चन्द्रमा शुक्र ये तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको स्त्रीके कलहसे नष्ट धन सौख्यवाला और राजसंमत और सुन्दर यज्ञकर्ता और प्रियभाषणवाला करते हैं ॥ ८१ ॥

सूर्यनिशाकरसौरा भाग्यर्क्षस्थाः सदा नरं कुर्युः ॥
प्रखलं खंडाकारं परऋद्धिं लोकविद्विष्टम् ॥ ८२ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको अत्यंत दुष्ट और खंडित आकार और पराई ऋद्धिसे युक्त और लोकवैरी करते हैं ॥८२॥

रविभौमबुधा नवमे कुर्वंति नरं प्रियालापम् ॥
भुजवीर्यं गतिवृद्धं समयपरं निष्ठुरं पिशाचार्तम् ॥ ८३ ॥

यदि सूर्य मंगल बुध यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको प्रियभाषी और भुजबलयुक्त तथा ज्ञानवृद्ध और समय समयपर कार्यकर्त्ता और निष्ठुर और पिशाचबाधासे दुःखी करते हैं ॥ ८३ ॥

रविकुजजीवा भाग्ये जनयंति नरं सदोद्युक्तम् ॥
देवपितृपूजनरतं समृद्धदारं गुणसमृद्धं च ॥ ८४ ॥

यदि सूर्य मंगल वृहस्पति यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको सदैव उद्योगी तथा देवपितृगणोंके पूजनमें तत्पर और संपन्न स्त्रियांवाला तथा गुणी करते हैं ॥ ८४ ॥

कलहप्रियं कुलीनं कन्यानां दूषकं च कर्मचपलम् ॥
दिनकरभौमशुक्रा भाग्ये द्वेष्यं नरं कुर्युः ॥ ८५ ॥

यदि सूर्य मंगल शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको कलहप्रिय और कुलीन और कन्यादूषक तथा कर्ममें चंचल और सबका वैरी करते हैं ॥८५॥

साहसिकं ह्यतिक्षुद्रं लोकद्वेष्यं प्रियानृतं क्रूरम् ॥
पित्रा रहितं वाल्ये कुर्युः सूर्यारसूर्यजा भाग्ये ॥ ८६ ॥

यदि सूर्य मंगल शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको वडा साहसी और अतिक्षुद्र और लोकवैरी और प्रिय मिथ्या भाषणवाला और क्रूर और वालपनमें पितासे वर्जित करते हैं ॥ ८६ ॥

रविवुधगुरवो भाग्ये भाग्यसमेतं धनान्वितं सुभगम् ॥
नृपतिप्रियं सुवेषं जनयंति नरं सुपुत्रं च ॥ ८७ ॥

यदि सूर्य वुध वृहस्पति यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको भाग्यवान् और धनवान् और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त और राजप्रिय और सुन्दर वेषसंपन्न और सुन्दर पुत्रयुक्त करते हैं ॥ ८७ ॥

रविवुधशुक्रा भाग्ये जनयंति नरं प्रकाशितं शांतम् ॥
रिपुपक्षपरिक्षीणं नृपतिसमं सारवचनं च ॥ ८८ ॥

यदि सूर्य वुध शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको प्रकाशित और शान्त और शत्रुपक्षसे क्षीण और राजाके समान तथा सारवाक्यवाला करते हैं ॥ ८८ ॥

पापं परदाररतं प्रवासशीलं च निपुणतरम् ॥
भृतकं मदनपरं रविवुधसौरा नरं भाग्ये ॥ ८९ ॥

यदि सूर्य वुध शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको पापी और परस्त्रीगामी और प्रवासी और अतीव चतुर और चाकरीवाला और कामी करते हैं ॥ ८९ ॥

भाग्ये रविगुरुभृगवो मनुजं कुर्युः सुपंडितं कांतम् ॥
बहुविषयं त्वतिवीरं जनयंति सुमेधसं प्राज्ञम् ॥९० ॥

यदि सूर्य बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको अच्छा पंडित, मनोहर और बहुत देशवाला और अति वीर और सुन्दर बुद्धिवाला और पंडित करते हैं ॥ ९० ॥

रविसुरगुरुरविजा भाग्ये पुरुषस्य जन्मजातस्य ॥
स भवत्युत्तमपुरुषो राजा गुणवान् धनसमृद्धश्च ॥ ९१ ॥

जिस उत्पन्न हुए पुरुषके यदि सूर्य बृहस्पति शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ वह उत्तम पुरुष राजा और गुणवान् और धनवान् होता है ॥ ९१ ॥

कांतिविहीनं मलिनं भूपतिपरिदंडितं मतिहीनम् ॥
जनयंति नरं भाग्ये रविशुक्रशनैश्चरा मूर्खम् ॥ ९२ ॥

यदि सूर्य शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको कांतिहीन मलिन और राजाके दंडसे युक्त और बुद्धिहीन और मूर्ख करते हैं ॥ ९२ ॥

चन्द्रादित्रययोगाः।

धनकनकरत्नभाग्यं जनयंति शशांककुजबुधाः पुरुषम् ॥
प्रथमे वयसि सुतप्तं भाग्यगृहे सर्वनाशं च ॥ ९३ ॥

यदि चन्द्रमा मंगल बुध यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको धन सुवर्ण रत्न भाग्यसे युक्त और पहिली अवस्थामें सन्तापयुक्त और सर्वके नाश करनेवाला करते हैं ॥ ९३ ॥

चंद्रधरासुतगुरवः कुर्वंति नरं जितेंद्रियं प्राज्ञम् ॥
गुरुदेवसाधुनिरतं विद्याधरं भोगिनं सुभगम् ॥ ९४ ॥

यदि चन्द्रमा मंगल बृहस्पति यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको जितेन्द्रिय, पंडित और गुरु देव साधु इनके सेवनमें तत्पर और विद्यायुक्त और भोगी और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त करते हैं ॥ ९४ ॥

सव्रणगात्रसरूपं प्रभाक्षीणं स्त्रीप्रियं युवतिवश्यम् ॥
युवतिविनाशितसारं शशिकुजभृगुनंदना भाग्ये ॥ ९५ ॥

यदि चन्द्रमा मंगल शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको घाव-

सहित शरीरवाला और रूपहीन और प्रभाक्षीण और स्त्रीप्रिय और स्त्रीके वशमें रहनेवाला तथा स्त्रीके द्वारा नाशको प्राप्त किये बलवाला करते हैं ॥ ९५ ॥

व्यापन्नमातृवंशं क्षुद्रं बाल्ये निराकृतं मात्रा ॥
शशिभूमिजरविपुत्रा जनयंति नराधिपं भाग्ये ॥ ९६ ॥

यदि चन्द्रमा मंगल शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको नष्ट हुए माताके वंशवाला और बालपनमें मातासे वर्जित और राजा करते हैं ॥ ९६ ॥

शशिबुधजीवा भाग्ये कुलवंशविवर्द्धनं कुर्युः ॥
आचार्यविभवमित्रं नृपतिं बहुसाधनोपेतम् ॥ ९७ ॥

यदि चन्द्रमा बुध बृहस्पति यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको कुल-वंशके बढानेवाला और आचार्य विभव मित्र इनसे युक्त और राजा और बहुतसे साधनोंसे युक्त करते हैं ॥ ९७ ॥

मातृसपत्नीजनकं मुदितं मानान्वितं प्रचुरपितरम् ॥
कुर्वंति सौम्यशीलं शशिबुधशुक्रा नरं भाग्ये ॥ ९८ ॥

यदि चन्द्रमा बुध शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको माताकी सपत्नीका उत्पन्न करनेवाला और आनन्दयुक्त और मानयुक्त और बहुतसे पिता-वाला और शुभशीलवाला करते हैं ॥ ९८ ॥

शशिबुधसौरा नवमे क्लीबाचारं सुविह्वलं मलिनम् ॥
जनयंति कुत्सितधियं संग्रामपराङ्मुखं दीनम् ॥ ९९ ॥

यदि चन्द्रमा बुध शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको नपुंसकके समान आचरणकर्त्ता और अतिविह्वल और मलिन और निंदितबुद्धि और संग्रामसे भागनेवाला तथा दीन करते हैं ॥ ९९ ॥

चंद्रबृहस्पतिशुक्रा भाग्ये जातस्य यस्य पुरुषस्य ॥
स भवति नरपतितुल्यो नृपतिकुले भूपतिश्चैव ॥ १०० ॥

जिस उत्पन्न पुरुषके यदि चन्द्रमा बृहस्पति शुक्र यह तीनों नवम भावमें होवें तौ वह पुरुष राजतुल्य होता है और राजकुलमें होवे तौ राजा होता है ॥ १०० ॥

शशिगुरुसौरा भाग्ये कुर्वंति नरं प्रियालापम् ॥
तत्परवृत्तं सुशीलं विख्यातं सर्वशास्त्रकुशलं च ॥ १ ॥

यदि चंद्रमा बृहस्पति शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको प्रियभाषी और सदाचारयुक्त और सुशील तथा विख्यात और समस्त शास्त्रोंमें प्रवीण करते हैं ॥ १ ॥

शशिशुक्रयमा भाग्ये कृषिवृत्तिमरिपोषणानुरतम् ॥
कुर्युर्मनुजमपापं शूरातिथिगुरुस्वजनभक्तम् ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा शुक्र शनैश्वर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको खेतीसे जीविका करनेवाला और शत्रुके पोषण करनेमें अनुरागी और निष्पाप और शूरवीर और अतिथि (अभ्यागत) और गुरुजन और स्वजन इनका भक्त करते हैं ॥२॥

भौमादित्रययोगाः ।

कुजबुधगुरवो भाग्ये कुर्वंति नरं सदा सत्यम् ॥
जनवल्लभं सुशीलं ह्यतिनिपुणं भाग्यसंयुक्तम् ॥ ३ ॥

यदि मंगल बुध बृहस्पति यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको सदैव सत्यभाषी और जनोंका प्रिय और सुन्दरशीलसंपन्न और अतीव निपुण और भाग्यवान् करते हैं ॥ ३ ॥

कुजबुधशुक्रा भाग्ये कुर्वंति नरं महोत्साहम् ॥
बहुविषयपतिं ख्यातं नरेंद्रसत्कारसत्कृतं चंडम् ॥ ४ ॥

यदि मंगल बुध शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको बडे उत्साहवाला और बहुतसे देशका स्वामी और विख्यात और राजसत्कारसे सत्कृत और प्रचण्ड करते हैं ॥ ४ ॥

कुजसौम्ययमा भाग्ये कुर्युः परतर्ककं वचनगूढम् ॥
मलिनं खंडाकारं परकार्यनाशकं नरं नूनम् ॥ ५ ॥

यदि मंगल बुध शनैश्वर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको पराये तर्क करनेवाला और वचनगूढ और मलिन और खण्डाकार और पराये कार्यका नाश करनेवाला करते हैं ॥ ५ ॥

बुधादित्रययोगाः ।

बुधगुरुशुक्रा भाग्ये जनयंति नरं सुरोपमं सुशीलं च ॥
विख्यातं नरनाथं विद्वांसं धर्मशीलं च ॥ ६ ॥

यदि बुध बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको देवसमान और सुन्दरशीलसंपन्न और विख्यात और राजा और विद्वान् तथा धर्मशील करते हैं ॥ ६ ॥

पुष्टं पुरगुणमुख्यं प्राज्ञं नृपतिसचिवं प्रकाश्यं च ॥
धनिनं विधेयभृत्यं बुधगुरुशनयो नरं भाग्ये ॥ ७ ॥

यदि बुध बृहस्पति शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको पुष्ट और पुरमें गुणमुख्य और चतुर राजमंत्री तथा प्रकाशित और धनी और आज्ञासे रहनेवाले चाकरोंसे युक्त करते हैं ॥ ७ ॥

बुधशुक्रसूर्यपुत्रा नवमस्थानस्थिताः प्रकुर्वंति ॥
मेधाविनं प्रकाश्यं सुरुचिरवाक्यं सुखोपेतम् ॥ ८ ॥

यदि बुध शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको बुद्धिमान् और प्रकाशित और सुन्दर मनोहर वचनवाला और सुखयुक्त करते हैं ॥ ८ ॥

गुर्वादित्रययोगाः ।

त्रिदशगुरुशुक्रसौरा भाग्यग्रहस्था नरं प्रकुर्वंति ॥
प्रचुरान्नपानविभवं सुस्थितसुभगं सुरूपं च ॥ ९ ॥

यदि बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको अन्न पान विभववाला और सुन्दर स्थान और ऐश्वर्यवाला और सुन्दर रूपयुक्त करते हैं ॥ ९ ॥

रव्यादिचतुर्ग्रहयोगाः ।

रविचंद्रभौमशशिजा जन्मनि भाग्यर्क्षमाश्रिता यस्य ॥
स भवत्युत्तमपुरुषो विदेशगो नित्यसंहृष्टः ॥ १० ॥

यदि सूर्य चंद्रमा मंगल बुध यह चार जिसके जन्मसमयमें नवम भावमें स्थित होवें तौ वह उत्तम पुरुष विदेशगामी और सदैव प्रसन्न रहनेवाला होता है ॥ १० ॥

सूर्यशशिभौमगुरवो भाग्यगृहस्था नरं कुर्युः ॥
धनिनं विद्याकुशलं सुभगं नृपसमं चैव ॥ ११ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा मंगल बृहस्पति यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको धनवान् और विद्यामें निपुण और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त और राजतुल्य करते हैं ॥ ११ ॥

रविचंद्रभौमशुक्रा मायाचतुरं स्वदारसंतुष्टम् ॥
जनयंति नरं सुभगं समस्तजनवल्लभं ख्यातम् ॥ १२ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा मंगल शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको माया करनेमें चतुर और अपनी स्त्रीमें संतुष्ट रहनेवाला और सुन्दर भाग्ययुक्त और सब जनोंका प्रिय विख्यात करते हैं ॥ १२ ॥

रविचंद्रभौमसौरा पिशुनं मायाविनं सुशीलं च ॥
जनयंति सदा भाग्ये पुरुषं बहुनीचकर्माणम् ॥ १३ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा मंगल शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको चुगल और मायावी और शुभशीलयुक्त और बहुतसे नीच कर्म करनेवाला करते हैं ॥ १३ ॥

रविशशिबुधसुरगुरवो जन्मनि भाग्यर्क्षमाश्रिता यस्य ॥
पुरुषं प्रधानमखिलं नरेंद्रपूज्यं सदा हृष्टम् ॥ १४ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा बुध बृहस्पति यह चार ग्रह जिसके जन्मसमय नवम भावमें होवें तौ उस पुरुषको प्रधान और समस्त राजाओंसे पूज्य और सदा प्रसन्न रहनेवाला करते हैं ॥ १४ ॥

रविचंद्रसौम्यशुक्रा नरेश्वरं धार्मिकं समृद्धं च ॥
जनयंति भाग्यसंस्थाः पुरुषं प्रियवादिनं शांतम् ॥ १५ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा बुध शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको राजा और धर्मात्मा और संपन्न और प्रियभाषी और शान्तचित्त करते हैं ॥ १५ ॥

तरणिशशिसौम्यसौरा जन्मनि भाग्यस्थिता नरं कुर्युः ॥
नीचाचारं दीनं परस्वहरणे सदासक्तम् ॥ १६ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा बुध शनैश्वर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको नीच आचरण करनेवाला और दीन और पराये धन हरनेमें सदैव आसक्त करते हैं १६ ॥

रविचंद्रगुरुसिताश्चेज्जन्मनि भाग्ये नरं सुधियम् ॥
उत्पादयंति हृष्टं धर्मज्ञं सात्विकं सदाधीरम् ॥ १७ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको अच्छी बुद्धिवाला तथा हर्षयुक्त और धर्मात्मा और सात्विकगुणसंपन्न तथा धीर करते हैं ॥ १७ ॥

धर्मपरं सुरभक्तं विद्वांसं परगृहेषु भोक्तारम् ॥
रविचन्द्रजीवसौरा भाग्यर्क्षस्था नरं कुर्युः ॥ १८ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा बृहस्पति शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको धर्मात्मा और देवभक्त और विद्वान् और पराये गृहोंमें भोगनेवाला करते हैं ॥ १८ ॥

रविभूसुतबुधजीवा जन्मनि भाग्ये नरं प्रकुर्वंति ॥
देवपितृपूजनपरं वृद्धाचारं गुणोपेतम् ॥ १९ ॥

यदि सूर्य मंगल बुध बृहस्पति यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको देवता पितृगण इनके पूजनमें तत्पर और वृद्धोंके समान आचरण करनेवाला और गुणवान् करते हैं ॥ १९ ॥

रविभौमसौम्यशुक्रा भाग्ये जनयंति निष्ठुरं सुभगम् ॥
साहसनिरतं धूर्तं रिपुपक्षमर्दनं चैव ॥ २० ॥

यदि सूर्य मंगल बुध शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको निष्ठुर और सुन्दर ऐश्वर्यसे युक्त और साहसी तथा धूर्त और शत्रुपक्षके मर्दन करनेवाला करते हैं ॥ २० ॥

रविभौमचंद्रजसौरा भाग्ये यस्येह जायमानस्य ॥
स भवति परवादरतो विनष्टकोपः सदा दीनः ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमय यदि सूर्य मंगल बुध शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ वह पुरुष पराई निन्दामें तत्पर और नष्ट हुए खजानेवाला और सदैव दीन होता है ॥ २१ ॥

रविभौमजीवशुक्रा लोकद्वेषं नरं पिपासार्तम् ॥
जनयंति भाग्यसंस्थाः कन्यानां दूषकं बाल्ये ॥ २२ ॥

यदि सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको लोकका वैरी और पिपासासे दुःखी और बालपनमें कन्याके दूषण करनेवाला करते हैं २२

रविभौमजीवसौरा भाग्ये सुखवर्जितं सदोद्युक्तम् ॥
जलयंति नरं चंडं विक्रमयुक्तं सदासत्वम् ॥ २३ ॥

यदि सूर्य मंगल बृहस्पति शनैश्चर नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको सुखहीन और सदा उद्योगी और अतिचण्ड और पराक्रमी और सदैव धैर्ययुक्त करते हैं ॥ २३ ॥

रविभौमशुक्रशनयो रिपुक्षयाद्विगतशोकम् ॥
कुर्वंति नरं वृषलं भाग्यगता शत्रुवर्जितं चैव ॥ २४ ॥

यदि सूर्य मंगल शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको शत्रुके नाशसे दूर हुए शोकवाला तथा शूद्रके समान आचारवाला और शत्रुहीन करते हैं ॥ २४ ॥

रविबुधजीवसिताः स्युर्भाग्ये जन्मनि यस्येह पुरुषस्य ॥
स भवत्युत्तमपुरुषो धनकनकैश्वर्यसंपन्नः ॥ २५ ॥

यदि सूर्य बुध बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह जिसके जन्मसमयमें नवम भावमें होवें तौ वह पुरुष उत्तम धन सुवर्ण ऐश्वर्यसे युक्त होता है ॥ २५ ॥

रविबुधगुरुरविपुत्रा भाग्ये जनयंति मानिनं धन्यम् ॥
पापं परदाररतं विद्विष्टं नीचकर्माणम् ॥ २६ ॥

यदि सूर्य बुध बृहस्पति शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको मानयुक्त और धनसंपन्न और पापकर्ममें तत्पर तथा परस्त्रीगामी और वैरकर्ता और नीचकर्मकर्ता करते हैं ॥ २६ ॥

रविबुधसितसौराः स्युर्भाग्यस्था मानिनं सुभगम् ॥
जनयंति धनसमेतं सत्यरतं लोकविख्यातम् ॥ २७ ॥

यदि सूर्य बुध शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको मानयुक्त और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त और धनवान् और सत्यभाषी और लोकविख्यात करते हैं ॥ २७ ॥

रविगुरुसितभानुसुता भाग्यर्क्षे संस्थिता नरं कुर्युः ॥
सत्यव्रतं सुवाक्यं गुरुदेवतातिथिषु भक्तम् ॥ २८ ॥

यदि सूर्य बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको सत्यभाषी और सुन्दर वचन बोलनेवाला और गुरुजन देवता अभ्यागत इनका भक्त करते हैं ॥ २८ ॥

चंद्रादिचतुर्ग्रहयोगाः ।

चंद्रकुजज्ञसुरेज्या जनयंति नरं परिच्छदसमृद्धं च ॥
बाल्ये मातृवियुक्तं धनान्वितं संस्थिता भाग्ये ॥ २९ ॥

चंद्रमा मंगल बुध बृहस्पति यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको सामग्रियोंसे युक्त और बालपनमें मातासे हीन और धनी करते हैं ॥ २९ ॥

चंद्रकुजसौम्यशुक्रा भाग्ये जनयंति तापसं ख्यातम् ॥
वाग्मिप्रणयसमेतं परलोकपरं महाप्राज्ञम् ॥ ३० ॥

यदि चंद्रमा मंगल बुध शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको तपस्वी, विख्यात और सुन्दरभाषी और स्नेहयुक्त और परलोकपरायण और बडा पण्डित करते हैं ॥ ३० ॥

चंद्रकुजसौम्यसौरा जनयंति नरं पराङ्मुखं दीनम् ॥
क्षुद्रं मायाचतुरं परदाररतं स्थिता भाग्ये ॥ ३१ ॥

यदि चन्द्रमा मंगल बुध शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको पराङ्मुख, दीन क्षुद्र, और मायाचतुर और परदारगामी करते हैं ॥ ३१ ॥

चंद्रकुजीवशुक्रा नृपवंशकरं प्रधानमतिशूरम् ॥
विद्याधनसुतमृद्धं विख्यातं लोकसंमतं भाग्ये ॥ ३२ ॥

यदि चंद्रमा मंगल बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको राजवंशकर्त्ता और प्रधान और अतिशूर और विद्याधनसंयुक्त और लोकविख्यात और लोकमान्य करते हैं ॥ ३२ ॥

विधुभौमभृगुमंदसंयोगे कुलवंचकः ॥
लोकद्वेषी दरिद्रश्च नरः शूरकुलोद्भवः ॥ ३३ ॥

यदि चंद्रमा मंगल शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुष कुलके ठगनेवाला और लोकद्वेषी और दरिद्र और शूरकुलमें उत्पन्न होता है ॥३३॥

शशिबुधसुरगुरुशुक्रा जन्मनि भाग्यर्क्षमाश्रिता यस्य ॥
जनयंति धर्मसंस्थं नरं कलासु निपुणं च ॥ ३४ ॥

यदि चंद्रमा बुध बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह जन्मसमय नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको धर्मयुक्त और कलाओंमें चतुर करते हैं ॥ ३४ ॥

शशिबुधसितरविपुत्रा जन्मनि भाग्यस्थिता नरं कुर्युः ॥
मायाविनं प्रचण्डं किंचिन्नयविशारदं धन्यम् ॥ ३५ ॥

यदि चन्द्रमा बुध शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह जन्मसयय नवम भावमें होवें तौ पुरुषको मायावी, प्रचण्ड और कुछ नीतिवेत्ता और धनयुक्त करते हैं ॥ ३५ ॥

चन्द्रगुरुशुक्रसौरा जनयंति नरं सुमेधसं प्राज्ञम् ॥
धनकनकरत्नसमेतं सुभगं सदा संस्थिता भाग्ये ॥ ३६ ॥

यदि चन्द्रमा बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ पुरुषको बुद्धिमान् और पंडित और धन सुवर्ण रत्नसे युक्त और सुन्दर ऐश्वर्यवाला करते हैं ॥ ३६ ॥

भौमादिचतुर्ग्रहयोगाः ।

भौमबुधजीवशुक्रा जन्मनि भाग्यस्थिताः प्रकुर्वन्ति ॥
मायाविनं प्रचण्डं रणेषु पूज्यं नरं धीरम् ॥ ३७ ॥

यदि मंगल बुध बृहस्पति शुक्र यह चार ग्रह जन्मसमय नवम भावमें होवें तौ पुरुषको मायावी प्रचण्ड और संग्राममें पूज्य और धीर करते हैं ॥ ३७ ॥

भौमज्ञसूरिशनयो भाग्यस्थानोपगाः प्रकुर्वंति ॥
रिपुपक्षपरिक्षीणं रणे प्रचंडं सुधीरं च ॥ ३८ ॥

यदि मंगल बुध बृहस्पति शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको शत्रुपक्षसे क्षीण और प्रचण्ड और सुन्दर धीरज करते हैं ॥ ३८ ॥

भौमज्ञशुक्रशनयो नरं विदेशं धनैः परित्यक्तम् ॥
क्षुद्रं दयाविहीनं दुःसत्वं संस्थिता भाग्ये ॥ ३९ ॥

यदि मंगल बुध शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको विदेशगामी और धनोंसे हीन और क्षुद्र और दयाहीन और दुष्टस्वभाववाला करते हैं ॥ ३९ ॥

भौमेज्यसितमंदानां संयोगे सुमुखो धनी ॥
विद्याविनयसंपन्नः साहसी सुजनप्रियः ॥ ४० ॥

यदि मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्चर इनका संयोग नवम भावमें होवे तौ पुरुष सुन्दर मुखवाला और धनी और विद्याविनययुक्त और साहसी और सुजनप्रिय होता है ॥ ४० ॥

बुधादिचतुर्ग्रहयोगाः ।

बुधगुरुसितरविपुत्रा जन्मनि भाग्यस्थिता नरं कुर्युः ॥
परवादविवादरतं परदारप्रीतिमन्तं च ॥ ४१ ॥

जन्मसमय बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चार ग्रह नवम भावमें होवें तौ पुरुषको परजनोंसे वादविवादकर्त्ता और परस्त्रीमें प्रीति रखनेवाला करते हैं ॥ ४१ ॥

एवं बहुप्रकारैर्भाग्यगृहे बादरायणादिभिरुक्तम् ॥
गृहयोगैः सद्भवनैर्विचिंत्य बुधो वदेदन्यत् ॥ ४२ ॥

इस प्रकार बहुत प्रकारसे नवम भावमें अनेक फल बादरायण आदिने कहे हैं नवम भावमें ग्रहयोग और राशियोंकरके विचार कर पंडित अन्य फलको कहे ॥ ४२ ॥

भाग्यस्थरव्यादीनामवधयो हिल्लाजः ।

तीर्थं च धर्मकृदिनो नवमेऽथ चंद्रस्तीर्थं नखेऽसृगिह वातभयं च शुक्रे ॥ गोक्ष्यब्दमातृमृतिमिंदुसुतोऽथ जीवस्तिथ्यब्दके पितृमृतिं च सितोऽत्र लक्ष्मीम् ॥ ४३ ॥

नवम भावमें सूर्य तीर्थ और धर्मको करता है और चन्द्रमा बीस वर्षमें तीर्थ करता है और मंगल चौदह वर्षमें वातभय करता है और बुध उन्तीसवें वर्षमें माताका मरण करता है और बृहस्पति पन्द्रह वर्षमें पिताका मरण करता है और शुक्र पन्द्रह वर्षमें लक्ष्मीको करता है ॥ ४३ ॥

भाग्ये राशिफलम्।

धर्मस्थितेऽत्रैव हि मेषराशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम् ॥
तेषां प्रदानेन च पोषणेन दयाविपाकः पशुपालनेन ॥ ४४ ॥

यादि मेषराशि नवम भावमें होवे तौ चौपायोंसे उत्पन्न हुए धर्मको करता है और तिन चौपायोंके दान और पोषण और पशुपालनसे मनुष्य दयासंपन्न रहता है ॥ ४४ ॥

वृषे च धर्मप्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रभूतम् ॥
विचित्रदानैर्बहुगोप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनैश्च ॥ ४५ ॥

यदि वृषराशि नवमभावमें स्थित होवे तौ मनुष्य विचित्र दान और बहु गोदान और भूषण वस्त्र भोजन इनसे धनके निमित्त धर्मको करता है ॥४५ ॥

तृतीयराशौ प्रकरोति धर्मं धर्मस्थिते धर्मकृतं सदैव ॥
अभ्यागतोत्थद्विजभोजनाद्वा दीनानुकंपाश्रयमानसेन ॥ ४६ ॥

यादि मिथुनराशि नवम भावमें होवे तौ मनुष्य धर्मके निमित्त अभ्यागत ब्राह्मण इनके भोजनसे वा दीनजनोंके कृपाश्रयमनसे धर्मको करता है ॥ ४६ ॥

व्रतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैर्धर्मं नरः संकुरुते सदैव ॥
धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा धनसेवया च ॥ ४७ ॥

यादि कर्कराशि नवम भावमें होवे तौ पुरुष विषम विचित्र व्रत और उपवास इनसे और तीर्थके आश्रयसे और धनसेवासे धर्मको करता है ॥ ४७ ॥

तत्रस्थिते चाथ हि सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मर्त्यः ॥
स्वधर्महीनोऽपि क्रियाभिरेव सुतीर्थरूपं विनयेन हीनम् ॥४८॥

यादि सिंहराशि नवम भावमें होवे तौ पुरुष परजनोंका धर्म करता है और यह पुरुष अपने धर्मसे हीन और क्रियाओंसे हीन होता है और उस पुरुषका पवित्ररूप विनयसे हीन होता है ॥ ४८ ॥

धर्माश्रितः स्याद्यदि षष्ठराशिः स्त्रीधर्मसेवां कुरुते सदैव ॥
विहीनभक्तिर्बहुजन्मना च पाखण्डमाश्रित्य तथान्यपक्षम् ४९॥

यदि कन्याराशि नवम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सदैव स्त्रीधर्मकी सेवाको करता है और हीनभक्ति होकर बहुतसे जन्मकर पाखण्डधर्म और अन्य पक्षको आश्रय करके जीवन करता है ॥ ४९ ॥

तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सुसिद्धधर्मः ॥
देवद्विजानां परितोषणेन जनानुरागेण तथार्भकाणाम् ५० ॥

यदि तुलाराशि नवम भावमें होवे तौ सिद्धधर्मवाला पुरुष देव ब्राह्मणोंकी तृप्तिसे, जनोंकी प्रीतिसे और बालकोंकी प्रीतिसे धर्मको करता है ॥ ५० ॥

यदालौ धर्मगे वत्सदंभी धर्मविनिर्मुखः ॥
नित्यं क्लेशप्रदो भूपः साधुसत्पुरुषैरपि ॥ ५१ ॥

यदि वृश्चिक राशि नवम भावमें होवे तौ पुरुष कपटी और धर्महीन और साधु तथा सत्पुरुषोंको क्लेश देनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यः करोति धर्मं द्विजतोषणोत्थम् ॥
स्वात्मप्रियं शास्त्रविनिर्मितं च प्रभूततोषं प्रथितं नृलोके ५२ ॥

यदि धनुराशि नवम भावमें होवे तौ मनुष्य ब्राह्मणोंकी तुष्टिसे उत्पन्न तथा अपने प्रिय और शास्त्रसंमत और बहुतसे संतोषवाले नृलोकमें विख्यात ऐसे धर्मको करता है ॥ ५२ ॥

धर्माश्रिते वै मकरे मनुष्यो चापोत्थधर्मं कुरुते प्रतापम् ॥
पश्चाद्धिनस्त्येव समांगनाभिःकौल्यं समाश्रित्य सदा स्वपक्षम् ५३

यदि मकरराशि नवम भावमें होवे तौ धनुषसंबंधी धर्म और प्रतापको करता है और पीछेसे स्त्रियोंके सहित कुलधर्मका त्यागन करता है और अपने पक्षको सदैव आश्रित करके वर्त्तमान होता है ॥ ५३ ॥

कुंभश्च धर्मोपगतश्च धर्मं पुंसां विधत्ते सुरसंघजातम् ॥
वृक्षाश्रयोत्थं च तथाग्निजातमारामवापीप्रभवं सदैव ॥५४॥

यादि कुंभराशि नवम भावमें स्थित होवे तौ देवसमूहसे उत्पन्न हुए धर्मको पुरुषोंके लिये विधान करता है और वृक्षोंके आधारसे उत्पन्न तथा अग्निसंबंधी और बाग बगीचा बावडी संबंधी धर्मको करता है ॥ ५४ ॥

धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्मं विविधं नृलोके ॥
सत्रप्रपारामतडागजातं तीर्थार्जनेनोत्थमखैर्विचित्रैः॥ ५५ ॥

यदि मीनराशि नवम भावमें होवे तौ नृलोकमें मनुष्य यज्ञ प्रपा आराम तडाग-संबंधी, तीर्थसंबन्धी तथा विचित्र यज्ञसंबंधी धर्मको करता है ॥ ५५ ॥

भाग्यभावपतिफलं जन्मप्रदीपात्।

लग्नगते नवमपतौ देवान् गुरून्मन्यते शूरः ॥
कृपणः क्षितिपतिकर्मा स्वल्पग्राही भवति मतिमान् ॥५६॥

यदि नवमभावस्वामी लग्नमें होवे तौ शूरवीर होकर देवता और गुरुजनोंका सत्कार करता है और कृपण और राजकर्मकर्त्ता तथा थोडा संग्रहण करनेवाला और बुद्धिमान् होता है ॥ ५६ ॥

नवमाधिपे तु धनगे वृषलो विदितः सुशीलवान्सत्यः ॥
सुकृती वदनव्यंगः चतुष्पदोत्पन्नपीडातः ॥ ५७ ॥

यदि नवमभावपति द्वितीय भावमें होवे तौ पुरुष शूद्रके समान आचारवाला और विख्यात और अच्छे शीलसे युक्त और सत्यभाषी और पुण्यात्मा और चौपायोंसे उत्पन्न हुई पीडासे मुखमें अंगहीन होता है ॥ ५७ ॥

सहजगते सुकृतपतौ रूपस्त्रीबंधुवत्सलः पुरुषः ॥
बंधुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवति बंधुभिः सहितः ॥ ५८ ॥

यदि नवमभावपति तृतीय भावमें होवे तौ पुरुष रूप स्त्री बंधु इनमें प्रीति करने-वाला और बंधु स्त्रीका रक्षा करनेवाला और बांधवगणोंसे युक्त होकर जीवता है५८

सुकृतेशे हिबुकगते पितृभक्तः पितृपूजको विदितः ॥
सुकृतिर्मित्रसुवर्गे उत्तमकर्मणि रतिर्भवति ॥ ५९ ॥

यदि नवमभावपति चतुर्थ भावमें होवे तौ पुरुष पिताका भक्त और पिताका पूजनकर्त्ता और विख्यात और अच्छा कार्यवाला होता है और मित्रवर्गोंमें और उत्तम कर्ममें उस पुरुषकी प्रीति होवे है ॥ ५९ ॥

सुकृतेशे सुतसंस्थे सुकृती गुरुदेवपूजने निरतः ॥
वपुषा सुंदरमूर्तिः सुकृतिसमेता भवंति सुताः ॥ ६० ॥

यदि नवमभावपति पंचम भावमें होवे तौ पुरुष पुण्यात्मा और गुरुदेवपूजनमें युक्त और शरीरकर सुन्दर मूर्तिवाला होता है और उस पुरुषके पुत्र अच्छे कार्यसे युक्त होते हैं ॥ ६० ॥

शत्रुप्रणतपरायणधर्माकलितं कलाविकलदेहम् ॥
दर्शननिद्रानिरतं सुकृतपतिः षष्ठगः कुरुते ॥ ६१ ॥

यदि नवमभावपति षष्ठ भावमें होवे तौ पुरुषको शत्रुप्रणतपालक और धर्महीन और कलासे विमल शरीरवाला और दर्शन निद्रामें तत्पर करता है ॥ ६१ ॥

नवमपतौ सप्तमगे सत्यवती सुवचना सुरूपा च ॥
शीलश्रीयुतदयिता सुकृतयुता जायते नियतम् ॥ ६२ ॥

यदि नवमभावपति सप्तम भावमें होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री सत्यभाषिणी और अच्छे वचन और रूपवाली और शील श्रीयुत प्रिया और पुण्ययुक्त होवे हैं ॥६२॥

दुष्टो जन्तुविघाती गृहबंधुविवर्जितः सुकृतरहितः ॥
नवमेशे मृत्युगते क्रूरः खण्डस्तु विज्ञेयः ॥ ६३ ॥

यदि नवमभावपति अष्टम भावमें होवे तौ पुरुष दुष्ट और प्राणियोंका हिंसक और गृहबन्धुगणोंसे हीन और पुण्यवर्जित और क्रूर और खण्डित जानना चाहिये ॥ ६३ ॥

सुकृतपतिः सुकृतगतः सुबंधुभिः प्रीतिमतुलितं सत्वम् ॥
दातारं देवगुरुस्वजनकलत्रादिषु च भक्तम् ॥ ६४ ॥

यदि नवमभावपति नवम भावमें होवे तौ बांधवोंके साथ प्रीति और अतुलित बल करता है और पुरुषको दानी और देवता गुरु स्वजन स्त्री इत्यादिमें भक्त करता है ॥ ६४ ॥

नृपकर्माणं शूरं मातापित्रोश्च पूजकं पुरुषम् ॥
धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्गगनगृहलीनः ॥ ६५ ॥

यदि नवमभावपति दशम भावमें होवे तौ पुरुषको राजकर्मकर्त्ता और शूरवीर और माता पिता इन दोनोंका पूजनकर्त्ता और धर्मविख्यात करता है ॥ ६५ ॥

दीर्घायुर्धर्मपरो धनेश्वरः स्नेहलो नृपतिलाभी ॥
सुकृते ख्यातः सततं सुकृतपतौ लाभभवनस्थे ॥ ६६ ॥

यदि नवमभावपति एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष दीर्घायु और धर्मयुक्त और धनस्वामी और स्नेही और राजासे लाभवाला और पुण्यमें विख्यात होता है ॥ ६६ ॥

द्वादशगे सुकृतेशे मानी देशांतरे सुरूपश्च ॥
विद्यावाञ्छुभखेटे क्रूरे खेटे भवेत्कुमतिधूर्तः ॥ १६७ ॥

इति जातकसंग्रहे नवमभावविचारः समाप्तः ॥ ९ ॥

यदि नवमभावपति शुभ ग्रह होकर द्वादश भावमें होवे तौ पुरुष देशान्तरमें मानवाला और सुन्दर रूपवाला और विद्यावान् होता है और पाप ग्रह होवे तौ पुरुष कुबुद्धि और धूर्त्त होता है ॥ १६७ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां नवमभावविचारः समाप्तः ॥ ९ ॥

दशमभावविचारः ।

कर्मभावः तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ॥
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥१॥

द्रव्य राजमान राज्य और पिताका प्रयोजन और महत्पदकी प्राप्ति यह सब दशम विचारने चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्नादिह हि दशमभावे सर्वकर्मप्रकामम् ॥ गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्वभावैः सकलमपि विचिंत्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

मनुष्योंके सर्व कर्मोंकी समीक्षा ऋषियोंने प्रयत्नसे दशम भावमें कही है और दशमभावसंबन्धिनी दृष्टिसे और राशिग्रहोंके स्वभावसे बलानुसार समस्त दशमभावसंबंधी फल पंडितोंको विचारना चाहिये ॥ २ ॥

यद्यप्यनेकानि वदंति तज्ज्ञा नानाविधार्थानि फलानि कोव्यः ॥
तथापि संसारसमुद्रमध्ये भुंक्ते नरः कर्मफलानि चैव ॥ ३ ॥

यद्यपि ज्योतिषशास्त्रवेत्ता अनेक प्रकारके अनेक तरहके अर्थवाले फलोंको कहते हैं तथापि संसारसमुद्रके मध्यमें नर कर्मफलोंको भोगता है ॥ ३ ॥

सामान्यविचारेण कर्मस्थरव्यादीनां फलानि तत्र रविफलम् ।

शूरो वाहनधीवीर्यविभवात्मजवान् रवौ ॥
असह्यः कर्मगे धृष्यः सिद्धारंभश्च जायते ॥ ४ ॥

यदि सूर्य दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष शूर वीर और वाहन बुद्धि बल धन पुत्र इनसे युक्त और असह्य और प्रगल्भ और सिद्धारम्भ अर्थात् कार्यका सिद्ध करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रफलम् ।

सिद्धारंभः शुचिः कर्मपरः शूरो धनान्वितः ॥
धर्मवांश्च विवादी च विलग्नात्कर्मगे विधौ ॥ ५ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें चन्द्रमा होवे तौ पुरुष सिद्ध आरम्भवाला और पवित्र और कर्ममें तत्पर और वीर और धनाढ्य और धर्मवान् और विवाद-कर्त्ता है ॥ ५ ॥

भौमफलम् ।

प्रधानसेवकः शूरः प्रतापी धनपुत्रवान् ॥
कर्मोद्युक्तः कुजे धृष्यो नरः स्याद्दशमस्थिते ॥ ६ ॥

यदि दशमभावमें मंगल होवे तौ पुरुष प्रधानसेवक और शूर वीर और बडा प्रतापी और धनपुत्रवान् और कर्ममें उद्योगी और नहीं पराजयको प्राप्त होने वाला होता है ॥ ६ ॥

बुधफलम् ।

धीमान् धीरो धर्मचेष्टो धर्मवृत्तियुतः सदा ॥
सात्त्विकः कर्मगे सौम्ये नानालंकारवान्नरः ॥ ७ ॥

यदि दशम भावमें बुध होवे तौ पुरुष बुद्धिमान् और धीर और धर्ममें चेष्टा रखनेवाला और धर्मवृत्तिसे युक्त और सात्त्विक गुणयुक्त तथा अनेक आभ-रणोंसे युक्त होता है ॥ ७ ॥

गुरुफलम् ।

यशोवाहनसौख्यार्थगुणसत्यसमन्वितः ॥
सिद्धारंभोऽतिचतुरो भव्यकर्मस्थिते गुरौ ॥ ८ ॥

यदि दशम भावमें बृहस्पति तौ पुरुष कीर्त्ति वाहन सौख्य धन गुण सत्य इनसे युक्त और सिद्ध किये कार्यवाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

शुक्रफलम् ।

विवादार्जितमानार्थरतिकीर्तिसमन्वितः ॥
मतिमांश्च धनी ख्यातो नरः स्यात्कर्मगे सिते ॥ ९ ॥

यदि दशम भावमें शुक्र होवे तौ पुरुष वादविवादसे इकट्ठे किये मान और अर्थ और प्रीतिवाला तथा कीर्त्तियुक्त और बुद्धिमान् तथा धनी और विख्यात होता है ॥ ९ ॥

शनिफलम् ।

भवेद्वृन्दपुरग्रामपतिर्वा दंडनायकः ॥
प्राज्ञः शूरो धनी मंत्री नरः कर्मस्थिते शनौ ॥ १० ॥

यदि दशम भावमें शनैश्वर होवे तौ पुरुष वृन्द पुर ग्राम इनका पति अथवा दंड-पति और पंडित और शूर वीर तथा धनयुक्त और मंत्री होता है ॥ १० ॥

सेवार्जितधनः क्रूरः कृपणः पक्षिघातकः ॥
जंघारोगी नीचशत्रुराशिस्थे कर्मगे शनौ ॥ ११ ॥

यदि नीचराशि वा शत्रुराशिका शनैश्वर दशम भावमें होवे तौ पुरुष सेवासे इकट्ठे किये धनवाला तथा क्रूर और कृपण ओर पक्षियोंका मारनेवाला और जंघामें रोगवाला होता है ॥ ११ ॥

राहुफलम् ।

भवेद्वृंदपुरग्रामपतिर्वा दंडनायकः ॥
कर्मस्थिते तमे प्राज्ञः शूरो मंत्री धनान्वितः ॥ १२ ॥

यदि दशम भावमें राहु होवे तौ पुरुष वृन्द पुर ग्राम इनका पति वा दण्ड-नायक और पंडित और शूर तथा मंत्री और धनी होता है ॥ १२ ॥

केतुफलम् ।

गुदामयो श्लेष्मवृत्तिर्म्लेच्छकर्मा च मानवः ॥
परदाररतो नित्यं केतौ दशमगे गृहे ॥ १३ ॥

यदि दशम भावमें केतु होवे तौ पुरुष गुदामें रोगवाला और कफप्रकृति और म्लेच्छोंके समान कर्मकरनेवाला और परस्त्रीगामी होता है ॥ १३ ॥

गर्गमतेन ।

कर्मस्थानं ग्रहाऽयुक्तं यदि वा दृष्टिवर्जितम् ॥
तदा दारिद्र्यदोषेण परिभ्रमति मेदिनीम् ॥ १४ ॥

यदि दशम भाव ग्रहोंसे हीन होवे अथवा ग्रहोंकी दृष्टिहीन होवे तौ दारिद्र्य-दोषसे सदैव पृथिवीपर भ्रमण करता है ॥ १४ ॥

विशेषविचारः कल्याणवर्मा ।

लग्नाद्दशमे राशौ कर्म नृणां यत्प्रकीर्तितं मुनिभिः ॥
राशिग्रहस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्या तत्प्रवक्ष्यामि ॥ १५ ॥

लग्नसे जो कि दशमराशि है उसमें मनुष्योंका जो कि महर्षियोंने कहा है उसी कर्मको राशिग्रहोंके स्वभावसे और ग्रहोंकी दृष्टिसे कहूंगा ॥ १५ ॥

होरेंद्वोर्बलयोर्यद्दशमस्तत्स्वभावजं कर्म ॥
तस्याधिपतिविवृद्ध्या वृद्धिर्ज्ञेयाऽन्यथा हानिः ॥ १६ ॥

लग्न और चंद्रमा इनमें जो बलवान् होवे तिससे जो दशम राशि है तिसके स्वभावसे उत्पन्न हुआ कर्म जानना चाहिये और उस राशिके स्वामीकी वृद्धिसे कर्मकी वृद्धि और हानिसे कर्मकी हानि जाननी चाहिये ॥ १६ ॥

तनोःसकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ॥
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥१७॥

यदि लग्नके सकाशसे दशम भावमें चंद्रमा होवे तौ उस पुरुषकी जीविका अनेक प्रकारके कलाकौशल और वाग्विलास और सब प्रकारके उद्यम और साहस कर्मोंसे सदैव होवे है ॥ १७ ॥

कर्मचिंता ।

लग्नाद्विधोर्बलयुताद्दशमं च कर्म स्वेशाढ्यदृष्टमथवा शुभदृष्टयुक्तम् ॥ तत्सौख्यवृत्तिदमथो खलखेटयुक्तं दृष्टं प्रयासभववृत्तिकरं वदंति ॥ १८ ॥

यदि लग्न चन्द्रमा इनमें जो बलवान् होवे उससे जो कि दशम भाव है वह कर्मसंज्ञक है। यदि कर्मसंज्ञक भाव अपने अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट होवे अथवा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ उस पुरुषको सुखकारी वृत्तिको देता है और पाप ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ प्रयत्नपूर्वक कष्टसे होनेवाली वृत्तिको करता है ऐसा पंडितजन कहते हैं ॥ १८ ॥

खस्थे खपेऽगविधुतः खनवांशपे वा स्वोच्चांशके स्वलवभे सुखवृत्तयः स्युः ॥ नीचारिभागगृहगेऽल्पसुखाल्पपुण्यो दासोपचारभृतकानुचरः सदा सः ॥ १९ ॥

यदि लग्न चंद्रमासे दशम भावका स्वामी दशम भावमें स्थित होवे अथवा दशम भावका नवांशपति अपने उच्च नवांशमें वा अपने नवांश राशिमें होवे तौ सुखपूर्वक वृत्ति होवे है और नीचराशि वा शत्रुनवांश वा शत्रुराशिमें होवे तौ पुरुष थोडे सुख और पुण्यवाला होता है और वह पुरुष दास उपचारकभृतक अनुचर सदैव होता है ॥ १९ ॥

खे वित्सितावथ शशी च खगोऽथ जीवः खे स्यान्नृपात्तविभवोऽखिलकर्मसिद्धिः ॥ कर्मण्यगुः स्वगृहगः कुजशुक्रसौम्यैर्युक्तेक्षितः क्षणधनर्द्धिधनक्षयौ स्तः ॥ २० ॥

यदि बुध और शुक्र दशम भावमें होवें अथवा चंद्रमा दशम भावमें होवे अथव बृहस्पति दशम भावमें होवे तौ पुरुष राजासे प्राप्त हुए धनवाला और समस्त कर्मोंकी सिद्धिवाला होता है। यदि अपने राशिका राहु दशम भावमें होवे और मंगल शुक्र बुध इनसे युक्त और दृष्ट होवे तौ क्षणमात्रको धनकी वृद्धि हो जावे और क्षणमात्रको धननाश होता है ॥ २० ॥

अर्थाप्तिरंगविधुतो दशमेऽर्कमुख्यैस्ताताविकाऽरिहितबंधुकलत्रभृत्यैः ॥ तैर्वाद्यलाभधनगैः स्वसुहृद्रिपुभ्यः स्वेष्टारिगैर्बहुविधा बलिभिः शुभैस्तैः ॥ २१ ॥

यदि लग्न और चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य होवे तौ पितामे धनकी प्राप्ति होवे है और चन्द्रमा होवे तौ मातासे, मंगल होवे तौ शत्रुसे, बुध होवे तौ मित्रसे, बृहस्पति होवे तौ बन्धुओंसे, शुक्र होवे तौ स्त्रीसे और शनैश्वर होवे तौ चाकरसे धनकी प्राप्ति होवे है। यदि वह सूर्यादि ग्रह अपने मित्रराशिके होकर लग्न एकादश द्वितीय इन भावोंमें होवें तौ अपने मित्रोंसे और शत्रुराशिके होकर पूर्वोक्त भावोंमें होवें तौ शत्रुओंसे धनकी प्राप्ति होवे है और शुभ ग्रह बली होकर लग्न एकादश द्वितीय इन भावोंमें होवें तो बहुत प्रकारसे धनकी प्राप्ति होवे है ॥ २१ ॥

अन्यच्च ।

सूर्यादिभिर्व्योम्नि गतैर्विलग्नादिंदोःस्वपाके क्रमशः प्रकल्प्या ॥ अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याःशत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ॥२२॥

यदि लग्न और चंद्रमासे दशमभावमें सूर्य होवे तौ सूर्यकी दशामें पितासे धनकी प्राप्ति होवे है और चन्द्रमा होवे तौ चन्द्रमाकी दशामें मातासे, मंगल होवे तौ मंगलकी दशामें शत्रुसे, बुध होवे तौ बुधकी दशामें मित्रसे, बृहस्पति होवे तौ बृहस्पतिकी दशामें भ्रातासे, शुक्र होवे तौ शुक्रकी दशामें स्त्रीसे और शनैश्वर होवे तौ शनैश्वरकी दशामें चाकरसे धनकी प्राप्ति होवे है ॥ २२ ॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशपतेस्तु वृत्त्या परिकल्पनीयम् ॥ सदौषधौर्णादितृणैः सुवर्णैर्दिवामणिर्वृत्तिविधिं विधत्ते ॥ २३ ॥

स्वामीकी वृत्तिसे पुरुषकी जीविका कल्पना करनी चाहिये । यदि नवांशपति सूर्य होवे तौ श्रेष्ठ औषध ऊन रेशम तृण सुवर्ण इनसे जीविका करता है ॥ २३ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियादेः ॥
कुजोऽग्निसत्साहसधातुशास्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः॥२४॥

यदि नवांशपति चन्द्रमा होवे तौ स्त्रीसे और जलाशयसे उत्पन्न हुई वस्तुसे और खेती आदि क्रियासे जीविका करता है और नवांशपति मंगल होवे तौ अग्नि और सत्साहस और धातु और शस्त्र इनसे जीविका करता है और नवांशपति बुध होवे तौ काव्यकलाओंके समूहसे जीविका करता है ॥ २४ ॥

जीवो द्विजन्माकरदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ॥
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ २५ ॥

बृहस्पति नवांशपति होवे तौ ब्राह्मण खान देव धर्म इनसे जीविका करता है और नवांशपति शुक्र होवे तौ महिषी आदि पशुओंसे और चांदी तथा रत्नोंसे जीविका करता है और शनैश्चर होवे तौ अतीव नीचतर कर्मोंसे जीविका करता है इस प्रकार प्रत्येक ग्रह मनुष्योंकी जीविका करता है ॥ २५ ॥

अन्यच्च ।

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्तते ॥
तत्तुल्यकर्मणा वृत्तिं निर्दिशन्ति मनीषिणः ॥ २६ ॥

दशमभावस्वामी ग्रह जिसके नवांशमें वर्तमान होवे तौ पंडित उस ग्रहके तुल्य कर्मसे जीविकाको कहते हैं ॥ २६ ॥

मित्रारिगेहापगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः ॥
तुंगे पतंगे[1] स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥२७॥

यदि सूर्यादि ग्रह दशम भावमें अपने मित्रके गृहके होवें तौ मित्रसे और शत्रुके गृहमें होवें तौ शत्रुसे जीविका माननी चाहिये । यदि सूर्य वा सूर्यके उपलक्षणसे और भी ग्रह दशम भावमें अपने उच्च राशिमें वा अपने राशिमें वा मूलत्रिकोण राशिमें होवें तौ पुरुषको अपने बाहुबलसे अर्थसिद्धि होवे है ॥ २७॥

कर्मस्थमेषादिवर्गफलम् ।

आरामपात्रलिपिभिर्वणिजाच्च दूतसेवादिवृत्तिकृषिभिर्दशमेऽजवर्गे ॥
गंधादिभिर्गत्रिचतुष्पदाद्यैर्वर्गेऽत्र कर्मणि वृषस्य विहंगवृत्तिः॥२८॥

---

१ पतंगौ पक्षिसूर्यौ चेत्यमरः । पतंग इत्युपलक्षणादन्यग्रहोऽपि बोध्यः ।

जो दशमभावमें मेषराशिका षड्वर्ग होवे तौ बागबगीचा पात्र लेखन वणिजी दूत सेवा खेती इत्यादिसे वृत्ति होवे है । यदि दशम भावमें वृषराशिका षड्वर्ग होवे तौ गंध आदि गाडी और चौपाये आदिसे वा पक्षियोंसे जीविका होवे है ॥ २८ ॥

मुक्तादिविद्रुमजलोत्थवणिक्क्रियाभिर्लिप्यादिशंखधवलैर्मिथुनस्य वर्गे ॥ शस्त्राग्नियोनिपरिपोषणशंखमुक्ताविद्यादिकाव्यकृतिभिः खलु कीटवर्गे ॥ २९ ॥

यदि मिथुनका षडर्ग दशम भावमें होवे तौ मोती मणि विद्रुम जल आदिसे और वणिजी कर्मोंसे और लेखन आदिसे वा शंख और उज्ज्वल वस्तुओंसे जीविका होवे है । यदि कर्कका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ शस्त्र अग्नि योनिपरिपोषण शंख मोती विद्या आदिसे और काव्यसंबन्धी कर्मोंसे जीविका होवे है ॥ २९ ॥

अन्नादिकाष्ठविपणेन सुवर्णरौप्यवीर्यादिकर्मकृषिधान्यमयैश्च सिंहे ॥ गंधर्वशिल्पिकरणामयकर्मकृत्यैःकन्यागणे सुगुणितैः शकटैर्नभस्थे ॥ ३० ॥

यदि सिंहराशिका षडर्ग दशम भावमें होवे तौ अन्न आदि वस्तु और काष्ठ इनके बेचने खरीदनेसे और सुवर्ण चांदीसे और पराक्रम आदि कर्मसे और खेती धान्य आदिसे जीविका होवे है । यदि कन्याराशिका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ गन्धर्वविद्या शिल्पीकर्म तथा अभयकर्म और सुन्दर गणितविद्यासे तथा गाडियोंसे जीविका होवे है ॥ ३० ॥

हैरण्यगोमहिषधान्यवणिग्विपण्यमूलैः फलैर्नृपतितो घटजेऽबरस्थे ॥ स्त्रीसंगमाप्तविभवैः कृषिकार्यचौर्याच्चैकित्सकान्नृपतितो दशमालिवर्गे ॥ ३१ ॥

यदि तुलाराशिका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ सुवर्ण गौ भैंस धान्य वणिजी दुकान मूल इनसे और फलोंसे और राजासे जीविका होवे है । यदि वृश्चिकका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ स्त्रीसंगमसे और अनेक धनोंसे और खेतीके कार्यसे और चोरीसे और चिकित्सासे और राजासे जीविका होवे है ॥ ३१ ॥

भैषज्यगोऽश्वरसकाष्ठजयंत्रविद्याभूपादिमंत्रगिरिदुर्गभृतश्च चापे ॥ पण्यांगनावणिजवारिविपंचिवित्ताः श्रेष्ठा रसायनरताश्च मृगोत्थवर्गे ॥ ३२ ॥

यदि दशम भावमें धनुराशिका षड्वर्ग होवे तौ औषध गो घोडा रस काष्ठ यंत्रविद्या इनसे राजा आदिसे और मन्त्र पर्वत किला आदिसे जीविका पानेवाला होता है । यदि मकरका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ वेश्या वणिज वीणा आदिसे धनवाले होते हैं अथवा रसायनविद्यामें निपुण होते हैं ॥ ३२ ॥

शस्त्राग्निभेदखननादिकचौर्यभारस्कंधोपवृत्तिरतिबाहुबला-
द्घटोत्थे ॥ शस्त्राम्जलाद्योनिप्रपोषणाद्वा स्वविक्रमादवरगे
झषोत्थे ॥ ३३ ॥

यदि कुंभका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ शस्त्रसे अग्निसे भेदकर्मसे खोदना आदि कर्मसे चोरीसे बोझासे और समूहके उपजीवनकी प्रीतिसे और बाहुबलसे जीविका करता है । यदि मीनराशिका षड्वर्ग दशम भावमें होवे तौ शस्त्रसे और जलसे और योनिके पालनसे वा अपने पराक्रमसे जीविका होवे है ॥ ३३ ॥

खस्थे खपे खद्रेक्काणे खलवे भे खभांशगे ॥
चापांशे तु गते कर्मस्वोच्चांशर्क्षेऽखिलं शुभम् ॥ ३४ ॥

यदि दशमभावपति दशम भावमें होवे अथवा दशम भावके द्रेष्काणमें होवे अथवा दशम भावके त्रिंशांशमें होवे अथवा दशम भावके द्वादशांशमें होवे अथवा दशम भावके नवांशमें होवे अथवा अपने उच्च नवांश वा उच्च राशिमें होवे तौ समस्त कर्म शुभ होता है ॥ ३४ ॥

शत्रुनीचलवर्क्षस्थे दास्यं श्रेष्ठाधमं पुनः ॥
सदसद्दृक्षसौम्योग्रयुग्वा तत्स्वदशासु च ॥ ३५ ॥

यदि दशमभावपति शत्रुराशि वा शत्रुनवांशमें वा नीचराशि वा नीच नवांशमें होवे तो दासभाव होता है । यदि दशमभावपति शुभ राशिसे युक्त होवे तौ श्रेष्ठ कर्म होवे है, अशुभराशिसे युक्त होवे तौ नीचकर्म होता है, अथवा शुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ श्रेष्ठ कर्म होता है और अशुभ ग्रहसे युक्त होवे तौ नीचकर्म होता है । यह फल उस दशमपतिकी स्वदशाओंमें होता है ॥ ३५ ॥

सूर्योऽन्यदेशांतरविक्रमेण चंद्रः सुधर्मस्थितिदासभावम् ॥
जीवस्तु भद्राक्षतमर्थतोऽथवा बुधस्तु वाक्योपचयोपरोधैः॥३६॥

यदि दशम भावमें सूर्य होवे तौ अन्य देशान्तरके पराक्रमसे युक्त करता है और चंद्रमा होवे तौ सुधर्मस्थिति और दासभाव करता है और बृहस्पति होवे तौ शुभ

१ स्कंधः प्रकांडे कायेंऽस्रे विज्ञानादिषु पंचसु । नृपे समूहे व्यूहे चेति हैमः ।

कर्मसे युक्त अथवा धनसे युक्त करता है । बुध होवे तौ वाक्यसमूहोंकी रचनाओंसे युक्त करता है ॥ ३६ ॥

नियोगभुग्नं वनितार्थतो वा शुक्रः कुजः सैन्यबलावकष्टम् ॥
अनाथदुःखोपहतं च सौरस्तथा तथैतेषु च यो विपाकः॥३७॥

दशम भावमें शुक्र होवे तौ आज्ञामें कुटिल अथवा स्त्रीधनसे युक्त करता है और मंगल होवे तौ सेनाबलसे युक्त करता है और शनैश्वर होवे तौ अनाथ और दुःखयुक्त करता है । इनके मध्यमें जिसका जो फल है वह तिसी २ प्रकार होता है ॥ ३७ ॥

कर्मभावे द्विग्रहयोगा होराप्रदीपे ।

सुदेहो निर्जितारातिर्निर्दयो बलनायकः ॥
दुःशीलो राजसो लग्नात्सूर्येन्द्वोः कर्मसंस्थयोः ॥ ३८ ॥

यदि लग्नसे सूर्य चंद्रमा दोनों दशम भावमें स्थित होवें तौ पुरुष सुन्दर शरीरवाला तथा जीते हुए शत्रुओंवाला और दयाहीन और सेनापति और दुःशीलसे युक्त और राजसीय स्वभाववाला होता है ॥ ३८ ॥

भृतको विफलारंभः प्रधाननृपसेवकः ॥
नित्योद्विग्नश्च विकलः कर्मण्यादित्यभौमयोः ॥ ३९ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें सूर्य मंगल यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष चाकरी कर्त्ता और निष्फल कार्यवाला और प्रधान और राजाका सेवक और नित्य उद्विग्न चित्तवाला और विकल होता है ॥ ३९ ॥

गजाश्वमेदिनीनाथो विख्यातो जायते नरः ॥
कर्मणि ज्ञार्कयोरेवं न नीचगृहसंस्थयोः ॥ ४० ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें बुध सूर्य यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष हाथी घोडा पृथ्वी इनका स्वामी और विख्यात होता है और नीच राशिके होकर स्थित होवें तौ ऐसा फल नहीं होता है ॥ ४० ॥

निंद्ये कुलेऽपि संभूतो नृपः स्यादर्कजीवयोः ॥
कर्मस्थयोर्यशःसौख्यसन्मानविभवान्वितः ॥ ४१ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें सूर्य बृहस्पति यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष निन्दित कुलमें जन्म लेकर भी राजा होता है और कीर्ति सौख्य सन्मान धन इनसे युक्त होता है ॥ ४१ ॥

नरेंद्रचरिते शास्त्रे निपुणः कर्मसंस्थयोः ॥
सख्यर्थवाहनैर्युक्तो बह्वारंभोर्कशुक्रयोः ॥ ४२ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें सूर्य शुक्र यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ राजनीतियुक्त शास्त्रमें चतुर और मित्र धन वाहन इनसे युक्त और बहुतसे कार्योंके आरम्भ करनेवाला होता है ॥ ४२ ॥

नरो विदेशगः प्रेष्यः स्याद्व्योम्नि रविमंदयोः ॥
किंचिद्भूपात्समाप्नोति चौरा मुष्णंति तत्क्वचित् ॥ ४३ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें सूर्य शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष परदेशगामी और चाकरी करनेवाला होता है और जो कुछ धनको राजासे प्राप्त करता है उसको किसी समयपर चौर चुरा लेते हैं ॥ ४३ ॥

चन्द्रादियोगाः।

गजाश्वकोशसंपत्तिमतियुक्तं शशी नरम् ॥
कुरुते भौमसंयुक्तो गगने विक्रमान्वितम् ॥ ४४ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें मंगलयुक्तः चन्द्रमा होवें तो पुरुषको हाथी घोडा खजाना संपदा बुद्धि इनसे युक्त और पराक्रमी करता है ॥ ४४ ॥

ख्यातो मानी धनी भूपो मंत्री व्योम्नींदुसौम्ययोः ॥
वयसोंऽत्ये भवेद्दुःखी बंधुस्वजनवर्जितः ॥ ४५ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें चन्द्रमा बुध यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष विख्यात और मानयुक्त और धनी और राजा और मंत्री होता है और अवस्थाके अन्तभागमें पुरुष दुःखी और बन्धु स्वजनोंसे हीन होता है ॥ ४५ ॥

व्योम्नींदुजीवयोर्विद्वान् दाता मानार्थकीर्तिमान् ॥
स्फीतो लंबभुजः सर्वनमस्यो जायते नरः ॥ ४६ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें चन्द्रमा बृहस्पति यह दोनों ग्रह विद्यमान होवें तौ पुरुष विद्वान् और दानकर्त्ता और मान धन कीर्तिसे युक्त और समृद्ध और लम्बी भुजाओंवाला और सबके पूजने योग्य होता है ॥ ४६ ॥

मंत्री बहुजनः ख्यातः क्षमायुक्तो नृपोऽथवा ॥
मानज्ञो विभवैर्युक्तो व्योम्नि शीतांशुशुक्रयोः ॥ ४७ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें चन्द्रमा शुक्र यह दोनों ग्रह वर्त्तमान होवें तौ

पुरुष मन्त्री और बहुतसे जनोंवाला और विख्यात और क्षमायुक्त और राजा और मानके जाननेवाला और धनविभवोंसे युक्त होता है ॥ ४७ ॥

ख्यातो विनिर्जितारातिर्नृपतिः स्याद्द्वियोषितः ॥
सूर्यपुत्रयुते चंद्रे विलग्नात्कर्मणि स्थिते ॥ ४८ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें शनैश्चरसहित चन्द्रमा होवे तौ पुरुष विख्यात और जीते हुए शत्रुओंवाला और राजा तथा दो स्त्रियोंवाला होता है ॥ ४८ ॥

भौमादियोगाः ।

शूरः समतितेजस्वी भूमिपाभिमतो नरः ॥
क्रूरः सेनापतिर्धीरः कर्मणि क्षितिजज्ञयोः ॥ ४९ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें मंगल बुध यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष शूरवीर और बुद्धिमान् और तेजस्वी और राजासे सत्कार पानेवाला और क्रूर और सेनापति तथा धीर होता है ॥ ४९ ॥

प्रभूतपरिवारार्थः पार्थिवः कीर्तिमान्भवेत् ॥
व्योम्नि कर्मसमर्थश्च संस्थयोर्भौमजीवयोः ॥ ५० ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें मंगल बृहस्पति यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष बहुतसे परिवार, धनवाला, राजा, कीर्तिमान् और कर्मसमर्थ होता है ॥ ५० ॥

शस्त्राचार्यो माल्यवस्त्रविद्यार्थमतिसंयुतः ॥
सितारयोर्भूपमंत्री स्त्रीतुल्यतनुरंबरे ॥ ५१ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें शुक्र मंगल यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष शस्त्र-विद्यामें निपुण और माला वस्त्र विद्या अर्थ बुद्धि इनसे युक्त और राजमंत्री और स्त्रीके समान शरीरवाला होता है ॥ ५१ ॥

अप्राप्तार्थो नृपात्तेन दंडितश्चापराधतः ॥
कुजसूर्यजयोर्व्योम्नि भवेद्विभववर्जितः ॥ ५२ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें मंगल शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष राजासे नहीं मिलनेवाला और किसी अपराधसे तिस राजकर दंडको प्राप्त होता है और विभवसे हीन होता है ॥ ५२ ॥

बुधादियोगाः ।

भूपो विनीतो मंत्री वा मानाज्ञाख्यातिसंयुतः ॥
सुताभिचारो दशमे संस्थयोर्बुधजीवयोः ॥ ५३ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें बुध बृहस्पति यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष राजा और विनीत वा मंत्री और मान आज्ञा विख्याति इनसे युक्त होता है और पुत्रके जारणमारणादि रूप हिंसाकर्मसे युक्त होता है ॥ ५३ ॥

नीतिवित्सकलारंभः साधुर्नीचानुगो नृपः ॥
समर्थश्च नृपाढ्यश्च कर्मणींदुजशुक्रयोः ॥ ५४ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें बुध शुक्र यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष नीतिशास्त्रवेत्ता तथा सकल कार्योंके साधनकर्त्ता और साधु और नीचोंके अनुकूल रहनेवाला राजा और समर्थ तथा राजासे युक्त होता है ॥ ५४ ॥

असाधुर्मलिनो मूर्खः प्रेष्यश्चासत्यवाग्भवेत् ॥
परोपकारी मनुजो व्योम्नि बोधनमंदयोः ॥ ५५ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें बुध शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष असाधु और मलिन और चाकरी करनेवाला तथा असत्यभाषी और परोपकारी होता है ॥ ५५ ॥

गुर्वादियोगाः।

जीवभार्गवयोर्भूपो मानाज्ञाविभवान्वितः ॥
बहुभृत्यः सुशीलश्च जायते कर्मसंस्थयोः ॥ ५६ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें बुध शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष राजा और मान आज्ञा विभव इनसे युक्त और बहुतसे नौकरोंवाला और सुन्दरशीलयुक्त होता है ॥ ५६ ॥

भृगुशन्योर्योगः।

विशिष्टकर्मा विख्यातः सर्वद्वंद्वविवर्जितः ॥
नृपमंत्री भवेद्व्योम्नि संस्थयोः शुक्रमंदयोः ॥ ५७ ॥

यदि लग्नसे दशम भावमें शुक्र शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष उत्तम कर्मकर्त्ता और विख्यात और सर्व द्वंद्वोंसे हीन और राजमंत्री होता है ॥ ५७ ॥

मेषूरणस्थितैस्त्र्याद्यैरेवमेव नभश्चरैः ॥
द्वियोगकल्पनायुक्त्या फलं वाच्यं मनीषिभिः ॥ ५८ ॥

यदि तीनसे आदि लेकर चार पांच छः सात ग्रह दशम भावमें स्थित होवें तौ द्विग्रहोंके योगकी कल्पनाकी युक्तिसे बुद्धिमानोंको फल कहना चाहिये ॥ ५८ ॥

चन्द्रात्कर्मचिन्ता ।

चन्द्रात्कर्मस्थिते सूर्ये सिद्धारंभो धनान्वितः ॥
सात्विको नृपतुल्यो वा भवेद्दुष्टजनाश्रयः ॥ ५९ ॥

यदि चन्द्रमासे सूर्य दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सिद्ध किये हुए कार्यवाला और धनी और सात्त्विकगुणयुक्त और राजाके तुल्य और दुष्टजनोंके आश्रयवाला होता है ॥ ५९ ॥

प्रत्यंतवासी विषमो लुब्धः क्रूरोऽतिसाहसी ॥
निषादचरितश्चैव भौमे कर्मणि संस्थिते ॥ ६० ॥

यदि चन्द्रमासे मंगल दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष म्लेच्छदेशवासी और विषमस्वभाव और क्रूर और अतिसाहसी और चांडालके समान आचरणवाला होता है ॥ ६० ॥

बहुपुत्रो धर्मविद्वाञ्छिल्पविद्धननायकः ॥
प्राज्ञः ख्यातो भवेच्चंद्राच्चंद्रजे कर्मसंस्थिते ॥ ६१ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें बुध होवे तौ बहुतसे पुत्रोंवाला और धर्मकार्यमें विद्वान् और कारीगरीकी विद्याके जाननेवाला और धनस्वामी और पंडित और विख्यात होता है ॥ ६१ ॥

शुभाचारो विशुद्धार्थः समृद्धो धार्मिको भवेत् ॥
शशांकात्कर्मगे भूपो मंत्री वासुरमंत्रिणि ॥ ६२ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष शुभ आचारवाला और विशुद्ध धनवाला और धर्मात्मा और राजा वा मंत्री होता है ॥ ६२ ॥

सिद्धारंभः सुललितः सुभगो नृपपूजितः ॥
वित्तवाञ्जायते चंद्राद्भार्गवे कर्मसंस्थिते ॥ ६३ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें शुक्र होवे तौ पुरुष सिद्धकार्यवाला और मनोहर और सुन्दर ऐश्वर्यसंपन्न और राजपूजित और धनवान् होता है ॥ ६३ ॥

व्याधितो दुःखितो निःस्वो नित्योद्विग्नश्च कर्मसु ॥
प्रज्ञाहीनो नरश्चंद्रात्कर्मभावस्थिते शनौ ॥ ६४ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें शनैश्चर होवे तो पुरुष व्याधियुक्त और दुःखी और निर्धन और कर्मोंके मध्य नित्य उद्विग्न रहनेवाला और बुद्धिहीन होता है ॥ ६४ ॥

रवियोगाः ।

सूर्याच्चंद्रादयो व्योम्नि हिंस्रः क्षुद्रः कुकर्मकृत् ॥
कामरुक्शोकबहुलो भवेद्रक्षणकर्मकृत् ॥ ६५ ॥

यदि सूर्यसे दशम भावमें चंद्रमा आदि ग्रह होवें तौ क्रमसे वह पुरुष इस प्रकार होता है: अर्थात् चंद्रमा होवे तौ हिंसक होता है, मंगल होवे तौ क्षुद्र, बुध होवे तौ कुकर्मकर्त्ता, बृहस्पति होवे तौ कामरोगी, शुक्र होवे तौ बहुतसे शोकवाला और शनैश्चर होवे तौ रक्षाकर्म करनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

चंद्राद्द्विग्रहयोगाः ।

अलंकरणवस्त्रादिदिव्यवाणिज्यको नरः ॥
शूरस्तीक्ष्णोऽतिहिंस्रश्च विधोर्खादित्यभौमयोः ॥ ६६ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष अलंकार वस्त्र आदिसे युक्त तथा दिव्यवणिजी करनेवाला और शूर वीर तथा तीक्ष्ण और अतिहिंसक होता है ॥ ६६ ॥

वस्त्रवाहनभूषादिभोक्ता वाणिज्यकर्मकृत् ॥
जलजीवी भवेच्चंद्रात्कर्मण्यादित्यसौम्ययोः ॥ ६७ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष वस्त्र वाहन भूषण आदिका भोगनेवाला तथा वणिजी कर्मके करनेवाला और जलसे जीविका करनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

वीरः शूरः पुमान्ख्यातो नृपमान्यश्च जायते ॥
सिद्धारंभो विधोर्व्योम्नि संस्थयो रविजीवयोः ॥ ६८ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बृहस्पति यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष वीर शूर तथा विख्यात और राजासे सत्कार पानेवाला और सिद्ध किये कार्यवाला होता है ॥ ६८ ॥

स्त्रीसंश्रयः समृद्धश्च सुभगो नृपवल्लभः ॥
सशुक्रे भास्करे चंद्रात्कर्मगे स्वजनाश्रितः ॥ ६९ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें शुक्रसहित सूर्य होवे तौ पुरुष स्त्रीके आश्रय रहनेवाला तथा समृद्ध और सुन्दर ऐश्वर्य युक्त और राजप्रिय होता है ॥ ६९ ॥

भृतकः कृपणो दीनो वधबंधनभाग्भवेत् ॥
प्रवासी चोरमुख्यश्च चन्द्राद्व्योम्न्यर्कमंदयोः ॥ ७० ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष चाकरीकर्त्ता और कृपण दीन और वध और बंधनको प्राप्त होनेवाला तथा परदेशवासी और चोरोंमें मुख्य होता है ॥ ७० ॥

भौमादिद्विग्रहयोगाः ।

भूभृतोऽरिर्महाशूरः शशांकाद्भौमसौम्ययोः ॥
भवेच्च सुकलादक्षः सजीवी कर्मसंस्थयोः ॥ ७१ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल और बुध स्थित होवें तौ पुरुष राजाका शत्रु और महाशूर और सुन्दर कलाओंमें चतुर और बडे आयुवाला होता है ॥ ७१ ॥

मित्रेभ्यो लब्धविभवः स्यात्तदाश्रयजीवितः ॥
बलिनोश्चेद्भवेच्चंद्राद्व्योम्नि भूसुतजीवयोः ॥ ७२ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल और बृहस्पति यह दोनों ग्रह बली होकर स्थित होवें तौ पुरुष मित्रजनोंसे प्राप्त किये धनवाला और मित्रजनोंके आश्रित रहनेवाले जीवनसे युक्त होता है ॥ ७२ ॥

विदेशगो वणिग्वृत्त्या हेममुक्तादिभिर्युतः ॥
जीवति स्त्र्याश्रयो चेंदोर्व्योम्नि भूसुतशुक्रयोः ॥ ७३ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल शुक्र यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष वणियोंकी वृत्तिसे परदेशमें रहनेवाला तथा सुवर्ण मोती मणि आदिसे युक्त और स्त्रियोंके आश्रित होकर जीवता है ॥ ७३ ॥

साहसी जायते मर्त्यो कर्मयुक्तोऽनृतोर्जितः ॥
चंद्रात्कर्मस्थयोर्भौममंदयोर्जायते नरः ॥ ७४ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल शनैश्चर यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष साहसी और कर्मयुक्त और झूंठ बोलनेवाला होता है ॥ ७४ ॥

बुधादियोगाः ।

धर्मिष्ठो नायकः ख्यातो नृपपूज्यो धनान्वितः ॥
लिपिविच्छास्त्रसूत्रज्ञश्चंद्राद् व्योम्नि बुधेज्ययोः ॥ ७५ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बुध बृहस्पति होवे तौ पुरुष धर्मात्मा और स्वामी और विख्यात तथा राजपूज्य और धनी और लेखनकर्मसे युक्त और शास्त्रसूत्रोंके जाननेवाला होता है ॥ ७५ ॥

मित्रार्थवनितासौख्यभाक्सुधीः सचिवो भवेत् ॥
देशाधीशोऽथवा चंद्रात्खमध्ये बुधशुक्रयोः ॥ ७६ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बुध शुक्र यह दोनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष मित्र धन स्त्री सौख्य इनसे युक्त और पंडित तथा मन्त्री अथवा देशपति होता है ॥ ७६ ॥

मृद्भांडकृन्नरो लेख्यलिपिकृच्च प्रजायते ॥
विद्याचार्योऽतिविख्यातश्चंद्राद्द्योम्नि ज्ञमंदयोः ॥ ७७ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बुध शनैश्चर यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष मट्टीके बर्त्तन बनानेवाला तथा चित्रकारी और लेखन कर्मकर्त्ता और विद्याचार्य और विख्यात होता है ॥ ७७ ॥

गुर्वादियोगाः।

नृपभृत्यो द्विजपतिः समर्थः शोकवर्जितः ॥
विद्याचार्यो भवेच्चंद्राद्द्योम्नि देवेज्यशुक्रयोः ॥ ७८ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बृहस्पति शुक्र यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष राजाका सेवक और ब्राह्मणोंका स्वामी तथा समर्थ और शोकहीन तथा विद्याचार्य होता है ॥ ७८ ॥

परोपतापकृन्नीचसिद्धारंभः प्रजायते ॥
प्रसिद्धचेष्टितश्चंद्राद्दशमे जीवमंदयोः ॥ ७९ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें बृहस्पति शनैश्चर यह दोनों ग्रह होवें तौ पुरुष पराये संताप करनेवाला और नीच तथा सिद्ध किये हुए कार्यवाला और विख्यात कर्म करनेवाला होता है ॥ ७९ ॥

तैली सुवर्णकारश्च नाट्यचित्रकरो भवेत् ॥
गंधोपजीविकश्चंद्राद्दशमे जीवशुक्रयोः ॥ ८० ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें शुक्र शनैश्चर यह दोनों स्थित होवें तौ पुरुष तैल बेचनेवाला तथा सुवर्णकार वा नाच गान करनेवाला वा चित्रकारी तथा गंधसे जीविका करनेवाला होता है ॥ ८० ॥

चंद्रात्त्रिग्रहयोगाः सारावल्याम्।

रविभौमचंद्रपुत्राश्चंद्राद्दशमस्थिता नरं धन्यम् ॥
जनयंत्युत्तमपुरुषं नृपतिजनपूज्यं सर्वजनपूज्यम् ॥ ८१ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बुध यह तीनों ग्रह होवें तौ उस उत्तम पुरुषको धनयुक्त और राजजनपूज्य तथा सर्वजनपूज्य उत्पन्न करते हैं ॥ ८१ ॥

रविभौमदेवपूज्या दशमस्थानोपगा नरं सुभगम् ॥
शत्रूणां जेतारं जनयंति समृद्धिसंयुक्तम् ॥ ८२ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बृहस्पति यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको सुन्दर ऐश्वर्यसंपन्न और वैरियोंका जीतनेवाला और समृद्धियुक्त उत्पन्न करते हैं ॥ ८२ ॥

चंद्राद्दशमे भास्करभूसुतभृगुनंदनाश्च जनयंति ॥
क्रूरं साहसनिरतं परस्वापहारिणं चैव ॥ ८३ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल शुक्र यह तीनों ग्रह होवें तौ क्रूर और साहसी और पर धनके हरनेवाला उत्पन्न करते हैं ॥ ८३ ॥

रविभूसुतरविपुत्रा दशमस्थाः क्रूरकर्मनिरतं च ॥
उत्पादयंति मनुजं निगूढपापं दुराचारम् ॥ ८४ ॥

यदि चंद्रमासे सूर्य मंगल शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ क्रूरकर्मयुक्त और छिपे हुए पापवाला और दुराचारी उत्पन्न करते हैं ॥ ८४ ॥

रविबुधगुरवो दशमे विद्वांसं रूपसंयुतं सुभगम् ॥
उत्पादयंति पुरुषं धर्मिष्ठं वल्लभं चैव ॥ ८५ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध बृहस्पति यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको विद्वान् और रूपवान् और ऐश्वर्यवान् और धर्मात्मा और प्रिय उत्पन्न करते हैं ॥८५॥

रविशशिसुतभृगुपुत्रा यशस्विनं धार्मिकं विगतरोषम् ॥
जनयंत्यपराभूतं सौभाग्यपरिच्छेदं समृद्धं च ॥ ८६ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध शुक्र यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको बडा यशवाला और धर्मात्मा और क्रोधहीन और नहीं पराजयको प्राप्त होनेवाला और सौभाग्य सामग्रियोंसे युक्त और समृद्ध उत्पन्न करते हैं ॥ ८६ ॥

रविबुधशनयो दशमे क्रूरं चपलं नरं विशीलं च ॥
उत्पादयंति नियतं शस्त्राग्निपरिक्षतांगं च ॥ ८७ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको क्रूर और चपल और शीलहीन और शस्त्र अग्निसे विदीर्ण शरीरवाला उत्पन्न करते हैं ॥ ८७ ॥

रविसुरगुरुभृगुपुत्रा दशमस्थानोपगा नरं कुर्युः ॥
सुभगं विद्याप्तधनं धर्मरतिं भोगभागिनं नित्यम् ॥ ८८ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको सुन्दर ऐश्वर्य युक्त और विद्यासे प्राप्त हुए धनवाला और धर्ममें प्रीति युक्त और भोगभागी उत्पन्न करते हैं ॥ ८८ ॥

रविसुरगुरुरविपुत्रा दशमस्थानोपगा नरं कुर्युः ॥
रोगान्वितमतिचपलं समस्तजनविप्रयुक्तं च ॥ ८९ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य बृहस्पति शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको रोगी और अतिचपल और समस्त जनोंसे हीन उत्पन्न करते हैं ॥ ८९ ॥

भौमादियोगाः।

भौमेंदुजसुरपूज्या धर्मिष्ठान्बहुकुटुंबपरिवारान् ॥
जनयंति दशमसंस्था विविधधनभाजनान्पुरुषान् ॥ ९० ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल बुध बृहस्पति यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषोंको धर्मात्मा और बहुतसे कुटुम्बपरिवारवाला और अनेक प्रकारके धनवाला करते हैं ॥ ९० ॥

शोभनशिल्पाभिरतान् मालाकारान्सुवर्णकारांश्च ॥
कुर्युः कुजबुधशुक्रा दशमस्थाः सर्वलोकहानिरतान् ॥ ९१ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल बुध शुक्र यह तीनों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुषको अच्छी कारीगरीसे युक्त और मालाकर तथा सुवर्णकार और सब लोकके हानि करनेमें युक्त करते हैं ॥ ९१ ॥

भौमबुधसूर्यपुत्रा जनयंति नरान्धर्मशीलांश्च ॥
निद्रानिरतान्सरलान्दशमस्थानोपगास्तु सत्यांश्च ॥ ९२ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल बुध शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको धर्मशील और निद्रायुक्त और सरल स्वभाव और सत्यभाषी करते हैं ॥ ९२ ॥

भौमसुरमंत्रिशुक्राश्चंद्राद्दशमाश्रिता नरं कुर्युः ॥
धनसंयुक्तं सनयं देवद्विजजनानुरक्तं च ॥ ९३ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको धनयुक्त और नीतिशास्त्रका जाननेवाला तथा देव ब्राह्मण जनोंका अनुरागी करते हैं ॥ ९३ ॥

भौमभृगुभानुपुत्रा दशमस्थानोपगा नरं मलिनम् ॥
उत्पादयंत्यसत्यं वधबंधविवादनिरतं च ॥ ९४ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें मंगल शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको मलिन और असत्यभाषी और वध बंधन विवाद इनसे युक्त करते हैं ॥ ९४ ॥

बुधादियोगाः ।

बुधगुरुशुक्रा दशमे जनयंति सदेष्टसंयुतं पुरुषम् ॥
धनिनमतिसौख्ययुक्तं धर्मज्ञं सात्त्विकं धीरम् ॥ ९५ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बुध बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह होवों तौ पुरुषको सदैव इष्ट मित्रोंसे युक्त और धनी और अतिसौख्यवाला और धर्मात्मा और सात्त्विक गुणयुक्त और धीर करते हैं ॥ ९५ ॥

बुधदैत्यपूज्यशनयो जनयंति नरं सदा दशमसंस्थाः ॥
धनधर्मयुक्तप्रज्ञं दयान्वितं सत्यनिष्ठं च ॥ ९६ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बुध शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको धन और धर्मसे युक्त बुद्धिवाला और दयायुक्त और सत्यभाषी करते हैं ॥ ९६ ॥

गुर्वादियोगाः ।

सुरगुरुभार्गवशनयो जनयंति नरं त्वनेककर्मरतम् ॥
दशमे विज्ञानयुतं सुजनं परदेशनिरतं च ॥ ९७ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह तीनों ग्रह होवें तौ पुरुषको अनेक कर्मोंमें युक्त और विज्ञानी और सुजन और परदेशगामी करते हैं ॥९७॥

चंद्राद्दशमस्थैस्तुर्यग्रहैः फलम् ।

प्रदीप्तांगो नरः क्रूरो दाता सकलकर्मकृत् ॥
रविभौमज्ञदेवेज्यैश्चंद्राद्दशमगैर्भवेत् ॥ ९८ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बुध बृहस्पति यह चारों ग्रह स्थित होवें तौ पुरुष प्रकाशमान शरीरवाला और क्रूर तथा दानी और सकलकार्यकर्त्ता होता है ॥ ९८ ॥

मालाकारो लेख्यचित्ररतः कर्मरतस्तथा ॥
चंद्राद्दशमगैः सूर्यभौमचंद्रजभार्गवैः ॥ ९९ ॥

यदि चंद्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बुध शुक्र यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष मालाकार और लेखन और चित्रकार्यमें युक्त और कार्यकर्त्ता होता है ॥ ९९ ॥

चंद्राद्दशमगैः सूर्यभौमचन्द्रात्मजार्किभिः ॥
जायते पुरुषो नीचरतो धर्मसमन्वितः ॥ १०० ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बुध शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष नीचकर्मकर्त्ता और धर्मकार्यमें युक्त होता है ॥ १०० ॥

कृषिकृद्धर्मशीलश्च बहुधान्यधनान्वितः ॥
सदोद्यमी भवेच्चंद्रात्सूर्यारेज्यसितैः खगैः ॥ १ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष खेती करनेवाला तथा धर्मात्मा तथा बहुतसे धान्य धनोंसे युक्त तथा सदा उद्यमकर्त्ता होता है ॥ १ ॥

परस्वहरणे सक्तः क्रूरकर्मरतो भवेत् ॥
अर्कारजीवशनिभिश्चन्द्राद्दशमसंस्थितैः ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमे सूर्य मंगल बृहस्पति शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष पराये धनको हरनेवाला तथा क्रूर कर्ममें युक्त होता है ॥ २ ॥

शक्ताचारो प्रकाश्यश्च जायते निपुणो नरः ॥
चन्द्राद्दशमगैः सूर्यभौमास्फुजिदिनात्मजैः ॥ ३ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य मंगल शुक्र शनैश्चर यह ग्रह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष समर्थ आचारवाला और प्रकाशित होनेवाला और चतुर होता है ॥ ३ ॥

वाचको मधुरो मल्लवृत्तिकर्षणकृन्नरः ॥
चंद्राद्दशमगैः सूर्यबुधेज्यभृगुजैर्भवेत् ॥ ४ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें बुध बृहस्पति शुक्र यह चारों ग्रह होवें तौ कहनेमें निपुण और मधुरभाषी और मल्लवृत्ति करनेवाला तथा कृषिकर्त्ता होता है ॥ ४ ॥

परेषां वचनासक्तो मेधावी क्रूरचेष्टितः ॥
रविसौम्येज्यरविजैश्चन्द्राद्दशमसंस्थितैः ॥ ५ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध बृहस्पति शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष पराये वचनोंमें आसक्त और चतुर और क्रूरकर्मकर्त्ता होता है ॥ ५ ॥

कर्षणानुरतं दक्षं वाग्मिनं कठिनं नरम् ॥
चंद्राद्दशमगैः सूर्यबुधभार्गवभानुजैः ॥ ६ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य बुध शुक्र शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष कृषिकर्मकर्त्ता और चतुर और सुन्दरभाषी और कठिन स्वभाववाला होता है ॥६॥

रविजीवास्फुजिन्मंदैश्चन्द्रान्मेषूरणस्थितैः ॥
प्रवाससक्तो मनुजो भवेद्विविधचेष्टितः ॥ ७ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें सूर्य बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तो पुरुष परदेशवासी और अनेक कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

भौमादियोगाः ।

प्रधृष्य समरे शूरः पंडितो निपुणो भवेत् ॥
चंद्रात्कर्मस्थितैर्भौमबुधदेवेज्यभार्गवैः ॥ ८ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें मंगल बुध बृहस्पति शुक्र यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष प्रगल्भ और संग्राममें शूरवीर और पंडित और चतुर होता है ॥ ८ ॥

वैरिहा कठिनः शूरः सदोद्युक्तश्च संगरे ॥
चंद्रात्कर्मस्थितैर्भौमबुधदेवेज्यभानुजैः ॥ ९ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें मंगल बुध बृहस्पति शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष वैरियोंका नाशक और कठिन स्वभाव और शूरवीर और संग्राममें सदा उद्युक्त रहनेवाला होता है ॥ ९ ॥

सुविद्वान्बहुलः शूरो विशालांगो नरो भवेत् ॥
चंद्रात्कर्मस्थितैर्भौमबुधशुक्रशनैश्चरैः ॥ १० ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें मंगल बुध शुक्र शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष अच्छा विद्वान् और सबमें अधिक और शूरवीर और विशाल शरीरवाला होता है ॥ १० ॥

धीरो धनसमृद्धश्च पुमान्बहुकुटुंबभाक् ॥
इंदोर्दशमगैर्भौमजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ ११ ॥

यदि चन्द्रमासे दशम भावमें मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष धीर, धनी और बहुतसे कुटुम्बवाला होता है ॥ ११ ॥

मेधावी लोकविदितः शांतात्मा पुरुषो भवेत् ॥
कर्मसंस्थैर्विधोः सौम्यजीवभार्गवभानुजैः ॥ १२ ॥

यदि चन्द्रमासे बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर यह चारों ग्रह होवें तौ पुरुष बुद्धिमान् और लोकविख्यात, शान्त चित्त होता है ॥ १२ ॥

इमे योगाः प्रशस्यंते सौम्यग्रहनिरीक्षिताः ॥
अभद्राः प्रायशः प्रोक्ताः पापग्रहनिरीक्षिताः ॥ १३

यदि यह योग शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ शुभ होते हैं और पाद ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ वहुधा अशुभ हैं ॥ १३ ॥

वैद्याः पुरोहिताः शास्त्रगणका वंचका नराः ॥
जायंते कर्मगैः पापैः सौम्यग्रहनिरीक्षितैः ॥ १४ ॥

यदि पाप ग्रह दशम भावमें स्थित होवें और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें तौ पुरुप वैद्य वा पुरोहित वा ज्योतिपी ठगई करनेवाले होते हैं ॥ १४ ॥

अवधिवर्षाणि हिल्लाजेनोक्तानि।

एकोनविंशतिवियोगमिनोऽबरस्थश्चन्द्रस्त्रिवेदधनकृत्क्षिति-
जो भवर्षे ॥ शस्त्राद्भयं विदि हि गोकुशरद्धनं च जीवोऽर्कके
धनमथो भृगुजोऽत्र सौख्यम् ॥ १५ ॥

यदि सूर्य दशम भावमें होवे तौ उन्नीसवें वर्षमें वियोग करता है और चन्द्रमा होवे तौ तेतालीसवें वर्षमें धन करता है और मंगल होवे तौ सत्ताईसवें वर्षमें शस्त्रसे भय होता है और बुध होवे तौ उन्नीसवें वर्षमें धन देता है और बृह० स्पति होवे तौ बारहवें वर्षमें धन प्राप्त करता है और शुक्र होवे तौ बारहवें वर्षमें सौख्य होता है ॥ १५ ॥

कर्मभावे राशिफलम्।

कर्मस्थिते मुख्यतमे च राशौ करोति कार्यप्रवरं सुहृष्टम् ॥
पैशुन्यरूपं विनयातिरिक्तं सुनिंदितं साधुजनस्य लोके ॥ १६ ॥

यदि मेषराशि दशम भावमें स्थित होवे तौ पुरुष सुन्दर श्रेष्ठ तथापि शुनतारूप और लोकमें सज्जनसे निन्दित कर्मको करता है ॥ १६ ॥

वृषेऽबरस्थे प्रकरोति कर्म व्ययात्मकं साधुजनानुतापम् ॥
द्विजेंद्रदेवातिथिभिर्विधिज्ञःकार्यात्मकःप्रीतिकरः सतां च ॥१७॥

यदि वृषराशि दशम भावमें होवे तौ पुरुष खर्चवाला कर्म करता हैं और वह पुरुष श्रेष्ठ जनोंको सन्ताप देनेवाला, ब्राह्मण देवता अतिथि इनके पूजनकी विधिका जाननेवाला और कार्यकर्त्ता और सज्जनोंकी प्रीतिकर्त्ता होता है ॥ १७ ॥

युग्मेऽबरस्थे प्रकरोति मर्त्यः कर्मप्रधानं गुरुभिः प्रदिष्टम् ॥
कीर्त्यन्वितं प्रीतिकरं द्विजानां प्रभासमेतं कृषिजं सदैव ॥१८॥

यदि मिथुनराशि दशम भावमें होवे तौ पुरुष गुरुजनोंके आज्ञा किये हुए और कीर्तियुक्त तथा ब्राह्मणोंकी प्रीतिजनक और कान्तियुक्त तथा खेतीसंबंधी ऐसा प्रधान कर्म करता है ॥ १८ ॥

कर्केऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः कर्म प्रपारामतडागजातम् ॥
विचित्रवापीतरुघट्टजं वा कूपादि नित्यं तरिकल्पनं च ॥ १९॥

यदि कर्कराशि दशम भावमें होवे तौ पुरुष प्याऊ बगीचा तालाव इनका संबंधी तथा विचित्र बावडी वृक्ष घाट इनका संबंधी और कूपादिसंबंधी कर्म और नावसंबंधी कर्मको करता है ॥ १९ ॥

सिंहेऽम्बरस्थे कुरुते मनुष्योऽधर्मं सपापं विकृतं च कर्म ॥
सपौरुषं प्राणिवधं च नित्यं वधात्मकं निंदितमेव पुंसाम्॥२०॥

यदि सिंहराशि दशम भावमें होवे तौ मनुष्य अधर्म और पापयुक्त भयंकर कर्म और पुरुषार्थप्राणियोंका विनाश और बन्धनरूप निंदित कर्मको करता है ॥ २० ॥

नभःस्थलस्थे त्वथ षष्ठराशौ करोति कर्मत्वमितो मनुष्यः ॥
स्त्रीराजभाजीजनताविरुद्धं कामात्मकं निंद्यतमं नृलोके ॥ २१ ॥

यदि कन्याराशि षष्ठ भावमें होवे तौ वह पुरुष स्त्रीराजसेवक और बलवान् होकर मनुष्योंके विरुद्ध और इच्छानुसारी और नरलोकमें निंदित कर्मको करता है ॥ २१ ॥

तुलाधरे व्योमगते मनुष्यो वाणिज्यकर्मप्रचुरं करोति ॥
धर्मात्मकं चापि नयेन युक्तं सतामभीष्टं परसंमतं च ॥ २२ ॥

यदि तुलराशि दशम भावमें होवे तौ मनुष्य बहुतसा वणिजीका कर्म और धर्मसंबंधी और नीतियुक्त और सज्जनोंके इच्छानुसारी और दूसरोंके मान्य कर्मको करता है ॥ २२ ॥

कीटेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म पुमान्सुदुष्टं जननिंदितं च ॥
व्यथाकरं देवगुरुद्विजानां सनिर्दयं नीतिविवर्जितं च ॥ २३ ॥

यदि वृश्चिकराशि दशम भावमें होवे तौ पुरुष अतिदुष्ट और लोकनिन्दित और देवता गुरु ब्राह्मणोंकी व्ययाका करनेवाला और दयाहीन और नीतिविरुद्ध कर्मको करता है ॥ २३ ॥

चापेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म सेवात्मकं चौर्ययुतं मनुष्यः ॥
परोपकारात्मकभोजनाद्यं नृपात्मकं भूरियशःसमेतम् ॥ २४ ॥

यदि धनुराशि दशम भावमें होवे तौ मनुष्य सेवासंबंधी तथा चौरीयुक्त और परोपकारसंबंधी और भोजनादिसंबंधी और राजसंबंधी तथा बहुतसे यशसे युक्त कर्मको करता है ॥ २४ ॥

मृगेऽम्बरस्थे च परोपतापी कर्मप्रधानं कुरुते मनुष्यः ॥
सुनिर्दयं बंधुवधैः समेतं धर्मेण हीनं खलसंमतं च ॥ २५ ॥

यदि मकराशि दशम भावमें होवे तौ मनुष्य परजनोंका संतापकर्त्ता होकर प्रधान और दयाहीन और बांधवगणोंसे युक्त और धर्मसे हीन और दुष्टोंके मान्य कर्मको करता है ॥ २५ ॥

घटेंऽम्बरस्थे च करोति मर्त्यः कुलोचितं कर्म गुरुप्रदिष्टम् ॥
कीर्त्यात्मकं सुस्थिरमादरेण नानाद्विजाराधनसम्मतं च ॥२६॥

यदि कुंभराशि दशम भावमें होवे तौ मनुष्य कुलके उचित और गुरुजनोंके कहे हुए और कीर्तियुक्त और आदरसे युक्त तथा अनेक ब्राह्मणोंके पूजनके संमत कर्मको करता है ॥ २६ ॥

मीनेंऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म प्रायेण मर्त्यः परवंचनोत्थम् ॥
पाखंडधर्मान्वितमिष्टलोभाद्विश्वासहीनं जनताविरुद्धम् ॥२७॥

यदि मीनराशि दशम भावमें होवे तौ पराई ठगसंबंधी और पाखण्डधर्मयुक्त और इच्छित पदार्थके लोभसे युक्त और विश्वासहीन और जनोंके विरुद्ध कर्मको करता है ॥ २७ ॥

कर्मेशभावफलम्।

गगनपतौ लग्नगते मातरि वैरी पितरि भवति भक्तः ॥
दुःखी गतोऽपि बाल्ये परपुरुषरता भवति माता ॥ २८ ॥

यदि दशमभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष मातासे वैरकर्त्ता और पिताका भक्त होता है और बालपनमें पुरुष दुःखवाला होता है और उस पुरुषकी माता पराये पुरुषमें प्रीतियुक्त रमण करनेवाली होवे है ॥ २८ ॥

वित्तस्थे गगनपतौ मात्रा पालितसुतो भवति ॥
लोभी मातरि दुष्टो स्वल्पग्रासः सुतनुकर्मा ॥ २९ ॥

यदि दशमभावपति द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष माताकर पाले हुए पुत्रवाला और लोभी और माताके विषैं दुष्ट और थोडे ग्रासवाला तथा अल्प कर्मवाला होता है ॥ २९ ॥

मातरि स्वजनविरोधी सेवाभिरतो न कर्मणि समर्थः ॥
मातुलपरिपालितः स्याद्दशमपतौ सहजभावगते ॥ ३० ॥

यदि दशमभावपति तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष माता और स्वजनोंसे विरोधकर्त्ता और सेवाकर्मकर्त्ता और कार्य करनेमें असमर्थ और मामासे पाला हुआ होता है ॥ ३० ॥

दशमपेऽबुगते निरतः सुखे पितरि मातरि पोषणपूजने ॥
सकललोकदृशाममृतायते नृपतिसंभवलाभविभूषितः ॥ ३१ ॥

यदि दशमभावपति चतुर्थ भावमें होवे तौ पुरुष सुख और पिता माताके पालन पूजनमें युक्त होता है और सब जनोंकी दृष्टियोंको अमृतके समान प्रिय लगता है और राजसंबंधी लाभसे विभूषित होता है ॥ ३१ ॥

शुभकर्मको विडंबी नृपलाभी गीतवाद्यनिरतः स्यात् ॥
गगनपतौ तनयगते पालयति च तत्सुतं माता ॥ ३२ ॥

यदि दशमभावपति पंचम भावमें होवे तौ पुरुष शुभ कर्मकर्त्ता और विटम्बना करनेवाला और राजासे लाभकर्त्ता और गाने बजानेमें युक्त होता है और उसके पुत्रको उसकी माता पालती है ॥ ३२ ॥

अंबरपे रिपुसंस्थे क्रूरे बाल्येऽतिकष्टभाग्भवति ॥
पुरुषः पश्चादीशः परपुरुषरता तथा माता ॥ ३३ ॥

यदि दशमभावपति पाप ग्रह होकर षष्ठ भावमें होवे तौ पुरुष बालपनमें कष्टवाला होता है और पीछे समर्थ होता है और उस पुरुषकी माता पराये पुरुषमें प्रीतियुक्त होवे है ॥ ३३ ॥

सुतवती शुभरूपसमन्विता रमणमातरि पालनलालसा ॥
भवति तस्य नरस्य निरंतरं प्रियतमांबरपे दयितागते ॥ ३४ ॥

यदि दशमभावपति सप्तम भाववें होवे तौ उस पुरुषकी स्त्री सत्य भाषण करनेवाली और सुन्दर रूपवाली और अपने पतिकी माताके पालनमें लालसावाली होवे है ॥ ३४ ॥

पुष्करपतिरष्टमगः क्रूरश्चौरं मृषान्वितं दुष्टम् ॥
मातरि संतापकरं जनयति लघुजीवितं कितवम् ॥ ३५ ॥

यदि दशमभावपति पाप ग्रह होकर अष्टम भावमें होवे तौ पुरुषको चोर और झूंठ बोलनेवाला तथा दुष्ट तथा माताके संतापकर्त्ता और थोडे जीवनवाला और कपटी उत्पन्न करता है ॥ ३५ ॥

शुभशीलः सद्बंधुः सन्मित्रो दशमपे नवमलीने ॥
तन्मातापि सुशीला सुकृतवती सत्यवचनरता ॥ ३६ ॥

यदि दशमभावपति नवम भावमें होवे तौ पुरुष शुभशीलवाला और श्रेष्ठ बंधुओंवाला और श्रेष्ठ मित्रोंवाला होता है और उस पुरुषकी माता सुन्दरशीलवती तथा पुण्यात्मा और सत्य वचन बोलनेवाली होवे है ॥ ३६ ॥

गगनपतिर्गगनगतो जनयति जननीसुखप्रदं पुरुषम् ॥
जननीकुलविपुलसुखं प्रकटघटीनां पटीयांसम् ॥ ३७ ॥

यदि दशमभावपति दशम भावमें होवे तौ उस पुरुषको माताका सुखदायक उत्पन्न करता है और माताके कुलमें अधिक सुखकर्ता और प्रकट घटियोंके मध्यमें अतीव चतुर उत्पन्न करता है ॥ ३७ ॥

मानोर्जितभर्तृजननी तथा च सुतरक्षिणी भवेत्सुखिनी ॥
दीर्घायुर्मातृसुखः पुरुषो लाभाश्रितेऽम्बरपे ॥ ३८ ॥

यदि दशमभावपति एकादश भावमें होवे तौ उस पुरुषकी माता मानसे अधिक पालन करनेवाली होवे है और उसके पुत्रकी रक्षा करनेवाली तथा सुखवती होवे है और वह पुरुष बडे आयुवाला और मातृसुखवाला होता है ॥ ३८ ॥

मात्रोज्झितो निजबलः शुभकर्मा नृपतिकर्मरतिचेताः ॥
व्योमपतौ व्ययसंस्थे देशभ्रमणश्च पापखगे ॥ १३९ ॥

इति जातकसंग्रहे दशमभावविचारः समाप्तः ॥ १० ॥

यदि दशमभावपति द्वादश भावमें होवे तौ पुरुष माताकर त्यागा हुआ और अपने बलसे युक्त और शुभ कर्म करनेवाला और राजकर्ममें प्रीतिपूर्वक चित्त रखनेवाला होता है और पाप ग्रह होवे तौ पुरुष देशोंमें भ्रमणकर्त्ता होता है ॥ १३९ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां दशमभावविचारः समाप्तः ॥ १० ॥

लाभभावविचारः ।

लाभभावस्तत्र किं विचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

गजाश्वहेमांबररत्नजातमांदोलिकामंगलमंडनानि ॥
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः ॥ १ ॥

हाथी घोडा सुवर्ण वस्त्र रत्नसमूह आंदोलिका मंगल आभूषण इनका लाभ यह सब ग्रहवेत्ताओंको एकादश भावमें विचारना चाहिये ॥ १ ॥

होराप्रदीपे ।

स्वस्वामिसद्ग्रहयुतेक्षितलाभगेहे सद्वर्गके भवति यस्तु विशेषलाभः ॥ क्रूरैस्तु दृष्टसहितेन च तत्र लाभस्तद्वर्गगेऽप्यथ च मिश्रफलं च मिश्रे ॥ २ ॥

यदि एकादश भाव अपने स्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त और दृष्ट होवे अथवा स्वामी शुभ ग्रहोंका षड्वर्ग एकादश भावमें होवे तौ विशेष लाभ होता है और एकादश भाव पाप ग्रहोंसे दृष्ट और युक्त होवे अथवा एकादश भावमें पाप ग्रहोंका षड्वर्ग होवे तौ लाभ नहीं होता है और एकादश भावमें शुभ पाप ग्रहोंका मिला हुआ योग होवे तौ मिला हुआ फल होता है ॥ २ ॥

अन्यत् ।

यथा ग्रहैःपंचमगैःफलं तथाऽऽयनायके सद्बलिनि ध्रुवं शुभम् ॥ ग्रहैःसमस्तैरारिनीचदुर्भगेतरैःश्रियोऽनंतसुखावहा नृणाम् ॥ ३ ॥

जिस प्रकार पंचम भावमें स्थित हुए ग्रहोंसे जो फल होता है वहही फल एकादश भावमें स्थित ग्रहोंसे होता है । यदि एकादशभावपति श्रेष्ठ बली होवें तौ निश्चयही शुभ होता है । यदि समस्त ग्रह शत्रुराशि और नीचराशि और पापग्रह राशिसे वर्जित होकर ग्यारहवें भावमें होवें तौ मनुष्योंके अनंत सुख देनेवाली लक्ष्मी होवे है ॥ ३ ॥

लाभे कुजार्क्यगुयुते गजवाजिराजिः शय्यासुखं विधुसुते भृगुजे नृयानम् ॥ चन्द्रेज्ययोः स्ववनितासुखमिष्टविद्याज्ञेऽब्जे सितेऽत्र तनयातनयः सुरेज्ये ॥ ४ ॥

यदि मंगल शनैश्चर राहु इनसे युक्त एकादश भाव होवे तौ उस पुरुषके हाथी घोडाओंकी पंक्ति होवे है और बुध एकादश भावमें होवे तौ शय्यासुख होता है और शुक्र एकादश भावमें होवें तौ पालकी सुख होता है और चंद्रमा बृहस्पति यह एकादश भावमें होवें तौ अपनी स्त्रीका परम सुख होता है और बुध होवे तौ इच्छित विद्यासुख होता है और चंद्रमा शुक्र यह एकादश भावमें होवें तौ पुत्रीसुख होता है और बृहस्पति एकादश भावमें होवे तौ पुत्रसुख होता है ॥ ४ ॥

सर्वे भावाः सन्त आयेऽधिवीर्ये ज्ञे स्याच्चंद्रे कूपयज्ञादिसिद्धिः ॥ चेदर्कारौ स्त्रीग्रहैर्ज्ञेन चाढ्यो जीवंत्यस्य पुत्र्यो न पुत्राः ॥ ५ ॥

एकादश भावमें सर्व ग्रह शुभ होते हैं । यदि बलवान् होकर बुध वा

चन्द्रमा एकादश भावमें होवे तौ पुरुष कूपयज्ञादिकी सिद्धि करनेवाला होता है। यदि सूर्य मंगल एकादश भावमें स्त्रीसंज्ञक ग्रह चन्द्रमा शुक्र वा बुधकर युक्त होवें तौ उस पुरुषके बहुतसी पुत्री जीवती हैं और पुत्र नहीं जीवते हैं ॥ ५ ॥

राहुःशनिश्च यदि दारुशिलाहतिस्तत्रांगे खले क्षणवशाच्छुनकादिभीतिः ॥ राहाविहास्थिरसुतः स्थविरे यदि स्याज्जीवेच्छनावपि च लब्धिगतेऽप्रजाः स्यात् ॥ ६ ॥

यदि एकादश भावमें राहु और शनैश्चर होवें तौ शरीरमें काष्ठ वा शिलाका प्रहार होता है और पाप ग्रहकी दृष्टिके वशसे कुत्ता आदिका भय होता है, भाव यह है कि एकादश भावमें राहु वा शनैश्चर होवे और पाप ग्रहकी दृष्टिसे युक्त होवे तौ कुत्ता आदिका भय होता है और यदि एकादश भावमें राहु होवे तौ नहीं स्थिर रहनेवाले पुत्रवाला होता है और यदि पुत्र होवे तौ पुरुषके वृद्ध होनेपर जीवता है और शनैश्चर एकादश भावमें स्थित होवे तौ संतानहीन होता है ॥ ६ ॥

वामलग्नभुजपादजव्यथो रुग्णजंघ इह वा कुजार्कयोः ॥
चेद्रवावधिबले स्ववर्गगे भूपचौरपशुभिर्धनाप्तयः ॥ ७ ॥

यदि एकादश भावमें मंगल सूर्य यह ग्रह स्थित होवें तौ वह पुरुष वाम तरफके भुजा पांवमें उत्पन्न हुई व्यथावाला अथवा कष्टयुक्त जंघावाला होता है। यदि बलवान् और अपने षड्वर्गमें स्थित होकर सूर्य एकादश भावमें स्थित होवे तौ राजा चोर पशुओंसे धनकी प्राप्ति होवे है ॥ ७ ॥

एवमत्र सकलैर्ग्रहैः फलं स्वस्ववर्गबलयुग्भिरायगैः ॥
स्वस्वभाववशतः पुरोक्तवत्तारतम्यमुदितं पुरातनैः ॥ ८ ॥

अपने २ षड्वर्गबलसे युक्त ऐसे एकादशभावस्थित समस्त ग्रहोंकरके अपने २ भाववशसे पूर्ववत् कम ज्यादा इस प्रकार फल पूर्वाचार्योंने कहा है ॥ ८ ॥

आयस्थाने सद्ग्रहैर्दृष्टयुक्ते सत्खेटानां वर्गगेऽनल्पलाभः ॥
स्याच्चेदेकोऽपि स्वषड्वर्गशुद्धः सर्वैर्दृष्टस्तत्र जातो नृपः स्यात् ९ ॥

यदि एकादश भाव शुभ ग्रहोंसे दृष्ट और युक्त होवे अथवा शुभ ग्रहोंका षड्वर्ग एकादश भावमें होवे तौ अतीव लाभ होता है। यदि अपने षड्वर्गमें शुद्ध होकर एकभी ग्रह एकादश भावमें स्थित होवे और समस्त ग्रहोंसे दृष्ट होवे तौ राजा होता है ॥ ९ ॥

सामान्यविचारेण लाभस्थरव्यादीनां फलं गर्गमतेन ।

धनधान्यहिरण्याद्यै रूपवांश्च कलान्वितः ॥
लाभगेहे रवौ ज्ञानी विनीतो गीतकोविदः ॥ १० ॥

यदि एकादश भावमें सूर्य होवे तौ पुरुष धन धान्य सुवर्ण आदिसे युक्त और रूपवान् और कलायुक्त तथा ज्ञानी तथा विनीत और गीत गानेमें चतुर होता है ॥ १० ॥

विख्यातो गुणवान्प्राज्ञो भोगलक्ष्मीसमन्वितः ॥
लाभस्थानगते चंद्रे गौरो मानववत्सलः ॥ ११ ॥

यदि चन्द्रमा एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष विख्यात तथा गुणवान् और पंडित तथा भोगलक्ष्मीयुक्त तथा गौरवर्ण और मनुष्योंपर स्नेहकर्त्ता होता है ॥ ११ ॥

प्रभूतधनवान्मानी सत्यवादी दृढव्रतः ॥
अश्वाढ्यो गीतसंयुक्तो लाभस्थे भूमिनंदने ॥ १२ ॥

यदि एकादश भावमें मंगल होवे तौ पुरुष बहुतसे धनवाला तथा मानयुक्त और सत्य बोलनेवाला तथा दृढ व्रतवाला और घोडाओंसे युक्त तथा गीत गानेमें प्रवीण होता है ॥ १२ ॥

विधेयप्रियवाक् शूरो धनधान्यसमन्वितः ॥
लाभे कुजे गते मानी हतवित्तोऽग्नितस्करैः ॥ १३ ॥

यदि मंगल एकादश भावमें होवे तौ वचनग्राही और प्रिय बोलनेवाला तथा क्रूर वीर तथा धन धान्यसे युक्त तथा मानयुक्त तथा अग्नि चोरोंसे नष्ट वित्तवाला होता है ॥ १३ ॥

स्त्रीवल्लभोऽतिगुणवान् मतिमान् स्वजनप्रियः ॥
लाभगे सोमतनये मंदाग्निः समपद्यते ॥ १४ ॥

यदि एकादश भावमें बुध होवे तौ पुरुष स्त्रीका प्यारा और अतिगुणी और बुद्धिमान् और मित्रोंका प्रिय और मंद अग्निवाला होता है ॥ १४ ॥

नीरोगी दृढवीर्यश्च मंत्रवित्परशास्त्रवित् ॥
नातिविद्याल्पतनयः साधुरेकादशे गुरौ ॥ १५ ॥

यदि बृहस्पति एकादश भावमें होवे तौ पुरुष रोगहीन और दृढ पराक्रमी और मंत्रवेत्ता तथा परशास्त्रका जाननेवाला और थोडी विद्या और थोडे संतानवाला होता है ॥ १५ ॥

स्त्रीरत्नवररत्नाढ्यो स्वस्थः शोकविवर्जितः ॥
संपन्नधनभृत्यश्च मर्त्यो लाभगते सिते ॥ १६ ॥

यदि एकादश भावमें शुक्र होवे तौ स्त्रीरूप रत्नसे युक्त और श्रेष्ठ रत्नोंसे युक्त होता है और स्वस्थचित्त और शोकहीन और बहुतसे धन और सेवकोंवाला होता है ॥ १६ ॥

स्थिरसंपत्तिभूलाभी शूरः शिल्पान्वितः सुखी ॥
निर्लाभश्च शनौ कैश्चित्स्मृतः प्रथमजीविकः ॥ १७ ॥

यदि शनैश्चर एकादश भावमें होवे तौ पुरुष स्थिर रहनेवाली संपदावाला और पृथ्वीसे लाभ करनेवाला और शूर वीर और कारागरीसे युक्त और सुखयुक्त और विना लाभवाला तथा मुख्य जीविकावाला होता है ऐसा कोई २ आचार्योंने कहा है ॥ १७ ॥

यस्य लाभगतो राहुर्लाभो भवति निश्चयात् ॥
म्लेच्छादिपतितैर्नूनं गजवाजिरथादिकम् ॥ १८ ॥

जिस पुरुषके एकादश भावमें राहु होवे तौ निश्चयही म्लेच्छ और पतित इत्यादि जनोंसे लाभ होता है और हाथी घोडा रथ आदिकोंका लाभ भी होता है ॥१८ ॥

विशेषविचारेण रव्यादिफलम् ।

लाभे रवीक्षितयुते रविवर्गयुक्ते चौर्याच्चतुष्पदमुखैर्नृपतेर्हि लाभः ॥ तद्वद्विधौ युवतितोऽथ गजादिवित्तं क्षीणे क्षयो भवति पूर्णविधौ च वृद्धिः ॥ १९ ॥

यदि एकादश भाव सूर्यसे दृष्ट वा युक्त होवे अथवा सूर्यके षड्वर्गसे युक्त होवे तौ चोरीसे और चौपाये आदिसे और राजासे लाभ होता है और इसी प्रकार चंद्रमा होवे अर्थात् एकादश भाव चंद्रमासे दृष्ट वा युक्त होवे अथवा चंद्रमाके षड्-वर्गसे युक्त होवे तौ स्त्रीसे लाभ होता है और हाथी आदिका लाभ होता है और चंद्रमा क्षीण होवे तौ धनादिका नाश होता है और पूर्ण चंद्रमा होवे तौ धनादिकी वृद्धि होवे है ॥ १९ ॥

आये कुजेक्षितयुतेऽस्य गणे तु कष्टाद्वित्तं सुवर्णमणिपावकशस्त्रजातम् ॥ ज्ञोद्वीक्षितेज्यगण आयगृहे धनं स्याच्छिल्पादिकाव्यलिखनैस्तुरगैः सकांस्यैः ॥ २० ॥

यदि एकादश भाव मंगलसे दृष्ट वा युक्त होवे अथवा मंगलके षड्वर्गसे युक्त होवे तौ कष्टसे सुवर्ण मणि अग्नि शस्त्रसंबंधी धन प्राप्त होता है । यदि एकादश भाव बुधकी दृष्टि वा योग वा षड्वर्गसे युक्त होवे तौ कारीगरी आदिसे तथा कविता और लेखनवृत्तिसे अथवा घोडाओंके तथा कांसीके व्यापारसे धन होता है ॥ २० ॥

जीवेक्षिते च गुरुवर्गयुताय गेहे यज्ञादिहेमहयनागगवादि-
मुख्यैः ॥ शुक्रेक्षितेऽथ युतवर्गयुतायभे स्त्रीवेश्यांगनागमज-
रत्नसरौप्यवित्तम् ॥ २१ ॥

यदि एकादश भाव बृहस्पतिसे दृष्ट वा युक्त होवे अथवा बृहस्पतिके षड्वर्गसे युक्त होवे तौ पुरुष यज्ञादिसे वा सुवर्ण घोडा हाथी गौ इत्यादिसे धन होता है । यदि एकादश भाव शुक्रसे दृष्ट वा युक्त वा षड्वर्गसे युक्त होवे तौ स्त्री वेश्यांगना शास्त्र रत्न चांदी इत्यादि संबंधी धन होता है ॥ २१ ॥

मंदेक्षितेऽथ शनिवर्गयुते महिष्या
लोहादिकैः कृषिवलैश्च वरायुधैश्च ॥ २२ ॥

यदि एकादश भाव शनैश्चरसे दृष्ट वा युक्त वा षड्वर्गसे युक्त होवे तौ भैंस लोह आदिसे अथवा किसानोंसे वा श्रेष्ठ शस्त्रोंसे धन प्राप्त होता ॥ २२ ॥

नीचारिभागभगतोऽत्र फलं न दद्या-
द्धूरिग्रहोद्भवभवे फलवीर्यवंतः ॥ २३ ॥

यदि नीच राशि वा शत्रुराशि वा नीच नवांश वा शत्रुनवांशमें स्थित ग्रह होवे तौ फलको नहीं देता है और बली ग्रहोंसे युक्त एकादश भाव होवे तौ पुरुष एकादश भावके फलवीर्यसे युक्त होते हैं ॥ २३ ॥

बालाद्यवस्थासु कुत्रस्था ग्रहाः फलदास्तदाह ।

उदयात्पंचमं यावज्जन्मपत्र्यां शुभग्रहाः ॥
वयसि प्रथमे सौख्यं प्रष्टुर्वाच्यं नवं नवम् ॥ २४ ॥

यदि जन्मपत्रीमें लग्नसे लेकर पंचम भावमें सब शुभ ग्रह होवें तौ पूछनेवालेको नवीन २ पहिली अवस्थामें सुख होता है ऐसा कहना चाहिये ॥ २४ ॥

पंचमान्नवमं यावत्तत्र संस्थैः शुभग्रहैः ॥
मध्यत्वेऽपि हि संप्राप्ते सवसौख्यं प्रवर्तते ॥ २५ ॥

यदि पंचम भावसे नवम भावपर्यंत समस्त शुभ ग्रह होवें तौ मध्य अवस्थाके प्राप्त होनेपर सब सुख होता है ॥ २५ ॥

नवमाद् व्ययभं यावत्स्थितैः सर्वशुभग्रहैः ॥
वृद्धत्वेऽपि हि संप्राप्ते सर्वसौख्यं प्रवर्तते ॥ २६ ॥

यदि नवम भावसे द्वादशभावपर्यन्त समस्त शुभ ग्रह होवें तौ वृद्धावस्था प्राप्त होनेपर सब सुख होता है ॥ २६ ॥

यस्मिन्वयसि तुंगाश्च मुदितः स्वगृहे स्थिताः ॥
तत्र राज्यसुखं लक्ष्मीस्तेजो भवति[1] निश्चितम् ॥ २७ ॥

जिस अवस्थामें उच्च ग्रह और मुदित ग्रह अर्थात् अपने मित्रराशिके ग्रह और अपनी राशिके ग्रह स्थित होवें तौ उसी अवस्थामें राज्यसुख और लक्ष्मी और तेज यह सब निश्चयही होते हैं ॥ २७ ॥

यस्मिन् वयसि मंदाश्चेत्क्रूरदृष्टविरश्मिकाः ॥
तत्र हानिं रुजं विंद्यात्पदभ्रंशः खलागमः ॥ २८ ॥

जिस अवस्थामें नीच ग्रह और पाप ग्रहोंसे दृष्ट और अस्तंगत होवे तौ उस देशमें हानि और रोगको जाने और पदनाश तथा दुष्ट जनोंकी प्राप्ति होवे है ॥ २८ ॥

यादृग्वर्णो भवेल्लाभे तद्वर्णसमवस्तुनः ॥
लाभो भवति तद्वर्णैर्नरैर्मैत्रैर्धनं सुखम् ॥ २९ ॥

यदि एकादश भावमें जैसे वर्णवाला ग्रह स्थित होवे तौ उसी वर्णके समान वस्तुका उसी वर्णके समान मित्रोंसे लाभ और धन तथा सुख होता है ॥ २९ ॥

भानुभानुजभौमैश्च युक्तो लाभो यदा भवेत् ॥
तदा संतानजं दुःखं जायते नात्र संशयः ॥ ३० ॥

यदि सूर्य शनैश्चर मंगल इनसे एकादश भाव युक्त होवे तौ सन्तानसंबंधी दुःख निःसंशय होता है ॥ ३० ॥

चंद्रचांद्रिसमायोगात्कन्या स्यात्सुखदायिनी ॥
जीवशुक्रसमायोगे पुत्रः स्यात्सुखकारकः ॥ ३१ ॥

यदि एकादश भावमें चन्द्रमा बुध इनका योग होवे तो कन्यासुखदायिनी होवे है और बृहस्पति शुक्र इनका योग होवे तौ पुत्र सुखकर्ता होता है ॥ ३१ ॥

१–"मुदितो मित्रराशिस्थो ग्रहो ज्ञेयः। तच्च सर्वार्थचिन्तामणौ। उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वक्षेत्रसिंत्रभे। मुदितो मित्रभे शान्तस्त्वपरो हीन उच्यते॥ १ ॥ शत्रुभे दुःखसंयुक्तो विकलः पापसंयुतः। खलः पराजितो ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥ २ ॥"

कन्यापत्यं मृतापत्यं पुत्रनाशोऽनपत्यता ॥
ग्रहभावविचारेण वक्तव्यं तत्र निश्चयात् ॥ ३२ ॥

एकादश भावमें निश्चयपूर्वक विचारसे कन्या सन्तान वा मृत सन्तान वा पुत्र-नाश वा निःसन्तान यह सब कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

राशिफलम् ॥

लाभाश्रिते ह्युत्यतमे च राशौ चतुष्पदेभ्यः प्रकरोति लाभम् ॥
तथा नराणां नृपसेवनाच्च देशांतराराधनतस्तथैव ॥ ३३ ॥

यदि एकादश भावमें मेषराशि होवे तौ पुरुष चौपायोंसे तथा राजसेवासे तथा देशान्तरके सेवनसे लाभ करता है ॥ ३३ ॥

आयस्थिते वै वृषभेऽत्र लाभो भवेन्मनुष्यस्य यथेष्टजातः ॥
स्त्रीणां सकाशादथ सज्जनानां कृषीवलाद्वापि भवेच्च लाभः॥३४॥

यदि एकादश भावमें वृषराशि होवे तौ मनुष्यको इच्छानुसार लाभ होता है और स्त्रियोंके सकाशसे तथा सज्जनोंके सकाशसे तथा किसानोंसे लाभ होता है ॥ ३४ ॥

तृतीयराशौ कुरुतेऽत्र लाभं लाभाश्रिते स्त्रीदयितासकाशात् ॥
वस्त्रार्थमुख्यासनयानमानात्सदा नराणां विविधैः प्रकारैः॥३५॥

यदि मिथुनराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष स्त्रीके सकाशसे तथा वस्त्र अर्थ श्रेष्ठ आसन यान मान इनसे अनेक प्रकारसे मनुष्य लाभ करता है ॥ ३५ ॥

लाभो भवेल्लाभगते च राशौ सदा चतुर्थेऽम्बरभांडजातः ॥
वणिक्कृषिभ्यां जनताप्रभूतःशास्त्रेण वा साधुजनस्य संगात् ३६॥

यदि कर्कराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष वस्त्र और पात्रसंबंधी लाभ पाता है और वणिजी और खेती और बहुतसे जनोंसे और शास्त्रसे और साधुजनोंके संगसे लाभ होता है ॥ ३६ ॥

लाभाश्रिते पंचममेव लाभो भवेन्मनुष्यस्य निगर्हणाभिः ॥
नानाजनानां वधबंधनैश्च व्यापारदेशांतरसंश्रयाच्च ॥ ३७ ॥

यदि सिंहराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ मनुष्यको निन्दासे और अनेक मनुष्योंके वध और बन्धनसे और व्यापार तथा देशान्तरके आश्रयसे लाभ होता है ॥ ३७ ॥

कन्यात्मके लाभगते मनुष्यो प्राप्नोति लाभं विविधैरुपायैः ॥
शास्त्रागमाभ्यां विनयेन साधुशुद्धं विवेकेन तथाद्भुतेन ॥ ३८॥

यदि कन्याराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य अनेक उपायोंसे और शास्त्र और आगमसे और विनयसे तथा अद्भुत ज्ञानसे बहुत अच्छे शुद्ध लाभको प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

तुलाधरे लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं वनजैर्विचित्रैः ॥
सुसाधयेद्वा विनयेन नित्यं सुसंस्थितं मुख्यतमं प्रभूतम् ॥३९॥

यदि तुलाराशि एकादश भावमें होवे तौ पुरुष चित्रविचित्र वनवासी जीवोंसे लाभको प्राप्त होता है और विनयकर सदैव बहुतसे मुख्य और सदैव स्थित रहनेवाले धनको पैदा करता है ॥ ३९ ॥

लाभाश्रिते चाष्टमके च राशौ प्राप्नोति लाभं मनुजोऽतिनित्यम्॥
छलेन पापेन च वंचनैश्च परस्य पैशुन्यकृतैर्विचारैः ॥ ४० ॥

यदि वृश्चिकराशि एकादश भावमें होवे तौ मनुष्य छलसे और पापसे और ठगनेसे और पराई चुगलीके किये हुए विचारोंसे लाभको प्राप्त होता है ॥ ४० ॥

लाभाश्रिते चैव धनुर्द्धरे च नृपार्थलाभं भजते मनुष्यः ॥
सुसेवया शस्त्रकृतैरुपायैः पुष्पांबराराधनतोऽर्थलाभः ॥ ४१ ॥

यदि धनुराशि एकादश भावमें होवे तौ मनुष्य राजासे धनलाभको प्राप्त होता है और अच्छी सेवासे और शस्त्रसंबन्धी उपायोंसे तथा पुष्प और वस्त्रोंके आराधनसे धनलाभ होता है ॥ ४१ ॥

लाभाश्रिते चेन्मकरेऽर्थलाभो भवेन्नराणां जलपानयोगात् ॥
विदेशवासान्नृपसेवनाद्वा व्ययात्मकं भूरितरं सदैव ॥ ४२ ॥

यदि मकरराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ जलपानसे योगसे तथा परदेशके वाससे और राजसेवासे धनका लाभ होता है और उस पुरुषका अतीव खर्च संबंधी कार्य होता है ॥ ४२ ॥

आयस्थिते कुंभधरे हि राशौ लाभो मनुष्यस्य कुकर्मसंगात् ॥
न्यायेन धर्मेण पराक्रमेण विद्याप्रभावात्सुसमागमेन ॥ ४३ ॥

यदि कुम्भराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ मनुष्यको कुकर्मके संगतसे और न्यायसे और धर्मसे और पराक्रमसे तथा विद्याके प्रभावसे तथा अच्छा समागमसे लाभ होता है ॥ ४३ ॥

लाभाश्रिते चांत्यतमे च राशौ प्राप्नोति लाभं विविधं मनुष्यः ॥
मित्रोद्भवं पार्थिवमानजातं विचित्रवाक्यप्रणयेन नित्यम् ॥४४॥

यदि मीनराशि एकादश भावमें स्थित होवे तौ मनुष्य मित्रोंसे उत्पन्न हुए तथा राजाके मानसे उत्पन्न हुए और विचित्र वचन और प्रणयसे नित्यही विविध लाभको प्राप्त होता है ॥ ४४ ॥

लाभेशभावफलम् ।

अल्पायुर्बहुकलितः शूरो दाता जनप्रियः सुभगः ॥
लाभपतौ लग्नगते तृष्णादोषान्मृतिं लभते ॥ ४५ ॥

यदि एकादशभावपति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष थोडे आयुवाला तथा बहुतसी कलाओंसे युक्त और शूर वीर तथा दानकर्त्ता और जनोंका प्रिय और सुन्दर ऐश्वर्यसंपन्न होता है और तृष्णादोषसे मरणको प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥

वित्तगते लाभपतावुत्पन्नभुगल्पभाजनोऽल्पायुः ॥
अष्टकपाली चौरः क्रूरे सौम्ये च धनकलितः ॥ ४६ ॥

यदि एकादशभावपति द्वितीय भावमें होवे तौ पुरुष उत्पन्नमात्रके भोगनेवाला तथा थोडे पात्रवाला और अल्प आयुवाला तथा दरिद्री और चोर होता है । यह फल पापग्रह होवे तौ होता है और शुभ ग्रह होवे तौ धनसे युक्त होता है ॥ ४६ ॥

बंधुश्रीपालनकः सुबांधवो बंधुवत्सलस्तु शुभे ॥
लाभेशे सहजगते बंधूनां शत्रुवत्क्षेता ॥ ४७ ॥

यदि एकादशभावपति शुभ ग्रह होकर तृतीय भावमें होवे तौ पुरुष बंधु लक्ष्मीका पालनकर्त्ता और अच्छे बांधवोंसे युक्त तथा बन्धुओंपर स्नेहकर्त्ता होता है और पाप ग्रह होवे तौ बन्धुओंका शत्रुसमान होता है ॥ ४७ ॥

तूर्यस्थे लाभेशे दीर्घायुः पितरि भक्तिभाग्भवति ॥
समवाप्तिकारणरतः सुकर्मतो लाभवान्मनुजः ॥ ४८ ॥

यदि एकादशभावपति चतुर्थ भावमें होवे तौ बडे आयुवाला तथा पिताकी भक्ति रखनेवाला और प्राप्तिके करनेसे कारणसे युक्त और सुकर्मसे लाभवाला होता है ॥ ४८ ॥

तनयगतो लाभपतिः पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते ॥
तुल्यगुणौ च परस्परं तृष्णाजीवी च भवति सुतः ॥ ४९ ॥

यदि एकादशभावपति पंचम भावमें होवे तौ पिता पुत्र दोनोंको परस्पर

स्नेहयुक्त करता है और दोनों पिता पुत्र समानगुणवाले होते हैं और पिता पुत्र दोनोंमें पुत्र तृष्णाजीवी होता है ॥ ४९ ॥

लाभाधिपे षष्ठगते सुवैरं सुदीर्घरोगं चतुरंगसंग्रहम् ॥
मृतिं समाप्नोति च चौरहस्तात् क्रूरे च देशांतरसंगतो नरः॥५०॥

यदि एकादशभावपति षष्ठभावमें होवे तौ पुरुष अतिवैर और अतिदीर्घ रोग और चतुरंग सेनाके संग्रहको प्राप्त होता है और चोरके हाथसे मरणको प्राप्त होता है और पाप ग्रह होवे तौ देशदेशान्तरमें जानेवाला होता है ॥ ५० ॥

सप्तमगे लाभेशे तेजस्वी शीलसंपदः पदवी ॥
दीर्घायुर्भवति नरस्तथैकदयितापतिर्नियतम् ॥ ५१ ॥

यदि एकादशभावपति सप्तम भावमें होवे तौ पुरुष तेजस्वी और शीलसंपदाओंसे युक्त और पदवाला तथा दीर्घ आयुसे युक्त तथा एक स्त्रीका पति होता है ॥ ५१ ॥

एकादशपेऽष्टमगे क्रूरेऽल्पायुः सुदीर्घरोगी वा ॥
जीवनमृतश्च दुःखी रोगी न च सौम्यगगनचरे ॥ ५२ ॥

यदि एकादशभावपति पाप ग्रह होकर अष्टम भावमें होवे तौ पुरुष अल्पायु अथवा दीर्घ रोगवाला होता है और जीवनमृत और दुःखी और रोगयुक्त होता है और शुभ ग्रह होवे तौ ऐसा फल नहीं होता है ॥ ५२ ॥

एकादशेशे सुकथाश्रयस्थे बहुश्रुतः शास्त्रविशारदःस्यात् ॥
धर्मे प्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बंधुव्रतवर्जितःस्यात्॥५३॥

यदि एकादशभावपति नवम भावमें होवे तौ पुरुष बहुत शास्त्रोंके जाननेवाला और शास्त्रोंमें चतुर और धर्मके विषे प्रसिद्ध और गुरुदेवताओंका भक्त होता है और पाप ग्रह होवें तौ पुरुष बांधव और व्रत इनसे हीन होता है ॥ ५३ ॥

मातरि भक्तः सुकृती पितरि द्वेषी सुदीर्घतरजीवी ॥
धनवान् जननीपालननिरतो लाभाधिपे खगते ॥ ५४ ॥

यदि एकादशभावपति दशम भावमें होवे तौ पुरुष माताका भक्त और पुण्यात्मा और पिताका वैरी और बहुत कालतक जीवनेवाला तथा धनवान् और माताके पालनमें तत्पर होता है ॥ ५४ ॥

लाभाधिपो लाभगतः करोति दीर्घायुषं पुष्कलपुत्रयुक्तम् ॥
सुकर्मकं रूपयुतं सुशीलं जनप्रमोदप्रवणं पुमांसम् ॥ ५५ ॥

यदि एकादशभावपति एकादश भावमें होवे तौ पुरुषको दीर्घ आयुवाला और उत्तमपुत्रयुक्त और अच्छे कार्यवाला तथा रूपवान् और सुन्दरशीलयुक्त और जनोंके आनन्द करनेमें युक्त करता है ॥ ५५ ॥

द्वादशगे लाभेशे उत्पन्नभुगस्थिरो भवति भोगी ॥
उत्पातरतो मानी दांतो दुःखी सदा पुरुषः ॥ ५६ ॥

यदि एकादशभावपति द्वादश भावमें होवे तौ पुरुष उत्पन्न हुएके भोगनेवाला और चंचल और भोगी और उत्पातकर्ता और मानी और इन्द्रिय जीतनेवाला और दुःखी होता है ॥ ५६ ॥

अन्यच्च ।

लाभेशो यदि समवाप्तिगेहयातो वाग्मी स्यात्पुरुषपरः सुखी समृद्धः ॥ पांडित्यं सकलविधं च सत्कवित्वं सत्प्रीत्यै प्रतिदिनमस्य वृद्धिमेति ॥ १ ॥ ५७ ॥

यदि एकादशभावपति एकादश भावमें होवे तौ पुरुष सुन्दर वचनवाला और सुखी और समृद्ध होता है और उसकी सकल प्रकारकी पंडिताई और सत्कविता प्रतिदिन सज्जनोंके प्रीतिके वास्ते वृद्धिको प्राप्त होवे है ॥ १ ॥ ५७ ॥

रिःफस्थो यदि समवाप्तिगेहनाथः संसर्गो यवनजनैस्तदा सदा स्यात् ॥ कान्ताभी रमणपरः स्मरोत्थभावैः कामार्त्तः क्षणधिषणोऽतिलंपटश्च ॥ २ ॥ ५८ ॥

यदि एकादशभावपति द्वादश भावमें होवे तौ पुरुषका सदैव यवनजनोंके साथ संसर्ग होता है और स्त्रियोंके साथ रमणकर्ता और कामदेवके उठे वेगसे कामपीडित और क्षणबुद्धि और अतिलंपट होता है ॥ २ ॥ ५८ ॥

लग्नस्थो यदि समवाप्तिभावनाथः स्याद्वक्ता धनसहितःकुतूहलात्मा ॥ सर्वत्राविषममतिः प्रसन्नचेता विख्यातःखलवियुतश्च सात्त्विकात्मा ॥ ३ ॥ ५९ ॥

यदि एकादशभावति लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष वक्ता और धनवान् तथा कुतूहलचित्त और सब जगह समान बुद्धिवाला और प्रसन्नचित्त तथा संसारमें विख्यात और दुष्ट जनोंसे हीन और सात्त्विकगुणवाला होता है ॥ ३ ॥ ५९ ॥

लाभेशे सहजंगतेऽथ वित्तयाते तीर्थेषु प्रगुणधिया कृतार्थभूतः ॥ सत्कार्येष्वपि कुशलोऽतिलोलचित्तः स्वल्पस्वोऽनवरतशूलरोगदुःखी ॥ ४ ॥ ६० ॥

यदि एकादशभावपति तृतीय भाव वा द्वितीय भावमें होवे तौ तीर्थोंमें जानेवाला और अतीव गुणबुद्धिसे कृतार्थभूत होता है और शुभ कार्योंमें चतुर और अति चंचलचित्तवाला तथा थोडे धनवाला तथा निरन्तर शूलरोगसे दुःखवाला होता है ॥ ४ ॥ ६० ॥

लाभेशे सुखसुतभावगामिनि स्यान्नानार्थो बहुविधसौख्यभाङ् मनुष्यः ॥ धर्मात्मा शुभपुमपत्यवीर्यसंपत्संयुक्तःशुभफलसिद्धिभूषितश्च ॥ ५ ॥ ६१ ॥

यदि एकादशभावपति चतुर्थ भाव वा पंचम भावमें होवे तौ पुरुष अनेक अर्थोंवाला और बहुतसे सुखवाला और धर्मात्मा और श्रेष्ठ पुरुष संतान और पराक्रम और संपदा इनसे युक्त और शुभफलवाली सिद्धिसे विराजमान होता है ॥५॥६१॥

लाभेशे रिपुभवनस्थिते नरोऽसौ स्वादेशो विविधरुजार्दितः सदैव ॥ सर्वात्म्येन च सुखवानपि प्रवासी गच्छत्यस्य तु परसेवयैव कालः ॥ ६ ॥ ६२ ॥

यदि एकादशभावपति षष्ठ भावमें होवे तौ पुरुष शुभ आज्ञावाला और अनेक रोगोंसे पीडित और सर्वात्माकर सुखवाला और परदेशवासी होता है और उस पुरुषका समय पराई सेवा करकेही जाता है ॥ ६ ॥ ६२ ॥

लाभेशे मदगृहगेऽथ रंध्रयाते नो जीवेदिह वनिता नरस्य कापि ॥ कामार्त्तो धनसहितः प्रकृत्युदारः कौलीनेऽप्यनभिमतव्ययोऽप्रबुद्धः ॥ ७ ॥ ६३ ॥

यदि एकादशभावपति सप्तम भावमें वा अष्टम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषकी कोई भी स्त्री नहीं जीवती है और वह पुरुष कामी और धनी और स्वभावसे उदर होता है और कुलीन होनेपरभी अयोग्यखर्चवाला और असावधान होता है ॥ ७ ॥ ६३ ॥

लाभेशे नवमगतेऽथवांबरस्थे भूपालैरपि परिपूजितांघ्रिपद्मः ॥ धर्मात्मा कृतिकुशलश्च सत्यवादी विख्यातो धनसहितो परोपकर्ता ॥ ८ ॥ ६४ ॥

यदि एकादशभावपति नवम भाव वा दशम भावमें होवे तौ पुरुष राजाओंका पूजे हुए चरणकमलवाला और धर्मात्मा और कार्यमें चतुर और सत्यवादी और विख्यात और धनी और परोपकारी होता है ॥ ८ ॥ ६४ ॥

लाभस्थरव्यादीनामवधिवर्षाणि हिल्लाजः ।

लाभे रविर्जिनसमामितलाभमिंदौ भूपाच्च लाभमसृजिर्जिन-
वर्षलक्ष्मीम् ॥ ज्ञः पंचवेदधनमीज्य इनाव्दलक्ष्मीं शुक्रः
करोति धनमार्किफलं कुजोक्तम् ॥ ६९ ॥

इति जातकसंग्रहे लाभभावविचारः समाप्तः ॥ ११ ॥

यदि सूर्य एकादश भावमें स्थित होवे तो २४ वर्षमें अतीव लाभ करता है और चंद्रमा २४ वर्षमें राजासे लाभको करता है और मंगल २४ वर्षमें लक्ष्मीको करता है, बुध ४५ वर्षमें धन करता है और बृहस्पति बारह वर्षमें धनको करता है और शुक्रभी १२ वर्षमें अति धन करता है और शनैश्चरका फल मंगलके समान होता है ॥ ६९ ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां लाभभावविचारः समाप्तः ॥ ११ ॥

व्ययभावविचारः ।

व्ययभावः तत्र किंविचार्यमित्युक्तं जातकाभरणे ।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दंडो निर्बंध एव च ॥
सर्वमेतद्व्ययस्थानाच्चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

हानि, दान, खर्च, दंड, हट ये सब द्वादश भावसे यत्नपूर्वक विचारने चाहिये ॥ १ ॥

पादद्वयं स्थानमिदं व्ययाख्यं निर्बंधदानोद्वहनव्ययादेः ॥
जलाशयादेः सदसत्क्रियादेर्दंडस्य हानेश्च विचार्यतात्र ॥ २ ॥

यह द्वादशभावसंज्ञक स्थान पापद्वय व्ययसंज्ञक है इसमें हटसंबंधी कार्य और दानसंबंधी कार्य और खर्चसंबंधी कार्य इत्यादिकी तथा जलाशय कूप बावडी तालाव आदिकी तथा शुभ अशुभ कार्य आदिकी तथा दंडकी तथा हानिकी विचारणा होवे है ॥ २ ॥

सामान्यविचारेण व्ययस्थरव्यादीनां फलं गर्गमतेन ।

व्ययस्थानगते सूर्ये व्ययशीलो भवेन्नरः ॥
परस्त्रीव्यसनाद्व्ययश्च कुरुते व्ययमद्भुतम् ॥ ३ ॥

यदि सूर्य द्वादश भावमें स्थित होवे तौ खर्चीला और परस्त्रीगामी होनेके व्यसनसे युक्त होकर बहुत खर्च करता है ॥ ३ ॥

व्यये शशिनि कार्पण्यमविश्वासः पदे पदे ॥
कृष्णपक्षे विशेषेण कार्पण्यमभिवर्धते ॥ ४ ॥

यदि चंद्रमा द्वादश भावमें होवे तौ कृपणता और पद २ में अविश्वास होता है और कृष्णपक्षमें जन्म होवे तौ विशेषकरके कृपणता बढती है ॥ ४ ॥

कोपनो बहुकामाढ्यो व्यंगो धर्मस्य दूषकः ॥
भूमिजे द्वादशस्थे तु विद्वेषो मित्रबंधुषु ॥ ५ ॥

यदि मंगल द्वादश भावमें होवे तौ पुरुष क्रोधयुक्त और बहुतसा कामी और अंगहीन और धर्मके दूषणकर्ता और मित्र बंधुजनोंमें उस पुरुषका वैर होता है ॥५॥

नृपपीडनसंतप्तं परिवादेन पीडितम् ॥
नृशंसं पुरुषं चांद्रिः कुरुते व्ययराशिगः ॥ ६ ॥

यदि बुध द्वादश भावमें होवे तौ पुरुषको राजपीडासे संतप्त और निन्दासे युक्त और क्रूर करता है ॥ ६ ॥

उच्छ्रितव्ययकारी च रिःफगे देवतागुरौ ॥
सेवाविज्ञो महाक्रोधी सालसो लोकविग्रही ॥ ७ ॥

यदि द्वादश भावमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष ऊंचे खर्चके करनेवाला और सेवा करनेमें पंडित और बडा क्रोधी और आलसी और लोकसे विग्रह करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

श्रद्धाहीनो घृणाहीनः परदाररतः सदा ॥
व्ययस्थानगते शुक्रे रोगार्तः स्थूलदेहकः ॥ ८ ॥

यदि द्वादश भावमें शुक्र होवे तौ पुरुष श्रद्धाहीन और दयाहीन परस्त्रीगामी, रोगी और स्थूल देहवाला होता है ॥ ८ ॥

नीचकर्माश्रितः पापो हीनांगो भोगलालसः ॥
व्ययस्थानगते मंदे क्रूरेषु कुरुते रुचिम् ॥ ९ ॥

यदि शनैश्चर द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष नीच कर्ममें युक्त और पापी और अंगहीन और भोगविलासकी लालसावाला होकर दुष्टोंमें प्रीति करता है ॥९॥

व्ययस्थानगते राहौ नीचकर्मरतः सदा ॥
असद्व्ययी पापबुद्धिः कपटी कुलदूषकः ॥ १० ॥

यदि द्वादश भावमें राहु होवे तौ पुरुष नीचकर्ममें युक्त और अनर्थमें खर्चनेवाला और पापबुद्धि और कपटयुक्त और कुलके दोष देनेवाला होता है ॥ १० ॥

व्ययभावे स्वामियुक्ते शुभदृष्टे च सद्व्ययी ॥
कीर्तिमाञ्जायते मर्त्यो विपरीते विपर्ययः ॥ ११ ॥

यदि द्वादश भाव स्वामीसे युक्त होवे और शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे तौ शुभ खर्च करनेवाला होता है और वह पुरुष कीर्तिमान् होता है और विपरीत होवे तौ विपरीत फल होता है ॥ ११ ॥

विशेषफलम् ।

भानौ व्यये हरति भूपतिरत्र द्रव्यं क्षीणेऽथवा शशिनि सद्व्ययकृच्छुभे स्यात् ॥ पुष्णंति वित्तमिह सत्वचरास्तु केचित्पूर्णे विधावपि तथैव शुभैश्च दृष्टे ॥ १२ ॥

यदि द्वादश भावमें सूर्य अथवा क्षीण चंद्रमा होवे तौ राजा उस पुरुषके द्रव्यको हरता है और द्वादश भावमें शुभ ग्रह होवे तौ पुरुष शुभ कर्ममें खर्चनेवाला होता है और द्वादश भावमें शुभ ग्रह बलवान् होकर स्थित होवे तौ धनको बढाते हैं और परिपूर्ण चंद्रमा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होकर द्वादश भावमें होवे तौ भी धनकी वृद्धि होवे है ऐसा कोई कोई आचार्य कहते हैं ॥ १२ ॥

दृष्टे कुजे बुधेनैव वित्तनाशो भवेद् ध्रुवम् ॥
पुष्टं स्वर्क्षादिगैः खेटैस्तुच्छं नीचार्कगैः फलम् ॥ १३ ॥

यदि द्वादश भावमें मंगल बुधसे देखा गया होवे तौ निश्चय ही धनका नाश होता है । यदि अपने राशि वा उच्च राशि वा मित्रराशि इत्यादि राशियोंपर स्थित होकर ग्रह द्वादश भावमें होवे तौ पुष्ट फल होता है और नीच राशि वा सूर्यके साथ वा शत्रुराशि इत्यादि स्थित होकर द्वादश भावमें होवें तौ तुच्छ फल होता है ॥ १३ ॥

अन्यत् ।

व्यये सूर्ये राजपुत्रचौरेभ्यो विगतं धनम् ॥
लकुटाघातस्तेषां हि चिह्नं च चरणे भवेत् ॥ १४ ॥

यदि सूर्य द्वादश भावमें होवे तौ राजपुत्र, चौरोंसे धन दूर किया जाता है और तिन पुरुषोंके चरणमें चिह्न और लाठीका प्रहार होता है ॥ १४ ॥

चंद्रे च जलकार्ये च विवादे च धनव्ययम् ॥
कुटुंबैर्भ्रातृभिर्वापि धनं भुक्तं निगद्यते ॥ १५ ॥

यदि चंद्रमा द्वादश भावमें होवे तौ जलसंबंधी कार्य और विवाहमें धनका खर्च होता है और उस पुरुषका धन कुटुंब वा भ्राताओंसे भोगा हुआ कहा जाता है ॥ १५ ॥

शुक्रे जीवे व्यये वित्तं दाने दत्तं द्विजातये ॥
तीर्थे देवालये दीनभिक्षुकेषु व्ययो भवेत् ॥ १६ ॥

यदि द्वादश भावमें शुक्र और बृहस्पति होवें तौ ब्राह्मणके वास्ते दानमें धन दिया जाता है,तीर्थ और देवमंदिर और दीन और भिक्षुक इनमें खर्च होता है ॥१६॥

क्रूरक्षेत्रे क्रूरयुते गतं चाऽसद्व्ययैर्धनम् ॥
जीविकार्थे धनं यस्मै दत्तं तेनार्पितं न तत् ॥ १७ ॥

यदि द्वादश भावमें पाप ग्रहकी राशि होवे और पाप ग्रहसे युक्त होवे तौ अनर्थसंबंधी खर्चोंसे धन नष्ट होता है और जिसके वास्ते जीविकाके अर्थ जो धन दिया जाता है उसकरके वह धन नहीं अर्पण किया जा सक्ता है ॥ १७ ॥

अन्यत् ।

व्ययालये क्षीणबलः कलावान्सूर्योऽथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ॥
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टयुक्ते ॥ १८ ॥

यदि द्वादश भावमें क्षीणबल होकर चन्द्रमा अथवा सूर्य होवे अथवा तिसं द्वादश भावमें दोनों सूर्य चन्द्रमा स्थित होवें तौ उस पुरुषके धनको राजा हर लेता है । अथवा द्वादश भाव मंगलसे दृष्ट वा युक्त होवे तौ भी द्रव्यको राजा हर लेता है ॥ १८ ॥

यादृशा गगनगा व्ययस्थितास्तादृशं व्ययमिहाचरत्ययम् ॥
उष्णगौ व्ययगते यदर्जितं याति भूपसदने हि तद्धनम् ॥१९॥

जैसे रूपके ग्रह द्वादश भावमें स्थित होवें तिस रूपके खर्चको वह पुरुष करता है । यदि सूर्य द्वादश भावमें स्थित होवे तौ जो धन इकट्ठा किया गया है वह राजभवनमें चला जाता है ॥ १९ ॥

कुजेऽम्बुजेशे च धने व्यये वा सस्त्रीग्रहे ज्ञेऽत्र धनव्ययःस्यात् ॥
वेश्यानिषादैश्च सगीतनृत्यैःसार्कौ त्वगौ म्लेच्छविरोधिदुष्टैः२०॥

यदि मंगल और सूर्य द्वितीय भाव वा द्वादश भावमें स्थित होवें अथवा स्त्रीसंज्ञक ग्रह चंद्रमा, शुक्र इनमेंसे किसीसे युक्त होकर बुध द्वितीय भाव वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ वेश्या और निषादजनोंके द्वारा वा गाने बजानेसे धनका खर्च

होता है। यदि शनैश्चरसहित राहु द्वितीय भाव वा द्वादश भावमें स्थित होवे तौ म्लेच्छ तथा विरोधकर्ता दुष्टजनोंकर धनका खर्च होता है ॥ २० ॥

कुजे व्यये क्षत्रियवर्गतो व्ययः क्षतं च कट्यामपि दक्षवामयोः ॥ दृशि श्रुतौ वामतनौ रुजा स्त्रियोऽधिकांगतादुष्कृतितो व्रणादिभीः ॥ २१ ॥

यदि मंगल द्वादश भावमें स्थित होवे तौ क्षत्रियवर्गसे धनका खर्च होता है और दहने और बायें भागसंबंधी कमरमें घाव होता है और वाम नेत्र और वाम कर्णमें रोग होता है और स्त्रीकी अधिक अंगता होवे है और खोटे कर्मोंसे व्रणादि होता है ॥ २१ ॥

यमादिभिः सेंदुभिरंभसो व्ययो हुताशतोऽर्कारयुतैः परस्त्रियाः ॥ सभार्गवैः सेंदुसुतैश्च शत्रुतोऽश्मदार्वयः शृंग्यनिलादिबाधनम् ॥ २२ ॥

यदि द्वादश भावमें शनैश्चर वा आदि शब्दसे राहु वा केतु चंद्रमासे युक्त होकर स्थित होवे तौ जलसे पीडा होती है और सूर्य वा मंगलसे युक्त होकर स्थित होवे तौ अग्निसे पीडा होती है और शुक्रसे युक्त होकर स्थित होवे तौ परस्त्रीसे पीडा होती है और बुधसे युक्त होकर स्थित होवे तौ शत्रुसे वा पत्थर काष्ठ लोह शृंगवाले जीव पवन इत्यादिसे बाधा होवे है ॥ २२ ॥

पितृमातृसहोदरक्षयो रविसौरिक्षितिजा व्यये यदा ॥
यदि वित्सितसूरिसंगमः सुखिनः संति सहोदरास्तयोः ॥२३॥

यदि द्वादश भावमें सूर्य शनैश्चर मंगल ये ग्रह स्थित होवें तौ पिता माताके सहोदर भ्राताओंका नाश होता है यदि बुध शुक्र बृहस्पति इनका संगम द्वादश भावमें होवे तौ पिता माता दोनोंके सहोदर भ्राता सुखी होते हैं ॥ २३ ॥

व्ययेऽन्नदाता धिषणोऽथ सेन्दुजे कृषिक्रियाकृत्ससिते मखादिकृत् ॥ तडागवाप्यादिकृदिन्दुसंयुते व्यये स शुक्रोऽहिरधिव्रणादिकृत् ॥ २४ ॥

यदि द्वादश भावमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष अन्नदाता होता है और द्वादश भाव बुधसे युक्त होवे पुरुष खेतीके कार्यके करनेवाला होता है और शुक्रसे युक्त होवे तौ यज्ञ आदिके शुभ कर्म करता है और चंद्रमासे युक्त होवे तौ तालाब बावडी आदिके करनेवाला होता है। यदि द्वादश भावमें शुक्रसहित राहु होवे तौ अतीव घाव आदिके करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

क्षीणेंदू रविरथवा व्ययेऽथवा द्वौ चेत्तस्याखिलधनसंहृति-
र्नृपात्स्यात् ॥ दुःस्थारेऽपि फलमिदं व्ययेऽथ वित्तं सत्स्या-
त्सद्बुधसितजीवपूर्णचन्द्रैः ॥ २५ ॥

यदि क्षीण चन्द्रमा अथवा सूर्य द्वादश भावमें स्थित होवे अथवा ये दोनों स्थित होवें तौ समस्त धनका नाश राजासे होता है और दुःस्थ नाम षष्ठ अष्टम द्वादश इन भावोंमें मंगल होवे तौभी ऐसाही फल होता है। यदि द्वादश भावमें पापग्रहरहित बुध और शुक्र तथा बृहस्पति और पूर्ण चन्द्रमा यह स्थित होवें तौ उत्तम धन होता है ॥ २५ ॥

व्ययगेऽसृजि विद्युतेक्षिते धननाशोऽथ गुरुर्व्यये यदा ॥
पटगोधनहेमसम्पदो भृगुजेऽश्वा विदि शोभना मही ॥ २६ ॥

यदि मंगल द्वादश भावमें स्थित होवे और बुधसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ धनका नाश होता है। यदि द्वादश भावमें बृहस्पति होवे तौ वस्त्र गोधन सुवर्ण संपत्ति होवे है और शुक्र होवे तौ घोडा होवे हैं और बुध होवे तौ सुन्दर पृथ्वी होवे है ॥ २६ ॥

पूर्णे विधौ व्ययगते विपुला गृहाः स्युः स्वंसेवकेऽर्पयति
सज्ञरवौ समस्तम् ॥ सेज्ये सिते व्ययगते सधनी सुकर्मा
साम्बे शिवे यदुपतौ च रतो नरः स्यात् ॥ २७ ॥

यदि पूर्ण चन्द्रमा द्वादश भावमें होवे तो बहुतसे गृह होते हैं। यदि बुधसहित सूर्य द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष समस्त धनको सेवकके वास्ते सौंप देता है। यदि बृहस्पतिसहित शुक्र द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुष धनवान् और अच्छे कार्यके करनेवाला पार्वतीसहित शिव और कृष्णमें रत रहता है ॥ २७ ॥

सद्व्ययो भवति केंद्रगैः शुभैः पंचपूरुषशुभव्यवस्थया ॥
नारयोऽथ बलिभिःखलैर्व्ययेऽर्यापदोऽधिखलु सूतिपृच्छयोः॥२८

यदि केन्द्रसंज्ञक भावोंमें शुभ ग्रह होवें तौ पांच पुरुषोंकी अच्छी व्यवस्था कर श्रेष्ठ खर्च होता है और उस पुरुषके शत्रुभी नहीं होते हैं और बलवान् पाप ग्रह द्वादश भावमें होवें तौ शत्रु और आपत्ति बहुत होवे हैं। यह फल जन्मलग्न और प्रश्नलग्न दोनोंमें विचारा जा सक्ता है ॥ २८ ॥

अन्यश्चावाधिर्हिल्लाजमतेन ।

अष्टाग्निके हानिमिनोव्ययेऽब्जःपीडां त्रिके क्षितिभवेक्षयुगे-

ऽर्थहानिः ॥ सौम्योऽर्थहानिकृद्दिने गुरुरक्षयुग्मे द्रव्यव्ययं भृगुसुतोऽर्कमितेऽक्षिपीडा ॥ २९ ॥

यदि द्वादश भावमें सूर्य होवे तो अट्ठाईस वर्षमें धनहानि करता है और चन्द्रमा होवे तौ तीसरे वर्षमें पीडा करता है, मंगल होवे तौ पैंतालीश वर्षमें धनहानि करता है और बुध होवे तौ बारहमें धनकी हानि करता है और बृहस्पति होवे तौ पचीस वर्षमें धनका खर्च करता है और शुक्र होवे तौ बारह वर्षमें नेत्रपीडा करता है ॥ २९ ॥

व्ययभावे राशिफलम् ।

मेषे व्ययस्थे प्रभवेन्नराणां व्ययं सदाच्छादनभोजनैश्च ॥
चक्षुष्मदाने कविवर्द्धनेन लाभेन नानाविधपौरुषेण ॥ ३० ॥

यदि मेषराशि द्वादश भावमें स्थित होवे तौ वस्त्र भोजन कर तथा स्त्रियोंकी अनेक प्रकारसे वृद्धि करनेसे तथा अनेक प्रकारके पुरुषार्थवाले लाभकर पुरुषोंके धनका खर्च होता है ॥ ३० ॥

वृषे व्ययस्थेऽथ तदेव पुंसां भवेद्विचित्रांबरयोषितानाम् ॥
लाभेन रोषेण च विक्रमेण श्रुतानुचेष्टैर्विविधैः प्रकारैः ॥३१॥

यदि वृषराशि द्वादश भावमें होवे तौ तरह २ के वस्त्र और स्त्रियोंके लाभसे और क्रोध और पराक्रमसे और अनेक तरहके शास्त्रसंबंधी कर्मोंसे पुरुषोंके धनका खर्च होता है ॥ ३१ ॥

तृतीयराशौ व्ययगे नराणां व्ययो भवेत्स्त्रीव्यसनात्मकश्च ॥
भृतोद्भवो वा सुतसंप्रभूतः कुशीलतः पापजनाश्रयाच्च ॥ ३२ ॥

यदि मिथुनराशि द्वादश भावमें होवे तौ मनुष्योंका स्त्रीव्यसनसे अथवा अनेक प्राणियोंके द्वारा वा पुत्रोंद्वारा अथवा निंदित शीलसे तथा पापजनोंके आश्रयसे धनका खर्च होता है ॥ ३२ ॥

कर्के व्ययस्थे द्विजदेवतानां व्ययो भवेद्दैवतयज्ञतश्च ॥
धर्मक्रियाभिर्विविधाभिरेव सुसंस्थितःसाधुजनैर्नृलोके ॥३३॥

यदि कर्कराशि द्वादश भावमें स्थित होवे तौ देवता और यज्ञसे और अनेक धर्मक्रियासे और साधुजनोंसे धनका अच्छा खर्च होता है ॥ ३३ ॥

सिंहे व्ययस्थे तु भवेन्नराणामसद्व्ययो भूरितरः सदैव ॥
कुपात्रसंगाच्च कुकर्मणा च निंद्यः सतां पार्थिवचौरतो वा॥३४॥

यदि सिंहराशि द्वादश भावमें होवे तौ नरोंका कुपात्रजनोंके संगसे और कुकर्मसे और राजा तथा चोरोंसे सज्जनोंसे निन्दायोग्य बहुतसा अशुभ खर्च होता है ॥ ३४ ॥

कन्याभिधे चांत्यगते व्ययश्च भवेन्मनुष्यस्य हि चांगनोत्थः ॥
विवाहमांगल्यमखैर्विचित्रैः सत्रैः प्रभाभिर्बहुसाधुसंगात् ॥३५॥

भाषा—यदि कन्याराशि द्वादश भावमें होवे तौ मनुष्यका खर्च स्त्रियोंसे तथा विवाह और मंगलदायक यज्ञोंसे और विचित्र सत्रनाम अग्निहोत्रोंसे और बहुतसे साधुजनोंके संगमसे होता है ॥ ३५ ॥

तुले व्ययस्थे सुरविप्रबंधुश्रुतिस्मृतिभ्यश्च कृतो व्ययश्च ॥
भवेन्नराणां नियमैर्यमैश्च सुतीर्थसेवाजनितः प्रसिद्धः ॥ ३६ ॥

यदि तुलाराशि द्वादश भावमें होवे तौ देवता ब्राह्मण बन्धु वेद स्मृति इनसे और अनेक नियम और यमोंसे और तीर्थोंके सेवनसे संसारमें सराहने योग्य खर्च होता है ॥ ३६ ॥

अलौ व्ययस्थे च भवेद्व्ययस्तु पुंसां प्रमादेन विडंबनाभिः ॥
कुमित्रसेवाजनितः सुनिंद्यःकुबुद्धितश्चौरकृताद्विकारात् ॥३७॥

यदि वृश्चिकराशि द्वादश भावमें स्थित होवे तौ पुरुषोंका खर्च प्रमाद और विडम्बनाओंसे और कुमित्रोंके सेवनसे और कुबुद्धिसे और चौरकृत विकारसे निन्दायोग्य धनका खर्च होता है ॥ ३७ ॥

चापे व्ययस्थे परवंचनाभिर्व्ययो भवेत्पापजनप्रसंगात् ॥
सेवाकृतो वित्तधिया च पुंसां कृषिप्रसंगात्परवञ्चनाद्वा॥३८॥

यदि धनुराशि द्वादश भावमें होवे तौ परपुरुषोंकी ठगईसे तथा पापी जनोंके संगसे धनका खर्च होता है और सेवासे तथा धनबुद्धिसे तथा खेतीके प्रसंगसे अथवा परजनोंके ठगनेसे धनका खर्च होता है ॥ ३८ ॥

मृगे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययस्तु पानासवसस्यजातः ॥
स्ववर्गपूजाजनितोऽन्यतस्तथाकृषिक्रियाभिश्च धनव्ययोऽप्यथ३९

यदि मकर राशि द्वादश भावमें होवे तौ मदिरापान तथा खेतीसंबन्धी फलोंसे अथवा अपने वर्गजनोंकी पूजासे धनका खर्च होता है और अन्य कर्म तथा खेतीके कार्यसे धनका खर्च होता है ॥ ३९ ॥

कुंभे व्ययस्थे सुरसिद्धिविप्रतपस्विनो बंदिभवो व्ययश्च ॥
पुंसां भवेत्साधुजनावरोधाच्छास्त्रप्रसिद्धैः प्रथितश्च भूरि ॥४०॥

यदि कुंभराशि द्वादश भावमें होवे तौ देवसिद्धि तथा ब्राह्मण और तपस्वी और वन्दीजनोंसे धनका खर्च होता है और साधुजनोंके सेवनसे तथा शास्त्रप्रसिद्ध कर्मोंसे अतीव विख्यात खर्च होता है ॥ ४० ॥

मीने व्ययस्थे जलयानतो वा कुसंगमाद्वा प्रभवेद्व्ययश्च ॥
पुंसां तु पुत्रासनयानजातस्तथा विवादेन निरंतरेण ॥ ४१ ॥

यदि मीनराशि द्वादश भावमें होवे तौ जलयानसे अथवा कुसंगसे और पुत्रोंसे तथा आसन यानसे तथा निरन्तर विवादसे मनुष्योंका धनका खर्च होता है ॥४१॥

ये ज्ञानचिंतासु पुरा प्रतिष्ठा योगा मया तत्परिहृत्य चैते ॥
योगा विचिंत्याः सुधिया ततस्तु वाच्या नराणां हि शुभैःशुभास्ते४२

जो कि योग पहिलेसे ज्योतिष ज्ञानचिन्तामें प्रतिष्ठित हैं तिनमेंसे सामान्य २ को त्यागकर और मुख्य २ को लेकर यह योग मैंने कहे हैं वह ही योग पंडितोंको विचारने चाहिये । तदनन्तर वह योग शुभ, योगोंसे शुभ अशुभ- योगोंसे अशुभ मनुष्योंके कहने चाहिये ॥ ४२ ॥

व्ययेशभावफलम् ।

व्ययनाथे लग्नगते विदेशगः सुवचनः सुरूपश्च ॥
असंगवाददोषी भवति कुभारोऽथवा खंजः ॥ ४३ ॥

यदि द्वादशभावपति लग्नमें होवे तौ पुरुष परदेशगामी और अच्छे वचन बोलनेवाला और सुन्दर रूपवान् और संगहीन और वाद करनेवाला और निंदित बोझा ले चलनेवाला अथवा लूला होता है ॥ ४३ ॥

द्वादशपे वित्तगते कृपणः पटुवागनिष्टलाभलयः ॥
भौमे तु गच्छति धनं नृपतस्करवह्निभवभयतः ॥ ४४ ॥

यदि द्वादशभावपति द्वितीय भावमें होवे तौ पुरुष कृपण और चतुर वाणीवाला तथा शत्रुओंके लाभका नाश कर्त्ता होता है और द्वादशभावपति मंगल होकर द्वितीय भावमें होवे तौ राजा चौर अग्नि इनसे उत्पन्न हुए भयसे धन नष्ट हो जाता है ॥ ४४ ॥

सहजगते द्वादशपे क्रूरे गतबांधवः शुभे च धनी ॥
तनुसोदरः कृपणश्च बंधुषु दूरे सदा भवति ॥ ४५ ॥

यदि द्वादशभावपति पाप ग्रह होकर तृतीय भावमें होवे तौ विना बान्धवोंवाला होता है और शुभ ग्रह होकर तृतीय भावमें होवे तौ धनी होता है और थोडे भ्राताओंवाला तथा कृपण और भ्राताओंसे सदैव दूर रहनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

तुर्यगते व्ययनाथे कृपणो रोगोज्झितः सुकर्मा च ॥
मृतिमाप्नोति हि सुततःसततं मनुजो महादुःखी ॥ ४६ ॥

यदि द्वादशभावपति चतुर्थ भावमें होवे तौ पुरुष कृपण और रोगहीन और अच्छे कर्मवाला होता है और वह पुरुष निरन्तर महादुःखी होकर पुत्रसे मरणको प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

द्वादशपतौ सुतस्थे क्रूरे सुतवर्जितः शुभे सुतयुक् ॥
जनककमलाविलासी समर्थतारहितःसदा पुरुषः ॥ ४७ ॥

यदि द्वादशभावपति पाप ग्रह होकर पंचम भावमें होवे तौ पुत्रहीन होता है और शुभ ग्रह होवे तौ पुत्रयुक्त होता है और पिताकी लक्ष्मीसे विलास करनेवाला सदैव समर्थताहीन पुरुप होता है ॥ ४७ ॥

षष्ठगते व्ययनाथे क्रूरे कृपणोऽक्षिदूषणः पुरुषः ॥
लभते मृतिं नितांतं भृगुतनये नेत्रहीनः स्यात् ॥ ४८ ॥

यदि द्वादशभावपति पाप ग्रह होकर षष्ठ भावमें होवे तौ पुरुष कृपण और नेत्ररोगी होता है और निरन्तर मरणको प्राप्त होता है और शुक्र द्वादशपति होकर षष्ठ भावमें होवे तौ नेत्रहीन होता है ॥ ४८ ॥

द्वादशपे सप्तमगे दुष्टो दुश्चरितः कपटवचनः ॥
क्रूरे स्त्रीरहितः स्यात् सौम्ये क्षयमेति गणिकातः ॥ ४९ ॥

यदि द्वादशभावपति सप्तम भावमें होवे तौ पुरुष दुष्ट और खोटे कर्मवाला और कपटवचन बोलनेवाला होता है। पाप ग्रह होवे तौ स्त्रीहीन होता है और शुभ ग्रह होवे तौ वेश्यासे नाशको प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥

द्वादशपे निधनगते अष्टकपाली कार्यसाधनांतरहितः ॥
द्रोहमतिःसौम्यखगे धनसंग्रहतत्परो भवति ॥ ५० ॥

यदि द्वादशभावपति अष्टम भावमें होवे तौ पुरुष दरिद्रतासे युक्त और कार्यके साधन करनेवाले परिणामसे हीन और सबमें वैरबुद्धि होवे है और शुभ ग्रह होवे तौ धनके संग्रहमें तत्पर होता है ॥ ५० ॥

व्ययनाथे सुकृतगते तीर्थावलोकतो व्यये वृत्तिः ॥
क्रूरे खगे च पापी निरर्थकं याति तद्द्रव्यम् ॥ ५१ ॥

यदि द्वादशभावपति नवम भावमें होवे तौ उस पुरुषकी जीविका तीर्थके

दर्शनसे खर्चमें आवे है और पाप ग्रह होवे तौ वह पुरुष पापी होता है और उसका धन वृथा ही खर्च हो जाता है ॥ ९१ ॥

व्ययपे गगनगृहस्थे पररमणीपराङ्मुखः पवित्रांगः ॥
सुतधनसंग्रहनिरतो दुर्वचनपरा भवति माता च ॥ ९२ ॥

यदि द्वादशभावपति दशम भावमें स्थित होवे तौ परस्त्रीसे पराङ्मुख और पवित्र शरीरवाला तथा पुत्र धन इनके इकठे करनेमें तत्पर होता है और उस पुरुषकी माता खोटे वचन बोलनेवाली होवे है ॥ ९२ ॥

लाभस्थे द्वादशपे सुकुमारो दीर्घजीवितो भवति ॥
स्थानप्रवरो दाता विख्यातः सत्यवचनपरः ॥ ९३ ॥

यदि द्वादशभावपति एकादश भावमें होवे तौ पुरुष सुकुमार तथा बडे आयुवाला और स्थानमें श्रेष्ठ और दानी और विख्यात तथा सत्य वचन बोलनेवाला होता है ॥ ९३ ॥

विभूतिमान् ग्रामनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिः पशुसंग्रही च ॥
चेज्जीवति ग्रामयुतःसदा स्याद्व्ययाधिनाथे व्ययगेहलीने ॥९४॥

यदि द्वादशभावति द्वादश भावमें होवे तौ पुरुष विभूतियोंवाला और ग्रामके निवासमें चित्त रखनेवाला और कृपणतायुक्त बुद्धिवाला और पशुओंको इकठा करनेवाला होता है और वह पुरुष दीर्घजीवी होवे तौ ग्रामयुक्त होता है ॥ ९४ ॥

अन्यत्र च।

व्ययभावपतौ व्ययगे रिपुगे वा पापकृद्भवेन्मनुजः ॥
मातृविरोधी क्रोधी सन्ततिदुःखी पराबलाभोगी ॥ १ ॥ ९५ ॥

यदि द्वादशभावपति द्वादश भावमें वा षष्ठ भावमें होवे तौ पुरुष पापकर्ता और मातासे विरोधकर्ता और क्रोधयुक्त और संतानदुःखसे युक्त और परस्त्रीका भोगनेवाला होता है ॥ १ ॥ ९५ ॥

व्ययभावपतौ मदगे तनुगे वा दुर्बलोऽतिकफरोगी ॥
धनविद्याविधुरोऽसौ भार्यासुखवर्जितो नित्यम् ॥ २ ॥ ९६ ॥

यदि द्वादशभावपति सप्तम भाव वा लग्नमें स्थित होवे तौ पुरुष दुर्बल और अतिकफ रोगवाला तथा धन विद्यासे हीन और स्त्रीसुखसे सदैव हीन होता है ॥२॥९६॥

व्ययनाथे धनरन्ध्रस्थितेऽच्युतेऽस्याच्युताभक्तिः ॥
संपन्नः सकलगुणैः प्रियवादी धार्मिको भवेत्पुरुषः ॥ ३ ॥ ९७ ॥

यदि द्वादशभावपति द्वितीय भाव वा अष्टम भावमें होवे तौ उस पुरुषकी भगवान् विष्णुमें अखंडित भक्ति होवे है और समस्त गुणोंसे युक्त और प्रिय बोलनेवाला और धर्मात्मा पुरुष होता है ॥ ३ ॥ ५७ ॥

व्ययनाथे धर्मस्थे सहजस्थे वा शरीरपोषणकृत् ॥
नित्यं द्वेष्टि ज्येष्ठान्प्रजांश्च भार्यां गुरुं चापि ॥ ४ ॥ ५९ ॥

यदि द्वादशभावपति नवम भावमें वा तृतीय भावमें होवे तौ पुरुष शरीर पोषणकर्त्ता और सदैव ज्येष्ठ भ्राता और सन्तान और स्त्री और गुरु इनसे वैर करता है ॥ ४ ॥ ५९ ॥

व्ययनाथे सुखगे वा खे वा सुततातमातृसुखहानिः ॥
परगृहवाणिज्याद्यैः क्षेत्राद्यैश्च क्वचिज्जीवेत् ॥ ५ ॥ ५९ ॥

यदि द्वादशभावपति चतुर्थ भाव वा दशम भावमें होवे तौ पुरुष पुत्र पिता माता इनके सुखकी हानिवाला होता है और परगृह और वणिजी आदिसे और क्षेत्र आदिसे किसी २ समय जीविका करता है ॥ ५ ॥ ५९ ॥

व्ययनाथे सुतभे वा लाभे वापत्यसौख्यविधुरः स्यात् ॥
दत्तक्रीतसुताद्यैर्मणिमुक्ताद्यैश्च निर्वाही ॥ ६ ॥ ६० ॥

इति जातकसंग्रहे व्ययभावविचारः समाप्तः ॥ १२ ॥

यदि द्वादशभावपति पंचम भाव वा एकादश भावमें होवे तौ पुरुष सन्तानसुखसे हीन होता है और दत्त तथा क्रीत पुत्रादिकोंसे और मुक्ताफल आदिसे निर्वाह करनेवाला होता है ॥ ६ ॥ ६० ॥

इति जातकसंग्रहभाषाटीकायां व्ययभावविचारः समाप्तः ॥ ४ ॥

पंचमहापुरुषलक्षणानि निरूप्यंते जातकाभरणे।

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पंच पूर्वमुनिभिः प्रकीर्त्तिताः ॥
वच्मि तान्सरलान् महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥१॥

जो कि महापुरुषसंज्ञक पांच राजयोग पूर्वाचार्योंने कहे हैं तिनको सरलरूपसे महोक्तियोंसे राजयोगविधिके देखनेकी इच्छासे कहता हूं ॥ १ ॥

स्वगेहतुंगाश्रयकेंद्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः ॥
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥२॥

यदि मंगल आदि ग्रह अपने गृह वा उच्च राशिमें स्थित होकर केन्द्रभावमें

स्थित होवें तौ क्रमसे रुचक, भद्र, हंस, मालव्य, शश इन नामोंवाले योग होते हैं। अर्थात् मंगल अपनी राशि मेष वृश्चिक वा उच्चराशि मकरमें स्थित होकर केन्द्रमें स्थित होवे तौ रुचक योग होता है और बुध अपने राशि मिथुन कन्या और उच्चराशी कन्या राशिमें स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ भद्रयोग होता है और बृहस्पति धनु मीन कर्क इन राशियोंपर स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ हंसयोग होता है और शुक्र वृष तुला मीन इन राशियोंमें स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ मालव्ययोग होता है और शनैश्चर मकर कुम्भ तुला इन राशियोंपर स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ शशयोग होता है ॥ २ ॥

रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकांतिर्बहुरुधिरबलः साहसावाप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूर्नीलकेशः समकरचरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः ॥
रक्ताश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कंजकंठो महौजाः
क्रूरो भक्तोऽमराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ॥ ३ ॥

रुचक योगमें जन्मा हुआ मनुष्य बडे आयुवाला तथा निर्मल कांतिसे युक्त और बहुतसे रुधिर बलवाला तथा अपने साहससे प्राप्त की हुई सिद्धिवाला तथा सुन्दर भ्रुकुटियोंसे विराजमान और काले केशोंसे शोभित और समान हाथपांववाला और मंत्रवेत्ता तथा मनोहर कीर्तियुक्त तथा कुछ रक्त औ र श्यामवर्ण और अति शूरवीर तथा शत्रुओंकी सेनाका मथनेवाला और शंखसमान ग्रीवासे युक्त तथा बडे बलसे युक्त क्रूर स्वभाव तथा देवताओंका भक्त और देवता तथा गुरुजनोंसे नम्र रहनेवाला और पतले २ घुटने पिंडरी जंघाओंवाला होता है ॥ ३ ॥

खट्वांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणावज्रांकहस्तचरणःसरलांगुलिः
स्यात् ॥ मंत्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं मध्यं च तस्य
गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ४ ॥

खट्वांग, पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, वज्र इनके चिह्नसे युक्त हुए हाथपांववाला तथा सीधी अंगुलियोंवाला और मंत्रशास्त्र तथा अभिचारविद्यामें निपुण होता है और वह पुरुष हजारको तोल सक्ता है और उस पुरुषका मध्यभाग वाम कमरि मुखकी दीर्घताके समान होवे है ॥ ४ ॥

सह्यस्य विंध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ॥
शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥ ५ ॥

सह्याचल, विंध्याचल और उज्जयिनीनगरी इनका राजा और सत्तर वर्ष जीवनेवाला होता है और शस्त्र तथा अग्निके चिह्नसे युक्त होता है और उसका मरण देवस्थानमें प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

भद्रयोगफलम्।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
लंबापीनवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ॥
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगंडस्थलः
प्राज्ञःपंकजगर्भपाणिचरणःसत्त्वाधिको योगवित् ॥ ६ ॥

भद्रनाम योगमें जन्मा हुआ पुरुष सिंहके समान मुखवाला और हाथीके समान चालवाला और पुष्ट और विशाल छातीवाला तथा लंबी और मोटी तथा गोल ऐसी दोनों भुजाओंवाला तथा भुजाओंके लंबाईके समान ही शरीरकी ऊंचाईवाला तथा कामी और कोमल तथा पतले २ रोमोंसे युक्त ऐसे कपोलोंवाला तथा अतिपंडित और कमलके गर्भके समान लाल २ हाथ पांवोंवाला और बडे बलसे युक्त और योगवेत्ता होता है ॥ ६ ॥

शंखासिकुंजरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः ॥ यात्रागजेंद्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥ ७ ॥

शंख, तलवार, हाथी, गदा, पुष्प, बाण, ध्वज, चक्र, कमल, हल इनके चिह्नसे युक्त हुए हाथ पांववाला होता है और यात्राके समय हाथियोंके मदरूप जलसे गीली की हुई पृथ्वीवाला तथा श्रेष्ठ केसरके गंधसे युक्त हुए शरीरवाला सुन्दर शब्दवाला होता है ॥ ७ ॥

सद्भ्रुयुगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः ॥ सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो धीरो भवेदसितकुंचितकेशपाशः ॥ ८ ॥

श्रेष्ठ दोनों भ्रुकुटियोंसे युक्त और अतीव बुद्धिमान् तथा शास्त्रवेत्ता तथा सत्कार तथा भोगोंसे युक्त और अतीव छिपाये हुए गूढवृत्तान्तवाला तथा श्रेष्ठ कांखसे युक्त और धर्मात्मा तथा सुन्दर ललाटपट्टवाला धीर और काले तथा घुंघराले बालोंसे युक्त होता है ॥ ८ ॥

स्वतंत्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ॥
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥

समस्त कार्योंमें स्वतंत्र तथा स्वजनके प्रति नहीं सहनेवाला होता है और उस पुरुषका विभव सदैव अनेक याचकोंसे भोगा जाता है ॥ ९ ॥

भारं तुलायां तुलयेत् सुरत्नैः श्रीकान्यकुब्जोऽधिपतिर्भवेत्सः ॥
भद्रोद्भवःपुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिः ॥१०॥

अच्छे रत्नोंसे तराजूपर भारको तोलता है और कान्यकुब्जदेशका स्वामी तथा पुत्रस्त्रीसुखसे युक्त और राजा होकर अस्सी वर्ष जीवता है ॥ १० ॥

हंसयोगफलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसे प्रसन्नेंद्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ॥
शंखाब्जांकुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वांगमालाघटै-
श्चक्षत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ ११ ॥

हंसयोगमें जन्मा हुआ पुरुष लाल मुखवाला तथा ऊंची नाकवाला तथा सुंदर पांवोंवाला और प्रसन्न इन्द्रियोंवाला और गौरवर्ण और पुष्ट कपोलोंसे युक्त और लाल नखोंसे विराजमान तथा हंसके समान शब्दवाला और कफप्रकृति होता है और शंख, कमल, वज्र, मछली, दो रस्सी, खट्वांग, माला, कलश इनसे विराजमान पांव और हाथोंवाला होता है और उस पुरुषके नेत्र सहतके समान मधुर और गोल शिर होता है ॥ ११ ॥

जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ।
उच्चोऽङ्गुलैर्षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानम् ॥ १२॥

जलाशयमें प्रीति रखनेवाला तथा अतीव कामी होता है और स्त्रियोंके विषें तृप्तिको नहीं प्राप्त होता है और छयासी अंगुलोंकर ऊंचा होता है और उस पुरुषका आयु छयानवें वर्षका होता है ॥ १२ ॥

वाह्लीकदेशान्तरशूरसेनगांधर्वगंगायमुनांतरालान् ॥
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः १३

वाह्लीकदेशान्तर तथा शूरसेन और गांधर्वदेश और गंगायमुनाके मध्यवर्त्ती देश इनका पालन करके वनके बीच मरणको प्राप्त होता है यह पुराणाचार्योंने हंस-योग कहा है ॥ १३ ॥

मालव्ययोगफलम्।

अस्थूलौष्ठोऽथ विषमवपुर्नैव रिक्तांगसंधिर्मध्येक्षामःशशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगंडः ॥ सद्दीप्ताक्षः समसितरदो जानुदेशाप्तपाणिर्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥१४॥

मोटे २ होठोंवाला तथा विषम शरीर और पृथक् २ अंगकी संधियोंवाला और शरीरके मध्यभागमें दूबरा और चंद्रमाके समान कान्तिवाला तथा हाथीके समान नाभिकावाला और सुन्दर कपोलोंसे युक्त और श्रेष्ठ प्रकाशमान नेत्रोंसे विराजमान और समान और श्वेत दांतोंसे युक्त और घुटनोंपर्यन्त विस्तृतभुजाओंवाला होता है और राजा होकर सत्तर वर्ष विलास करता है। यह मालव्य योग है॥ १४॥

वक्रं त्रयोदशमितांगुलमस्य दीर्घं तिर्यग्दशांगुलमितं श्रवणांतरालम् ॥ मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च मालवकसिंधुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

उस पुरुषका तेरह अंगुल विस्तृत मुख होता है और दश अंगुल विस्तार कर्णपर्यन्त होवे है। मालव्यसंज्ञक योगमें जन्म लेनेवाला राजा होकर लाटदेश तथा मालवदेश, सिन्धुदेश और पारियात्रदेश इनका पालन करता है॥ १५॥

शशकयोगफलम्।

लघुद्विजास्यो द्रुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः॥ वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः॥१६॥

शशकयोगमें जन्मा हुआ प्राणी छोटे २ दांत और मुखवाला तथा शीघ्र चलनेवाला तथा अतिक्रोधी और शठ तथा अतिशूरवीर तथा निर्जन देशमें रहनेवाला होता है और वन, पर्वत, दुर्गस्थान, नदी इनमें आसक्त चित्तवाला और प्रिय अतिथियोंवाला और बडे शरीरवाला और विख्यात होता है॥ १६॥

नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्चापि किंचिद्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः॥ स्त्रीसंसक्तःपरधनहरो मातृभक्तो सुजंघो मध्येक्षामः सुललितमती रंध्रवेदी परेषाम्॥ १७॥

अनेक सेनाके समूहमें तत्पर और ऊंचे दांतोंवाला और धातुवादमें कुशल तथा चंचल और चपल नेत्रोंवाला तथा स्त्रीमें आसक्त तथा पराये धनका: हरनेवाला तथा माताका भक्त तथा सुन्दर जंघावाला तथा शरीरके मध्यमें कृश और सुन्दर मनोहर बुद्धियुक्त और पराये छिद्रोंका जाननेवाला होता है॥ १७॥

पर्यंकशंखशरशस्त्रमृदंगमालवीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः ॥ वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनींद्रैः ॥ १८ ॥

उस पुरुषके हाथ पांवमें पर्यंक, शंख, बाण, शस्त्र मृदंग, माला, वीणा इनके समान रेखा होवे हैं और वह पुरुष सत्तर वर्ष प्राप्त हुए राज्यको करता है। शशक योगमें राजा मुनिजनोंने कहा है ॥ १८ ॥

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तंडशीतांशुयुता भवंति ॥ कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि ॥१९॥

यद्यपि मंगल आदि पांच ग्रह केन्द्रमें उच्च राशिके होकर भी स्थित होवें और सूर्य चंद्रमासे युक्त होवें तौ उस पुरुषको पृथ्वीपति नहीं करते हैं किन्तु अपनी दशामें कुछ शुभ फलको देते हैं ॥ १९ ॥

सुनफायोगफलम् ।

भौमादीनां फलं यत्स्याज्जातकस्य बलं बुधः ॥ प्राज्ञाय प्रवदेत्सम्यक् सुनफादिकृतं फलम् ॥ १ ॥

भौम आदि पांच ग्रहोंका जो कि सुनफादि योगकृत फल है उसको जातकका बल जानकरके पंडित भली प्रकार कहे ॥ १ ॥

विज्ञो वित्तप्रायो निष्ठुरवचनश्च भूपतिश्चेन्द्रः ॥ हिंस्रो नित्यविरोधी सुनफायां भौमसंयोगे ॥ २ ॥

यदि सुनफा योगमें मंगलका संयोग होवे तौ पुरुष पंडित और बहुतने धनवाला तथा कठोरवचनभाषी तथा समर्थ और राजा और हिंसाकर्त्ता और सदैव विरोधयुक्त होता है ॥ २ ॥

अतिशास्त्रगतः कुशलो धर्मरतो काव्यकृन्मनस्वी च ॥ सर्वहितो रुचिरतनुः सुनफायां सोमजो भवति ॥ ३ ॥

यदि सुनफायोगमें बुध होवे तौ पुरुष अतीव शास्त्रवेत्ता और चतुर तथा धर्मात्मा तथा काव्यकर्त्ता और शूरवीर और सबका प्रिय और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ३ ॥

नानाविद्याचार्यं ख्यातं नृपतिं नृपप्रियं चापि ॥ सकुटुम्बधनसमृद्धं सुनफायां सुरगुरुः कुरुते ॥ ४ ॥

यदि सुनफा योगमें बृहस्पति होवे तौ पुरुषको अनेक विद्याओंका आचार्य तथा विख्यात और राजा और धर्मात्मा तथा कुटुम्ब धनसे समृद्ध करता है ॥४॥

स्त्रीक्षेत्रगृहपश्चतुष्पदाढ्यः सविक्रमो भवति ॥
नृपसुकृतः सुवेषो दक्षः शुक्रेण सुनफायाम् ॥ ५ ॥

यदि सुनफायोगमें शुक्र होवे तौ पुरुष स्त्री क्षेत्र गृह इनका स्वामी तथा चौपायोंसे युक्त और पराक्रमी और राजा तथा सुन्दर कार्यकर्त्ता तथा सुन्दर वेषयुक्त और चतुर होता है ॥ ५ ॥

निपुणमतिर्ग्रामपुरैर्नित्यं संत्याजितो धनसमृद्धः ॥
सुनफायां रवितनये क्रियासु गुप्तो भवेन्मलिनः ॥ ६ ॥

यदि सुनफा योगमें शनैश्चर होवे तौ पुरुष चतुर बुद्धि और ग्राम और पुरकरके सदैव त्यागा हुआ धनी तथा क्रियाओंमें रक्षित और मलिन होता है ॥ ६ ॥

अनफायोगफलम्।

चोरस्वामी दृश्यः स्ववशी मानी रणोत्कंठः ॥
क्रोधात्संपत्साध्यः सुतनुः कुजोऽनफायां प्रगल्भश्च ॥ १ ॥

यदि अनफायोगमें मंगल होवे तौ पुरुष चौरोंका स्वामी और दर्शन योग्य और इन्द्रियजित तथा मानी और संग्रामोत्साही तथा क्रोधसे संपदाओंके सिद्ध करनेवाला और सुन्दरशरीरयुक्त और प्रगल्भ होता है ॥ १ ॥

गन्धर्वो लेख्यपटुः कविः प्रवक्ता नृपाप्तसत्कारः ॥
रुचिरसुभगोऽनफायां प्रसिद्धकर्मापि बुधश्च भवेत् ॥ २ ॥

यदि अनफायोगमें बुध होवे तौ गानविद्यामें चतुर और चित्रकारीमें चतुर और पंडित और अतिवक्ता और राजासे प्राप्त हुए सत्कारवाला और मनोहर तथा सुन्दर ऐश्वर्य युक्त तथा विख्यात कर्मोंवाला होता है ॥ २ ॥

गम्भीरः सन्मेधा सुतयुतो बुद्धिमान्नृपाप्तवशगः ॥
अनफायां त्रिदशगुरौ याते शक्तः कविर्भवति ॥ ३ ॥

यदि अनफायोगमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष गंभीर और श्रेष्ठ बुद्धि और पुत्रोंसे युक्त और बुद्धिमान् और राजाके वशमें चलनेवाला और समर्थ और विद्वान् होता है ॥ ३ ॥

युवतीनामतिसुभगः प्रणयः क्षितिपस्य गोपिताकान्तः ॥
कनकसमृद्धश्च पुमाननफायां भार्गवे भवति ॥ ४ ॥

यदि अनफायोगमें शुक्र होवे तौ पुरुष स्त्रियोंका अतीव मनोहर और राजाका स्नेही और रक्षक और मनोहर तथा सुवर्णसे समृद्ध होता है ॥ ४ ॥

निस्तीर्णभृज्जनेशो गृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः ॥
दुर्बलतायुग् भोगी गुणसहितः पुत्रवान् रविजे ॥ ५ ॥

यदि अनफायोगमें शनैश्चर होवे तौ अधीन जनोंके पोषणकर्त्ता और जनपति तथा आज्ञाकारी और चौपायोंसे युक्त तथा दुर्बलतायुक्त और भोगी तथा गुणी और पुत्रवान् होता है ॥ ५ ॥

दुरुधरायोगफलम् ।

आमृतको बहुवित्तोऽनिपुणो निशठो गुणाधिको लुब्धः ॥
वृद्धस्त्रीप्रसक्तः कुलाग्रणीः शशिनि भौमबुधमध्ये ॥ १ ॥

चंद्रमा यदि मंगल बुधके मध्यमें होवे तौ पुरुष मरणपर्यन्त बहुतसे धनवाला तथा अतिचतुर और अतीव टेढे अन्तःकरणवाला और गुणी और लोभी तथा वृद्ध स्त्रीके विषे आसक्त तथा कुलमें मुख्य होता है ॥ १ ॥

ख्यातः कर्मसु कितवो बहुधनवैरस्त्वमर्षणो धृष्टः ॥
अंगारकशुक्रगुरुमध्यगते शशिनि संग्राही ॥ २ ॥

चंद्रमा यदि मंगल शुक्र वा मंगल बृहस्पति इनके मध्यमें होवे तौ पुरुष विख्यात और कार्योंके मध्यमें कपटी और बहुतसे धन और वैरवाला तथा नहीं सहनेवाला और प्रगल्भ तथा धनादिको इकठा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

उत्तमसुरतो बहुसंचयकारको व्यसनसक्तः ॥
क्रोधी पिशुनो रिपुमान् यमारयोः स्यादुरुधरायाम् ॥ ३ ॥

यदि शनैश्चर मंगल इनके मध्यमें दुरुधरा योग अर्थात् चंद्रमा होवे तौ पुरुष उत्तम जनोंमें प्रीति रखनेवाला तथा बहुतसा संचय करनेवाला और व्यसनशील तथा क्रोधयुक्त तथा चुगली करनेवाला और शत्रुवाला होता है ॥ ३ ॥

धर्मरतः शास्त्रज्ञो वाक्यपटुः सववर्द्धनसमृद्धः ॥
त्यागयुतो विख्यातो गुरुबुधमध्यस्थिते चन्द्रे ॥ ४ ॥

चंद्रमा यदि बृहस्पति बुध इनके मध्यमें होवे तौ पुरुष धर्मात्मा तथा शास्त्रवेत्ता तथा कहनेमें चतुर और समस्त वृद्धियोंसे समृद्ध और त्यागी तथा विख्यात होता है ॥ ४ ॥

देशे देशे गच्छति तत्र तपो नास्ति विद्यया सहितः ॥
चन्द्रेऽन्येषां पूज्यः स्वजनविरोधी ज्ञमंदयोर्मध्ये ॥ ५ ॥

चंद्रमा यदि बुध शनैश्चर इनके मध्यमें होवे तौ पुरुष देश २ में गमन कर्त्ता होता है और उस पुरुषमें तप नहीं होता है और विद्यासे युक्त होता है और अन्य जनोंके पूजने योग्य होता है और स्वजनोंसे विरोधकर्त्ता होता है ॥ ५ ॥

प्रियवाक्सुभगः कान्तः प्रवृत्तिगो यदि सुकृतवान्नृपतिः ॥
सौख्यः शूरो मंत्री बुधसितयोर्मध्यगे च हिमकिरणे ॥ ६ ॥

चंद्रमा यदि बुध शुक्र इनके मध्यमें होवे तौ पुरुष प्रियवचनवक्ता और सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त और मनोहर और वार्त्ता जाननेवाला और पुण्यात्मा तथा राजा और सुखयुक्त तथा मंत्री होता है ॥ ६ ॥

धृतिमेधास्थैर्ययुतो नीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः ॥
ख्यातो नृपकृत्यकरो गुरुसितयोर्दुर्धरायोगे ॥ ७ ॥

यदि बृहस्पति शुक्र इनके मध्यमें दुरुधरायोग होवे तौ धृति, बुद्धि, स्थिरता इनसे युक्त तथा नीतिवेत्ता तथा सुवर्णरत्नोंसे परिपूर्ण और विख्यात तथा राज-कार्यकर्त्ता होता है ॥ ७ ॥

सुखनयविज्ञानयुतः प्रियवाग विद्वान्धुरंधरो मर्त्यः ॥
ससुतो धनी सुरूपश्चन्द्रो गुरुशनैश्चरांतरगे ॥ ८ ॥

चंद्रमा यदि बृहस्पति शनैश्चर इनके मध्यमें होवें तौ पुरुष सुख नीति विज्ञान इनसे युक्त तथा प्रियभाषी और विद्वान् तथा धुरंधर तथा पुत्रवान् और धनवान् तथा रूपवान् होता है ॥ ८ ॥

वृद्धचरितः खलाढचो निपुणः स्त्रीवल्लभो धनसमृद्धः ॥
नृपसत्कृतं बहुज्ञं कुरुते चन्द्रः शनिसितयोः ॥ ९ ॥

चंद्रमा यदि शनैश्चर शुक्र इनके मध्यमें होवे तौ पुरुष वृद्धोंके समान आचरण-वाला और दुष्ट जनोंसे युक्त और चतुर और स्त्रियोंका प्रिय तथा धनी होता है और शनैश्चर शुक्रके मध्यमें स्थित होकर चंद्रमा पुरुषको राजसत्कृत और बहुवेत्ता करता है ॥ ९ ॥

केमद्रुमफलम्।

केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्रहीनो देशान्तरे व्रजति दुःखसदा-

भितप्तः ॥ ज्ञातिप्रवादनिरतो मुखरः कुचैलो नीचः सदा भवति भीतियुतश्चिरायुः ॥ १० ॥

यदि केमद्रुम योग होवे तौ पुरुष पुत्र और स्त्रीसे हीन होता है और सदैव दुःखोंसे तपायमान होकर देशदेशान्तरमें गमन करता है और ज्ञातिके विवादमें तत्पर और निन्दितवचनभाषी तथा निन्दित वस्त्रोंवाला तथा नीच और भययुक्त और दीर्घायु होता है ॥ १० ॥

बृहज्जातके चोक्तम् ।

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढ्यस्त्यागान्वितो दुरुधराप्रभवः सुभृत्यः ॥ केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचनिःस्वाः प्रेष्याः खलाश्च नृपतेरपि वंशजाताः ॥ ११ ॥

दुरुधरायोगमें उत्पन्न होनेवाला पुरुष उत्पन्न हुए भोगसुखका भोगनेवाला और धनवाहनोंसे युक्त और त्यागी और सुन्दर चाकरोंवाला: होता है और केमद्रुमयोग होवे तौ पुरुष मलीन और नीच तथा निर्धन तथा चाकरी करनेवाला और दुष्ट होता है यद्यपि राजवंशमें उत्पन्न भी होवे ॥ ११ ॥

केमद्रुमभंगः ।

इत्वार्कं सुनफानफादुरुधरा स्वांत्योभयस्थैर्ग्रहैः ।
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ ॥
केंद्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते ।
केचित्केंद्रनवांशकेष्विति वदंत्युक्तिः प्रसिद्धा न ते ॥ १२ ॥

यदि चन्द्रमासे सूर्यको त्यागकर द्वितीय भावमें ग्रह होवें तो सुनफा योग होता है और द्वादश भावमें ग्रह होवें तो अनफा योग होता है, और द्वितीय द्वादश इन दोनों स्थानोंमें ग्रह होवें तौ दुरुधरायोग होता है और इन तीनों योगोंमेंसे कोई योग नहीं होवे तौ केमद्रुमयोग होता है, यह योग बहुतसे आचार्योंने कहे हैं। यदि जन्म लग्नसे केन्द्रभाव अथवा चन्द्रमा भौमादि ग्रहोंमेंसे किसीसे युक्त होवे तौ केम- द्रुमयोग नहीं होता है और कोई २ आचार्य चंद्रमाके केंद्रवशसे और कोई आचार्य चन्द्रमासे सुनफा अनफा दुरुधरा इन तीनों योगोंको कहते हैं। भाव यह है कि चन्द्रमासे चतुर्थ केन्द्रमें भौमादि ग्रह होवे तौ सुनफायोग होता है, और दशम भावमें भौमादि ग्रह होवे तौ अनफायोग होता है और चतुर्थ दशम दोनों भावोंमें भौमादि ग्रह होवे तौ दुरुधरा योग होता है। इस प्रकार कोई योग न होवे तौ केमद्रुम योग

होता है और चंद्रमाके नवांशकराशिसे द्वितीय राशिमें यदि तारा ग्रह होवे तौ सुनफायोग और द्वादशराशिमें तारा ग्रह होवे तौ अनफायोग और द्वितीय द्वादश दोनों राशियोंमें ताराग्रह होवे तौ दुरुधरायोग होता है और इन तीनों योगोंमेंसे कोई ग्रह न होवे ता केमद्रुम योग होता है । जिन आचार्योंके मतमें चंद्रमाके केन्द्र और नवांशकरराशिसे यह तीनों योग कहे हैं तिन आचार्योंका मत लोकमें विख्यात नहीं इसीसे वृद्धज्योतिषियोंने तिनका मत नहीं स्वीकार किया है ॥ १२ ॥

पुनः केमद्रुमभंगः ।

कुसुदगहनबंधुर्वीक्ष्यमाणः समस्तैर्गगनगृहनिवासैर्दीर्घजीवी विहाय ॥ फलमशुभसमुत्थं यच्च केमद्रुमोक्तं स भवति नरनाथः सार्वभौमो जितारिः ॥ १३ ॥

यदि चन्द्रमा समस्त ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ पुरुष दीर्घजीवी तथा बडे आयुवाला होता है और अशुभ योगोंसे उत्पन्न हुए तथा केमद्रुमके कहे हुए फलको त्यागकरके सार्वभौम और जीते हुए शत्रुओंवाला राजा होता है ॥ १३ ॥

पूर्णः शशी यदि भवेच्छुभसंस्थितो वा सौम्यामरेज्यभृगुनंदनसंयुतश्च ॥ पुत्रार्थसौख्यजनकः कथितो मुनींद्रैः केमद्रुमे भवति मंगलसुप्रसिद्धिः ॥ १४ ॥

यदि परिपूर्ण चंद्रमा शुभ ग्रहके राशिपर स्थित होवे अथवा बुध बृहस्पति शुक्र इनमेंसे किसीसे युक्त होवे तौ पुत्र धन सौख्यको उत्पन्न करनेवाला होता है और केमद्रुमयोग होवे तौ मंगलकी सिद्धि होवे है ॥ १४ ॥

सुनफाद्यो योगाः कथमुत्पद्यंते तदाह श्रीलघुजातकात् ।

रविवर्ज्यं द्वादशगैरनफा चंद्राद्द्वितीयगैः सुनफा ॥ उभयस्थितैर्दुरुधरा केमद्रुमसंज्ञिको योऽन्यः ॥ १५ ॥

चंद्रमासे सूर्यको छोडकर द्वादश भावमें भौमादि ग्रह होवें तौ अनफायोग होता है और द्वितीयभावमें भौमादि ग्रह होवें तौ सुनफायोग होता है और द्वितीय द्वादश दोनों जगह भौमादि ग्रह होवें तौ दुरुधरायोग होता है और इन तीनोंमेंसे कोई योग नहीं होवे तौ केमद्रुमयोग होता है । यह योग चन्द्रमासे उत्पन्न होता है १५

सूर्याद्वेशिवोशियोगाः ।

सूर्याद्व्ययगैर्वोशिर्द्वितीयगैश्चंद्रवर्जितैर्वेशिः ॥ उभयस्थितैर्ग्रहगणैरुभयचरीनामतः प्रोक्तः ॥ १ ॥

यदि सूर्यसे बारहवें भावमें चंद्रवर्जित भौमादि ग्रह होवें तौ वोशियोग होता है, द्वितीय भावमें होवें तौ वेशियोग होता है और द्वादश द्वितीय दोनों जगह होवें तौ उभयचरी नाम योग होता है ॥ १ ॥

वोशियोगफलम् ।

मंदहगस्थिरवचनं परिभूरिश्रमं नतोर्द्धतनुम् ॥
कथयति गणिताधिपतिर्वोशिसमुत्थं त्वधोदृष्टिम् ॥ २ ॥

वोशियोगमें उत्पन्न हुए पुरुषको मंदहष्टिवाला तथा असत्यभाषी और बहुत परिश्रम करनेवाला तथा नम्र और ऊंचे शरीरवाला तथा नीचेको दृष्टि रखनेवाला ज्योतिषवेत्ता कहते हैं ॥ २ ॥

बहुसंचितसंपत् सुदृग् वोशौ पुरुषो भवेद्गुरुजातः ॥
भीरुःकायाद्विलम्रो लघुचेष्टो भृगुसुतो पराधीनः ॥ ३ ॥

यदि वोशियोगमें बृहस्पति होवे तौ पुरुष बहुतसी इकट्ठी हुई संपत्तिवाला तथा सुन्दरदृष्टिवाला होता है और शुक्र होवे तौ पुरुष डरनेवाला और शरीरसे हीन और थोड़ा कार्य करनेवाला तथा पराये अधीन होता है ॥ ३ ॥

परतर्कितो दरिद्रो मृदुर्विनीती बुधो विगतलज्जः ॥
मातृघ्नः क्षितिपुत्रो परोपकारी नरो वोशौ ॥ ४ ॥

यदि वोशियोगमें बुध होवे तौ पुरुष पराये तर्कसे युक्त और दरिद्री तथा कोमल और विनयहीन और निर्लज्ज होता है और मंगल होवे तौ माताके मारनेवाला तथा पराया उपकार करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

परदारे सक्तश्च वृद्धाकारो घृणी भवेन्मनुजः ॥
संजातनरो वोशौ योगे शनैश्चरेण संयुक्ते ॥ ५ ॥

यदि वोशियोगमें शनैश्चर होवे तौ पुरुष परस्त्रीमें आसक्त तथा वृद्धोंके समान आकारवाला तथा दयालु पुरुष होता है ॥ ५ ॥

वेशियोगफलम् ।

उच्चेष्टवचाः स्मृतिमान् योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ॥
पूर्वशरीरे पृथुलो तुच्छगतिः सात्त्विको वशौ ॥ १ ॥

वेशियोगमें जन्मा हुआ पुरुष ऊंचा तथा प्रियभाषी और स्मृति रखनेवाला तथा योगयुक्त और तिरछा देखनेवाला और पूर्वशरीरमें मोटा तथा आलसी तथा सत्त्वगुणयुक्त होता है ॥ १ ॥

धृतिसत्यबुद्धियुक्तो भवति गुरुर्वेशिगो वने शूरः ॥
ख्यातो गुणवानार्यः शूरो भार्गवे पुरुषः ॥ २ ॥

यदि वेशियोगमें बृहस्पति होवे तौ धृति सत्य बुद्धि इनसे युक्त रहनेवाला तथा वनमें शूरवीर होता है और शुक्र होवे तौ पुरुष विख्यात तथा गुणी और आर्य शूरवीर होता है ॥ २ ॥

प्रियभाषी रुचिरतनुर्वेशः स्याद्वा बुधे पराज्ञाकृत् ॥
संग्रामे विख्यातो भूमिसुते सूनुगुणवानतिख्यातः ॥ ३ ॥

यदि बुधका किया हुआ वेशियोग होवे तौ पुरुष प्रियभाषणकर्त्ता तथा सुन्दर-शरीर और पराई आज्ञा करनेवाला होता है। यदि मंगलका किया हुआ वेशियोग होवे तौ पुरुष संग्राममें विख्यात तथा पुत्रवान् तथा गुणवान् और अतिविख्यात होता है ॥ ३ ॥

वणिक्कलास्वभावः स्यात्परद्रव्यापहारकः ॥
गुरुद्वेषी जनो ज्ञेयो वेशियोगे शनैश्चरे ॥ ४ ॥

यदि वेशियोगमें शनैश्चर होवे तौ पुरुष बनियोंकी वृत्तिके समान स्वभाववाला तथा पराये धनका हरनेवाला तथा गुरुजनोंसे वैरकर्त्ता होता है ॥ ४ ॥

उभयचरीयोगफलम्।

सर्वसहः सुसमदृक्समकायः सुस्थितो निपुणसत्त्वः ॥
नात्युच्चः परिपूर्णग्रीवो भवेदुभयचर्यायाम् ॥ १ ॥

उभयचरीयोगमें जन्मा हुआ मनुष्य सबका सहनेवाला और समान सरल दृष्टि-वाला तथा समान शरीरवाला तथा अतीव स्थिरचित्त तथा अधिक सत्त्वगुणवाला तथा अति ऊंचा नहीं और परिपूर्ण ग्रीवावाला होता है ॥ १ ॥

सुभगो बहुभृत्यजनो बंधूनामाश्रयो नृपतितुल्यः ॥
नित्योत्साही हृष्टो भुनक्ति भोगानुभयचर्यायाम् ॥ २ ॥

उभयचरीयोगमें जन्मा हुआ पुरुष सुन्दर ऐश्वर्यवाला तथा बहुतसे सेवकजनोंसे युक्त और बंधुजनोंका आश्रय और राजाके तुल्य तथा सदैव उत्साह रखनेवाला और प्रसन्नचित्त रहता है और अनेक भोगोंको भोगता है ॥ २ ॥

अन्येऽपि योगा लिख्यंते।

सिंहासनयोगः।

षष्ठाष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः ॥

सिंहासनाख्यो योगोऽयं राजसिंहासनं विशेत् ॥ १ ॥

षष्ठ अष्टम द्वादश द्वितीय इन भावोंमें यदि सब ग्रह होवें तौ सिंहासन नाम योग होता है, इस योगमें पुरुष राजसिंहासनपर विराजमान होता है ॥ १ ॥

ध्वजयोगः ।

अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः ॥
ध्वजयोगोऽत्र जातस्तु स पुमान्नायको भवेत् ॥ २ ॥

यदि समस्त पाप ग्रह अष्टम भावमें होवें और समस्त शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवें तौ ध्वजयोग होता है । ध्वजयोगमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजा होता है ॥ २ ॥

हंसयोगः ।

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवंति च यदा ग्रहाः ॥
हंसयोगं विजानीयात्स्ववंशस्यैव पालकः ॥ ३ ॥

यदि नवम पंचम लग्न सप्तम इन भावोंमें समस्त ग्रह होवें तौ हंसयोगको जाने । हंसयोगमें जन्मा हुआ पुरुष अपने वंशका पालन करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

कारिकायोगः ।

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाः स्युर्दशमेऽपि च ॥
लग्नस्य संमुखे वापि कारिका परिकीर्तिता ॥ ४ ॥

यदि एकादश भावमें समस्त ग्रह होवें अथवा दशम भावमें समस्त ग्रह होवें अथवा लग्नके सम्मुख नाम सप्तम भावमें समस्त ग्रह होवें तौ कारिका नाम योग कहा है ॥ ४ ॥

उत्पन्नः कारिकायोगे नीचोऽपि नृपतिर्भवेत् ॥
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ ५ ॥

कारिकायोगमें उत्पन्न हुआ नीच वंशमें होकर भी राजा होता है और राजवंशमें उत्पन्न हुआ राजा होवे तौ इसमें क्या संशय है ॥ ५ ॥

एकावलीयोगः ।

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ॥
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

यदि लग्नसे अथवा अन्य भावसे क्रमसे समस्त ग्रह होवें तौ एकावली योग कहा है । एकावली योगमें नर महाराजा होता है ॥ ६ ॥

चतुःसागरयोगः ।

चतुर्षु केन्द्रसंज्ञेषु सौम्याः पापग्रहाः स्थिताः ॥
चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ ७ ॥

चारों केन्द्रभावोंमें समस्त शुभ ग्रह और समस्त पाप ग्रह स्थित होवें तौ यह चतुःसागरयोग होता है। यह योग राज्य देनेवाला तथा धन देनेवाला होता है ॥७॥

अपरः प्रकारः ।

कर्कटे मकरे मेषे तुलायां च ग्रहे स्थिते ॥
चतुःसागरयोगः स्यात्सर्वारिष्टनिषूदनः ॥ ८ ॥

यदि कर्क मकर मेष तुला इन राशियोंपर समस्त ग्रह स्थित होवें तौ चतुःसागरयोग होता है यह समस्त अरिष्टोंको दूर करता है ॥ ८ ॥

चतुःसिंधौ नरो जातो बहुरत्नसमन्वितः ॥
गजवाजिधनैः पूर्णो धरणीशो भवेन्नरः ॥ ९ ॥

चतुःसागरयोगमें उत्पन्न हुआ प्राणी बहुतसे रत्नोंसे युक्त और हाथी घोडा धनोंसे परिपूर्ण तथा पृथ्वीपति होता है ॥ ९ ॥

चतुर्थेष्वपि च केन्द्रेषु क्रूराः सौम्या यदा ग्रहाः ॥
क्रूरैः पृथ्वीपतिर्विद्यात्सौम्यैर्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥ १० ॥

यदि चारों केन्द्रभावोंमें पाप ग्रह होवें वा शुभ ग्रह होवें, यदि पाप ग्रह होवें तौ पृथ्वीपति होता है और शुभ ग्रह होवें तौ लक्ष्मीपति होता है ॥ १० ॥

अमरयोगः ।

मृगपति अजलग्ने भानुकेन्द्रे त्रिकोणे व्ययनिधनसुसंस्थे
चन्द्रकर्के वृषे वा ॥ उभयभवनदृष्ट्या जीवशुक्रस्यवा
स्याद्भवति अमरयोगे सर्वरिष्टस्य नाशः ॥ ११ ॥

सिंह वा मेषराशिपर स्थित होकर सूर्य केन्द्रभाव वा त्रिकोणभावमें स्थित होवे और चन्द्रमा कर्क वा वृषराशिपर स्थित होकर द्वादश भाव वा अष्टम भावमें स्थित होवे और दोनोंपर क्रमसे बृहस्पति शुक्र इनकी दृष्टि होवे तौ अमरयोग होता है। अमरयोगमें सब कष्टका नाश होता है ॥ ११ ॥

चापयोगः ।

शुक्रे घटे कुजे मेषे खस्थो देवपुरोहितः ॥
तदा राजा भवेन्नूनं चापः सिध्यति दिङ्मुखः ॥ १२ ॥

यदि शुक्र कुम्भराशिपर और मंगल मेषराशिपर और बृहस्पति अपनी राशिपर स्थित होवे तौ चापयोग होता है। चापयोगमें राजा होता है ॥ १२ ॥

दण्डयोगः ।

कर्कटे मिथुने मीने कन्यायां चापगे ग्रहे ॥
दंडयोगः समाख्यातो राज्ञामास्पदकारकः ॥ १३ ॥

कर्क मिथुन मीन कन्या धन इन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ दण्डयोग होता है। दण्डयोग राजाओंके पदको करता है ॥ १३ ॥

दंडे च जातः पृथुपुण्यभागी एकातपत्री भवति क्षितीशः ।
तेजोमयः सिंहपराक्रमश्च संसेव्यमानोऽगुरुपात्रवृन्दैः ॥१४॥

दण्डयोगमें जन्मा हुआ प्राणी बडे पुण्यवाला तथा एक छत्रवाला तथा पृथ्वीपति और तेजोमय तथा सिंहके समान पराक्रमवाला और अगरुपात्रोंके समूहसे सेवित होता है ॥ १४ ॥

अपरप्रकारेण हंसयोगः ।

मेषे घटे चापतुलामृगालौ मध्यग्रहे हंस इति प्रसिद्धः ॥
सर्वैश्च पूर्णो नृपतेश्च पूज्यो हंसोद्भवो राजसमो मनुष्यः ॥१५॥

मेष कुंभ धनु तुला मकर वृश्चिक इन राशियोंपर समस्त ग्रह स्थित होवें तौ हंसनाम योग विख्यात है। हंसयोगमें उत्पन्न हुआ पुरुष सब पदार्थोंसे परिपूर्ण और राजाका पूज्य और राजसमान होता है ॥ १५ ॥

जातकाभरणे वापीयोगः ।

त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ॥
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ १६ ॥

केन्द्रभावको त्यागकर शेष स्थानोंमें समस्त ग्रह स्थित होवें तौ पूर्वाचार्योंने वापीयोग कहा है ॥ १६ ॥

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो मनीषी ॥
चंचद्वाक्यःसन्मनाः पुष्पवापी वापीयोगे यः प्रसूतःप्रतापी ॥१७॥

जो पुरुष वापीयोगमें जन्म लेता है वह दीर्घआयुवाला तथा अपने वंशमें मुख्य तथा सुखी और अत्यन्त धीर तथा पंडित कोमलवचनवक्ता और श्रेष्ठ मनवाला तथा फूलोंका बोनेवाला और प्रतापी होता है ॥ १७ ॥

यूपादियोगाः।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेंद्रैः ॥
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दंडः प्रदिष्टः खलुजातकज्ञैः ॥ १८ ॥

यदि लग्नसे चार गृहपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ यूपयोग होता है और चतुर्थभावसे चार स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ शरयोग होता है और सप्तमभावसे चार स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ शक्तियोग होता है और दशमभावसे लेकर चार स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ दण्डयोग होता है। यह योग जातकवेत्ताओंने कहे हैं ॥ १८ ॥

यूपयोगफलम्।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ॥
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नित्यम् १९

जिसके जन्मसमय यूपयोग होवे तौ वह पुरुष धीर और उदार और यज्ञकर्मकर्त्ता और अनेक विद्याओंके श्रेष्ठ विचारवाला होता है और उसका योग सदैव लक्ष्मीसे होता है ॥ १९ ॥

शरयोगफलम्।

हिंस्रोऽत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानंदः काननांते शरज्ञः ॥
मर्त्यो योगे यःशरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् २०

जिसका जन्म शरयोगमें होवे तौ वह मनुष्य अतीव हिंसा करनेवाला और कारीगरीके दुःखोंसे तपायमान और वनके बीचमें प्राप्त किये आनन्दवाला और बाणोंके जाननेवाला होता है और जन्मसे लेकर किसी समय सुख नहीं होता है ॥२०॥

शक्तियोगफलम्।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो दुर्बलश्च ॥
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे २१

शक्तियोगमें जन्मा हुआ पुरुष नीच जन तथा उच्च जनोंसे प्रीति करनेवाला तथा आलसी और सुख और अर्थ दोनोंसे हीन और निर्बल होता है और उस पुरुषकी बुद्धि वाद करनेमें तथा युद्ध करनेमें विशाल होवे है और उस पुरुषको गृहसुखकी अल्पता होवे है ॥ २१ ॥

दंडयोगफलम्।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसौख्यो प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ॥
कांतापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दंडयोगाप्तजन्मा ॥ २२ ॥

दंडयोगमें प्राप्त हुए जन्मवाला मनुष्य दीन हीन उन्मत्त ऐसे जनोंसे प्राप्त हुए सुखवाला तथा सेवकोंसे वैरकर्त्ता और कुटुम्बियोंसे उत्पन्न हुए वैरवाला तथा स्त्री पुत्र धन मित्र इनसे हीन और बुद्धिसे हीन होता है ॥ २२ ॥

नौकादियोगाः ।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथकूटसंज्ञः ॥
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इहार्द्धचन्द्रः ॥ २३ ॥

लग्नसे लेकर सात स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ नौकायोग होता है और चतुर्थ भावसे सात स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ कूटयोग होता है और सप्तम भावसे सात स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ छत्रयोग होता है और दशम भावसे लेकर सात स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ धनुयोंग होता है । इनसे अन्य स्थानसे सात स्थानपर्यन्त समस्त ग्रह होवें तौ अर्द्धचंद्रयोग होता है । अर्द्धचंद्रयोग आठ प्रकारका होता है, एक तौ द्वितीय भावसे लेकर अष्टमभावपर्यन्त होता है, दूसरा तृतीय स्थानसे लेकर नवमभावपर्यन्त होता है, तीसरा पंचमसे लेकर एकादश भाव- पर्यन्त होता है, चौथा षष्ठ भावसे लेकर द्वादशभावपर्यन्त होता है, पांचवां अष्टमसे लेकर द्वितीयभावपर्यन्त होता है, छठा नवमसे लेकर तृतीयभावपर्यन्त होता है, सातवां एकादशभावसे लेकर पंचमभावपर्यन्त होता है, आठवां द्वादशभावसे लेकर षष्ठभावपर्यन्त होता है इस प्रकार अर्द्धचंद्रयोग आठ प्रकारका है ॥ २३ ॥

नौयोगफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनः स्यान्नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः॥
क्लेशी शश्वच्चंचलस्वांतवृत्तिवृत्तिः स्तेयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ २४ ॥

नौकायोगमें प्राप्त हुए जन्मवाला मनुष्य संसारमें विख्यात और लोभी तथा भोगसौख्यसे हीन तथा क्लेशयुक्त तथा चंचल चित्तवृत्तिवाला होता है और उस पुरुषकी जीविका चोरीसे उत्पन्न हुए धान्यसे होवे है ॥ २४ ॥

कूटयोगफलम् ।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लभिल्लप्रीतिर्निर्धनो निंद्यकर्मा ॥
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटकूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥ २५ ॥

कूटयोगमें प्राप्त हुए जन्मवाला मनुष्य दुर्ग और वनमें निवास करनेवाला तथा मल्लजन और भीलजनोंसे प्रीति करनेवाला तथा धनहीन और निन्दित कार्यवाला तथा धर्म अधर्मके ज्ञानसे हीन और कपटी होता है ॥ २५ ॥

छत्रयोगफलम् ।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वे पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ॥
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिःस्याच्चेच्छत्रसच्चामरादेः॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें छत्रयोगकी उत्पत्ति होवे वह मनुष्य अतिबुद्धिमान् तथा राजाओंका कार्य करनेवाला तथा दयालु और पहिली और पिछली अवस्थामें समस्त सुखोंसे युक्त होवे है और उस पुरुषको छत्र और श्रेष्ठ चंवरकी प्राप्ति होवे है ॥ २६ ॥

कार्मुकयोगफलम् ।

आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ॥
योगे जातः कार्मुके सोतिगर्वो गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः॥२७॥

कार्मुकयोगमें उत्पन्न हुआ प्राणी जीवनके पहिले भाग और पिछले भागमें सुखयुक्त और वनपर्वतचारी तथा अतिगर्विष्ठ और गर्वीले जनोंकी विपत्ति करनेवाला तथा धनुषशस्त्रके बांधनेवाला होता है ॥ २७ ॥

अर्धचंद्रयोगफलम् ।

भूमीपालप्राप्तशश्वत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थांबराद्यैः ॥
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोर्द्धचंद्रश्चंद्रः साक्षादुत्सवार्थं जनानाम् ॥२८॥

जिसके जन्मसमयमें अर्द्धचंद्रयोग होवे तौ वह पुरुष राजासे प्राप्त की हुई निरन्तर प्रतिष्ठासे युक्त और श्रेष्ठ और सेना भूषण धन वस्त्र इत्यादिसे युक्त होता है और वह पुरुष जनोंके उत्सवके वास्ते साक्षात् चंद्रमा होता है ॥ २८ ॥

चक्रादियोगाः ।

तनोर्धनाच्चैकगृहांतरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेंद्राः ॥
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगावितीहाकृतिजाश्च विंशत्॥२९॥

लग्नसे एक २ स्थानको मध्यमें करके क्रमसे छः स्थानोंमें सब ग्रह होवें अर्थात् लग्न तृतीय पंचम सप्तम नवम एकादश इन भावोंमें समस्त ग्रह होवें तौ चक्रयोग होता है और द्वितीयभावसे एक २ स्थानको मध्य करके छः स्थानोंमें सब ग्रह क्रमसे स्थित होवें अर्थात् २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ इन भावोंमें सब ग्रह होवें तौ समुद्रयोग होता है इसी प्रकार आकृतिजयोग बीस होते हैं ॥ २९ ॥

चक्रयोगफलम् ।

श्रीमद्भूपोत्यंतजातप्रतापो भूयो भूपोपायनैरार्चितः स्यात् ॥
योगे जातःपूरुषो यस्तु चक्रेचक्रे पृथ्व्याःशालिनी तस्य कीर्तिः३०

चक्रयोगमें जन्मा हुआ पुरुष श्रीमान् रूपसे युक्त और अत्यन्त प्राप्त हुए प्रताप-वाला तथा राजाओंकी भेंटोंसे सत्कृत होता है और उस पुरुषकी कीर्ति पृथ्वीके चक्रमें विशाल होती है ॥ ३० ॥

समुद्रयोगफलम् ।

दाता धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम्॥
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण॥३१॥

समुद्रयोगमें जन्मा हुआ प्राणी दानकर्त्ता तथा धीर तथा मनोहर शीलसे युक्त तथा दयायुक्त तथा राजासे प्राप्त हुए सुखवाला तथा धन्यवादके योग्य होता है और उस पुरुषकरके वंश धन्य होता है ॥ ३१ ॥

गोलादियोगाः ।

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवे-
द्गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ॥
केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पंचस्थितैः ।
षट्स्थैर्दामनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥ ३२ ॥

जो कि योग पहिले महर्षियोंने बहुतसे कहे हैं तिनके अभावमें यह अगाडी कहे जानेवाले योग होते हैं । यदि समस्त ग्रह एक राशिपर होवें तौ गोलयोग होता है, दो राशियोंमें होवें तौ युगयोग होता है, तीन राशियोंमें होवें तौ शूलयोग होता है, चार राशियोंमें होवें तौ केदारयोग होता है, पांच राशियोंमें होवें तौ पाशयोग होता है, छः राशियोंमें होवें तौ दामनिकायोग होता है, सात राशियोंमें होवें तौ वीणायोग होता है ॥ ३२ ॥

गोलयोगफलम् ।

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ॥
एषां योगः संभवेद्गोलनामा नानासत्त्वप्रीतयोऽनीतयस्ते ॥ ३३ ॥

जिनके गोलनाम योग होवे तौ वह पुरुष विद्या सत्त्व उदारता सामर्थ्य इनसे हीन होते हैं, अनेक परिश्रमोंसे परदेशवासी रहते हैं और अनेक प्राणियोंकी प्रीति करनेवाला तथा अन्यायसे युक्त होता है ॥ ३३ ॥

युगयोगफलम् ।

पाखंडेनाखंडितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रमुक्ताः ॥
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥ ३४ ॥

युगयोगमें जन्मे हुए प्राणी पाखण्डमें अखंडित प्रीतिवाले तथा निर्लज्ज

और धर्मकर्मसे हीन और पुत्र और धनसे सब प्रकार हीन तथा योग्य अयोग्यके ज्ञानसे शून्य होते हैं ॥ ३४ ॥

शूलयोगफलम्।

युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्द्धनाश्च ॥
योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवंति ३५॥

जिनके जन्मसमय शूलयोग होवे तौ वह पुरुष युद्धमें तथा झगडनेमें युक्त और अतिशूर और क्रूरस्वभाव तथा चित्तमें निष्ठुर और निर्धन तथा मनुष्योंको अति-शूलरूप होते हैं ॥ ३५ ॥

केदारयोगफलम्।

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ॥
योगे केदारे नरास्तेऽपि धीरा धीराचारश्चापि तेषां विशेषात् ३६॥

केदारयोगमें पुरुष सत्यभाषी तथा धनवान् और विनययुक्त तथा खेतीमें प्रीति रखनेवाले तथा उपकारकर्त्ता तथा धीर होते हैं और तिन पुरुषोंका धीर जनोंके समान आचरण होता है ॥ ३६ ॥

पाशयोगफलम्।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बंधेनार्त्ता भूरिजल्पाः सदंभाः ॥
नानानर्था पाशयोगप्रजाता जातारण्यप्रीतयःस्युर्मनुष्याः॥३७॥

पाशयोगमें उत्पन्न हुए प्राणी दीनोंके समान रहनेवाले तथा पराये अपकार करनेमें तत्पर तथा बन्धनसे दुःखी और बहुत बोलनेवाले तथा कपटयुक्त तथा अनेक अनर्थोंके करनेवाले और वनमें प्रीति रखनेवाले होते हैं ॥ ३७ ॥

दामिनीयोगफलम्।

जातानंदो नंदनाद्यैः सुधीरो विद्वान् भूषाकोषसंजाततोषः ॥
चंचच्छीलोदारबुद्धिः प्रशस्तःशस्तःसूतौ दामिनी यस्य योगः३८॥

जिसके जन्मसमयमें दामिनीयोग होवे वह पुरुष पुत्रादिकोंसे प्राप्त हुए आनन्द-वाला तथा सुन्दर धीर तथा विद्वान् तथा आभूषण खजानेसे प्राप्त हुए आनन्दवाला तथा विराजमान शीलसे युक्त, उदारबुद्धिवाला और सबमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३८ ॥

वीणायोगफलम्।

अर्थोपेताःशास्त्रपारंगताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ॥
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ३९

जिन मनुष्योंका वीणायोगमें जन्म होवे तौ वह धनवान् और शास्त्रोंके पारगामी

तथा गानविद्यामें निपुण और वहुतसे जनोंका पोषणकर्त्ता तथा अनेक सुखोंसे युक्त और अतीव चतुर होते हैं[1] ॥ ३९ ॥

१ लघुजातकेऽन्ये नाभसयोगाः–चरभवनादिषु सर्वैराश्रयजा रज्जुमुसलनलयोगाः ॥
ईर्ष्युर्मानी धनवान् क्रमेण कुलविश्रुताः सर्वे ॥ १ ॥

यदि समस्त ग्रह चरसंज्ञक राशियोंपर होवें तौ रज्जुयोग होता है और स्थिरसंज्ञक राशियोंपर होवें तौ मुसलयोग होता है, द्विस्वभाव राशियोंपर होवें तौ नलयोग होता है। रज्जुयोगमें दूसरोंसे ईर्षा करनेवाला होता है, मुसलयोगमें गर्वयुक्त होता है और नलयोगमें धनवान् होता है, परन्तु आश्रययोगमें उत्पन्न हुए प्राणी सब ही कुलविख्यात होते हैं ॥ १ ॥

केन्द्रत्रयगैः पापैः शुभैर्दलाख्या वाहिश्च माला च ॥
सर्पऽतिदुःखितानां मालायां जन्मसुखिनां च ॥ २ ॥

यदि तीन केन्द्रोंमें तीन पाप ग्रह सूर्य मंगल शनैश्चर होवें और शुभ एक भी केन्द्रोंमें नहीं होवे तौ सर्पनाम दलयोग होता है और यदि तीन केन्द्रोंमें तीन शुभ ग्रह बुध बृहस्पति शुक्र होवें और पाप ग्रह एक भी केन्द्रमें न होवे तौ मालानाम योग होता है। सर्पयोगमें दुःखियोंका जन्म होता है और मालायोगमें सुखियोंका जन्म होता है ॥ २ ॥

द्विरनन्तरकेन्द्रस्थैर्गदा विलग्नास्तसंस्थितैः शकटम् ॥
खचतुर्थयोर्विहंगः शृंगाटकमुदयसुतनवगैः ॥ ३ ॥

दो अनन्तर केन्द्रोंमें सब ग्रह स्थित होवें तौ गदानाम योग होता है। यह गदा योग चार प्रकारका होता है–एक तौ लग्न और चतुर्थ भावमें सब ग्रह होवें, दूसरा चतुर्थ सप्तम भावमें सब ग्रह होवें, तीसरा सप्तम दशममें सब ग्रह होवें, चौथा दशम लग्नमें सब ग्रह होवें इस प्रकार गदायोग चार प्रकारका है। और लग्न और सप्तम भावमें सब ग्रह होवें तौ शकटयोग होता है और चतुर्थ दशम भावमें सब ग्रह होवें तौ विहंगयोग होता है। यदि लग्न पंचम नवम भावोंमें सब ग्रह होवें तौ शृंगाटक योग होता है ॥ ३ ॥

शृंगाटकतोऽन्यगतैर्हलमेतेषां क्रमात्फलोपनयः ॥
यज्वा शकटाजीवी दूतश्चिरसौख्यभाक् कृषिकृत् ॥ ४ ॥

शृंगाटकयोगसे अन्य स्थानोंपर परस्पर त्रिकोणगत ग्रह होवें अर्थात् २।६।१० भावोंमें वा ३।७।११ इन भावोंमें वा ४।८।१२ इन भावोंमें सब ग्रह होवें तौ हलयोग होता है। गदायोगमें यज्ञकर्त्ता होता है, शकट योगमें गाडीसे जीविका करता है, विहंगयोगमें दूत होता है, शृंगाटकयोगमें वहुत कालतक सुखी होता है, हलयोगमें खेती करता है ॥ ४ ॥

क्रूरः सुखकर्मस्थैः सौम्यैरुदयास्तसंस्थितैर्वज्रम् ॥
यव इति तद्विपरीतैर्मिश्रैः कमलं च्युतैर्वापी ॥
आद्यान्तयोः सुखयुतः सुखभाङ्मध्ये धनान्वितोऽल्पसुखः ॥ ५ ॥

यदि चतुर्थ दशम इन भावोंमें समस्त पाप ग्रह होवें और लग्न सप्तम इन भावोंमें समस्त शुभ ग्रह होवें तौ वज्रयोग होता है, इससे विपरीत ग्रह होवें अर्थात् चतुर्थ दशम इन भावोंमें सब शुभ ग्रह और लग्न सप्तम इनमें सब पाप ग्रह होवें तौ यवयोग होता है। यदि समस्त ग्रह चारों केन्द्रोंमें होवें तौ कमलयोग होता है। यदि समस्त ग्रह केन्द्रोंसे च्युत होकर चार स्थानमें स्थित होवें तौ वापीयोग होता है। वापीयोग दो प्रकारका है–एक तौ २।५।८।११ इन भावोंमें सब ग्रह होवें तौ होता है, दूसरा ३।६।९।१२ इन भावोंमें सब ग्रह होवें तौ होता है। वज्रयोगमें जन्मा हुआ आदि अन्त अवस्थामें सुखी होता है और यवयोगमें जन्मा हुआ मध्य अवस्थामें सुखी होता है और कमलयोगमें जन्मा हुआ धनी होता है। वापीयोगमें जन्मा हुआ थोडे सुखवाला होता है ॥ ५ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्मकामम् ॥
तस्मादेतेऽत्यंतयत्नादपूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥ ४० ॥

इन कहे नाभसयोगोंकरके सब प्राणियोंका जन्म परिपूर्ण होता है तिससे यह अपूर्व योग जातकाचार्योंने जातकमें अतीव यत्नसे कहे हैं ॥ ४० ॥

स्वांशाधिमित्रांशगतःशशी दिवा रात्रौ सुराचार्यकवीक्षितो यदि ॥
दत्ते महाभोगधनानि सर्वदा छत्रध्वजाद्यःसहितं यशःसुखम् ४१॥

यदि दिनमें जन्म होवे और चन्द्रमा अपने नवांश वा अधिमित्रांशमें स्थित होवे और बृहस्पतिकर देखा गया होवे और अथवा रात्रिमें जन्म होवे और चंद्रमा अपने नवांश वा अधिमित्रांशमें स्थित होवे और शुक्रकर देखा गया होवे तौ महाभोग धन और छत्रध्वजादिसहित यश और सुखको देता है ॥ ४१ ॥

दरिद्रयोगः ।

वामे वामे ग्रहाः सर्वे सूर्यादीनां मुनिस्तथा ॥
दरिद्रयोगं जानीयान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ४२ ॥

सूर्यादि ग्रहोंके वाम २ भागमें क्रमसे सब ग्रह होवें तौ महर्षि दरिद्रयोगको जानते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ४२ ॥

कारकग्रहाः ।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केंद्रगता मिथः स्युः ॥
ते कारकाख्याः कथिता मुनींद्रैर्विज्ञेयप्राज्ञा भवने विशेषात् ॥४३॥

जो कि ग्रह अपने मूलत्रिकोणराशि वा अपने राशि वा अपने उच्च राशिमें स्थित होकर केन्द्रभावमें स्थित होवें वह मुनिवरोंने कारकसंज्ञक कहे हैं और दशम भावमें स्थित होवें तौ विशेषकर ही कारकसंज्ञक होते हैं ॥ ४३ ॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमंदिरस्थो निजतुंगयातः ॥
सूर्यार्कजारामरराज्यपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञिकाः स्युः ॥४४॥

यदि चंद्रमा अपने राशि वा उच्च राशिमें स्थित होकर मूर्त्तिमें विराजमान होवे तौ परस्पर सूर्य शनैश्चर मंगल बृहस्पति कारकसंज्ञक होते हैं ॥ ४४ ॥

शुभग्रहे लग्नगतेऽम्बरांबुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात् ॥
तुंगत्रिकोणस्वगृहांशयातास्तेऽपीह माने तपने विशेषात् ॥४५॥

यदि शुभ ग्रह लग्नमें स्थित होवे तौ दशम और चतुर्थ भावमें स्थित हुआ ग्रह कारकसंज्ञक होता है । वह कारकसंज्ञक ग्रह अपने उच्च राशि वा मूलत्रिकोणराशि

वा अपने राशिमें होवें तौ फलदायक होते हैं । यदि सूर्य दशम भावमें स्थित होवे तौ जो कि ग्रह अपने उच्च राशि वा मूलत्रिकोणराशि वा अपने राशिमें स्थित होवें वह भी कारकसंज्ञक होते हैं ॥ ४५ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मंत्री भवेत्कारकखेचरेन्द्रैः ॥
राजान्वये यस्य यदि प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥४६॥

यद्यपि नीच वंशमें भी प्राप्त हुए जन्मवाला होवे तौ भी कारक ग्रहोंपर मंत्री होता है और राजवंशमें जिसका जन्म होवे वह राजपदको कैसे नहीं प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये ॥
केंद्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीःकुरुते विलासम् ४७

जिसके वेशिसंज्ञक स्थानमें शुभ ग्रह होवे और लग्न और जन्मराशि अपने नवांशमें स्थित होवे और समस्त केन्द्र शुभ ग्रहोंसे युक्त होवें तौ उसके मंदिरमें लक्ष्मी विलास करती है ॥ ४७ ॥

केंद्रस्थिता गुरुविलग्नकजन्मनाथा मध्ये वयस्यतितरां वितरंति भाग्यम् ॥ शीर्षोदयाभ्युदयभेषु गता भवेयुरारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ ४८ ॥

यदि बृहस्पति और लग्नपति और जन्मराशिपति केन्द्रमें स्थित होवें तौ मध्य अवस्थामें अतीव भाग्यका विस्तार करते हैं । यदि बृहस्पति और लग्नपति और जन्मराशिपति यह तीनों शीर्षोदयराशियोंमें स्थित होवें तौ आदि मध्य अन्त इन तीनों अवस्थाओंमें फलदायक होते हैं ॥ ४८ ॥

शकटयोगः ।

संस्था विलग्नेऽप्यथ सप्तमे च पतंगमुख्यास्तु ग्रहा नितांतम् ॥
वदंति योगं शकटाख्यसंज्ञं जातो नरः स्याच्छकटोपजीवी ॥४९॥

यदि सूर्यादि समस्त ग्रह लग्न और सप्तम भावमें स्थित होवें तौ शकटयोग होता है ऐसा पंडित कहते हैं । शकटयोगमें जन्मा हुआ गाडीसे जीविका करनेवाला होता है ॥ ४९ ॥

---

१ मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपावला ज्ञेयाः ॥
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसान्ये ह्युभयतो मीनः ॥ १ ॥

मेष वृष कर्क धनु मकर यह पृष्ठोदय हैं, मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ शीर्षोदय हैं, मीन शीर्षोदय तथा पृष्ठोदय भी है ।

नंदायोगः।

युग्मे युग्मे भवेत्त्रीणि एकैकं च त्रिषु स्थितम् ॥
नंदायोगः स विज्ञेयश्चिरायुश्च सुखप्रदः ॥ ५० ॥

दो २ राशियोंमें तीन २ ग्रह होवें और एक २ तीन स्थानोंमें होवे तौ नंदायोग होता है। नन्दायोग बडे आयु और सुखका देनेवाला होता है ॥ ५० ॥

दातारयोगः।

लग्ने च जीवो युगभे भृगुश्चेद्यूने च सौम्यो दशमे महीजः ॥
केन्द्रेत्वमी चारुफलप्रदाःस्युः सर्वार्थदातार इति प्रसिद्धः॥ ५१ ॥

यदि लग्नमें बृहस्पति और चतुर्थ भावमें शुक्र और सप्तम भावमें बुध और दशम भावमें मंगल होवे इस प्रकार यह ग्रह केन्द्रभावमें स्थित होवें तौ उत्तमफलदायक होते हैं और यह योग सर्वार्थदातार नामसे प्रसिद्ध है ॥ ५१ ॥

राजहंसयोगः।

घटे मेषे नरे चापे तुलायां सिंहगे ग्रहे ॥
राजहंसो भवेद्योगो राज्यास्पदसुखप्रदः ॥ ५२ ॥

यदि कुंभ मेष मिथुन धनु तुला सिंह इन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ राजहंसयोग होता है। यह योग राज्य तथा स्थान और सुख इनको देता है॥५२॥

चिह्लिपुच्छयोगः

सिंहासने च हंसे च दंडे च डमरौ ध्वजे ॥
चतुःसागरयोगे च चिह्लिपुच्छो महाफलम् ॥ ५३ ॥

सिंहासन हंस दंड डमरु ध्वज चतुःसागर इन योगोंमें यदि चिह्लिपुच्छ होवे तौ महाफल होता है ॥ ५३ ॥

तुलामकरमेषाढ्ये लग्ने वा ह्यथवा क्वचित् ॥
सिंहासने च डमरौ चिह्लिपुच्छः स शस्यते ॥ ५४ ॥

सिंहासनयोगमें और डमरुयोगमें यदि लग्नमें तुला मकर मेष यह राशि होवें तौ चिह्लिपुच्छ होता है ॥ ५४ ॥

मृगे कर्के च पुच्छः स्याद्राजहंसो सुखप्रदः ॥
कुंभे च मन्मथे चैव चिह्लिपुच्छोऽभिधीयते ॥ ५५ ॥

राजहंसयोगमें मकर कर्क होवे तौ चिह्लिपुच्छ होता है और कुम्भ और मिथुन लग्न होवे तौ भी चिह्लिपुच्छ होता है ॥ ५५ ॥

मृगे कर्के ध्वजे पुच्छः कन्यालौ वृषभे झषे ॥
चिह्लिपुच्छो भवेद्योगश्चतुःसागरगोचरे ॥ ५६ ॥

ध्वजयोगमें मकर और कर्क लग्न होवे तौ चिह्लिपुच्छ होता है। चतुःसागरयोगमें कन्या वृश्चिक वृष मीन यह राशि लग्नमें होवें तौ चिह्लिपुच्छयोग होता है ॥ ५६ ॥

योगोदितफलं पुच्छः करोति द्विगुणं फलम् ॥
तेन योगाधियोगोऽयं लग्नेऽपि कस्यचिन्मतम् ॥ ५७ ॥

योगके कहे हुए फलको चिह्लिपुच्छ द्विगुण फलवाला करता है । जिस योगमें चिह्लिपुच्छ होवे उसकरके वह योग योगाधियोग होता है। किसी २ आचार्यका यह मत है ॥ ५७ ॥

चिह्लिपुच्छे नृपसचिवो गोमहिषीहयगजैर्युक्तः ॥
नीतिज्ञो बहुपुत्रो लग्नेऽपि च संमतं केषु ॥ ५८ ॥

यदि सिंहासनादि योग चिह्लिपुच्छसे युक्त होवे तौ पुरुष राजाका मंत्री और गौ भैंस घोडा हाथियोंसे युक्त तथा नीतिवेत्ता और बहुत पुत्रोंवाला होता है। किसी किसी आचार्योंका लग्नमें यह संमत है ॥ ५८ ॥

लालाटिकयोगः ।

चन्द्राष्टमे वक्रसंज्ञार्कार्किशुक्रा गृहे विधोः ॥
केमद्रुमे च सम्पूर्णे योगो लालाटिको मतः ॥ ५९ ॥

चन्द्रमासे अष्टम भावमें चंद्रमाकी राशिमें मंगल सूर्य शनैश्चर शुक्र यह ग्रह स्थित होवें और केमद्रुमयोग संपूर्ण होवे तौ लालाटिकयोग होता है ॥ ५९ ॥

लालाटिकयोगफलम् ।

आजन्मतो भवति कारुकृतौ प्रसिद्धः शिल्पादिकर्मकुशलोऽकुशलाकृतिश्च॥सूयात्मजोऽपि लभते विविधार्थलब्धिं
जन्मांतरेऽपि न जहाति ललाटयोगे ॥ ६० ॥

ललाटयोगमें जन्मा हुआ प्राणी जन्मसे लेकर चित्रकारीमें प्रसिद्ध और शिल्पादिकर्ममें चतुर और अकुशल आकारवाला होता है और वह प्राणी जन्मान्तरमें भी विविध धनकी प्राप्तिको नहीं त्यागता है ॥ ६० ॥

महापातकयोगः।

राहुणा सहितश्चंद्रः सपापो गुरुवीक्षितः॥
महापातकयोगोऽयं यदि शुक्रसमो भवेत्॥ ६१॥

यदि पाप ग्रहससहित चंद्रमा राहुसे युक्त होवे और बृहस्पतिसे देखा गया होवे तौ महापातकयोग होता है यद्यपि शुक्रके समानभी होवे॥ ६१॥

बलीवर्दहतयोगः।

भौमेन दृश्यते लग्नं लग्नं पश्यति भास्करः॥
गुरुशुक्रौ न पश्येते बलीवर्देन हन्यते॥ ६२॥

यादि लग्न मंगलसे देखा गया होवे और सूर्य लग्नको देखता होवे और बृहस्पति शुक्र यह दोनों लग्नको नहीं देखते होवें तौ बैलसे हता जाता है॥ ६२॥

हठहतयोगः।

आयस्थानगते चन्द्रे चन्द्रस्थानगते रवौ॥
हठेन नाशो विज्ञेयः पंचरात्रौ विशेषतः॥ ६३॥

यादि एकादशभावमें चंद्रमा होवे और सूर्य चंद्रमाके स्थानमें होवे तौ पांच रात्रिमें हठसे नाश होता है॥ ६३॥

वृक्षहतयोगः।

मंदेनयोर्यदा योगो लग्ने च राहुदर्शने॥
वृक्षस्थं मरणं तस्य यदि शुक्रसमो भवेत्॥ ६४॥

यादि लग्नमें शनैश्चर सूर्य दोनोंका योग होवे और राहुकी दृष्टि होवे तौ उस पुरुषका वृक्षपर मरण होता है, यद्यपि शुक्रके समान भी होवे॥ ६४॥

नासाच्छेदयोगः।

षष्ठस्थानगते शुक्रे तनुस्थानगते कुजे॥
नासाच्छेदकरं योगं वदन्ति मुनिसत्तमाः॥ ६५॥

यादि शुक्र षष्ठभावमें होवे और मंगल लग्नभावमें होवे तौ नासाच्छेद करनेवाले योगको मुनिश्रेष्ठ कहते हैं॥ ६५॥

कर्णच्छेदयोगः।

मंदेन दृश्यते चंद्रो लग्ने च रविभार्गवौ॥
शुभग्रहा न पश्यंति कर्णच्छेदो न संशयः॥ ६६॥

चंद्रमा यदि शनैश्वरकर देखा गया होवे और लग्नमें सूर्य शुक्र यह दोनों ग्रह होवें और शुभ ग्रह नहीं देखते होवें तौ कर्णच्छेद होता है इसमें संशय नहीं ॥६६॥

पादखंजयोगः ।

कविना सहितो मंदो गुरुणा सहितः कविः ॥
शुभग्रहा न पश्यंति पादखंजो भवेन्नरः ॥ ६७ ॥

यदि शनैश्वर शुक्रसे युक्त होवे और शुक्र बृहस्पतिसे युक्त होवे और शुभ ग्रह नहीं देखते होवें तौ नर पांवकर लंगडा होता है ॥ ६७ ॥

सर्पहतयोगः ।

लग्नाच्च सप्तमस्थाने शन्यर्के राहुसंस्थिते ॥
सर्पेण पीडिकास्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपि च ॥ ६८ ॥

लग्नसे सप्तम भावमें शनैश्वर सूर्य यदि राहुसे युक्त होवे तौ शय्यापर शयन करनेवाले उस पुरुषको सर्पसे पीडा होवे है ॥ ६८ ॥

व्याघ्रहतयोगः ।

गुरुस्थाने गते सौम्ये शनिस्थानगते कुजे ॥
पंचविंशे च वर्षे च वने व्याघ्रेण हन्यते ॥ ६९ ॥

बृहस्पतिके स्थानमें बुध होवे और शनैश्वरके स्थानमें मंगल होवे तौ पच्चीस वर्षमें वह पुरुष वनमें सिंहसे हत होता है ॥ ६९ ॥

असिघातयोगः ।

शुक्रस्थाने गते चंद्रे शुक्रस्थाने गते शनौ ॥
अष्टाविंशतिवर्षे च असिघातेन मृत्युभाक् ॥ ७० ॥

चंद्रमा यदि शुक्रके स्थानमें होवे और शनैश्वर शुक्रके स्थानमें होवे तौ अट्ठाईसवें वर्षमें तलवारके प्रहारसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ७० ॥

शरक्षेपहतयोगः ।

धर्मस्थानगते भौमे शन्यर्कराहुसंयुते ॥
शुभग्रहा न पश्यंति शरक्षेपेण हन्यते ॥ ७१ ॥

मंगल यदि नवम भावमें स्थित होवे और शनैश्वर सूर्य राहुसे युक्त होवे और शुभ ग्रह नहीं देखते होवें तौ बाणके फेंकनेसे हत होता है ॥ ७१ ॥

ब्रह्मघातयोगः।

रविणा सहितो भौमः शनिर्वा जीवसंगतः॥
अष्टाविंशतिवर्षे च ब्रह्मघाती न संशयः॥ ७२॥

सूर्यसे युक्त मंगल और बृहस्पतियुक्त शनैश्चर होवे तौ अट्ठाईसवें वर्षमें निःसंशय ब्रह्मघाती होता है॥ ७२॥

दोलायोगः।

मीने मेषे च चापे च स्थिते स्थानत्रये ग्रहे॥
दोलासंज्ञकयोगः स्याद्राज्यदोऽयमुदाहृतः॥ ७३॥

मीन मेष धनु इन तीन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ दोलासंज्ञक योग होता है। यह योग राज्यदायक कहा है॥ ७३॥

सन्मानदानगुणपात्रपरीक्षिता वा कलानिधिः कौशलगीतनृत्यः॥
मंत्रीश्वरो राजसभाविवेकी केंद्रस्थिते पापविवर्जिते गुरौ॥ ७४॥

यदि पापग्रहसे हीन होकर बृहस्पति केन्द्रमें स्थित होवे तौ पुरुष सन्मान दान गुण इनका पात्र और सत् असत्की परीक्षा करनेवाला तथा कलाओंका निधि तथा चतुराई और गाने बजानेसे युक्त और मंत्रीश्वर तथा राजसभामें पंडित होता है॥ ७४॥

पदकविच्छेदयोगः।

लग्नस्थानगते भौमः शन्यर्कराहुवीक्षितः॥
योगः पदकविच्छेदो यदि शुक्रसमो भवेत्॥ ७५॥

यदि लग्नस्थानमें मंगल स्थित होवे और शनैश्चर सूर्य राहु इनसे दृष्ट होवे तौ पदकविच्छेद योग होता है, यद्यपि शुक्रसे समानभी होवे॥ ७५॥

इच्छतो मृत्युयोगः।

केंद्रस्थानगते भौमे सैंहिकेये च सप्तमे॥
तदा नित्यं विजानीयादिच्छेन्मृत्युस्तदा भवेत्॥ ७६॥

यदि मंगल केन्द्रस्थानमें होवे और राहु सप्तम भावमें होवे तौ जब जीव अन्तःकरणसे मरणकी इच्छा करे उसी समय मृत्यु होवे है॥ ७६॥

लग्नात्सप्तमशीतांशुः पापोऽष्टशुभलग्नगः॥
लग्नस्थितो यदा भानुः समाते म्रियते शिशुः॥ ७७॥

यदि लग्नसे सप्तम भावमें चन्द्रमा होवे और पाप ग्रह अष्टम और नवम और लग्नमें स्थित होवे और सूर्य लग्नमें स्थित होवे तौ वर्षके अन्तमें बालक मरणको प्राप्त होता है ॥ ७७ ॥

अग्रे राजयोगप्रकरणं लिख्यते ।

लग्ने लग्नपतिर्बलान्वितवपुः केंद्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपालं ध्रुवम् ॥
सच्छीलं विभवान्वितं गजभुजं मुक्तातपत्रान्वितं
जातं निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसंति गर्गादयः ॥ १ ॥

प्रश्नकालमें वा जन्मसमयमें वा विवाहलग्नमें वा यात्रालग्नमें वा राजातिलकम यदि लग्नपति बलवान् होकर लग्नभाव वा केन्द्रभाव वा त्रिकोणभाव वा एकादश भावमें स्थित होवे तौ उत्पन्न हुएको राजा तथा सुन्दरशीलयुक्त तथा विभवयुक्त तथा हाथियोंके सुखको भोगनेवाला तथा मोती और छत्रसे युक्त करता है। यदि ऐसा योग होवे तौ नीच कुलमें उत्पन्न हुए पुरुषको विभूतिमान् गर्गादिक कहते हैं ॥ १ ॥

एकः शुक्रो जननसमये लाभसंस्थे च केंद्रे ।
जातो वै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्यते वै त्रिकोणे ॥
विद्याविज्ञानयुक्तो भवति नरपतिर्विश्वविख्यातकीर्ति-
र्दानी मानी च शूरो हयगुणसहितः सद्गजैःसेव्यमानः ॥ २ ॥

जन्मके समय जन्मराशिपर स्थित होकर अकेलाही शुक्र यदि एकादशभाव वा कन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) इन भावोंमें वा त्रिकोण (९ । ५) इन भावोंमें वा तृतीय भावमें स्थित होवे तौ पुरुष विद्याविज्ञानयुक्त और राजा तथा संसारमें विख्यात कीर्तिवाला तथा दानकर्त्ता तथा मानी और शूरवीर तथा घोडा और गुणोंसे युक्त तथा श्रेष्ठ हाथियोंसे सेवित होता है ॥ २ ॥

दशमभवननाथः केंद्रकोणे धनस्थे बलिपति यदि याते राज-
सिंहासनेषु ॥ स भवति नरनाथो विश्वविख्यातकीर्तिर्मदग-
लितकपोलैः सद्गजैः सेव्यमानः ॥ ३ ॥

यदि बलवान् होकर दशमभावपति केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) भाव वा कोण (९ । ५) भाव वा द्वितीय भावमें स्थित होवे तौ वह पुरुष राजासिंहा-

सनपर राजा होता है और विश्वमें विख्यात हुई कीर्तिवाला तथा मदसे टपकते हुए कपोलोंवाले हाथियोंसे सेवित होता है ॥ ३ ॥

एकोऽपि केंद्रभवने नवपंचमे वा भास्वान्मयूखविमलीकृत-दिग्विभागः ॥ निःशेषदोषमपहृत्य शुभप्रसूतं दीर्घायुषं विगतरोगभयं करोति ॥ ४ ॥

किरणोंसे प्रकाशित किये हुए दिशाभागोंवाला सूर्य बलवान् होकर अकेलाही केन्द्रभाव वा नवम पञ्चम भावमें स्थित होवे तौ समस्त दोषोंको दूर करके उत्पन्न हुए प्राणीको बडे आयुवाला तथा रोगभयसे वर्जित करता है ॥ ४ ॥

चंद्रः पश्येद्यदादित्यं बुधः पश्येन्निशापतिम् ॥
अस्मिन्योगे तु यो जातः स भवेद्वसुधाधिपः ॥ ५ ॥

यदि चंद्रमा तौ सूर्यको देखता होवे और बुध चंद्रमाको देखता होवे इस योगमें उत्पन्न हुआ पृथ्वीपति होता है ॥ ५ ॥

यदि भवति च केंद्री यामिनीनाथ एव प्रददति प्रियभार्यां पुत्रिणीं वा सुरूपाम् ॥ धनकनकसमृद्धिं माणिकं हीररत्नं रचयति मृगनाभीचंदनैश्चर्चितांगम् ॥ ६ ॥

यदि बलवान् होकर चंद्रमा केन्द्रभावमें प्राप्त होवे तौ पुत्रवाली वा रूपवती प्रिय भार्याको देता है और धन सुवर्णकी समृद्धि तथा माणिक हीरा रत्न इनको देता है और कस्तूरी तथा चन्दनसे चर्चित शरीरको रचता है ॥ ६ ॥

शुक्रो यस्य बुधो यस्य यस्य केंद्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोऽगारको यस्य स जातः कुलदीपकः ॥ ७ ॥

जिसके केन्द्रभावमें शुक्र और बुध और बृहस्पति होवे और दशम भावमें मंगल होवे तौ वह पुरुष कुलदीपक होता है ॥ ७ ॥

हयरथनरनागै रत्नमुक्ताफलाढ्यैर्जलधितटनिवासी रत्नतुल्यं च धान्यम् ॥ बहुजनमनइष्टः सत्यवादी प्रसूतो भवति यदि च केंद्री दैत्यपूज्यो बुधश्च ॥ ८ ॥

यदि शुक्र और बुध दोनों केन्द्रभावमें होवें तौ उत्पन्न हुआ प्राणी रत्न और मोतियोंसे युक्त ऐसे घोडा रथ नर हाथियोंसे युक्त होकर समुद्रके किनारेपर वास करता है और बहुतसे जनोंके मनका प्रिय तथा सत्यवादी होता है और उसके रत्नतुल्य धान्य होता है ॥ ८ ॥

किं कुर्वंति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्री बृहस्पतिः ॥
मत्तमातंगयूथानां भिनत्त्येकोऽपि केसरी ॥ ९ ॥

यदि बृहस्पति जिसके केन्द्रभावमें होवे तौ सब ग्रह क्या कर सक्ते हैं क्योंकि अकेलाही सिंह मतवाले हाथियोंके समूहोंको नाश कर देता है ॥ ९ ॥

एक एव सुरराजपुरोधाः केंद्रगोऽथ नवपंचमगो वा ॥
लाभगो भवति यत्र विलग्ने तत्र शेषखचरैरबलैः किम् ॥ १० ॥

जिस लग्नमें यदि एकही बृहस्पति बलवान् होकर केन्द्रभाव वा नवम पंचम भाव वा एकादश भावमें होवे तौ उस लग्नमें निर्बल शेष ग्रहोंकरके क्या हो सक्ता है अर्थात् ऐसा अकेला बृहस्पतिही सब कार्योंके साधनेको समर्थ होता है ॥ १० ॥

भवति मदनमूर्तिर्वल्लभः कामिनीनां सकलजनसमर्थो दीर्घजन्मा विहाय ॥ दुरितमपि गुणज्ञो द्रव्यमुख्यः प्रधानः सधनकनकपूर्णो दैत्यपो यस्य केंद्रे ॥ ११ ॥

यदि जिसके केन्द्रभावमें बलवान् होकर शुक्र स्थित होवे तौ वह पुरुष अनिष्ट फलको त्याग करके कामदेवके समान मूर्त्तिवाला और कामिनियोंका प्रिय और समस्त जनोंमें समर्थ और दीर्घजन्मा तथा गुणवेत्ता तथा द्रव्यमुख्य और प्रधान तथा धन सुवर्णसे परिपूर्ण होता है ॥ ११ ॥

धनवान्प्राज्ञः शूरो मंत्री वा दंडनायकः पुरुषः ॥
दशमस्थे रवितनये वृंदपुरग्रामनेता वा ॥ १२ ॥

यदि बलवान् होकर शनैश्चर दशम भावमें होवे तौ पुरुष धनवान् और पंडित तथा शूरवीर तथा मंत्री वा दण्डपति तथा समूह वा पुर वा ग्रामपति होता है ॥१२॥

तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नस्थोऽपि शनैश्चरः ॥
करोति भूपतेर्जन्म वंशे च नृपतिर्भवेत् ॥ १३ ॥

यदि तुला धनु मीन इन राशियोंका शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे तौ राजाका जन्म करता है और वह पुरुष अपने वंशमें राजा होता है ॥ १३ ॥

दिव्यस्त्रीवरकांचनांबरयुतो मेधाविलक्ष्मीमयः
शास्त्री कौतुकगीतनृत्यरसताव्यापारदीक्षागुरुः ॥
पुत्रभ्रातृजनान्वितः स्थिरमतिः कर्तातिप्रीत्यन्वितो
जीवः केंद्रे यदा भवेन्निजसुखी सत्कर्मकारी नरः ॥ १४ ॥

यदि बलवान् होकर बृहस्पति केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ वह पुरुष दिव्य स्त्री और उत्तम सुवर्ण और वस्त्रोंसे युक्त तथा बुद्धिमान् और लक्ष्मीवान् तथा शास्त्रवत्ता और कौतुक गीत नृत्य रसता और व्यापारदीक्षामें गुरु और पुत्र भ्रातृजनोंसे युक्त तथा स्थिरबुद्धि तथा कार्यकर्त्ता और अतिप्रीतियुक्त और निज सुखसे युक्त तथा सत्कर्मोंको करनेवाला होता है॥ १४ ॥

आकाशमंदिरगतस्तनुपःस्वगेहे कुर्यान्नृपं नृपतिचक्रवरैःसुसेव्यः॥
सैन्यं प्रतापपृतनाहतशत्रुपक्षं शक्रो यथा सुरगणैश्च विराजमानः १५

यदि लग्नपति अपने राशिमें स्थित होकर दशम भावमें स्थित होवे तौ राजा करता है और वह पुरुष चक्रवर्त्ती राजाओंसे इस प्रकार सेवित होता है जिस प्रकार कि देवगणोंसे इन्द्र विराजमान होता है और उसकी सेना प्रतापरूप सेनासे मारे हुए शत्रुपक्षोंवाली होवे है॥ १५ ॥

उपचयगृहसंस्थो जन्मदो यस्य चंद्रःस्वगृह अथ नवांशे केंद्रजाताश्च सौम्याः॥ सकलबलवियुक्तश्चैव पापाभिधानः स भवति नरनाथः शक्रतुल्यो बलेन॥ १६॥

जिसका जन्म देनेवाला चन्द्रमा उपचय (३।६।१०।११) इन भावोंमें अपने गृह वा अपने नवांशमें स्थित होकर होवे और शुभ ग्रह केन्द्रभावमें स्थित होवें और पाप ग्रह निर्बल होवें तौ बलसे इन्द्रके समान राजा होता है॥ १६ ॥

विद्याकलागुणपराजितकामधेनुभोगैः परः सुयुवतीजितकामराजः॥ देशाधिपत्यपुरपत्तनराजमानो मीने सितः सकलमंडलदीप्यमानः॥ १७॥

यदि लग्नमें मीनराशिका शुक्र सकल मंडलसे प्रकाशमान होकर स्थित होवे तौ वह पुरुष विद्या कला गुणोंसे पराजयको प्राप्त की हुई कामधेनुवाला तथा अनेक भोगोंसे युक्त और सुन्दर स्त्रीसे जीते हुए कामदेववाला तथा देशकी अधिपता और पुरपत्तनोंसे विराजमान होता है॥ १७ ॥

कामेऽजकन्ये रिपुरंध्रसंस्थे केंद्रत्रिकोणे व्ययगे च राहुः॥
कामी च शूरो बलवान्स भोगी गजाश्वछत्रं बहुपुत्रता च॥ १८॥

यदि मिथुन मेष कन्या इन राशियोंका राहु षष्ठ, अष्टम, केन्द्र (१।४।७।१०) कोण (९।५) और द्वादश इन भावोंमें स्थित होवे तौ वह पुरुष कामी तथा शूरवीर तथा बलवान् तथा भोगी होता है और उस पुरुषके हाथी घोडा छत्र और बहुतसे पुत्र होवें हैं॥ १८ ॥

मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थे च राहुर्भवति विपुललक्ष्मी राज-
राज्याधिपो वा ॥ हयगजनरनौकामेदिनीमंडितश्च स भवति
कुलदीपो राहुतुंगो नराणाम् ॥ १९ ॥

यदि सिंह वृष कन्या कर्क इन राशियोंका राहु लग्नमें होवे तौ वह पुरुष बडी लक्ष्मीवाला अथवा राजराज्यका स्वामी अथवा घोडा हाथी नर नौका पृथ्वी इनसे विराजमान होता है और राहु उच्चका होकर लग्नमें स्थित होवे तौ कुलदीपक होता है ॥ १९ ॥

केन्द्रत्रिकोणे बुधजीवशुक्रा युक्ता नराणां यदि जन्मकाले ॥
धर्मार्थविद्यावलकीर्तिलाभः शांतःसुशीलः स नराधिपःस्यात् २०

यदि जन्मकालके समय बुध बृहस्पति शुक्र यह तीनों ग्रह केन्द्रभाव त्रिकोण-भावमें स्थित होवें तौ वह पुरुष धर्म धन विद्या बल कीर्त्ति इनके लाभवाला शांत-चित्त और सुन्दरशीलयुक्त तथा राजा होता है ॥ २० ॥

भृगुसुतसुरपूज्यश्चंद्रमाः केंद्रवर्ती बहुसुखधनवृद्धिः कर्मसाध्यं
नराणाम् ॥ रविसुतशशिपुत्रे भानुजीवे त्रिकोणे क्षितिसुत-
दशमे तु राजयोगं वदंति ॥ २१ ॥

यदि शुक्र बृहस्पति चन्द्रमा केन्द्रमें विराजमान होवें तौ पुरुषोंके बहुतसे सुख धनकी वृद्धि होवे है और सब कार्य साध्य होता है। शनि बुध दोनों वा सूर्य बृह-स्पति दोनों पञ्चम नवम भावमें स्थित होवें और मंगल दशम भावमें स्थित होवे तौ महर्षिजन राजयोगको कहते हैं ॥ २१ ॥

केंद्रत्रिकोणेषु भवंति सौम्या दुश्चिक्यलाभारिगताश्च पापाः ॥
यस्य प्रयाणेऽप्यथ जन्मकाले ध्रुवं भवेत्तस्य महीपतित्वम्॥२२॥

जिसके यात्राकालमें वा जन्मकालमें यदि समस्त शुभ ग्रह केन्द्रभाव और त्रिकोण भावमें स्थित होवें और समस्त पाप ग्रह तृतीय एकादश षष्ठ इन भावोंमें स्थित होवें तौ उस पुरुषको राजपद होता है ॥ २२ ॥

लाभे त्रिकोणे यदि शीतरश्मिःकरोत्यवश्यं क्षितिपालतुल्यम् ॥
कुलद्वयानंदकरं नरेंद्रं ज्योत्स्ना हि दीपस्तमनाशकारी ॥ २३ ॥

यदि बलवान् होकर चन्द्रमा केन्द्रभाव और त्रिकोणभावमें स्थित होवे तौ अवश्यही पृथ्वीपतिके समान दोनों कुलके आनन्द देनेवाला राजा करता है और

उसके समस्त विघ्नोंका नाश इस प्रकार करता है जिस प्रकार चांदनी तथा दीपक अन्धकारको नाश कर देता है ॥ २३ ॥

शत्रुस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने शशी भवेत् ॥
गृहमध्ये स जातश्च विख्यातः कुलदीपकः ॥ २४ ॥

यदि षष्ठ भावमें बृहस्पति होवे और एकादश भावमें चंद्रमा होवे तो उत्पन्न हुआ प्राणी गृहके मध्यमें विख्यात और कुलदीपक होता है ॥ २४ ॥

लग्नाधिपो वा जीवो वा शुक्रो वा यत्र केंद्रगः ॥
तस्य पुंसश्च दीर्घायुः स भवेद्राजवल्लभः ॥ २५ ॥

यदि लग्नपति वा बृहस्पति वा शुक्र बलवान् होकर केन्द्रभावमें स्थित होवें तौ उस पुरुषका बडा आयु होता है और वह पुरुष राजाका प्रिय होता है ॥ २५ ॥

दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ ॥
राजयोगोऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ २६ ॥

यदि दशम भावमें बुध सूर्य यह होवें और षष्ठ भावमें मंगल राहु यह ग्रह होवें तौ राजयोग होता है इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजा होता है ॥ २६ ॥

आदौ जीवः शनिश्चांते गृहमध्ये निरंतरम् ॥
राजयोगं विजानीयात्कुटुंबबलमुत्तमम् ॥ २७ ॥

लग्नमें बृहस्पति और द्वादशभावमें शनैश्चर होवे तो गृहके मध्यमें उस पुरुषका राजयोग तथा उत्तम कुटुम्बबल जाने ॥ २७ ॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युः स्थाने यदा सितः ॥
निरंतरं गृहमध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ २८ ॥

यदि तृतीय भावमें बृहस्पति होवे और अष्टम भावमें शुक्र होवे तौ गृहके मध्यमें निश्चयही राजा होता है ॥ २८ ॥

जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ॥
सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ २९ ॥
तुलायामसुराचार्यो राजयोगो भवेदयम् ॥
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ ३० ॥

यदि बृहस्पति वृषराशिपर और चंद्रमा मिथुनराशिपर और मंगल मकर राशि- पर और शनैश्चर सिंहराशिपर और बुध सूर्य दोनों कन्याराशिपर और शुक्र तुला-

राशिपर होवे तौ यह राजयोग होता है, इस योगमें उत्पन्न हुआ प्राणी महाराज होता है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः ॥
सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ ३१ ॥

यदि अष्टम वर्षमें वा द्वादश वर्षमें जीवित रहे तौ वह पुरुष विश्वके पालन करनेवाला सार्वभौम चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ३१ ॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः ॥
दीर्घजीवो महाप्राणो जातको नायको भवेत् ॥ ३२ ॥

यदि एक बृहस्पति बलवान् होकर लग्नमें स्थित होवे तौ समस्त योग शुभ होते हैं और वह पुरुष दीर्घजीवी तथा बडा बली राजा होता है ॥ ३२ ॥

धने शुक्रोऽथ भौमश्च मीने जीवस्तुलाबुधः ॥
नीचस्थौ शनिचंद्रौ च राजयोगस्तदा ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुक्र और मंगल होवें और बृहस्पति मीनराशिपर होवे और तुलराशिपर बुध होवे और शनैश्चर चंद्रमा दोनों नीच राशिमें स्थित होवें तौ निश्चयही राजयोग होता है ॥ ३३ ॥

अस्मिन्योगे च यो जातः स राजा धनवर्जितः ॥
दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मंडलनायकः ॥ ३४ ॥

इस योगमें जो प्राणी उत्पन्न होता है वह धनहीन राजा होता है और वह दाता तथा भोगी और विख्यात और जनमान्य और मंडलपति होता है ॥ ३४ ॥

मीने शुक्रो बुधश्चांते धने राहुस्तनौ रविः ॥
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ३५ ॥

यदि मीनराशिपर शुक्र होवे और द्वादश भावमें बुध होवे और द्वितीयभावमें राहु होवे और लग्नमें सूर्य होवे और तृतीय भावमें मंगल होवे तौ राजयोग होता है ॥ ३५ ॥

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चंद्रमाः ॥
स राजा गृहमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः ॥ ३६ ॥

यादि तृतीय भावमें बृहस्पति होवे और एकादश भावमें चंद्रमा होवे तौ वह राजा होता है और गृहके मध्य विख्यात और कुलदीपक होता है ॥ ३६ ॥

शुभग्रहाः शुभक्षेत्रे भवंति यदि केंद्रगाः ॥
तदा शुभानि कर्माणि स करोति हि जातकः ॥ ३७ ॥

यदि शुभ ग्रह शुभ राशिमें स्थित होकर केन्द्रभावमें होवें तौ वह उत्पन्न हुआ मनुष्य शुभ कर्मोंको करता है ॥ ३७ ॥

उच्चस्थानगताः सौम्याः केंद्रस्थाने भवंति चेत् ॥
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य यदि नीचसुतो भवेत् ॥ ३८ ॥

यदि शुभ ग्रह उच्च राशिके केन्द्रभावमें स्थित होवें तौ निश्चय उस पुरुषको राज्य होता है, यद्यपि नीच पुत्रभी होवे ॥ ३८ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिश्च चेद्भवेत् ॥
तस्य जातस्य दीर्घायुः संपत्तिश्च पदे पदे ॥ ३९ ॥

यदि बृहस्पति और बुध और शनैश्चर अपने राशियें स्थित होवें तौ उस उत्पन्न पुरुषके दीर्घायु और पद २ में संपत्ति होवे है ॥ ३९ ॥

मीने बृहस्पतिः शुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् ॥
तस्य जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ ४० ॥

यदि मीन राशिपर बृहस्पति और शुक्र और चंद्रमा होवें तौ उस उत्पन्न हुए पुरुषके राज्य और बहुत पुत्रवाली स्त्री होवे है ॥ ४० ॥

पंचमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ॥
स राज्यवान्महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेंद्रियः ॥ ४१ ॥

पंचम भावमें बृहस्पति और चंद्रमा दशम भावमें स्थित होवे तौ वह पुरुष राज्यवान् तथा महाबुद्धि तथा तपस्वी और जितेन्द्रिय होता है ॥ ४१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटश्चापेषु मकरेऽपि च ॥
ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ४२ ॥

यदि सिंहराशिपर बृहस्पति होवे और तुला कर्क धन मकर इन राशियोंपर सब ग्रह होवें तौ देशभोगी राजा होता है ॥ ४२ ॥

तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नसंस्थोऽपि चेच्छनिः ॥
करोति भूपतेर्जन्म महापुण्यानुभावतः ॥ ४३ ॥

यदि तुला धनु मीन इन राशियोंपर स्थित होकर शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे तौ महापुण्यके प्रतापसे राजाका जन्म करता है ॥ ४३ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्याः कर्कस्थाने च चंद्रमाः ॥
धर्मस्थाने यदा सौम्या राजयोगस्तदा भवेत् ॥ ४४ ॥

यदि समस्त शुभ ग्रह पंचम भावमें स्थित होवें और चंद्रमा कर्कराशिपर स्थित होवे अथवा समस्त शुभ ग्रह नवम भावमें स्थित होवें तौ राजयोग होता है ॥ ४४ ॥

मकरे च घटे मीने वृषे मिथुनमेषयोः ॥
ग्रहास्तदा च विख्यातो राजा भवति मानवः ॥ ४५ ॥

यदि मकर, कुंभ, मीन, वृष, मिथुन, मेष इन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ मनुष्य विख्यात राजा होता है ॥ ४५ ॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ॥
कुरुते कमलारोग्यपुत्रमानादिकं फलम् ॥ ४६ ॥

यदि बुध शुक्र बृहस्पति शनैश्चर इनसे युक्त होकर राहु केन्द्रभावमें होवे तौ लक्ष्मी और आरोग्य तथा पुत्र और मान इत्यादि फल करता है ॥ ४६ ॥

चतुर्थभवने शुक्रो गुरुचंद्रधरासुताः ॥
रविसौरियुताः संति राजा भवति निश्चितम् ॥ ४७ ॥

यदि चतुर्थ भावमें शुक्र स्थित होवे और बृहस्पति चंद्रमा मंगल यह सूर्य शनैश्चर इनसे युक्त होवें तौ निश्चयही राजा होता है ॥ ४७ ॥

अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्ये च क्रूरसौम्यकौ ॥
राजयोगोऽत्र यो जातो महाभूपो भविष्यति ॥ ४८ ॥

यदि अष्टम भावमें और द्वादश भावमें क्रूर ग्रह होवें और दशम भावमें एक क्रूर ग्रह और एक शुभ ग्रह होवे तौ राजयोग होता है इस योगमें महाराजा होता है ॥ ४८ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ॥
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ४९ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर और चंद्रमा होवे और बृहस्पति सूर्य दोनों पंचम नवम भावमें स्थित होवें और मंगल दशम भावमें होवे तौ राजयोग होता है ॥ ४९ ॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेत्तदा ॥
तस्य जीवति नो भ्राता स्यादेकोऽपि नृपैः समः ॥ ५० ॥

यदि अपने राशिका स्थित होकर सूर्य नवम भावमें स्थित होवे तौ उस पुरुषका भ्राता नहीं जीवता है, यदि एक भी जी सके तौ राजाओंके समान होता है ॥ ५० ॥

द्वित्रितुर्ये सिते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ॥
राजयोगं विजानीयाज्जातस्तुच्छकुलोऽपि चेत् ॥ ५१ ॥

द्वितीय तृतीय चतुर्थ इन भावोंमें शुक्र स्थित होवे और षष्ठ भाव और दशम भावमें समस्त ग्रह स्थित होवें तौ राजयोग जाने, इस योगमें जन्मा हुआ प्राणी तुच्छ कुल होकर भी राजा होता है ॥ ५१ ॥

लग्ने क्रूरे व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते ॥
राजयोगोऽत्र यो जातो भूपतिर्भवति स्फुटम् ॥ ५२ ॥

लग्नमें पाप ग्रह और द्वादश भावमें शुभ ग्रह और द्वितीय भावमें पाप ग्रह होवे तौ राजयोग होता है, इस योगमें उत्पन्न हुआ निश्चयही राजा होता है ॥ ५२ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यो यदा भवेत् ॥
सप्तमे भवति क्रूरः परिवारक्षयंकरः ॥ ५३ ॥

यदि लग्नमें पाप ग्रह और द्वादश भावमें पाप ग्रह और द्वितीय भावमें शुभ ग्रह होवे और सप्तम भावमें पाप ग्रह होवे तौ परिवारका क्षय करता है ॥ ५३ ॥

धने चन्द्रश्च शुक्रश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ॥
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगोऽभिधीयते ॥ ५४ ॥

यदि द्वितीय भावमें चंद्रमा और शुक्र होवे और मेषराशिमें बृहस्पति होवे और दशम भावमें राहु शुक्र यह दोनों होवें तौ राजयोग होता है ॥ ५४ ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ॥
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ५५ ॥

यदि सिंहराशिपर बृहस्पति और कन्याराशिपर शुक्र, मिथुनराशिपर शनैश्चर और अपने राशिके चतुर्थ भावमें मंगल होवे तौ वह पुरुष राजा होता है ॥ ५५ ॥

शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवे घटे तमः ॥
मकरे च कुजस्तत्र जातः स्याद्विश्वपालकः ॥ ५६ ॥

यदि शनैश्चर चंद्रमा दोनों कन्याराशिपर और बृहस्पति सिंहराशिपर और राहु कुंभराशिपर और मंगल मकरराशिपर होवे तौ वह पुरुष विश्वका पालन करनेवाला होता है ॥ ५६ ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुम्भयोः ॥
मीने च वत्सरे त्रिंशे समर्थः सर्वकर्मसु ॥ ५७ ॥

यदि शुक्र बृहस्पति सूर्य मंगल यह ग्रह क्रमसे धनु मकर कुंभ मीन इन राशियोंपर स्थित होवें तौ तीस वर्षमें सब कार्योंके करनेमें समर्थ हो जाता है ॥ ५७ ॥

कर्मलग्ने जीवशुक्रौ लाभे चन्द्रजभार्गवौ ॥
मेषे भानुश्च जातो यो योगेऽस्मिन्नृपतिर्भवेत् ॥ ५८ ॥

यदि दशम भाव और लग्नमें बृहस्पति शुक्र स्थित होवें अथवा एकादश भावमें बुध शुक्र यह दोनों स्थित होवें और मेषराशिपर सूर्य स्थित होवे तौ इस योगमें राजा होता है ॥ ५८ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ॥
सर्वकर्माणि सिद्ध्यंति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५९ ॥

यदि दशम भावमें बृहस्पति और बुध तथा शुक्र और चंद्रमा स्थित होवे तौ उस पुरुषके सब कर्म सिद्धिको प्राप्त होते हैं और वह पुरुष राजमान्य होता है ॥ ५९ ॥

षष्ठेऽष्टमे पञ्चमे वा नवमे द्वादशे तथा ॥
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यो न संशयः ॥ ६० ॥

यदि षष्ठ अष्टम पञ्चम नवम द्वादश इन भावोंमें समस्त शुभ ग्रह और पाप ग्रहोंका योग होवे तौ वह पुरुष राजमान्य होता हैं इसमें संशय नहीं ॥ ६० ॥

पंचमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ॥
भौमराहुसितार्काः स्युर्जातकः कुलपालकः ॥ ६१ ॥

यदि पञ्चम भावमें मंगल और षष्ठ भावमें राहु और अष्टम भावमें शुक्र और नवम भावमें सूर्य होवे तौ जातक कुलके पालन करनेवाला होता है ॥ ६१ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा ॥
जायतेऽत्र नृपो योगे मानी भूरिप्रियः सदा ॥ ६२ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर और चंद्रमा होवें और अष्टम भावमें शुक्र होवे तौ इस योगमें जो उत्पन्न होता है वह पुरुष राजा और मानी और बहुतसे मित्रोंवाला होता है ॥ ६२ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः ॥
अत्र योगे नरो जातो नृपोऽश्वगजनायकः ॥ ६३ ॥

यदि राहु मिथुन राशिमें होवे और मंगल सिंहराशिमें होवे तौ इस योगमें उत्पन्न हुआ घोडा हाथियोंका स्वामी और राजा होता है ॥ ६३ ॥

चापाख्ये शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते ॥
लग्ने च सबलो मंदो मकरे च कुजो भवेत् ॥ ६४ ॥
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥
दूरादेव नमंत्यस्य प्रतापैश्चरणौ नृपाः ॥ ६५ ॥

धनुराशिपर सूर्य यदि चंद्रमासे युक्त होवे और लग्नमें बलवान् शनैश्चर होवे और मकरराशिपर मंगल बलवान् होवे तौ इस योगमें उत्पन्न हुआ नर महाराज होता है और उस पुरुषके प्रतापसे चरणोंको राजा दूरसे ही नमते हैं ॥६४॥६५॥

उच्चाभिलाषकः सूर्यस्त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ॥
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ६६ ॥

यदि उच्चाभिलाषी सूर्य त्रिकोण (नमव पञ्चम) भावमें स्थित होवे तौ नीच कुलमें जन्मा हुआ भी धनपूरित होता है ॥ ६६ ॥

धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पतिः ॥
षष्ठे च सिंहिकापुत्रो राजा भवति विक्रमात् ॥ ६७ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुक्र और दशम भावमें बृहस्पति होवे और राहु षष्ठ भावमें स्थित होवे तौ पराक्रमसे राजा होता है ॥ ६७ ॥

चतुर्ग्रहा यदैकत्र यदि सौम्या भवंति हि ॥
भ्रातृधीधर्मलग्नाख्या राजयोगो भवेदयम् ॥ ६८ ॥

यदि इकट्टे होकर चार शुभ ग्रह एक भावमें वा तृतीय पञ्चम नवम लग्न इन चारों भावोंमें स्थित होवे तौ यह राजयोग होता है ॥ ६८ ॥

सर्वैर्ग्रहैर्यदा चंद्रो विना हेलिं निरीक्ष्यते ॥
षष्ठाष्टमे संस्थितश्च स दीर्घायुर्नराधिपः ॥ ६९ ॥

यदि षष्ठ अष्टम भावमें स्थित हुआ चंद्रमा सूर्यके विना सब ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ वह पुरुष दीर्घ आयुवाला राजा होता है ॥ ६९ ॥

नवमे पंचमे स्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ॥
आदौ जाताश्च नश्यंति पश्चाज्जातश्च जीवति ॥ ७० ॥

यदि नवम पञ्चम चतुर्थ इन भावोंमें समस्त ग्रह होवें तौ पहिले जो उत्पन्न होते हैं वह नष्ट हो जाते हैं और पीछे जो उत्पन्न होते हैं वह जीते हैं ॥ ७० ॥

विवाहितायामन्यस्यामेकपुत्रो भवेत्तदा ॥
विख्यातो भुवनत्यागी स दीर्घायुर्महीपतिः ॥ ७१ ॥

यदि इस योगमें अन्य किसी विवाहित स्त्रीमें एक पुत्र होवे तौ संसारसे विख्यात और भुवनका दानकर्त्ता और दीर्घ आयुवाला राजा होता है ॥ ७१ ॥

कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा ॥
तत्र जातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम् ॥ ७२ ॥

यदि कन्याराशिपर राहु और शुक्र और मंगल शनैश्चर स्थित होवे तौ इस योगमें उत्पन्न जीवके कुबेरसे अधिक धन होता है ॥ ७२ ॥

लग्ने मीने जीवशुक्रौ मेषेऽर्कौ मकरे कुजः ॥
दासवंशेऽपि जातोऽसौ राजा छत्रधरो भवेत् ॥ ७३ ॥

यदि लग्नमें मीनराशिके बृहस्पति शुक्र यह दोनों ग्रह होवें और मेषराशिपर सूर्य और मकरराशिपर मंगल होवे तौ दासवंशमें उत्पन्न हुआभी छत्रधारी राजा होता है ॥ ७३ ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ॥
स लोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥ ७४ ॥

यदि बृहस्पति तृतीय भावमें स्थित होवे और चंद्रमा एकादश भावमें होवे तौ लोकमें गृहके बीच कुलदीपक होता है ॥ ७४ ॥

दशमस्थौ बुधादित्यौ षष्ठे राहुधरासुतौ ॥
राजयोगोऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ७५ ॥

यदि बुध सूर्य दोनों दशम भावमें स्थित होवें और राहु मंगल दोनों षष्ठ भावमें स्थित होवें तौ राजयोग होता है, इसमें उत्पन्न हुआ पुरुष राजा होता है ॥ ७५ ॥

चतुर्ग्रहैरेकगृहे च सौम्यैर्धीधर्मदुश्चिक्यतनुस्थितैर्वा ॥
दासश्च जातःक्षितिपालतुल्यो भवेन्नरेंद्रोऽथ समुद्रपारगः ७६ ॥

यदि चार शुभ ग्रह एक भावमें स्थित होवें अथवा पंचम नवम तृतीय लग्न इन चारों भावोंमें चार शुभ ग्रह स्थित होवें तौ दास होकर भी राजाके समान होता है अथवा समुद्रपारगामी राजा होता है ॥ ७६ ॥

सुरगुरुशशियुक्ते कर्कटे लग्नसंस्थे भृगुतनयबलिष्ठः केन्द्र-
यातोऽथ शेषाः ॥ शिवसहजरिपुस्था यस्य जन्मात्र योगे
नियतमिति यदायुश्चक्रवर्ती धनेशः ॥ ७७ ॥

यदि बृहस्पति चंद्रमा दोनोंसे युक्त होकर कर्कराशि लग्नमें स्थित होवे और शुक्र बलवान् होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे और शेष ग्रह एकादश तृतीय षष्ठ इन भावोंमें स्थित होवें तौ इस योगमें जिसका जन्म होवे वह पुरुष आयुःपर्यन्त चक्रवर्ती राजा और धनपति होता है ॥ ७७ ॥

तुले मीनमेषे वृषे दैत्यपुत्रो भवेद्राजमानी कलाकौतुकी च ॥
त्रयं पुत्रजातं चिरंजीवितं च भवेद्वत्सरे वह्नियुग्मे च भुंक्ते॥७८॥

यदि तुला मीन मेष वृष इन राशियोंपर लग्नमें शुक्र स्थित होवे तौ वह पुरुष राजमानसे युक्त तथा कलाकौतुकयुक्त होता है और उसके बहुत आयुवाले तीन पुत्र होते हैं और तेईस वर्षमें भोगको प्राप्त होता है ॥ ७८ ॥

लग्नाधिपतिः केंद्रे बलपरिपूर्णः करोति परमर्द्धिम् ॥
गोपालकुलेऽपि जातं किं पुनरिह नृपतिसंभूतम् ॥ ७९ ॥

यदि लग्नपति बलवान् होकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ गोपालकुलमें उत्पन्न हुएकोभी परम समृद्धिसे युक्त करता है। यदि राजपुत्रको परम समृद्धिसे युक्त करे तौ फिर क्या शंका है ॥ ७९ ॥

रविस्तृतीये भृगुनंदनः सुखे बुधो द्वितीये यदि पंचमे स्थितः ॥
न नीचराशौ न च शत्रुवेश्मगौ भवेन्नरेंद्रस्त्रिसमुद्रपालकः॥८०॥

यदि सूर्य तृतीय भावमें और शुक्र चतुर्थ भावमें और बुध द्वितीय भाव वा पंचम भावमें स्थित होवे और यह तीनों ग्रहोंमेंसे कोई भी नीच राशिमें नहीं होवे और शत्रुके राशिमें भी नहीं होवे तौ तीन समुद्रके पालन करनेवाला राजा होता है ॥ ८० ॥

यदि भवति च केंद्रे धर्मगः स्वोच्चसंस्थः सुतभवनगतश्चेद्वा-
क्पतिर्जन्मकाले ॥ स भवति नरनाथः सार्वभौमो जितारिः
शशिबुधभृगुपुत्रैरन्वितो वीक्षितो वा ॥ ८१ ॥

यदि जन्मसमय अपने उच्च राशिमें स्थित हुआ बृहस्पति केन्द्रभाव वा नवम भाव वा पंचम भावमें स्थित होवे और चंद्रमा बुध शुक्र इनसे युक्त वा दृष्ट होवे तौ वह पुरुष जीते हुए शत्रुओंवाला चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ८१ ॥

विलग्ननाथः खजलास्तसंस्थः सुहृद्गृहे मित्रदृशायुतिस्थितः ॥
करोति सर्वं पृथिवीतलस्य दुर्वारवैरिघ्नमहोदयं शुभम् ॥ ८२ ॥

यदि लग्नपति दशम चतुर्थ सप्तम इन भावोंमें मित्रक्षेत्री होकर स्थित होवे और मित्रग्रह की दृष्टिसे युक्त होवे तौ पृथ्वीतलके नहीं हटनेवाले शत्रुओंके नाश करनेवाला शुभ प्रतापको करता है ॥ ८२ ॥

लग्नं विहाय केंद्रे सकलकलापूरितो निशानाथः ॥
विदधाति महीपालं विक्रमबलवाहनोपेतम् ॥ ८३ ॥

यदि समस्त कलाओंसे परिपूर्ण चंद्रमा लग्नको त्यागकर केन्द्रभावमें स्थित होवे तौ पराक्रम बल वाहनसे युक्त पृथ्वीतलको देता है ॥ ८३ ॥

स्वोच्चे स्वकीयभवने क्षितिपालतुल्यो लग्नेऽर्कजे भवति देश-
पुराधिनाथः ॥ दारिद्र्यदुःखपरिपीडित एव लोको शेषेषु
सर्वजननिंद्यशरीरचेष्टः ॥ ८४ ॥

यदि शनैश्चर अपने उच्च राशि वा स्वराशिका होकर लग्नमें स्थित होवे तो राजाओंके समान देशपुरका नाथ होता है और शेष राशियोंका होकर शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे तो पुरुष दरिद्र दुःखोंसे तपायमान और सब जनोंमें निन्दित शरीर चेष्टावाला होता है ॥ ८४ ॥

लग्ने उच्चपदं गतो दिनपतिश्चंद्रे धनस्थे भृगौ
दुश्चिक्ये तमसंयुते सुखगृहे जीवे व्ययस्थे बुधे ॥
लाभे सूर्यसुते हि शत्रुभवने याते कुले भूपते-
र्जातोऽयं मनुजः सदा नृपगणे सम्राट्पदं गच्छति ॥ ८५ ॥

यदि उच्च राशिका सूर्य लग्नमें स्थित होवे और चंद्रमा द्वितीय भावमें होवे और शुक्र तृतीय भावमें होवे और चतुर्थ भाव राहुसे युक्त होवे और बृहस्पति द्वादश भावमें स्थित होवे और बुध एकादश भावमें होवे और शनैश्चर षष्ठ भावमें होवे तौ राजकुलमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजसमूहमें सम्राट्पदको प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे शशी तथा जन्मनि यस्य जंतोः ॥
तस्यातिपृथ्वी बहुरत्नपूर्णा बृहस्पतिः कर्कटके यदि स्यात् ॥ ८६ ॥

यदि जिस प्राणीके जन्मसमय उच्चाभिलाषी होकर सूर्य नवम पंचम भावमें स्थित होवे अथवा उच्चाभिलाषी होकर चन्द्रमा नवम पंचम भावमें होवे और

बृहस्पति कर्क राशिपर होवे तौ उस पुरुषकी पृथ्वी बहुतसे रक्तसे परिपूर्ण होवे है ॥ ८६ ॥

सर्वेऽप्याकाशवासा स्फटिकबिसलताकाशकार्पाससभासा
लग्नं संवीक्षमाणा नरपतितिलकं तं समुत्पादयंति ॥
नाथोमेऽस्मिन्नुपास्ते जलदनिभमथ श्वेतमानं यशोभि-
र्बिभ्राणा शेषशंकां मधुमथनमतिर्भद्रमालार्पितश्रीः ॥ ८७ ॥

यदि स्फटिक पत्थर और मृणाल लता और आकाश और कार्पास इनके कान्तिके समान होकर समस्त बली ग्रह लग्नको देखते होवें तौ उस पुरुषको राजाओंमें तिलकरूप करते हैं और उसके यशोंकरके श्वेतवर्ण ऐसे मेघसमान उज्ज्वल पुरुषको देखकर शेषशंकाके धारण करनेवाली ऐसी विष्णुमें बुद्धि रखनेवाली जो श्रेष्ठमालापर विराजमान लक्ष्मी सो ऐसा मानकर उस पुरुषकी सेवा करती है कि इसके विषैं मेरे स्वामी विष्णु विद्यमान हैं ॥ ८७ ॥

सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महीपालः ॥
बलिभिः सौख्यार्थयुतो विगतभयो दीर्घजीवी च ॥ ८८ ॥

यदि समस्त बली ग्रहोंकरके लग्न देखा गया होवे तौ वह पुरुष सुख धनसे युक्त और निर्भय और दीर्घ आयुवाला होता है ॥ ८८ ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो दशमे च धरासुतः ॥
रविः सौरिर्भवेद्युक्तो राजा भवति निश्चितम् ॥ ८९ ॥

यदि चतुर्थ भावमें शुक्र और दशम भावमें मंगल और सूर्य और शनैश्चर युक्त होवें तौ निश्चय ही राजा होता है ॥ ८९ ॥

मिथुनेऽजे वृषे मीने कुंभे च मकरे ग्रहाः ॥
यो योगेऽस्मिन्नरो जातो जायते गजयानवान् ९० ॥

यदि मिथुन मेष मीन कुम्भ मकर इन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ इस योगमें जो उत्पन्न होता है वह हाथीके सवारीवाला होता है ॥ ९० ॥

जीवनिशाकरसूर्याः पंचमनवमतृतीयगा लग्नात् ॥
यदि भवति तदा राजा कुबेरतुल्यो धनप्रभवैः ॥ ९१ ॥

यदि लग्नसे पंचम नवम तृतीय इन स्थानोंमें क्रमसे बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य ग्रह होवें अर्थात् पंचममें बृहस्पति, नवममें चन्द्रमा और तृतीयमें सूर्य होवे तौ धन-समृद्धिसे कुबेरके समान होता है ॥ ९१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटधनुर्मकरकेषु च ॥
ग्रहाश्चान्ये यदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ९२ ॥

यदि सिंहराशिपर बृहस्पति और तुला कर्क धनु मकर इन राशियोंपर समस्त ग्रह होवें तौ देशभोगी राजा होता है ॥ ९२ ॥

स्वगृहे च भवेत्सूर्यस्तुलायां च भवेत्सितः ॥
मिथुने तिष्ठति सौरी राजयोगः प्रजायते ॥ ९३ ॥

यदि सूर्य अपनी राशिमें होवे और तुलाराशिमें शुक्र होवे और शनैश्चर मिथुन राशिमें होवे तौ राजयोग होता है ॥ ९३ ॥

षष्ठे च पंचमे चैव नवमे द्वादशे तथा ॥
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगो राजमान्योऽरिकंटकः ॥ ९४ ॥

यदि षष्ठ पंचम नवम द्वादश इन भावोंमें समस्त शुभ ग्रह और पाप ग्रहोंका योग होवे तौ वह राजमान्य और शत्रुओंका नाशक होता है ॥ ९४ ॥

त्रिकोणकेन्द्रे बुधजीवशुक्रास्त्रिषड्दशे सोमसुतेऽर्कपुत्रे ॥
जायास्थिते चेत्परिपूर्णचंद्रे नूनं स जातो नृपतेःसमानः॥९५॥

यदि त्रिकोण (९ । ५) और केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) भावमें बुध बृहस्पति शुक्र यह ग्रह होवें और तृतीय षष्ठ दशम इन भावोंमें बुध शनैश्चर होवें और सप्तम भावमें परिपूर्ण चन्द्रमा होवे तौ वह पुरुष राजाके समान होता है ॥ ९५ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः ॥
राजमान्यो महाकामी भोगपत्नीजनैर्युतः ॥ ९६ ॥

यदि लग्नमें शनैश्चर और चन्द्रमा होवे और अष्टम भावमें शुक्र होवे तौ राजमान्य और महाकामी तथा भोगपत्नीजनोंसे युक्त होता है ॥ ९६ ॥

धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवो घटे बुधः ॥
नीचचंद्रो रवियुक्तो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ९७ ॥

यदि द्वितीय भावमें शुक्र और मंगल होवे और मीनराशिपर बृहस्पति और कुंभराशिपर बुध और नीचराशिपर चन्द्रमा होवे और उसमें सूर्य युक्त होवे तौ राजयोग होता है ॥ ९७ ॥

अस्मिन्योगे नरो जातो राजा विभववर्जितः ॥
दानभोगादिविख्यातः सामात्यः स भवेन्नरः॥ ९८ ॥

इस योगमें पुरुष धनवर्जित राजा होता है और दानभोगादिमें विख्यात और मंत्रियोंसे युक्त होता है ॥ ९८ ॥

मीने शुक्रे बुधश्चांते लग्ने सूर्यः शशी धने ॥
सहजे च भवेद्राहू राजयोगं प्रचक्षते ॥ ९९ ॥

मीनराशिपर शुक्र और बुध द्वादश भावमें होवे और लग्नमें सूर्य और द्वितीय भावमें चंद्रमा और तृतीय भावमें राहु होवे तौ महर्षिजन राजयोगको कहते हैं ॥ ९९ ॥

मीने जीवस्तथा शुक्रश्चंद्रमाश्च यदा भवेत् ॥
तस्य जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिका ॥ १०० ॥

यदि मीनराशिपर बृहस्पति शुक्र चंद्रमा होवें तौ उत्पन्न हुए पुरुषके राज्य और बहुतसे पुत्रोंवाली स्त्री होवे है ॥ १०० ॥

आयस्थाने यदा सौम्यः क्रूरस्थानीयचंद्रमाः ॥
कर्मस्थाने पुनः सौम्यस्तदा राज्यं विधीयते ॥ १ ॥

यदि एकादश भावमें शुभ ग्रह होवे और पाप ग्रहेकी राशिमें चंद्रमा होवे और दशम भावमें शुभ ग्रह होवे तौ राज्ययोग कहा जाता है ॥ १ ॥

आदौ जीवः पंचमे च दशमे चंद्रमा भवेत् ॥
राजमान्यो महाबुद्धिस्तेजस्वी विजितेन्द्रियः ॥ २ ॥

यदि लग्नभाव वा पंचम भावमें बृहस्पति होवे और दशम भावमें चंद्रमा होवे तौ वह पुरुष राजमान्य और विशालबुद्धि तथा तेजस्वी और जितेन्द्रिय होता है ॥ २ ॥

इति चतुरशीतिराजयोगप्रकरणं समाप्तम् ।

बृहज्जातकोक्तराजयोगाध्यायः ।

प्राहुर्यवनाः स्वतुंगगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः ॥
क्रूरैस्तु न जीवशर्मणः पक्षे क्षित्यधिपः प्रजायते ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें पाप ग्रह अपने उच्च राशिमें स्थित होवें वह राजा तौ होता है परन्तु पापबुद्धि होता है ऐसा यवनाचार्य कहते हैं और जीवशर्माके मतमें उच्चराशिगत पाप ग्रहोंसे उत्पन्न प्राणी राजा नहीं होता है किन्तु धनवान् होता है ॥ १ ॥

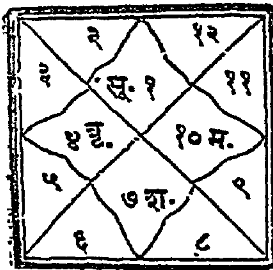
द्वात्रिंशद्राजयोगाः ।

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैकलग्ने ॥ द्व्येकाश्रितेषु च तथैकगते विलग्ने स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ २ ॥

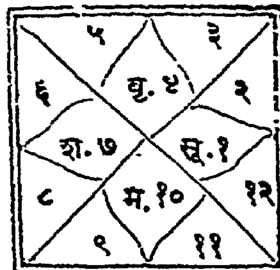
इसके अनन्तर बत्तीस राजयोगोंको एक श्लोककरही कहते हैं । यदि मंगल शनैश्चर सूर्य बृहस्पति यह चारों वा इनमेंसे तीन अपने उच्च राशिमें स्थित होवें और इन कहे हुए ग्रहोंमेंसे एकका उच्च राशि लग्नमें होवे तौ सोलह राजयोग हो जाते हैं और इनमेंसे दो ग्रह उच्च राशिमें होवें और चंद्रमा कर्कराशिपर होवे और जो कि दो उच्चके होवें तिनमेंसे एकका उच्च राशि लग्नमें होवे वा इनमेंसे एक ग्रह अपने उच्च राशिमें होवे और जो कि उच्चका होवे उसीकी उच्च राशि लग्नमें होवे और चंद्रमा कर्कराशिका होवे तौ सोलह राजयोग होते हैं इस प्रकार बत्तीस राजयोग होते हैं ॥ २ ॥

उदाहरणार्थ बत्तीस राजयोगोंकी कुंडली ।

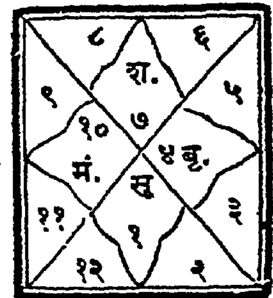
राजयोगः



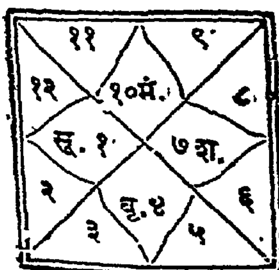
राजयोगः



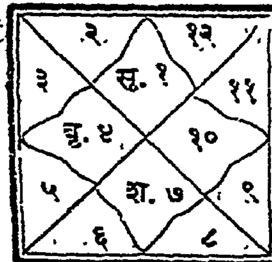
राजयोगः



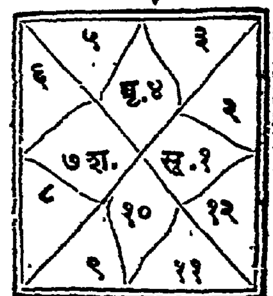
राजयोगः



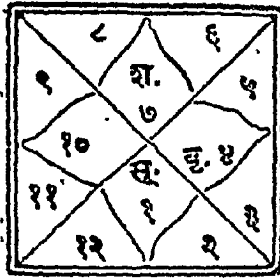
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



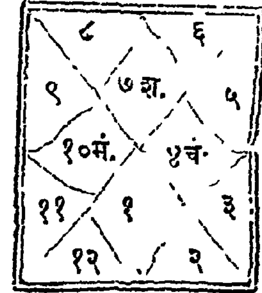
राजयोगः



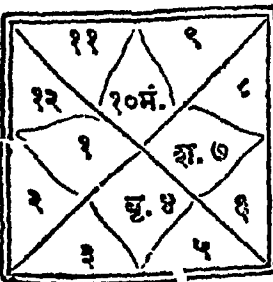
राजयोगः



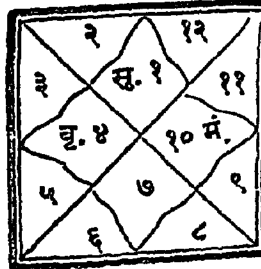
राजयोगः



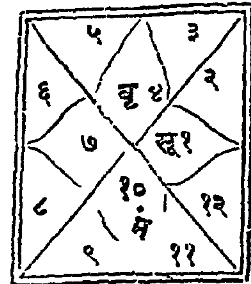
राजयोगः



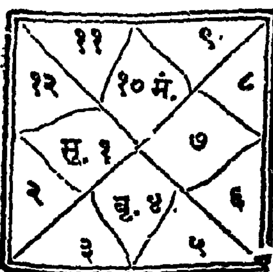
राजयोगः



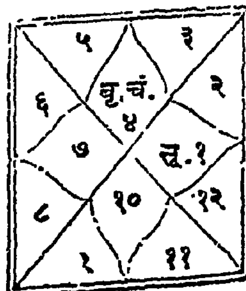
राजयोगः



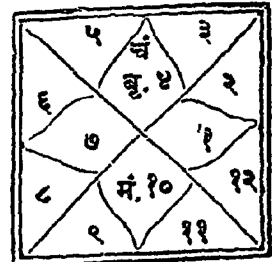
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



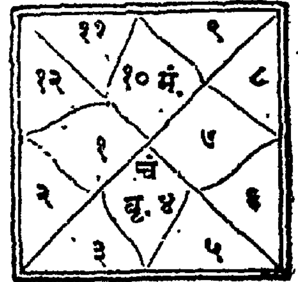
राजयोगः



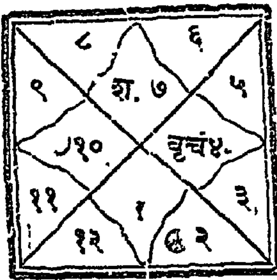
राजयोगः



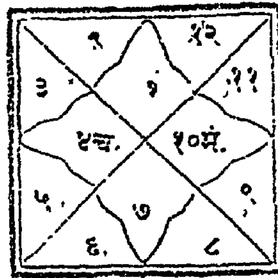
राजयोगः



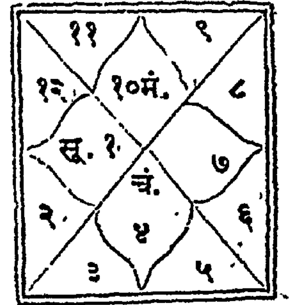
राजयोगः



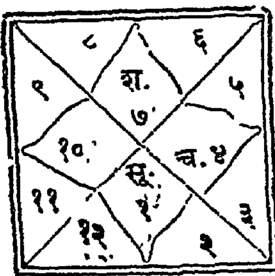
राजयोगः



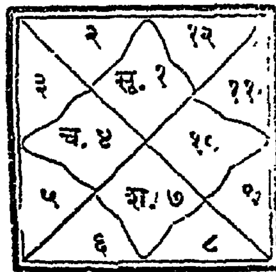
राजयोगः



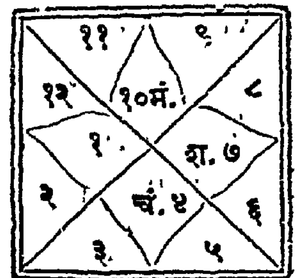
राजयोगः



राजयोगः



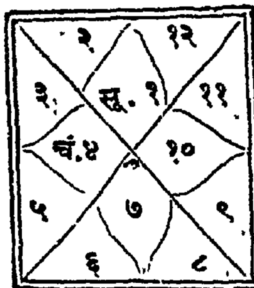
राजयोगः



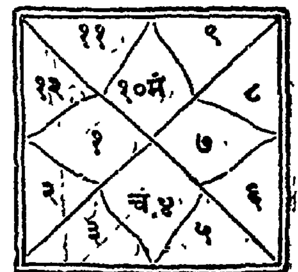
राजयोगः



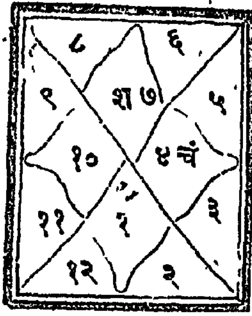
राजयोगः



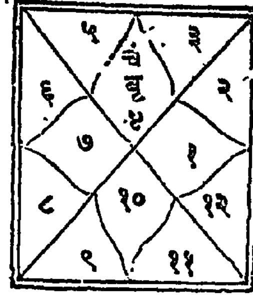
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



चतुश्चत्वारिंशद्राजयोगानाह।

वर्गोत्तमगते लग्ने चंद्रे वा चंद्रवर्जितः॥
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः॥ ३॥

इसके अनन्तर चवालीस प्रकारसे राजयोगोंको कहते हैं। यदि लग्न अपने वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होवे और चंद्रवर्जित चार ग्रह वा पांच ग्रह वा छः ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ बाईस प्रकारसे राजयोग होता है अथवा चंद्रमा अपने वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होवे और चार वा पांच वा छः ग्रहोंसे देखा गया होवे तौ बाईस प्रकारका राजयोग होता है इस प्रकार चवालीस राजयोग होते हैं। यदि वर्गोत्तमनवांशगत लग्नको सू. मं. बु. बृ. यह देखते होवें तौ १ राजयोग, सू. मं. बु. शु. इनसे २, सू. मं. बु. सू. श. इनसे ३, सू. मं. बृ. शु, इनसे चौथा, सू. मं. बृ. श. इनसे ५, सू. मं. शु. श. इनस ६, सू. बु. बृ. शु. इनसे ७, सू. बु. बृ. श. इनसे ८, सू. बु. शु. श. इनसे ९, सू. बृ. शु. श इनसे १०, मं. बु. बृ. शु. इनसे ११, मं. बु. बृ. श. इनसे १२, मं. बु. शु. श इनसे १३, मं. बृ. शु. श. इनसे १४, बु. बृ. शु. श. इनसे १५, इस प्रकार चार ग्रहोंके विकल्पोंसे १५ भेद होते हैं। सू. मं. बु. बृ. शु. इनसे १, सू. मं. बु. बृ. श. इनसे २, सू. मं. बु. शु. श. इनसे ३, सू. मं. बृ. शु. श. इनसे ४, सू. बु. बृ. शु. श. इनसे ५. मं. बु. बृ. शु. श. इनसे ६, इस प्रकार पांच ग्रहोंके विकल्पसे ६ भेद होते हैं। सू. मं. बु. बृ. शु. श, इनसे १, इस प्रकार छः ग्रहोंसे १ भेद होता है। इस प्रकार सब मिलकर बाईस राजयोग होते हैं और इसी प्रकार वर्गोत्तम नवांशगत चन्द्रमापर चार वा पांच वा छः ग्रहोंकी दृष्टिसे बाईस राजयोग होते हैं। इस प्रकार सब मिलकर चवालीस राजयोग होते हैं॥ ३॥

पंचराजयोगानाह।

यमे कुंभेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव तनुगैर्नृयुक्सिंहालिस्थैः

शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः ॥ यमेन्दू तुंगेऽगे सवितृशशिजौ षष्ठ-भवने तुलाजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ ॥ ४ ॥

यदि शनैश्चर कुंभराशिपर और सूर्य मेषराशिपर और चंद्रमा वृषराशिपर और बुध मिथुनराशिपर और बृहस्पति सिंहराशिपर और मंगल वृश्चिकराशिपर स्थित होवे और लग्नमें कुंभराशि होवे तौ १ राजयोग, और इसी प्रकार ग्रह स्थित होवें और लग्नमें मेषराशि होवे तौ द्वितीय राजयोग होता है और इसी प्रकार ग्रह स्थित होवें और लग्नमें वृषराशि होवे तौ तृतीय राजयोग होता है। यदि शनैश्चर उच्च राशिपर और चन्द्रमा उच्च राशिमें और सूर्य बुध यह दोनों कन्याराशिपर और शुक्र तुला राशिपर और मंगल मेषराशिपर और बृहस्पति कर्कराशिपर स्थित होवे और लग्न तुला होवे तो १ राजयोग और इसी प्रकार ग्रह स्थित होवें और लग्नमें वृषराशि होवे तौ द्वितीय राजयोग होता है इस प्रकार पांच राजयोग होते हैं ॥४॥

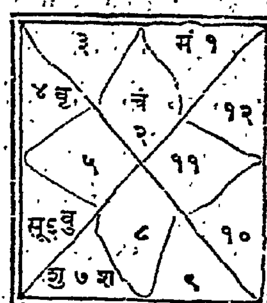
उदाहरणार्थ पांचों राजयोगकी कुंडली हैं।











अन्यद्राजयोगत्रयमाह।

कुजे तुंगेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च कुपतिः पतिर्भूमेश्चान्यः

क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि ॥ सचंद्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे स्वतुंगस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ५ ॥

यदि मंगल अपने उच्च राशिका होवे और सूर्य चन्द्रमा दोनोंका योग धनुराशिपर होवे और शनैश्चर लग्नमें होवे तौ उत्पन्न हुआ राजा होता है, यह १ राजयोग है और लग्नमें उच्च राशिपर मंगल यदि चन्द्रमासहित विराजमान होवे और सूर्य धनुराशिपर होवे तौ उत्पन्न हुआ प्राणी पृथ्वीका पति होता है यह द्वितीय राजयोग है और चन्द्रमासहित शनैश्चर सप्तम भावमें होवे और बृहस्पति धनुराशिपर होवे और सूर्य अपने उच्चराशिमें प्राप्त होकर लग्नमें होवे तौ उत्पन्न हुआ राजा होतो है यह तृतीय राजयोग है ॥ ५ ॥

राजयोगद्वयमाह ।

वृषे सेन्दौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशतनयैः सुहृज्जायाखस्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः॥ मृगे मंदे लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगते शशांकाद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः पुंगणपतिः ॥ ६ ॥

यदि चन्द्रमासे युक्त होकर वृषराशि लग्नमें स्थित होवे और सूर्य चतुर्थ भावमें और बृहस्पति सप्तम भावमें और शनैश्चर दशम भावमें होवे तौ नियमसे राजा होता है यह १ राजयोग है । यदि मकरराशिपर शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे और चन्द्रमा तृतीय भावमें, मंगल षष्ठ भावमें, बुध नवम भावमें, बृहस्पति द्वादश भावमें होवे तौ वह पुरुष बडे गुण यशवाला जगत् विख्यात राजा होता है यह तृतीय राजयोग है ॥ ६ ॥

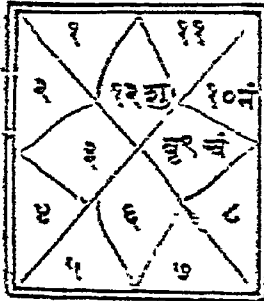
राजयोगत्रयमाह ।

हये सेन्दौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये स्वतुंगस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती ॥ सुतस्थौ वक्रार्कीगुरुशशिसिताश्चापि हिबुके बुधे कन्यालग्ने भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान् ॥ ७ ॥

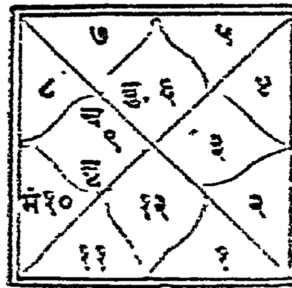
यदि चन्द्रमासहित बृहस्पति धनुराशिपर होवे और मंगल मकरराशिपर होवे और लग्नमें अपने उच्च राशिका शुक्र वा लग्नमें अपने उच्चराशिका बुध स्थित होवे तौ यह दो राजयोग हैं । यदि मंगल शनैश्चर दोनों पञ्चम भावमें होवें और बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र यह चतुर्थ भावमें होवें और बुध कन्याराशिका लग्नमें स्थित होवे तौ गुणवान् राजा होता है यह तृतीय राजयोग है ॥ ७ ॥

उदाहरण ।

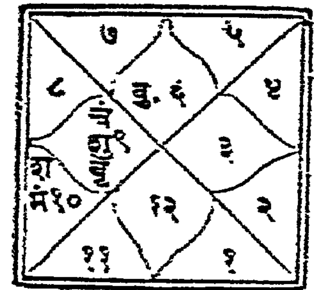
राजयोगः



राजयोगः



राजयोगः



राजयोगत्रयमाह ।

झषे सेन्दौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितैर्यमारार्कैर्योऽभूत्स खलु मनुजः शास्ति वसुधाम् ॥ अजे सारे मूर्त्तौ शशिगृहगते चामरगुरौ सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान् ॥ ८ ॥

यदि चन्द्रमासहित मीनराशि लग्नमें होवे और शनैश्चर कुम्भराशिपर और मंगल मकरराशिपर और सूर्य सिंहराशिपर होवे तौ वह पुरुष पृथ्वीका पालनकर्त्ता होता है, यह एक राजयोग है । यदि मंगलसहित मेषराशि लग्नमें होवे और बृहस्पति कर्कराशिपर होवे तौ यह द्वितीय राजयोग है । यदि कर्कराशिका बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे और मंगल मेषराशिपर होवे तौभी गुणवान् राजा होता है, यह तृतीय राजयोग है ॥ ८ ॥

अन्यराजयोगमाह ।

कर्के लग्ने तत्स्थे जीवे चंद्रसितज्ञैरायप्राप्तैः ॥
मेषगतेऽर्के जातं विंद्याद्विक्रमयुक्तं पृथ्वीनाथम् ॥ ९ ॥

यदि कर्कराशि लग्नमें होवे और उसपर बृहस्पति स्थित होवे और चन्द्रमा शुक्र बुध यह तीनों एकादश भावमें स्थित होवें तौ उत्पन्न हुए पुरुषको बडा पराक्रमी राजा जाने ॥ ९ ॥

अन्यराजयोगमाह ।

मृगमुखेऽर्कतनयस्तनुसंस्थः क्रियकुलीरहयोऽधिपयुक्ताः ॥
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ यदि तदा पृथुयशाःपृथिवीशः १०

यदि मकरराशिपर शनैश्चर लग्नमें स्थित होवे और मेष कर्क सिंह यह राशि अपने स्वामियोंसे युक्त होवें अर्थात् मेषपर मंगल, कर्कपर चन्द्रमा, सिंहपर सूर्य

होवे और मिथुनपर बुध और तुलापर शुक्र होवे तौ बडे यशवाला राजा होता है, यह एक राजयोग है ॥ १० ॥

अन्यराजयोगमाह।

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ॥
सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मंदारयोः सुते ॥ ११ ॥

यदि अपने उच्च राशिमें स्थित होकर बुध लग्नमें होवे और शुक्र दशम भावमें स्थित होवे और बृहस्पतिसहित चंद्रमा सप्तम भावमें होवे और शनैश्चर मंगल इन दोनोंका योग पंचम भावमें होवे तौ राजा होता है, यह एक राजयोग है ॥ ११ ॥

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यभाजः किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तभूपालयोगैः ॥ नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा वक्ष्यमाणै-र्भवन्ति नृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ १२ ॥

इन कहे हुए राजयोगोंकरके नीच कुलमें उत्पन्न हुए पुरुष भी राज्यको प्राप्त होते हैं और राजकुलमें जन्मे हुए राज्यभागी होवें तौ फिर क्या शंका है और अगाडी कहे जानेवाले योगोंकरके राजकुलमें जन्मे हुए ही राजा होते हैं और राजासे पृथक् जातिका पुत्र तिन कहे जानेवाले राजयोगोंमें होवे राजा तौ नहीं होता है किन्तु राजाके समान ऐश्वर्यवाला होता है ॥ १२ ॥

राजयोगमाह।

उच्चस्वत्रिकोणगैर्बलस्थैस्त्र्याद्यैर्भूपतिवंशजा नरेन्द्राः ॥
पंचाद्रिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुता न भूमिपालाः ॥ १३ ॥

तीनसे आदि लेकर तीन वा चार ग्रह कालादिबलसे युक्त होकर अपने उच्च राशिमें वा मूलत्रिकोण राशिमें स्थित होवें तौ राजकुलमें जन्मे हुए ही राजा होते हैं और पांचसे आदि लेकर पांच वा छः वा सात ग्रह कालादिबलसे युक्त होकर अपने उच्च राशि वा मूलत्रिकोणराशिमें स्थित होवें तौ अन्य वंशमें जन्मे हुए भी राजा होते हैं। यदि यह तीन वा चार ग्रह कालादिबलसे हीन होकर अपने उच्च राशिमें वा मूलत्रिकोण राशिमें स्थित होवें तौ राजकुलमें जन्मे हुए भी राजा नहीं होते हैं किन्तु राजतुल्य होते हैं। यह पांच वा छः वा सात ग्रह कालादिबलसे युक्त होकर अपने उच्च वा मूलत्रिकोणमें स्थित होवें तौ अन्य वंशमें उत्पन्न हुए भी राजा नहीं होते हैं किन्तु राजतुल्य होते हैं। और इन कहे हुओंसे हीन होवें अर्थात् एक वा दो ग्रह अपने उच्च वा मूलत्रिकोण राशिमें होवें तौ राजकुलमें जन्मा हुआ भी राजा नहीं होता है किन्तु धनवान् होता है और तीन वा चार ग्रह अपने उच्च वा

मूलत्रिकोणराशिमें स्थित होवे तौ अन्य वंशमें जन्मा हुआ धनवान् होता है न कि राजा ॥ १३ ॥

लेखास्थेऽर्केऽजेंदौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुंभे मंदे ॥
चापप्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विद्यात्पृथ्वीनाथम् ॥ १४ ॥

यदि सूर्य अर्धोदयमें स्थित होवे और चंद्रमा मेषराशिपर लग्नमें स्थित होवे और मंगल अपने उच्चराशिमें होवे और शनैश्चर कुंभराशिपर होवे और बृहस्पति धनुराशिमें होवे तौ ऐसे योगमें जन्मे हुए राजपुत्रको पृथ्वीपति जाने ॥ १४ ॥

अन्यराजयोगमाह ।

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानप्राप्ते चंद्रे ॥
दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः ॥ १५ ॥

यदि अपने राशिका शुक्र चतुर्थ भावमें होवे और चंद्रमा नवम भावमें होवे और शेष ग्रह सूर्य मंगल बुध बृहस्पति शनैश्चर यह तृतीय भाव लग्नभाव एकादश भाव इनमें स्थित होवें तौ राजवंशीय राजा होता है और अन्यवंशीय धनवान् होता है ॥ १५ ॥

अन्यराजयोगमाह ।

सौम्यवीर्ययुते तनुयुक्ते वीर्याढ्ये च शुभे शुभयाते ॥
धर्मार्थोपचयेष्ववशेषैर्धर्मात्मा नृपजः पृथिवीशः ॥ १६ ॥

यदि कालादिबलसे युक्त होकर बुध लग्नमें स्थित होवे और बलवान् होकर बृहस्पति शुक्रमेंसे कोई शुभ ग्रह नवम भावमें स्थित होवे और शेष ग्रह नवम द्वितीय तृतीय षष्ठ दशम एकादश इनमेंसे किसी स्थानमें स्थित होवे तौ राजवंशीय धर्मात्मा राजा होता है ॥ १६ ॥

अन्यद्राजयोगद्वयमाह ।

वृषोदये मूर्तिधनारिलाभगैः शशांकजीवार्कसुतापरैर्नृपः ॥
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतैर्नृपोऽपरैः १७

वृषराशि लग्नमें होवे और चंद्रमा लग्नमें और बृहस्पति द्वितीय भावमें, शनैश्चर षष्ठ भावमें और शेष ग्रह सूर्य मंगल बुध शुक्र एकादश भावमें स्थित होवें तौ राजवंशीय राजा होता है और अन्यवंशीय धनवान् होता है, यह १ राजयोग

---

१ लेखास्थेऽर्के भूवृत्तादर्धोदिते सूर्ये सतीत्यर्थः ।

है। यदि चतुर्थ भावमें बृहस्पति और दशम भावमें चंद्रमा सूर्य दोनों और शनैश्चर लग्नमें और शेष ग्रह मंगल बुध शुक्र एकादश भावमें होवें तो राजवंशीय राजा होता है, अन्यवंशीय धनवान् होता है ॥ १७ ॥

अन्यद्राजयोगद्वयमाह।

मेषूरणायतनुगाः शशिमंदजीवा ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्रम् ॥ वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या होरासुखा-स्तशुभखाप्तिगताः प्रजेशम् ॥ १८ ॥

यदि चंद्रमा शनैश्चर बृहस्पति यह क्रमसे दशम एकादश लग्न इन भावोंमें स्थित होवें और बुध मंगल दोनों द्वितीय भावमें होवें और शुक्र सूर्य यह दोनों चतुर्थ भावमें होवें तो राजवंशीय राजा होता है अर्थात् चंद्रमा दशममें, शनैश्चर एकादश भावमें, बृहस्पति लग्नमें, बुध मंगल द्वितीयमें, शुक्र सूर्य चतुर्थमें होवें तो राजवंशीय पुरुषको राजा करते हैं और अन्यवंशीयको धनवान् करते हैं। यदि मंगल शुक्र यह दोनों लग्नमें और चंद्रमा चतुर्थमें, बृहस्पति सप्तममें, शुक्र नवममें, सूर्य दशममें, बुध एकादश भावमें स्थित होवें तो राजवंशीयको राजा करते हैं, अन्यवंशीयको धनवान् करते हैं ॥ १८ ॥

राजयोगजातस्य कस्मिन् काले राज्यावाप्तिर्भविष्यतीति ज्ञानम्।

कर्मलग्नयुतपाकदशायां राज्यलब्धिरथवा प्रबलस्य ॥ शत्रुनीचगृहयातदशायां छिद्रसंश्रयदशा परिकल्प्या ॥ १९ ॥

राजयोगकारक ग्रहोंके मध्यमें जो कि ग्रह दशम भावमें स्थित होवे और जो कि ग्रह लग्नमें स्थित होवे यदि दोनों जगह लग्न दशम भावमें ग्रह होवें तो तिनमें जो बलवान् होवे उसकी दशामें जो अन्तर्दशाकाल है उसमें राज्यप्राप्ति होवे है। यदि दशम भाव और लग्नभावमें कोई ग्रह नहीं होवे तो सर्वोत्तम बली ग्रहके अन्तर्दशा-कालमें राज्यप्राप्ति होवे है और शत्रुक्षेत्री और नीचक्षेत्री ग्रह बलवान् होवे तो उसकी अन्तर्दशामें राज्यप्राप्तिकी छिद्रदशा अर्थात् हरणदशा जाननी और वह शत्रुक्षेत्री वा नीचक्षेत्री ग्रह निर्बल होवे तो वह छिद्रदशा राजाके संश्रयदशा अर्थात् राज्य हरणका मोक्षरूप हो जाता है ॥ १९ ॥

भोगिनां शबरदस्युस्वामिनां जन्मज्ञानम्।

गुरुबुधसितलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात् ॥ शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरभस्थैश्च पापैर्जातं शबरदस्युस्वामितामर्थभाक्च ॥ २० ॥

बृहस्पति बुध शुक्र इनमेंसे कोई लग्नमें विराजमान होवे और शनैश्चर सप्तम भावमें होवे और सूर्य दशम भावमें होवे तौ भोगनेवालोंका जन्म जाने । यदि शुभग्रहसंबंधी राशि बलवान् होकर केन्द्रमें स्थित होवे और पाप ग्रह पाप राशियोंपर स्थित होवें तौ वह पुरुष पुलिन्द और चौरोंकी स्वामिताको प्राप्त होता है और धनवान् होता है ॥ २० ॥

स्वभुजार्जितधनवत्त्वयोगमाह जातकाभरणे ।

मेषे शशांकः कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः ॥
तातस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः २१॥

यदि मेषराशिपर चंद्रमा और कुंभराशिपर शनैश्चर और धनुराशिपर सूर्य और मकरराशिपर शुक्र होवे तौ वह श्रेष्ठ पुरुष पिताके धनको नहीं भोगता है किन्तु अपने भुजबलसे धनको प्राप्त करता है ॥ २१ ॥

जातकाभरणे राजयोगभंगाध्यायो लिख्यते ।

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्ववर्गोत्तमयुतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यंति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥

यदि वर्गोत्तमनवांशमें स्थित होकर समस्त ग्रह शत्रुराशियोंपर स्थित होवे अथवा बहुतसे नीच ग्रह होवे तौ राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

चंद्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोऽपि वीक्षते ॥
तथापि राजयोगानां भंगमाह पराशरः ॥ २ ॥

यदि चंद्रमा वा लग्नको एकभी ग्रह नहीं देखता होवे तौ पराशर राजभंगको कहते हैं ॥ २ ॥

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीने ॥
कृत्वाऽपि राज्यं च्यवते मनुष्यःपश्चात्सुदुःखं लभते हताशः॥३॥

यदि सूर्य अपने नवांशमें होवे और चंद्रमा निर्बल होवे और पाप ग्रहोंसे युक्त होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होवे तौ राज्यको करके मनुष्य राज्यसे भ्रष्ट हो जाता है और पीछे हताश होकर महत् दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा ॥
चेद्राजयोगेऽपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोऽतितरां भवेत्सः ॥४॥

उल्कापात वा व्यतीपातके दिन वा वज्रपात होनेपर वा केतुके निकलनेपर जिसका जन्म यद्यपि राजयोगमेंभी होवे तौ भी वह पुरुष अतीव दरिद्री होता है ॥ ४ ॥

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः ॥
निर्दिष्टराजयोगानां दलनाय भवेद्ध्रुवम् ॥ ५ ॥

यदि जन्मके समय सूर्य तुलाराशिपर परम नीचके होकर स्थित होवे तौ कहे हुए राजयोगोंके नाशके वास्ते होवे है ॥ ५ ॥

मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेऽतिदरिद्रताम् ॥ ६ ॥

यदि बृहस्पति मकरराशिपर परम नीचका होवे तौ राजयोगमें उत्पन्न हुएकी भी दरिद्रता करता है ॥ ६ ॥

वाचस्पतावस्तगते ग्रहेन्द्रास्त्रयोऽपि नीचेषु घटो विलग्ने ॥
एकोऽपि नीचे दशमेऽपि पापो भूपालयोगा विलयं प्रयान्ति७॥

यदि बृहस्पति अस्तगत होवे और तीन ग्रह नीच राशियोंमें होवे और लग्नमें कुंभराशि होवे अथवा नीच राशिमें एकभी पाप ग्रह दशम भावमें होवे तौ राजयोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ॥ ८ ॥

यदि जन्मसमय शुक्र परम नीचका होवे तौ महापदसे मनुष्योंका पतन करता है ॥ ८ ॥

यदि तनुभवनस्थो राहुरिन्दुप्रदृष्टःसहजरिपुभवस्था भानुमंदावनेयाः ॥ शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यैर्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चिन्त्यम् ॥ ९ ॥

यदि राहु लग्नमें स्थित होवे और चन्द्रमासे दृष्ट होवे और तृतीय षष्ठ एकादश इन भावोंमें सूर्य शनैश्चर मंगल यह ग्रह स्थित होवें और केन्द्रभाव शुभ ग्रहोंसे हीन होवे अथवा शुभ ग्रह अस्तको प्राप्त होवें तौ राजयोग व्यर्थ हो जाता है ॥ ९ ॥

केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तंगतैर्नीचगृहस्थितैर्वा ॥
चतुर्ग्रहैर्वाप्यरिमंदिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयान्ति ॥ १० ॥

चारों केन्द्रभाव शून्य होवें और शुभ ग्रह अस्तको प्राप्त होवे वा नीचराशियोंमें स्थित होवे अथवा चार ग्रह शत्रुक्षेत्री होवें तौ राजयोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ १० ॥

सर्वेऽपि पापा यदि कंटकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः ।
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगा विलयं प्रयान्ति ११ ।

यदि समस्त पाप ग्रह नीच वा शत्रुक्षेत्री होकर केन्द्रभावमें होवें और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त नहीं होवे और शुभ ग्रह नीचके होकर षष्ठ द्वादश भावमें होवें तौ राजयोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ ११ ॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः ।
नरो दरिद्रोऽतितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥१२॥

इति थैलेडाग्रामनिवासिज्योतिर्विल्लक्ष्मणदासनौनिधिरामसंगृहीतो-

जातकसंग्रहः समाप्तः ।

यदि चारों केन्द्रोंमें पाप ग्रह होवें और द्वितीय स्थानमेंभी पाप ग्रह होवें तौ वह पुरुष अतिदरिद्र और और वंशवालोंको भय देता है ॥ १२ ॥

इति जातकसंग्रहे ढाढौलिग्रामस्थपाठकवंशीयमंगलसेनात्मजकाशीराम-

विरचितभाषाटीका समाप्तिमगात् ।

लक्ष्मीवेंकटयंत्रनाथवचनान्नत्वा जगन्नायकं
भाषा जातकसंग्रहे विरचिता श्रीकाशिरामेण वै ॥
एतस्यामुपयोगिकं प्रकरणं संयोजितं सर्वतो
गंगाविष्णुरथांकयत्स्वयशसे कल्याणमुद्रालये ॥ १ ॥
रामशास्त्रनवसोमवत्सरे पौषशुक्लसितकामवासरे
काशिरामरचिता सुशोध्यतां वेंकटेशहरिणात्र यच्च्युतिः ॥ २ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ परिशिष्टम् ।

निधाय हृदि विश्वेशं ज्ञातके यदुपेक्षितम् ।
ज्योतिर्विदां प्रसादाय बद्धं जातकसंग्रहे ॥ १ ॥

ग्रहसाधनरीतिः ।

मिश्रमानेष्टमध्यस्था गत्या गुण्या घटीप्रमा ॥
योज्या शोध्या ग्रहे स्पष्टेऽधिका हीनाऽन्यथानृजौ ॥ १ ॥

पंचांगके मिश्रमान और इष्टके मध्य जो दिनघटिका होवें तिन सबके घटिका कर लेवे फिर वह घटिका ग्रहकी गतिसे गुणे फिर ६० का भाग देवे जो लब्ध मिलें तिनको जो इष्ट मिश्रमानसे अधिक होवे तौ पंचागस्थ स्पष्ट ग्रहमें जोड देवे और जो इष्ट मिश्रमानसे हीन होवे तौ घटाय देवे परन्तु वक्री ग्रहमें यह कार्य विपरीत होता है अर्थात् इष्ट मिश्रमानसे अधिक होवे तौ घटाय देवे और कम होवे तो जोड देवे यह ग्रहसाधनरीति है ॥ १ ॥

उदाहरण–संवत् १९६३ माघकृष्ण अष्टमी चन्द्रवारमें मिश्रमान० घटिका है इष्ट माघकृष्णसप्तमी रविवारमें ३० घटिका है मिश्रमान इष्टका अन्तर किया ३० घटिका मिलीं इनको सूर्यकी गति ६१ से गुणा किया तब हुआ १८३० फिर ६० का भाग दिया तौ ३० कला ३० विकला लब्ध मिलीं इनको पंचांगस्थ स्पष्ट सूर्य २२ अंश ८ कलामें घटाया क्योंकि मिश्रमानसे इष्ट कम है तौ शेष २१ अंश ३८ कला ३० विकला रहीं यह सूर्य स्पष्ट हो गया। इसी प्रकार सब ग्रह स्पष्ट करने चाहिये परन्तु चन्द्रमाके साधनकी विशेष रीति है।

चन्द्रसाधनरीतिः ।

खखनागागतर्क्षेण निघ्नाः सर्वर्क्षभाजिताः ॥
तद्भे मृगांकभोगोंऽघ्रौ भागाः सत्र्यंशवह्नयः ॥ २ ॥

नक्षत्रकी भुक्तघटिकाओंको ८०० से गुणें और सर्व नक्षत्रके घटिकासे भाग लेवे जो लब्ध मिले वह उस नक्षत्रपर चन्द्रमाका भोगकाल है। नक्षत्रका पूरा एक चरण हो जानेपर तीन अंश बीस कला चन्द्रमाका भोग होता है॥ २ ॥

उदाहरण–संवत् १९६३ माघकृष्णसप्तमी रविवारमें इष्ट ३० घटिकापर हस्तनक्षत्रके ११ घटी ३७ पल व्यतीत हुए थे इस कारण इसका नाम गतर्क्ष है और समस्त हस्तनक्षत्र ५८ घटी २६ पल है इस कारण यह सर्वर्क्ष है। अब गतर्क्षके

पल किये तौ ६९७ हुए इनको ८०० से गुणा किये ५५७६०० यह हुए इनपर सर्वर्क्षके पल ३५०६ का भाग दिया तौ १५९ कला लब्ध मिलीं इनके अंश कियें तौ १ अंश ३९ कला प्राप्त हुए यह चन्द्रभोग है अर्थात् हस्तनक्षत्रपर चन्द्रमाके २ अंश ३९ कला भोग चुके और कन्याराशिमें उत्तराफाल्गुनीके तीन चरण संमिलित हैं इसलिये प्रतिचरण ३ अंश २० के हिसाबसे १० अंश हुए अर्थात् १० अंश उत्तराफाल्गुनीपर और २ अंश ३९ कला हस्तनक्षत्रपर कन्या चन्द्रमाके भोग चुके इसलिये कन्याराशिपर चन्द्रमाके १२ अंश ३९ कला भोग चुके ।

लग्नसाधनरीतिः ।

भास्वद्भांशसमे सूत्रे सारण्यामिष्टकं क्षिपेत् ॥
यत्कोष्ठे संगतं तच्च ज्ञेयं लग्नं रवेः समम् ॥ ३ ॥

स्वदेशीय लग्नसारणीमें जो कि सूर्यके राशि अंश हैं तिन दोनोंके समान सूत्रमें जो घटिका पल हैं तिनमें इष्ट घटिका पल जोड देवे जोडनेसे जो घटिका पल होवें वह जिस कोष्ठमें मिल जावें उसमें जो सूर्यका राशि है वह लग्न और जो सूर्यके अंश हैं वह लग्नके अंश जानने चाहिये ॥ ३ ॥

मेषादिराशिनाथानाह लघुजातके ।

कुजशुक्रज्ञेंद्वर्कज्ञशुक्रकुजजीवसौरियमगुरवः ॥ ४ ॥

मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चर, शनैश्चर बृहस्पति ये क्रमसे मेषादि राशियोंके स्वामी हैं ॥ ४ ॥

सूर्यादीनामुच्चनीचमूलत्रिकोणराशीनाह ।

अजवृषमृगांगनाकर्किमीनवणिजांशकेष्विनाद्युच्चाः ॥
दशशिख्यष्टाविंशतितिथीद्रियत्रिनवविंशेषु ॥ ५ ॥
उच्चान्नीचंसप्तममर्कादीनां त्रिकोणसंज्ञेति ॥
सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुंभधराः ॥ ६ ॥

सूर्यादि ग्रहोंके क्रमसे मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला, यह राशि क्रमसे १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० इन अंशोंपर उच्चसंज्ञक हैं और उच्चसे सप्तम राशि नीचसंज्ञक हैं अर्थात् सूर्यादि ग्रहोंके क्रमसे तुला, वृश्चिक, कर्क, मीन, मकर, कन्या, मेष यह राशि क्रमसे १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० इन अंशोंपर नीचसंज्ञक हैं। और सूर्यादि ग्रहोंके क्रमसे सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला, कुंभ यह राशि मूलत्रिकोणसंज्ञक हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

शंका—इनमें पहिले कोई राशि ग्रहोंके स्वराशिसंज्ञक कहे और कोई उच्चसंज्ञक कहे फिर मूलत्रिकोणराशि कैसे हो सक्ते हैं। इस समाधानके लिये सारावलीमें विशेष कहा है।

सारावल्यां मूलत्रिकोणराशिनिर्णयः ।

विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ॥
उच्चं भागत्रितयं वृष इन्दोरथ त्रिकोणमपरे स्युः ॥ ७ ॥
द्वादशभागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभं तु भौमस्य ॥
उच्चफलं कन्यायां बुधस्य तुंगांशकैः सदा चिन्त्यम् ॥ ८ ॥
परतस्त्रिकोणजात पंचभिरंशैः स्वराशिजं परतः ॥
दशभिर्भागैश्चापे त्रिकोणमपरे स्वभर्तुरेव गुरोः ॥ ९ ॥
शुक्रस्यांशास्तिथयस्त्रिकोणमपरे स्वभं तुलायां च ॥
कुंभे त्रिकोणनिजभे रविजस्य रवेर्यथा सिंहः ॥ १० ॥

सिंहपर पहिले २० अंश सूर्यके मूलत्रिकोणसंज्ञक हैं और शेष अंश स्वराशिसंज्ञक हैं। चंद्रमाके वृषपर तीन अंश उच्चसंज्ञक हैं और शेष २७ अंश मूलत्रिकोणसंज्ञक हैं। मंगलके मेषराशिपर १२ अंश मूलत्रिकोणसंज्ञक हैं और शेष १८ अंश स्वराशिसंज्ञक हैं। बुधके कन्याराशिपर १५ अंश उच्चसंज्ञक हैं फिर ५ अंश मूलत्रिकोणसंज्ञक हैं फिर शेष १० अंश स्वराशिसंज्ञक हैं। बृहस्पतिके धनुपर १० अंश मूलत्रिकोण और शेष २० अंश स्वराशिसंज्ञक हैं। शुक्रके तुलाराशिपर १५ अंश मूल त्रिकोणसंज्ञक और शेष १५ अंश स्वराशिसंज्ञक हैं। शनैश्चरके कुंभराशिपर २० अंश मूलत्रिकोण और शेष १० अंश स्वराशिसंज्ञक हैं ॥७॥८॥९॥१०॥

सूर्यादीनां मित्रसमशत्रूनाह सर्वार्थचिन्तामणौ ।

भानोस्तु मित्राणि कुजेन्दुजीवाः समो बुधः शुक्रशनी विपक्षौ ॥
इष्टौ शशांकस्य दिनेशसौम्यौ शेषाः समा भूमिसुतस्य मित्रम् ११
रवींदुजीवाश्च बुधश्च शत्रुः समौ दिनेशात्मजदानवेज्यौ ॥
सौम्यस्य मित्रे दिननाथशुक्रौ शेषाः समा रात्रिकरःसपत्नः॥१२॥

---

१ राहोरुच्चादिकं भुवनदीपके । कन्या राहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतम् ।
राहुनीचं धनुर्वर्णादिकं शनिवदस्य च ॥ १ ॥
राहुका कन्याराशि गृह है और मिथुनराशि उच्च है और नीचराशि धनु है और राहुका वर्ण आदिक सब शनैश्चरके समान होता है ॥ १ ॥

शुक्रेन्दुजौ देवगुरोः सपत्नौ मित्राणि सर्वे रविजस्तु मध्यः ॥
शनीन्दुजाविष्टकरौ भृगोस्तु शेषाः सपत्नाश्च समौ कुजेज्यौ॥१३॥
सौरस्य मित्रे भृगुपुत्रसौम्यौ समो गुरुस्ते निखिलाःसपत्नाः ॥
राहोस्तु मित्राणि कवीज्यमंदा केतोस्तथैवात्र वदन्ति तज्ज्ञाः॥१४

इन श्लोकोंका अर्थ कोष्ठमें विदित होता है ।

सूर्यादि ग्रहोंके मित्र सम शत्रु जाननेका कोष्ठक ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
चं.बृ. मं.	सू.बु.	सू.चं. बृ.	शु.सू.	मं.सू. चं.	बु.श.	बु.शु.	शु.बृ. श.	शु.बृ. श.	मित्र.
बु.	मं.बृ. शु.श.	शु.श.	श.बृ. मं.	श.	म.बृ.	बृ.	०	०	सम.
श.शु.	०	बु.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं. मं.	चं.सू. मं.	चं.सू. मं.	शत्रु.

तात्कालिकमित्रशत्रूनाह ।

भवन्ति तात्कालिकमित्रभूताः सर्वे च वाक्सोदरवंधुयुक्ताः ॥ स्वात्स्वात्क्रमाद्व्युत्क्रमतस्तथैवमन्यस्थितास्तत्समयाऽरिभूताः ॥ १५ ॥

जिस ग्रहसे द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, द्वादश, एकादश, दशम, इन भावोंमें जो ग्रह होवे वह ग्रह उस ग्रहके तात्कालिक मित्र होते हैं और जिस ग्रहसे १। ५।६।७।८।९ इन भावोंमें जो ग्रह स्थित होवे तो उस ग्रहके वह ग्रह तात्कालिक शत्रु होते हैं ॥ १५ ॥

आधिमित्राधिशत्रुसाधनप्रकारमाह ।

तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसंज्ञम् ॥
तथैव शत्र्वोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ १६ ॥

जिस ग्रहका जो कि ग्रह तात्कालिक मित्र हो और निसर्ग मित्र होवे तो वह ग्रह उस ग्रहका आधिमित्रसंज्ञक होता है और जिस ग्रहका जो ग्रह तात्कालिक शत्रु होवे और निसर्ग शत्रु होवे उस ग्रहका वह ग्रह अधिशत्रु होता है और एक जगह मित्र होवे और एक जगह शत्रु होवे वह ग्रह उस ग्रहकी समताको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ षड्वर्गनामान्याह लघुजातके ।

गृह १ होरा २ द्रेष्काणा ३ नवभागो ४ द्वादशांश ५ कस्त्रिंशः ६।
वर्गः प्रत्येतव्यो ग्रहस्य यो यस्य निर्दिष्टः ॥ १७ ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश यह षड्वर्ग हैं । जो ग्रह अपने राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांशमें स्थित होवे वह स्ववर्गस्थ कहाता है । जो ग्रह जिसके राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांशमें स्थित होवे वह उसीका वर्गस्थ कहाता है ॥ १७ ॥

द्रेष्काणहोराविवरणमाह ।

राशिं त्रिधाकृत्य दृकाणमाहुस्तदीशपुत्रेशशुभाभिनाथाः ॥
युजीन्दुसूर्यौ भवने रवीन्दू नाथौ त्वयुग्मे भवनस्य चार्धे॥१८॥

राशिके जो कि तीन भाग हैं उसको द्रेष्काण कहते हैं । प्रथम द्रेष्काणपति वही है जो उस राशिका स्वामी है और द्वितीय द्रेष्काणका पति वह होता है जो उस राशिसे पांचवें राशिका स्वामी है और तृतीय द्रेष्काणका पति वह होता है जो उस राशिसे नवम राशिका स्वामी है । राशिके दो भागोंका नाम होरा है । यदि सम राशि होवे तो पहिला होरा चंद्रमाका और द्वितीय सूर्यका होता है और विषम राशि होवे तो पहिला होरा सूर्यका और द्वितीय चंद्रमाका होता है ॥ १८ ॥

द्रेष्काणकोष्ठकम् ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१०	मं.१	शु.२	बु.३	वृ.४	सू.५	बु.६	शु.७	मं.८	बृ.९	श१०	श११	बृ.१२
२०	सू.५	बु.६	शु.७	मं.८	बृ.९	श१०	श११	बृ.१२	मं.१	शु.२	बु.३	चं.४
३०	बृ.९	श.१०	श११	बृ.१२	मं.१	शु.२	बु.३	चं.४	सू.५	बु.६	शु.७	मं.८

होराकोष्ठकम् ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१५	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४
३०	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५	चं.४	सू.५

नवांशविवरणमाह ।

चरेंशकानामधिपास्तदीशाद्राशौ स्थिरे तन्नवमेश्वराद्याः ॥
द्विदेहभे तत्सुतराशिनाथाद्वदन्ति शास्त्रार्थविदो महान्तः१९॥

राशिके नव ९ भागोंका नाम नवांश है, एक भाग ३ अंश २० कलाका होता है। यदि चर राशि मेष, कर्क, तुला, मकर होवे तौ इन राशियोंके नवांशोंके स्वामी इन्ही राशियोंके स्वामियोंके क्रमसे होते हैं और स्थिरराशि, वृष, सिंह वृश्चिक, कुंभ होवे तौ इन राशियोंके नवांशके स्वामी इन राशियोंके नवम राशिके क्रमसे होते हैं और द्विस्वभावराशि मिथुन, कन्या, धनु, मीन होवे तौ इन राशियोंके नवांशपति इन राशियोंसे पंचम राशिके क्रमसे होते हैं ॥ १९ ॥

नवांशकोष्टकम् ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३।२०	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.
६।४०	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.
१०।००	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.
१३।२०	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.
१६।४०	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.
२०।००	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.
२३।२०	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.	७शु.	४चं.	१मं.	१०श.
२६।४०	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.	८मं.	५सू.	२शु.	११श.
३०।००	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.	९बृ.	६बु.	३बु.	१२बृ.

द्वादशांशत्रिंशांशविवरणमाह ।

तत्क्षेत्रपाद्वादशभागनाथा लग्नस्य वर्गाधिपतिस्तदीशात् ॥
त्रिंशांशपा भौमशनीज्यसौम्यशुक्रा भवन्त्योजगृहे समे तु ॥
विलोमतः पंचशराष्टसप्तबाणाः क्रमादूचुरनेकशास्त्रैः ॥ २० ॥

राशिके जो कि बारह भाग हैं उसका नाम द्वादशांश है। द्वादशांशका एक भाग २ अंश ३० कलाका होता है। द्वादशांशके स्वामी स्वराशिस्वामीके क्रमसे गिने जाते हैं। यदि विषम राशि होवे तौ प्रथम ५ अंशतक मंगलका, फिर ५ अंशतक शनैश्चरका, फिर ८ अंशतक बृहस्पतिका, फिर ७ अंशतक बुधका, फिर ५ अंशतक शुक्रका त्रिंशांश होता है और समराशि होवे तो इस कही हुई रीतिसे विपरीत क्रमसे त्रिंशांशपति होते हैं, जैसे प्रथम ५ अंशतक शुक्रका, फिर ७ अंशतक बुधका, फिर ८ अंशतक बृहस्पतिका, फिर ५ अंशतक शनैश्चरका, फिर ५ अंशतक मंगलका त्रिंशांश होता है ॥ २० ॥

द्वादशांशकोष्टकम् ।

		मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मीं.
२	३०	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.
५	००	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.
७	३०	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.
१०	००	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.
१२	३०	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.
१५	००	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१म.	२शु	३बु.	४चं.	५सू.
१७	३०	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.
२०	००	८मं.	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.
२२	३०	९बृ.	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.
२५	००	१०श.	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.
२७	३०	११श.	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श.
३०	००	१२बृ.	१मं.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.	७शु.	८मं.	९बृ.	१०श	११श.

विषमत्रिंशशांशकोष्ठकम् । समत्रिंशांशकोष्ठकम् ।

	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.

	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मीं.
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.

अथ ग्रहाणां दृष्टिस्थानान्याह बृहज्जातके ।

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः ॥
रविजामरेज्यरुधिराः परे च ये क्रमशो भवंति किलवीक्षणेऽधिकाः २१

ग्रहोंकी एक चरण दो चरण तीन चरण सम्पूर्ण दृष्टिके सुगमतासे जाननेके लिये कोष्ठमें स्थान दिखाये हैं ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	०	०	एक चरण	३ चरण दृष्टि.	२ चरण दृष्टि.	०	संपूर्ण.	३ चरण.	२ चरण.	१ चरण.	०	०
चंद्रमा.	०	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०
मंगल.	०	०	२	४	३	०	१	४	३	२	०	०
बुध.	०	०	१	४	२	०	४	३	२	१	०	०
बृहस्पति.	०	०	३	१	४	०	२	१	४	३	०	०
शुक्र.	०	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०
शनैश्चर.	०	०	४	२	१	०	३	२	१	४	०	०

द्वादशभावनामज्ञानार्थं कुण्डली ।

केन्द्र, कंटक, चतुष्टय. देह, लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य, प्रथम.

पणफर, द्रव्य, स्व, वित्त, कोश, अर्थ, कुटुम्ब, धन, द्वितीय.

आपोक्लिम, उपचय, पराक्रम, सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, तृतीय.

केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, सुख, अम्बा, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद्, वाहन, यान, बंधु, अम्बु, नीर, जल, चतुर्थ.

पणफर, त्रिकोण, सुत, तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाक्, तनुज, पंचम.

आपोक्लिम, उपचय, त्रिक, शत्रु, रिपु, द्वेष, वैरि, क्षत, षष्ठ.

केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, कलत्र, जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यून, काम, सप्तम.

पणफर, त्रिक, मृत्यु, रन्ध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृत्यु, अष्टम.

आपोक्लिम, त्रिकोण, भाग्य, गुरु, धर्म, शुभ, तप, मार्ग, नवम.

केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, उपचय, राज्य, तात, आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, गगन, नभ, व्योम, मेषूरण, मध्य, व्यापार, दशम.

पणफर, उपचय, लाभ, भव, आगम, प्राप्ति, आय, लब्धि, एकादश.

आपोक्लिम, त्रिक, व्यय, प्रान्त्य, अन्तिम, रिःफ, द्वादश.

इति परिशिष्टं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस,
कल्याण–बम्बई.